राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली ६

दो शब्द

हमारे राष्ट्रीय जीवन में १९२१ से लेकर १९४७ का इतिहास बहुत ही महत्वपूर्ण है। अवश्य इससे पहले का या इसके बाद का इतिहास भी कम महत्वपूर्ण नहीं है। पर स्वतन्त्रता-प्राप्ति की दृष्टि से १९२१ से लेकर १९४७ तक का इतिहास अधिक महत्वपूर्ण माना जाएगा।

स्वतन्त्रता आन्दोलन हमारी गंगा की ही तरह है, जिसमें न जाने कहां-कहां से छोटी-बड़ी धाराए आकर मिली हैं। यह कहना कि उसमें केवल एक ही धारा थी, या यहां तक कहना कि उसमें प्रमुख रूप से एक ही धारा थी, सत्य का अपलाप है। इसमे अलग-अलग धाराएं आई और वे मिलकर एक बहुत तगड़ी धारा मे परिणत हो गई, जिसके सामने ब्रिटिश साम्राज्य के पाव उखड़ गए और उसे बोरिया-बिस्तर बांधकर यहां से कूच करना पड़ा।

सौभाग्य से मुझे इन सारी धाराओं से घनिष्ठ रूप से संयुक्त रहने का मौका मिला, इनकी कमजोरियां और शहजोरियों से मेरा चाक्षुष परिचय रहा। इसीलिए मैने यह निश्चय किया कि क्यों न इस पूरे युग पर कुछ उपन्यास लिखे जाएं। बात यह है कि इस समय जो नौजवान हैं, उनमें से बहुतेरे स्वतन्त्रता के ऐन पहले पैदा हुए और स्वतन्त्रता आन्दोलन के साथ उनका वह नाड़ीगत सम्बन्ध नहीं रहा, जिसके बिना सही या संसार-सम्बन्धी दृष्टिकोण पैदा नहीं हो सकता। इधर जो इतिहास लिखे गए हैं, उन्हें किसी न किसी मतवाद को लाभ पहुंचाने की दृष्टि से लिखा गया है। अधिकांश इतिहास तो शासक दल का गुणगान मात्र है। ऐसा गुणगान करते हुए अक्सर इन इतिहासकारों ने दूसरों को बहुत कम महत्व दिया है। कहना न होगा कि यह धांधली आज भले ही चल जाए और भले ही इससे इतिहासकार को वैयक्तिक लाभ रहे, पर भविष्य की सन्तानें इसे नही चलने देंगी।

अभी-अभी थोड़े वर्षों की बात है कि सरदार पटेल का देहान्त हो गया।

पर उनकी स्मृति धुंधली हो चली है। शायद ही कभी उनका नाम अखबारों में आता हो। राज्यों के जो मुख्य-मन्त्री आदि हैं, उनकी तो कोई बात ही नहीं है, वे पद से हटे कि उन्हें इतिहास के कूड़ेखाने के सिपुर्द कर दिया जाता है, पर खुदीराम को १९०८ के लगभग फांसी हुई थी, काकोरी के शहीदों को १९२७ में फांसी हुई थी, भगतसिंह आदि को उसके बाद फांसी हुई थी और चन्द्रशेखर आजाद इसके कुछ दिनो बाद पुलिस की गोलियों से शहीद हुए थे, फिर भी इनका नाम बराबर आ रहा है और बढता जा रहा है। मैंने तो थोड़े-से नाम, जो कलम की नोक पर आ गए, गिना दिए। इसी तरह साम्यवादी-धारा के सम्बन्ध में भी कहा जा सकता है कि उसका भी बहुत बड़ा दान है। पर उस सम्बन्ध में मै इस स्थान पर कुछ नही कहूंगा क्योंकि इस उपन्यास में १९२२ से १९३० के लगभग का चित्र ही उपस्थित करने की चेष्टा की गई है।

यह युग स्वतन्त्रता-आन्दोलन के इतिहास में विशेष महत्व रखता है, यद्यपि इसे अंधेरा पाख कहना ही अधिक उचित होगा। फिर भी इसमें बिल्कुल अन्धकार ही रहा हो ऐसी बात नहीं है। यत्र-तत्र जुगनू तो चमकते ही रहते थे, इसके अलावा कभी-कभी रात्रि के अन्धकार को चीरकर कोई उल्का भी अपना रास्ता बनाकर अनन्त में विलीन हो जाता था। इस युग मे पहले-पहल वैज्ञानिक समाजवाद के विचारों का भारत में प्रवेश हुआ और वे एक खमीर के रूप में काम करने लगे। दूसरी तरफ इसी युग में स्वराज्य दल का उदय हुआ, जो कांग्रेस के इतिहास में एक बहुत महत्वपूर्ण घटना है, इतनी महत्वपूर्ण कि बाद को चलकर कांग्रेस चित्तरंजन और मोतीलाल के दिखाए हुए इसी मार्ग पर चली। स्वराज्य दल का नाम तो मिट गया, पर सारी कांग्रेस ही स्वराज्य दल के रूप में हो गई।

पर उसकी कहानी बाद के उपन्यासों में बताई जाएगी। इस उपन्यास के सम्बन्ध में दो शब्द और। इसमें कई व्यक्तियों के चरित्र से यह भ्रम हो सकता है कि यह अमुक ऐतिहासिक व्यक्ति की कहानी है, पर ऐसा समझना गलत होगा। हां, वे ऐतिहासिक पात्र बराबर मेरी आंखों के सामने रहे। कइयों के साथ तो मुझे वर्षों रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, इसलिए उपन्यास के किसी चरित्र पर उनका अक्स आ जाना कोई आश्चर्य की बात नहीं है। फिर भी मैं इतना कह सकता हूं कि उपन्यास का कोई भी पात्र या पात्री किसी ऐतिहासिक नेता,

शहीद, क्रान्तिकारी की हूबहू प्रतिकृति नहीं है।

जगह-जगह जो सन्, तारीख तथा ऐतिहासिक व्यक्तियों तथा संस्थाओं के वक्तव्य आदि दिए गए हैं, वे सबके सब प्रामाणिक हैं और मैंने इस सम्बन्ध में मुख्यत: सीतारमैया के इतिहास का सहारा लिया है।

इसके साथ ही पाठकों को इस बात की चेतावनी दे देना अच्छा रहेगा कि सम्भव है बीच-बीच में दो-एक पृष्ठ जहां प्रस्तावों आदि का वर्णन किया गया है, उपन्यास की दृष्टि से इतना रोचक न जंचे। इसलिए केवल कहानी में दिलचस्पी रखने वाले पाठकों से मै यह अनुरोध करूंगा कि वे उन पृष्ठों को उलट जाएं क्योंकि उससे कहानी में कोई फर्क नहीं पड़ेगा। यदि मै इस उपन्यास के द्वारा पाठक के मन में उस युग का एक मोटा चित्र पेश कर पाया तथा उसके मन में यह धारणा पैदा कर सका कि हमारी स्वतन्त्रता की नीव महान् त्यागों और तपस्याओं पर है, तभी मैं अपना प्रयत्न सफल मानूंगा।

—*मन्मथनाथ गुप्त*

जब राजेन्द्र जेल से छूटकर घर आया, तो उसकी मानसिक हालत अजीब थी। किस जोश-खरोश के साथ वह जेल में गया था, और अब ?

उन दिनो ऐसा मालूम होता था जैसे सब उपकरण तैयार हैं, बस कुछ त्याग और कुछ आहुतिया हो जाए, तो स्वतन्त्रता का यज्ञ पूरा हो जाए। वे दिन कितने अच्छे थे, जब उसके मन मे नेता के इंगित पर मर मिटने की चाह प्रबल थी। ऐसा मालूम होता था जैसे गाधी जी की बात पर सारा देश उठने-बैठने, मर-मिटने को तैयार है। पर अब तो अजीब हालत थी। चौरीचौरा मे पुलिस वालों को जिस निष्ठुरता से जीते-जी अग्नि-समाधि दी गई थी, उससे व्यथित होकर गाधी जी ने आन्दोलन स्थगित कर दिया था। इसपर राजेन्द्र का मन एक अजीब कडवेपन से भरा गया था। गलत ढग से सैन्य-संचालन करने पर सैनिक के मन मे जो कडवापन होता है, यह कडवापन उसी तरह का था। पर सर्वोच्च सेनापति के प्रति यह कडवापन अभी कोई रूप नही ले पाया था कि स्वय गाधी जी जेल की चहारदीवारी के अन्दर पहुच गए। इसपर उनके प्रति जो असन्तोष धुघुआ रहा था, वह किसी विशेष दिशा मे प्रज्ज्वलित नही हो सका, फिर भी हाथ के पास शिकार पाकर भी छूट जाने से जो क्षोभ होता है, वह तो बना ही रहा।

यह क्षोभ अद्भुत था क्योकि अब इसे खुलकर किसी के विरुद्ध आने का मौका नही रह गया था, फिर भी इस कारण यह कम कष्टकर हो या इसका काटा कम चुभता हो, ऐसी बात नही थी।

पारिवारिक क्षेत्र मे भी राजेन्द्र के पासे गलत पडे थे। उसके पिता राय साहब राजकिशोर मे परिवर्तन की जो प्रक्रिया चालू हुई थी, और राजेन्द्र के जेल जाने के कारण चालू हुई थी, वह बीच में ही रुक गई थी। शायद वे कुछ पीछे

की ओर ही हटे थे। यह स्वाभाविक था क्योंकि बचपन से उनका जिन लोगों मे उठना-बैठना था, लडके की गिरफ्तारी के कारण रायसाहब का उन लोगो मे वह उठना-बैठना बन्द हो गया था और इस अभाव की किसी और ढग से पूर्ति नही हुई थी। आन्दोलन वापस ले लिए जाने के कारण वातावरण मे सनसनी का वह उपादान नही रह गया था, जिसे हम इतिहास-निर्माण की सनसनी कहेगे। यह सनसनी मामूली सनसनियो से इसी कारण विशिष्ट थी कि यह जनता को आगे ले जा रही थी।

रायसाहब जब-तब एकाध मन्तव्य ऐसा प्रकट कर देते थे, जिससे उनके मन की झुंझलाहट सामने आ जाती थी। इसका असर ऊषादेवी पर भी पडता था, यद्यपि ऊषादेवी कुछ कहती नही थी, पर उनके चेहरे पर उनके मन की बात झलक जाती थी। शायद इसी दमित क्षोभ के कारण वे राजेन्द्र पर शादी के लिए अधिक ज़ोर डालने लगी थी।

राजेन्द्र यह सब समझता था, फिर भी जब बार-बार एक ही बात का तांता जारी रहा, तो एक दिन उसे भी तैश आ गया, बोला, "मा, तुम यही समझती हो कि दुनिया मे बस यही काम है। देख नही रही हो कि कितनी बडी-बडी घटनाएं हो रही है? तुम तो अपनी छोटी-सी दुनिया मे ही उलझी हुई हो।"

ऊषादेवी ने राजेन्द्र की इस स्पष्टवादिता का इस माने मे स्वागत ही किया कि यह चुप रहने से तो अच्छा ही था। आखिर उसने कुछ कहा तो। बोली, "जब बड़ी दुनिया की सभावनाए सामने थी, तब मैंने उसपर अपनी छोटी-सी दुनिया न्योछावर कर दी थी पर जब कही कुछ नही है, तो मुझे अपनी दुनिया को भी देखना है। इसके अलावा तुम यह भी तो सोचो कि तुम्हारे पिताजी कितने अकेले पड़ गए है, यदि तुम्हारी बहू आ जाएगी तो शायद उनका दिल कुछ बहल जाए—"

"क्या उनकी और बहुए नही है? यदि उनसे दिल नही बहला तो एक और बहू से क्या बहलेगा?"

ऊषादेवी ने कहा, "तुम्हारा कहना ठीक है, पर गृहस्थी के काम ऐसे ही होते हैं। साल-छः महीना उम्मीद मे और नई बहू की आव-भगत आदि मे कट जाएगा, तबतक सम्भव है कोई और बात पैदा हो जाए।"

इसपर राजेन्द्र ने कुछ नही कहा। वह बात बढाना नही चाहता था।

इतना वह जानता था कि वह इस समय विवाह-बन्धन में पड़ने के लिए तैयार नही है। उसकी हालत उस पहलवान की तरह थी, जो कई पकड करने पर ही तृप्त होता है पर यहा तो एक ही पकड हुई थी और सो भी बीच ही मे छुडा दी गई। उसने इस आन्दोलन मे एक आदर्शवादी युवक के रूप मे कदम रखा था। सोचता था सग्राम दीर्घ होगा और यदि दीर्घ नही हुआ तो कम से कम उसका कुछ परिणाम निकलेगा, पर यहा तो जो कुछ भी हुआ था, वह सभी दृष्टियो से बहुत निराशाजनक था। यहां तो वैसी ही हालत थी कि अभी हाथ की मेहदी सूखी भी नही थी और माग का सिन्दूर लुट गया।

उसने अधीरता के साथ उठते हुए कहा, "मा, तुम परेशान मत हो, फिर बात करेंगे।"

पर मा की इन बातो से राजेन्द्र को इस बात से कही अधिक परेशानी हो ही थी कि जो लोग चौरीचौरा के बहाने पर आन्दोलन स्थगित किए जाने से ासन्तुष्ट थे, उनमे से एक बहुत बडा और प्रभावशाली तबका कौंसिल-प्रवेश का ारा देने लगा था। पहले तो राजेन्द्र इस प्रवृत्ति को बिल्कुल समझ नहीं पाया, ार जब उसने देखा कि बगाल के चित्तरजनदास और उत्तर भारत के मोतीलाल ाहरू ने इसका समर्थन किया, तो उसका मन डावाडोल हो गया और तरह-तरह के विचार उठने लगे, पर वह किसी नतीजे पर नही पहुच सका।

उसको कोई रास्ता बताने वाला भी नही था। जो लोग उसके साथ काम कर चुके थे, उन सभी की हालत उसी जैसी हो रही थी। कोई स्पष्ट मार्ग देखाई नही पडता था। उसने तथा उसकी तरह के हजारो लोगो ने, जो केवल ावेश मे राष्ट्रीय आन्दोलन के साथ हो गए थे, महात्मा गाधी को ही एकमात्र ेता के रूप मे देखना सीखा था, और गाधी जी इस समय जेल के अन्दर बन्द े। उनके प्रमुख अनुयायी दो आवाजों से बाते कर रहे थे। एक व्यक्ति को ेता मानने की यही असुविधा होती है!

यदि इस समय श्यामा होती, तो राजेन्द्र अपने विचारों को खुलकर उसके ामने रख सकता था, पर श्यामा का तो कुछ पता ही नही था या जितना ाता था, उससे राजेन्द्र का मन और उलझन मे पड जाता था। चारो तरफ बेखराहट ही बिखराहट दिखलाई पड रही थी। इस भुरभुरी मिट्टी में कही पैर जमाने की स्थिति नही मालूम होती थी।

२

जब महात्मा गाधी ने असहयोग आन्दोलन एकाएक स्थगित कर दिया था, तो एक बार ब्रिटिश राजनीतिज्ञो ने अपनी आखो और कानो पर विश्वास नही किया था। हर क्षेत्र मे जनता की शक्ति इतनी बढ रही थी कि पीछे हटते-हटते ब्रिटिश सरकार की पीठ दीवार से लग चुकी थी। लोगों मे बहुत ज़बर्दस्त क्रान्तिकारी जोश था। ब्रिटिश सरकार ने १८५७ के बाद भारत की आत्मा को कुचल दिया था, उसके बाद झूठा इतिहास और हर बात की झूठी व्याख्या करके कुचलने की प्रक्रिया को बराबर जारी रखा गया था। अवश्य जब-तब, जहा-तहा, इक्की-दुक्की क्रान्तिकारी घटनाएं हुई थी, १९१४–१८ के महायुद्ध के समय ये चिनगारिया कई बार विस्फोट करने लायक शक्ति एकत्रित कर चुकी थीं, फिर भी उनसे ब्रिटिश सरकार को कुछ सामयिक हानि भले ही पहुचती रही हो, कई ठोस हानि नही पहुच पाई।

बात यह है कि जनता मे ब्रिटिश सरकार की धाक पूरी तरह जमी हुई थी, पर इस आन्दोलन ने ब्रिटिश सिंहासन की जडो को हिला दिया था। जिस किसी क्षण साम्राज्यवाद की अट्टालिका धराशायी हो सकती थी और उसके साथ ब्रिटिश शासन का जनाजा निकल सकता था। कम से कम स्मिथ, जानसन आदि अफसरों को ऐसा ही मालूम होता था—यद्यपि मजे हुए साम्राज्य भक्त होने के कारण वे कभी इस बात को मुह पर नही लाते थे, यहा तक कि अपनी स्त्रियों से भी ऐसी बात नही कहते थे। सच तो यह है कि उन दिनो बहुतो ने अपने परिवारो को विलायत भेज दिया था। वे अपने को सम्पूर्ण रूप से युद्धक्षेत्र मे समझ रहे थे।

उन्हे ज़रा भी आशा नही थी कि आन्दोलन इस प्रकार उसके महान् नेता के द्वारा ही बन्द कर दिया जाएगा। जब वाकई बन्द कर दिया गया, तो जैसे जेल मे बैठे हुए जवाहरलाल आदि गाधी जी की बात समझ नही पाए, वैसे ही स्मिथ आदि भी सारी बातें समझ नही सके। वे रहस्यवादी ढग से तर्क करने के आदी नही थे, वे यही समझ रहे थे कि गाधी जी के द्वारा प्रतिपादित सत्य और अहिंसा ढोंगमात्र है; अधिक से अधिक एक बुद्धिमत्तापूर्ण पेच है, पर

गाधी जी अपने सिद्धान्तो के लिए इतनी दूर तक जा सकते है, जीती-जिताई लडाई को बन्द कर सकते हैं, इसकी उन्हे कल्पना मे भी शका नही थी।

पहली बार ज्योही उन लोगो ने समझ लिया कि हा आन्दोलन सचमुच स्थगित हो गया है, तो उनके अन्दर एक आश्वासन और उल्लास की लहर दौड़ गई, पर वह लहर अपने तर्कसगत परिणाम तक नही पहुच सकी, जिस रहस्यमय ढग से आन्दोलन स्थगित किया गया था, उसमे बहुत अधिक इतमीनान की गुजाइश नही थी। जो बुद्धि के विरुद्ध ढग से अनुकूलता कर सकता है, वह न जाने कब प्रतिकूलता कर जाए। इसलिए वे आश्वस्त नही हो सके। कुछ दिनों तक उनमे किकर्त्तव्यविमूढता बनी रही।

पर जब लन्दन के आदेशानुसार गाधी जी गिरफ्तार कर लिए गए और एक चिडिया ने भी पर नही मारा, तब इन लोगो को पूरा विश्वास हो गया कि हां अब भूत उतर चुका है। वे फिर से क्रियाशील हो गए।

जिस बात से ब्रिटिश साम्राज्यवाद को १९२१ के जमाने मे सबसे अधिक कष्ट पहुचा था, वह थी हिन्दुओ और मुसलमानो की एकता। यो तो १९२१ मे भी इन लोगो ने इस एकता को समाप्त करने का षड्यन्त्र किया था, पर उस समय जनता का क्रान्तिकारी जोश इतना बढा हुआ था कि वे उसमे बिलकुल असफल रहे। पर अब अच्छा मौका था।

खानबहादुर मुशी इबादत हुसेन, खानसाहब मजर अली आदि मुसलमान नेता स्मिथ के बगले पर इकट्ठे हुए। स्मिथ ने आन्दोलन बन्द होने का सारा श्रेय ब्रिटिश सरकार को देते हुए कहा, "हम जानते हैं कि आप लोगो मे से कुछ लोगो का विश्वास ब्रिटिश साम्राज्य की ताकत से उठ गया था। ऐसा होना स्वाभाविक भी है क्योकि जब चारो तरफ सारी परिस्थितिया हमारे विरुद्ध जाती हो, तो अविश्वास ही पैदा होता है। पर आपने देख लिया कि किस खूबी से सारा काम हुआ। आप लोग बराबर कहते थे कि गाधी को गिरफ्तार करो पर लन्दन मे बैठे हुए हमारे नेता कुछ और ही सोच रहे थे। वे यह समझ रहे थे कि इस आन्दोलन को उसीके हाथो से बन्द करना है जिसने इसे शुरू किया, और ऐसा ही हुआ। आपने देखा कि ऐसी परिस्थिति पैदा हो गई कि उनकी यह इच्छा पूरी हो गई।"

इबादत हुसेन ने इसका यह निष्कर्ष निकाला कि चौरीचौरा मे जो हत्या-

काण्ड हुआ था, जिसके फलस्वरूप गाधी जी ने आन्दोलन स्थगित कर दिया था, वह ब्रिटिश कूटनीति का ही परिणाम था। उन्होने बाग-बाग होकर कहा, "जब चौरीचौरा वाली वारदात हुई, तभी मै समझ गया था कि इसमे कोई चाल है, नही तो भला गोरखपुर जिले के देहातियो की क्या मजाल कि पुलिस वालो को घेरकर मार दे "

स्मिथ के कहने का हरगिज यह मतलब नही था, पर जब उसने देखा कि उसकी बातो का यह अर्थ लगाया गया, साथ ही उसने देखा कि ऐसा अर्थ लगाने से ब्रिटिश कूटनीनि की साख कुछ बढती ही है, घटती नही, तो उसने हसते हुए कहा, "मैं तो इस साम्राज्य का एक छोटा-सा पुर्जा हू, सारी बातो को न तो मैं जानता हू और न समझने का दावा करता हू, फिर भी मैं इतना तो जानता ही हू कि गाधी यो कब्जे मे आने वाला नही था। जिसके साथ जो पेच चल जाए, वही पेच उसके लिए मुनासिब होता है। कोई न कोई पेच तो काम आता ही है, पर दुश्मन को समझने मे भी और वह किस पेच से काबू मे आएगा, यह जानने मे कुछ देर तो लगती ही है।"

मंजर अली इसी साल की पहली तारीख को खानसाहब बने थे, वे और भी दूर की कौडी लाने के लिए बोले (क्योकि वे इबादत हुसेन से पीछे रहना नही चाहते थे) "मैं तो इससे भी एक कदम आगे जाता हू। सारी बातो को देख लेने के बाद अब मेरा ख्याल ऐसा बैठता है कि यह महात्मा ही ब्रिटिश डिप्लोमेसी की उपज है। १९१४–१८ की लडाई के दौरान मे और उसके बाद सारी दुनिया मे बेचैनी और बदअमनी की लहर फैली, उससे न जाने कौन-कौन-से मुल्क कहा से कहा पहुच गए। जारशाही खत्म हो गई, न जाने कितने इन्कलाब हुए। हिन्दुस्तान मे भी बदअमनी फैली। उसी सारी बदअमनी को जज्ब करने के लिए गाधी मानो एक सोख्ता बन गए। आखिर वे जाते तो कहा जाते, ब्रिटिश एजुकेशन की उपज जो थे।"

स्मिथ यह समझ नही सका कि मजर अली ये सारी बाते महज खुशामद मे कह रहा है या कि ये उसके हृदय के उद्गार है। बात यह है कि मंजर अली बहुत अच्छे वकील थे और बडे बुद्धिमान समझे जाते थे। अमन सभा मे उन्होने बहुत काम भी किया था। इसलिए स्मिथ ने विषय बदलते हुए कहा, "जो कुछ भी हो, अब जरूरत इस बात की है कि आगे जनता इस तरह बहकाई न जा

सके, इसकी व्यवस्था होनी चाहिए। यह सच है कि इस
गई, हमने गाधी को भी जेल मे कर दिया और अब शाय
बाहर भी न निकले, पर यहा जनता की बौद्धिक सतह इतनी
भी वक्त कोई भी दूसरा गाधी खडा होकर उसे गुमराह
हमे इस बात की तैयारी रखनी होगी कि ऐसी शक्तिया फि र न उठा
सके।"

इबादत हुसेन ने कहा, "सो तो मेरा ख्याल यह है कि अब इस तरह के लोग सौ-पचास साल तक सिर उठा नही सकेंगे। आपको याद होगा कि जब गाधी ने पहले-पहल तरके-मवालात (असहयोग) का नारा दिया तो माडरेट नेताओ ने यह साफ चेतावनी दी थी कि ऐसी तहरीक इसलिए नही उठानी चाहिए कि अगर यह नाकामयाब रही, तो सौ साल तक सब तरह की तहरीक बन्द हो जाएगी, जैसा कि गदर के बाद हुआ था। गलत काम का नतीजा गलत होना ही था।

स्मिथ ने कहा, "हम लोग संसदीय पद्धति मे विश्वास करते हैं। आप लोगो ने तो ब्रिटिश इतिहास पढा है, स्वय इग्लिस्तान मे ससद के हाथो मे ताकत एक दिन मे नही आई, बल्कि धीरे-धीरे आई, इसी तरह हम चाहते है कि हिन्दुस्तान मे भी लोग धीरे-धीरे उन्नति करे। अभी यो स्वराज्य की बात करना आसान है, पर मान लीजिए कि हम अग्रेज यहा से एकाएक चले जाए, तो देश की परिस्थिति क्या होगी? आप लोग क्या सोचते है, पता नही, पर मैंने भारत का जो थोडा-बहुत इतिहास पढा है, उससे मेरा यह विचार पक्का हो गया है कि भारत मे ब्रिटिश साम्राज्यवाद का मिशन दूसरे देशो के मिशन से कही बडा और बढकर है। यहा के लोगो मे केवल वैज्ञानिक सभ्यता के प्रचार करने का कार्य ही नही, बल्कि देश को एक करने का कार्य हमे ही मिला है। एक रूप मे भारत कभी इतना बडा नही था, जितना कि वह आज है। यहा पर हमारा टिका रहना इस दोहरे कर्त्तव्य को अंजाम पहुचाने के लिए ज़रूरी है।"

स्मिथ इसी लहजे मे कुछ बाते कह गया, फिर उसने एकाएक विषय बदलते हुए कहा, "हम इस बात को जानते हैं कि हमे एक न एक दिन यहा से जाना ही है। १८३५ मे मेकाले भी इस बात को जानते थे। उन्होने स्पष्ट रूप से लिखा था कि अग्रेजी शिक्षा के फलस्वरूप लोगो मे स्वतन्त्रता-सम्बन्धी विचार फैलेंगे,

काण्ड हुआ अनिवार्य है। फिर भी उन्होने लिखा था कि हमे शिक्षा का प्रचार था।। चाहिए। जान स्टुअर्ट मिल और बिन्थम, साथ ही ब्रिटिश इतिहास को पढकर स्वतन्त्रता प्राप्त करने की इच्छा करना बिल्कुल अनिवार्य है। हम उसके लिए तैयार भी हैं।"

अब तक मुसलमानो मे केवल दो ही व्यक्ति बोल रहे थे, अब प्रिंसिपल अहमद बेग ने जरूरी समझा कि वे भी कुछ कहे। वे बोले, "आपने जो कुछ कहा उसकी एक-एक बात सही है। अगर हम अपनी पचास साल की तवारीख देखें तो पता लगेगा कि हमने हर दस साल मे कुछ न कुछ पाया है और हम उम्मीद करते है कि जब हम इस काबिल हो जाएगे तो हमे साम्राज्य के दूसरे देशो की तरह डोमीनियन स्टेटस से महरूम नही रखा जाएगा।"

स्मिथ मानो इसीकी प्रतीक्षा कर रहा था कि कैसे अपनी बात कहे। उसने बडे जोश के साथ कहा, "हम इस सम्बन्ध मे बहुत ही न्यायपूर्ण विचार रखते हैं"—कहकर उसने आवाज धीमी कर दी और चारो तरफ देखकर बोला, "हम तो यह सोचते है कि हमे हिन्दुस्तान का साम्राज्य मुसलमानो के हाथ से मिला था, इसलिए हम जाते वक्त इसे उन्हीको सौप जाए। अवश्य हमे पूरा विश्वास है कि उस समय तक लोकतन्त्र लोगों की नसो मे इस तरह समा गया होगा कि जो भी आदमी बादशाह बनाया जाए, वह वैधानिक बादशाह होगा जैसा कि इग्लैण्ड मे है। पर यह आपकी निजी बात है, हम इसमे पडना नही चाहते।"

मजर अली इस बात से बहुत ही खुश हुए। उन्होने कहा, "होना तो यही चाहिए। हम रोजमर्रे की जिन्दगी मे इसीको माकूल मानते है और कोई वजह नही कि सियासत के मामले मे भी यह दयानतदारी बरती क्यो न जाए। अगर ऐसा हुआ तो हमारे बुजुर्गों का वह ख्वाब पूरा हो जाएगा कि कुस्तुन्तुनिया से लेकर कलकत्ता तक इस्लाम का ही झंडा फहराएगा।"

स्मिथ बोला, "दिल से तो हम यही चाहते है, जो आपने कहा क्योकि हमारे मजहब कितने भी अलग हो, ईसाइयत और इस्लाम दोनो एक ही सर-जमीन मे पैदा हुए, एक हद तक दोनो एक ही विचारधारा और पुराण पर पले, इसलिए हम इस्लाम को अच्छी तरह समझते हैं, पर सवाल तो यह है कि हम तो देने को तैयार हैं, पर लेने वाला हाथ भी तो तैयार हो। हम आपको

जब पावर सौपने के लिए तैयार होगे, तब आपकी तरफ से यह आवाज़ आई कि नही हमे पावर नही चाहिए, काग्रेस को दीजिए, तो उस हालत मे हम क्या करेगे ?"

उपस्थित सब लोगो ने स्मिथ साहब को यह विश्वास दिलाया कि ऐसा कभी नही होने का, गाधी ने खिलाफत का नाम लेकर मुसलमानो को एक बार बेवकूफ़ बना दिया, पर आगे वह ऐसा नही बनेगे।

इसी प्रकार स्मिथ ने हिन्दू नेताओ को बुलाकर भडकाया। उस समय वह बिल्कुल दूसरा आदमी बन गया। बोला, "ईसाइयत के मध्ययुग का सारा इतिहास ही इस्लाम के विरुद्ध लड़ने का इतिहास है। हमारे क्रुसेड या धर्मयुद्ध मुसलमानो के विरुद्ध ही थे। यहूदियो के विरुद्ध मुसलमानो ने जो अन्याय किया उसे हम भुला नही सकते। भारत मे भी बहुत थोडे-से मुसलमान आए, पर उन्होने तलवार के जोर पर हिन्दुओ को नीचा दिखाया और आज तो भारत के मुसलमान हिन्दुओ के लिए एक समस्या ही है। क्योकि उनकी निगाह हमेशा भारत से बाहर रहती है, उन्हे भारत के कल्याण से कोई मतलब नही।"

इन दिनो केवल स्मिथ ही क्यो इस तरह सैकडो स्मिथ, जानसन, टेगर्ट और सिम्पसन भारत भर मे अपनी विषाक्त विचारधारा फैला रहे थे। यह प्रतिक्रिया का युग था। जो आन्दोलन हुआ था उससे कोई दिखाई पडने वाला ठोस लाभ नही हुआ था, बल्कि दिखाई यही पड रहा था कि न जाने यह सघर्ष आयरलैण्ड की तरह कितने सौ वर्ष तक चले। इसलिए ऐसे भेद-भाव के विचार बहुत जोरो से फैलने लगे। चारो तरफ छोटे-मोटे साम्प्रदायिक दगे शुरू हो गए। मुल्तान मे बहुत भारी दंगा हुआ। ऐसा मालूम हुआ जैसे साम्राज्यवाद का सिंहासन भले ही थोड़ी देर के लिए हिल गया हो, पर उससे कोई स्थायी हानि नही हुई, बल्कि शायद कुछ लाभ ही हुआ क्योकि लोगो को यह देखने का मौका मिला कि एक बहुत बडी अधी आई, पर उसके बाद फिर शान्ति, पहले से कही अधिक शान्ति व्याप्त हो गई।

३

जो लोग जेल गए थे, वे बराबर अपनी-अपनी सजा काटकर छूटते जा रहे थे। यहा तक कि एक दिन आनन्दकुमार भी छूट गए। उनको लेने के लिए उनकी पत्नी रूपवती, राजेन्द्र और श्यामा भी मौजूद थी। राजेन्द्र ने बहुत दिनो के बाद श्यामा को देखा। वह समझ नही पाया कि किस प्रकार से उससे मिले, पर रूपवती की मौजूदगी ने उसको साहस दिया। यद्यपि स्वय रूपवती भी श्यामा को देखकर घबडाई, कम से कम खुश नही हुई।

रूपवती जानती थी कि आनन्दकुमार श्यामा के मामले मे उससे अप्रसन्न थे क्योकि वह श्यामा को अपने यहा रख नही सकी थी। ये सारी बातें उसके मन मे एक मुहूर्त के अन्दर कौध गईं। उसने विरुद्ध दिशाओ से आने वाले दोनो का फीकी हंसी से स्वागत किया। राजेन्द्र ने इस मौके पर राजनीतिक बातचीत चलाने मे ही अपनी भलाई समझी, बल्कि सच बात तो यह है कि उसके मुह से स्वतः राजनीति सम्बन्धी बात ही आ पडी। बोला, "जब आनन्दकुमार जी जेल गए थे, तब कैसी परिस्थिति थी और अब कैसी परिस्थिति है। उस समय हर एक बात किस तरह आशाप्रद ज्ञात होती थी और अब तो कही कोई आशा की किरण दिखाई नही देती, जैसे राष्ट्र की जिन्दगी पर एक काली चादर की तह पड़ गई हो।"

रूपवती समझ नही पाई कि इसपर वह क्या कहे, पर जो बात कही गई थी वह केवल राजनैतिक क्षेत्र पर ही नही बल्कि उसके निजी जीवन पर भी लागू होती थी। रूपवती को इसीकी अधिक फिक्र थी। १९२१ के क्रान्तिकारी वातावरण मे वह भी थोडी देर के लिए किसी अज्ञात व्यक्ति के हाथो की कठपुतली बनकर अपनी गृहस्थी की चहारदीवारी से निकल आई थी, वह निकलना उसे अच्छा भी लगा था; ऐसा मालूम होता जैसे सारे बन्धन टूट गए थे और एक उच्चतर जगत का सिंहद्वार उसके लिए खुल गया था। पर वह अलौकिक भावना उसके जीवन मे बहुत ही क्षणस्थायी रही। वह तो एक सन्तान की भूखी माता मात्र थी जो राजेन्द्र की ओर जाने कौन-सी मरीचिकामयी आशा लेकर दौड़ पड़ी थी, पर थोडे ही समय मे उसने अनुभव किया था कि सन्तान

मिलनी तो दूर रही, उसके छोटे-से घर की शान्ति भी, यानी जिसे वह शान्ति समझने की अभ्यस्त थी, विध्वस्त हो गई थी। उसका पति जो अबतक या तो उसका था या उन पुस्तको के ढेर का था, जिनके प्रति वह कितनी भी ईर्ष्या का अनुभव करे, वे उन्हे घर से बाहर नही ले जा सकती थी, पर अब वह पति भी उससे छिन गया है। कम से कम वह दूर हो गया है, इसमे कोई सन्देह नही। वह पुस्तको मे डूबा रहता था, तो उसमे अपनी पत्नी के विरुद्ध कोई शिकायत तो नही थी, पर अब'' ।

यद्यपि तीनो की आख जेल के फाटक की ओर लगी हुई थी, पर अभी एक जेल-कर्मचारी एक तरह से चुपके से ही यह बता गया था कि अभी उनके छूटने मे कुछ देर लगेगी, क्योकि कई तरह की खानापूरिया करनी पडती है, जिनमे देर लग ही जाती है। रूपवती ने जेल के फाटक की ओर देखते हुए श्यामा से कहा, "तुम जबसे गई, तबसे तुम्हारी कोई खबर नही मिली ' ।"

उसने यह बाते स्थिति की थाह लेने के लिए और यदि हो सके तो उसे सुधारने के लिए कही। श्यामा ने कुछ झेपकर उत्तर दिया, "मैं बराबर चाचाजी से पत्र-व्यवहार करती रहती हू।"

दोनो श्रोताओ के लिए यह खबर एक बम की तरह थी। वह पत्रो मे क्या लिखा करती थी? उधर से क्या उत्तर आता था। रूपवती का चेहरा उसके अनजान मे ही कडा पड गया। बोली, "हू" फिर सोचकर बोली, "ऐसा मालूम होता है कि उनके छूटने मे घटा दो घटा लग जाएगा।"

राजेन्द्र श्यामा से कुछ पूछना चाहता था, पर क्या पूछे और किस प्रकार पूछे यह उसकी समझ मे नही आ रहा था। उसके मा-बाप ने श्यामा को उसके लिए वधू चुना था, बाद को विचारो की एकता के कारण इसपर और ठप्पा लग गया था, पर जब श्यामा घर छोड़कर यहा तक कि रूपवती का घर छोडकर पता नही त्रिलोचन के यहा या किसके यहा रहने लगी, तब फिर ऊषादेवी ने ही राजेन्द्र को यह लिख भेजा कि अब वह सम्बन्ध तोड दिया जाए और राजेन्द्र ने उसे मान भी लिया था। कैसे यह सब हुआ, यह राजेन्द्र की समझ मे नही आ रहा था, फिर भी इतना तो स्पष्ट ही था कि जो कुछ हो चुका, हो चुका। उसमें पीछे लौटने की कोई गुजाइश नही मालूम होती थी। राजेन्द्र को इस समय की यह स्थिति इतनी अखर रही थी कि उसे अफसोस हो रहा था कि वह क्यो आया?

पर उसे मालूम कब था कि श्यामा भी यहां आ रही है। उस हालत में वह आता भी तो सोच-समझकर आता। रूपवती की उपस्थिति की वजह से यह भी सम्भव नही था कि खुलकर दो-दो बातें हो जाएं।

उधर यही बात रूपवती के मन मे भी आ रही थी, वह आनन्दकुमार के छूटने के पहले श्यामा से एक समझौता और हो सके तो पुर्नमिलन कर लेना चाहती थी, पर राजेन्द्र की उपस्थिति उसमे बाधक थी। अकेले मे किसीके निकट झुकने मे कोई हेठी नही जान पडती, पर राजेन्द्र के सामने यह असम्भव था। फिर भी कुछ बात तो करनी ही थी, बोली, "मुझे तो वे कुछ लिखते ही नही, अब वे छूटने के बाद क्या करना चाहते है, क्या फिर से राजनीति करेंगे या लिखेंगे-पढेंगे ?"

रूपवती ने तानने को तो यह प्रश्न तान दिया, पर जब वह पूछ चुकी, तो उसे इस प्रश्न मे अन्तर्निहित अपनी बेचारगी स्पष्ट हो गई। उसीका पति और वह उसके सम्बन्ध मे दूसरे से प्रश्न पूछकर स्थिति का पता लगा रही है। स्वय उसे ही यह प्रश्न बहुत अजीब लगा क्योकि इसमे एक तरह से अपनी हीनता की स्वीकृति भी थी।

श्यामा ने एकाएक इस प्रश्न का उत्तर नही दिया, बोली, "उनका तो कहना है कि गाधीयुग मे सारे भारतीयो का जीवन ही राजनीतिमय बन चुका है। उससे निष्कृति नही है। इस युग मे जो क्रियात्मक रूप से कुछ नही करता, वह एक तरह से हमारी विरोधी शक्तियो का साथ देता है।"

श्यामा ने जो बात कही, उसका क्या मतलब लिया जाए, यह रूपवती अभी सोच ही रही थी कि उसने देखा कि जेल का बडा-सा फाटक खुल गया, सन्तरी ने बन्दूक उठाकर सलामी दी और जेल का गोरा अधीक्षक फाटक के अन्दर दाखिल हुआ। उसके भीतर जाते ही फाटक जैसे अपने आप बन्द हो गया और सन्तरी पहले से अधिक मुस्तैद होकर फाटक के सामने टहलने लगा।

श्यामा को वह घडी याद आई जब वह राजेन्द्र की मुक्ति के दिन यही पर लगभग इसी समय आई थी। न जाने वह कितने अरमान लेकर आई थी, पर किस तरह चोर की भाति लौट गई थी। फाटक खुलने के पहले उसे वह बात याद भर आई थी, लेकिन उसमे कोई चुभन नही थी, पर पता नही अब वह बात याद आने पर उसे बुरी तरह क्यो खली। अवश्य उसने कुछ कहा नही

शायद उसके माथे पर एक शिकन आई और चली गई। उसने मन ही में कहा, "अच्छा ही हुआ। यदि उसकी गृहस्थी बन जाती तो उससे कौन-सा बड़ा काम हो जाता? देश मे जो करोड़ों गृहस्थियाँ हैं, उनमे एक गृहस्थी और बढ जाती। सागर मे एक गागर पानी और पड जाता, न पडा तो क्या? यह तो वह समय है जब कि घरो की बजाय जेलखाने ही बसने चाहिएं।"

उसे याद आया कि अन्तिम पत्र मे आनन्दकुमार ने लिखा था, "तुम तो खुशिया मना रही हो कि मैं अमुक दिन छूटने वाला हू, पर मेरा मन खुश नही है। मै मानता हू कि ऐसे समय मे जब इस अन्धकार मे कोई रास्ता निकालना चाहिए, जेल मे बैठे रहना कायरता है, पर यह भी सोचता हू कि क्या मनुष्य कुछ कर सकता है? हम कुछ कर रहे है या हम किसी अज्ञात शक्ति के हाथों के खिलौनेमात्र हैं? करना तो कुछ चाहिए, पर क्या करना चाहिए? कुछ लोग कह रहे हैं कौंसिलो मे चलो और उसे 'मेन्ड' या 'एन्ड' करो यानी उसे सुधारो या तोड़कर रख दो। दूसरे कह रहे हैं—रचनात्मक कार्य करो। सच कहता हू मैं छूटने से खुश नही हू।"

इसके उत्तर मे श्यामा ने लिखा था, "आपने जो गाडियो पुस्तकें पढ़ रखी है, उनका बोझ कभी-कभी आपको नीचे की ओर दबाता है। करना तो कुछ है ही। मनुष्य करेगा नही, तो कौन करेगा? महात्मा गाधी तो भीतर हो गए। अब वे तो हमे मार्ग दिखाने से रहे। ऐसे समय मे महात्मा जी का हमसे छिन जाना क्या यह सूचित नही करता कि अब वह समय आ गया है, जब प्रत्येक व्यक्ति अपने लिए आप सोचे..."

श्यामा ने लिखने को तो जोश मे ये बातें लिख दी थी, पर जेल के फाटक के सामने खडी होकर उसे ऐसा प्रतीत हो रहा था कि उसने जो कुछ लिखा, उसका कोई मतलब नही होता। यह किसी एक आदमी का काम तो है नही, जो अकेला कोई कुछ करे। ऐसे समय जेलखाने मे रहना सब झंझटो से बचना है। तो क्या महात्मा जी इसी कारण...? नही, नही, नही।

राजेन्द्र कुछ कहने को बेताब हो रहा था, बोला, "यह ऐसी राक्षसी पद्धति है कि छोडकर भी नही छोड़ती। कितना समय लगा दिया।"

श्यामा ने इसका उत्तर देते हुए एक हद तक स्वतन्त्र रूप से कहा, "क्या

पर उधर जो कैदी बैठे हैं, रिहा होने वाले हैं, वे भी हमारी तरह सोचते हैं कि नही ।"

रूपवती को यह बात बहुत बुरी लगी । क्या यह एक तरह से उसकी निन्दा नही थी ? बोली, "इसके माने ये हुए कि जेल मे बने रहना ही एक जादू-टोना है, जिससे स्वराज्य हो जाएगा । अजीब मनोवृत्ति है ।"

श्यामा ने जो कुछ कहा था, उसे उसने चुनौती के रूप मे नही कहा था। फिर भी जब वह उस रूप मे लिया गया तो उसे कुछ अफसोस नही हुआ । बोली, "जेल मे बने रहना कोई पुरुषार्थ तो नही है, पर बाहर बने रहने से अधिक पुरुषार्थ है, इसमे कोई सन्देह नही क्योकि जेल मे बने रहना कम से कम यह तो सूचित करता है कि आदमी ने लगर तोड नही दिया और अपनी नाव को आधियों पर छोड़कर हाथ बाधकर बैठ नही गया है । जेल मे रहने वाले राजनीतिक कैदी का कुछ न करना भी सग्राम की लौ को जीवित रखता है ।"

राजेन्द्र एकाएक बोल पडा, "यह अजीब विचार है ।"

श्यामा बोली, उसके स्वर मे अबकी बार स्पष्ट चुनौती थी, "हा, यह विचार अजीब है, मैं बिलकुल अजीब हू, इसलिए जो लोग अजीब नही है, उनसे मेरी न तो बनी न बनेगी ।"—कहकर वह दो-तीन कदम जेल के फाटक की ओर बढ गई मानो वह दिखाना चाहती हो कि उसकी स्वाभाविक गति किस ओर है ।

रूपवती ने बीच-बचाव-सा करते हुए कहा, "आजकल सारी दुनिया ही अजीब हो रही है । पहले की मान्यताए अब कहा रही ? मैं तो देखती हू साल भर के अन्दर क्या से क्या हो गया ।"

रूपवती के वचनो ने आए हुए बादलो को एक हद तक उडा दिया । राजेन्द्र कुछ नरम पडता हुआ बोला, "यह बात सही है । मैं अपने परिवार की ओर देखता हू तो सभी लोगो को बदला हुआ पाता हूं ।"

मालूम होता है श्यामा पर इसका कोई विशेष असर नही पडा, बोली, "पर बदलना स्वय मे कोई गुण नही है ।"

इसपर किसीने कुछ नही कहा । राजेन्द्र समझ गया कि चोट उसीपर है, उसे अपने बचाव में कहने लायक या तो कुछ मिला ही नही या कुछ कहने की इच्छा ही नहीं हुई ।

रूपवती ने राजेन्द्र से कहा, "तुम जाकर पता क्यों नहीं लगाते कि छूटने में क्या देर है ? समझ में नही आता कि जब छोडना ही है तो जल्दी क्यों नहीं छोडते हैं ?"

राजेन्द्र समझ गया कि उसे यहा से हट जाने का इशारा किया जा रहा है। वह भी यही चाहता था क्योकि या तो खुलकर बातचीत होती या बात बन्द हो जाती। इस तरह बात करने से कोई लाभ नही है। वह फाटक की ओर चला गया और सन्तरी से बात करने के बाद फाटक के ऐन भीतर चाभी वाले जमादार से कुछ पूछने लगा।

रूपवती ने मौका पाते ही श्यामा से पूछा, "क्या तुम राजेन्द्र से बहुत दिन बाद मिल रही हो ?"

श्यामा बोली, "हा। उनके छूटने के बाद मैं उनसे मिली ही नहीं।"

"क्यो ?"

"मुझे पहले ही मालूम हो गया था कि मिलना व्यर्थ है"—कहकर उसने पूरी बात बताते हुए कहा, "मैं राजेन्द्र जी के छूटने के दिन जेल के फाटक पर आई थी, पर मुझे आनन्दकुमार जी से एक पत्र मिला, जिसके कारण मैं उनसे बिना मिले ही चली गई।

"अच्छा यह बात है !" रूपवती ने कुछ आश्चर्य और कुछ कडवेपन के साथ कहा। इतनी बाते होती रही, पर उसे कुछ भी पता नही चला। अजीब बात है कि सारी बातो मे आनन्दकुमार केन्द्र बने हुए थे। जिस आदमी को यह भी पता नही होता था कि उनकी खाट के नीचे क्या हो रहा है, वह अब लोगों की जिन्दगी बनाने-बिगाडने मे बहुत बडा हिस्सा अदा कर रहा है। वे करे, इसमें कोई हर्ज नही, पर उन्होने रूपवती को इतना महत्वहीन क्यों बना दिया ? आज तो यह पता ही नही लगता था कि उनके जीवन मे उसका स्थान कितना और क्या है, है भी या नही ? क्या राजनीति मे भाग लेने का यह अपरिहार्य अंग है ? बोली, "मुझे इसपर आश्चर्य नही है, राजनीति तो जैसे घरो को फोडने के लिए ही लोगो के जीवन मे आती है।"

"मैं यह मानने के लिए तैयार नही हू। सार्वजनिक जीवन मे पदार्पण करने से मनुष्य को अपनी सम्भावनाएं मालूम होती हैं, साथ ही उसपर दूसरो की सम्भावनाए खुल जाती हैं। मुझे राजनीति मे आने का बिल्कुल पछतावा नही

है। असली बात तो यह है कि लोग जेल मे जाते है, बड़ी-बड़ी कुर्बानिया करते हैं, पर उनको अपने वर्ग के सस्कारो से मुक्ति नही मिलती; वे जहा भी जाते है, उन्हे साथ लेकर जाते है।"

रूपवती और भी बहुत कुछ पूछना चाहती थी कि यह कौन-से संस्कार है, जिनका वह ज़िक्र कर रही है, पर उसने इतनी अन्तरग बात पूछने का साहस नही किया, यह बात तो वह खुद भी देख रही थी कि राजेन्द्र अब तिलक-स्वराज्य-फन्ड का बक्स उछालकर चन्दा मागने वाला सरल नवयुवक नही रह गया था, वह अब दावपेच की बाते करता था, अक्सर अपने त्याग का भी ज़िक्र करता था। महात्मा जी मे उसकी वह अविचल भक्ति लुप्त हो गई थी। वह था तो अब भी देश की उन्नति चाहने वाला, पर वह अपनी उन्नति भी शायद इतनी ही तीव्रता से चाहता था। रूपवती को सबसे बुरी जो बात लगी थी और जिसकी रिपोर्ट उसे कई सूत्रो से मिली थी वह यह कि यो तो आकर वह हर समय आनन्दकुमार की तारीफ करता था और उनके जेल-जीवन की सबसे ताज़ी खबर मांगा करता था, पर जेल मे उसने आनन्दकुमार को मामूली कैदियो को दिया जाने वाला व्यवहार स्वीकार करने दिया था और स्वय उच्चवर्ग के कैदियो को दिया जाने वाला व्यवहार ग्रहण करता था। रूपवती को यह बात विश्वासघात के रूप मे लगी थी और उसने छूटने के बाद राजेन्द्र को बहुत मुंह नही लगाया था। श्यामा के साथ उसने जो व्यवहार किया था वह भी उसे उसी कोटि का मालूम हुआ, पर श्यामा से वह दूसरे कारणो से नाखुश थी इसलिए वह कुछ नही बोली। श्यामा ने भी उस विषय पर कुछ नही कहा।

दोनो एक ही समय फाटक की ओर बढ़े। राजेन्द्र ने बताया कि अब रिहाई वाले पेश हैं और जल्दी ही बाहर आने वाले है।

रूपवती ने पूछा, "रिहाई वालो से क्या मतलब? क्या उनके अलावा भी कोई छूटने वाला है?"

राजेन्द्र ने समझाते हुए कहा—"हा, यह तो रोज का काम है। कुछ लोग रोज छूटते है और कुछ लोग रोज दाखिल होते हैं। छूटने का समय तो बंधा हुआ है, पर दाखिल होने का कोई समय नही है। चाहे जब भी पुलिस वाले वारन्ट के साथ किसीको भी जेल के अन्दर दाखिल करा सकते हैं।"

यों फाटक के सामने टहलने वाले सन्तरी और फाटक के बीच किसीको

खडे होने का हुक्म नही है, पर तीनों के व्यक्तित्व को देखकर और व्यक्तित्व का अर्थ गरीब सन्तरी के निकट उनके ऐश्वर्यसूचक चाल-ढाल और कपडे-लत्ते थे, उसने उनको वहा रहने दिया था। इसके अलावा समय का उसपर भी असर पड चुका था। विगत साल भर मे उसने देखा था कि बहुत-से नियम अब इन लोगो के लिए रह ही नही गए थे। न राजनीतिक कैदियो के लिए नियम थे न उनके रिश्तेदारो के लिए कोई नियम था। फैजाबाद जेल मे तो गनीमत थी, उसने तो सुना था कि लखनऊ जेल मे इतने बडे-बडे आदमी कैद थे कि वे शहर मे अकेले घूमने जाया करते थे और फिर लौट आते थे।

सन्तरी स्वय भी उन लोगो की बातचीत मे शरीक हो गया, यद्यपि उसकी आखे खिडकी वाले दरवाज़े के भीतर की ओर लगी हुई थी। उसने बताया कि वह पहले भीतर की ड्यूटी मे था, अब गारद मे आया है। वह आनन्दकुमार पर भी ड्यूटी दे चुका था।

रूपवती बोली, "वह तो कोठरी मे रहते थे न ?"

"हा, वे अपनी खुशी से कोठरी मे रहते थे और मामूली कैदियों को जो खाना मिलता है, वही खाते थे।"

राजेन्द्र को आश्चर्य हुआ कि यह बात रूपवती को कैसे मालूम है, क्योंकि उसने कभी इस बात का जिक्र नही किया था। तो उसे यह भी मालूम होगा कि वह कुछ राजनीतिक कैदियो को दिया जाने वाला विशेष व्यवहार लिए हुए था और आनन्दकुमार ने उसे ठुकरा दिया था। राजेन्द्र को यह बात बहुत बुरी लगी। शायद श्यामा को भी यह बात मालूम हो। रूपवती से तो उसे यह बात मालूम नही हुई होगी क्योकि वह रूपवती के पास आती नही थी, पर जब रूपवती को मालूम हो सकती है तो श्यामा को भी मालूम हो सकती है।

उसने चाहा कि रूपवती और श्यामा यहा से टले क्योकि पता नही यह संतरी और क्या कह जाए, पर रूपवती ने राजेन्द्र के इगित पर टलना अस्वीकार किया, बोली, "वह कोठरी मे करते क्या थे ?"

सन्तरी बोला, "उनको तो जब भी मैंने देखा कुछ पढते ही देखा। कोई न कोई मोटी किताब उनके हाथ मे बनी ही रहती थी। हम लोग तो उन्हें कभी बन्द नही करते थे, पर वे खुद ही दरवाजा भेड़कर भीतर बैठे पढते रहते थे। हा, जब-तब बाहर निकलकर टहलते भी थे। कोई आता तो उसे दो-चार

बातो मे निपटाकर अलग हो जाते थे।"

सुनकर रूपवती की आखें नम हो गईं। कही आसू न ढुलक पडे, इसलिए उसने जल्दी से मुह फेर लिया और सतरी से दूर हट गई। पर श्यामा वहा से नही टली और उसने सतरी से पूछा, "उनको खाने के लिए क्या दिया जाता था ?"

"दोपहर को एक डब्बू दाल और छः रोटिया और शाम को भुजिया और रोटिया।"

श्यामा एक दिन के लिए परसाल जेल रह आई थी, इसलिए वह जानती थी कि जेल मे तरकारी को कटिया या भुजिया कहते है, जो ठीक ही था। खाने का विवरण सुनकर रूपवती की आखे और भी सजल हो गई और वह ठिठक-कर खडी हो गई। बात यह है कि आनन्दकुमार एक तरफ तो पुस्तक-कीट थे, पर दूसरी तरफ बड़े जबर्दस्त भोजन-रसिक भी थे। जिस प्रकार वे पुस्तको की देखभाल रखते थे उसी प्रकार से अपने शरीर की भी साज-सवार करते थे और उनका कहना था कि शरीर की सेवा मे सबसे मुख्य बात है सुस्वादु और पुष्टि-कर भोजन। यदि भोजन मन के अनुकूल नही हुआ और उसके स्वाद के कारण लार उपयुक्त मात्रा मे क्षरित नही हो सकी तो पाचन-क्रिया ठीक नही चल सकती। ये शब्द उन्हीके थे। आख बन्द करने पर रूपवती इन वाक्यो को उसी रूप मे सुन सकती थी, जिस रूप मे आनन्दकुमार उन्हे बार-बार कहा करते थे। कई मित्र इसपर आनन्दकुमार से यह कहा करते थे, "आप एक तरफ तो सर्व-धर्म समन्वय, वसुधैवकुटुम्बकम्, थियोसॉफी और जाने कौन-कौन-सी ऊची बातें करते है और दूसरी तरफ रोजमर्रा की जिन्दगी मे ऐसे चलते है, जैसे आप एपीक्यूरस या चार्वाक के अनुयायी हो।"

इसपर आनन्दकुमार खूब दिल खोलकर हसते थे और कहते थे, "सच्ची बात तो यह है कि यही लोग सही तौर पर जिन्दा रहना जानते थे।"

रूपवती ने श्यामा से कहा, "इनसे पूछो कि क्या इन्होने व्यायाम छोड दिया ?"

श्यामा ने सन्तरी से प्रश्न दोहराया, इसपर सन्तरी बोला, "वे टहलते तो खूब थे, पर मैने उन्हे कसरत करते कभी नही देखा। मेरी ड्यूटी तो छः घटे की होती थी।"

इतने मे जेल की खिडकी वाला दरवाजा खुला और आनन्दकुमार एक बालक की तरह हसते हुए प्रकट हुए।

सब लोग उनकी ओर लपके। अब रूपवती अपने आसुओ को रोक नही सकी और उसकी आखो से आसू की कई बूदे ढुलक पडी। आनन्दकुमार ने यह देखकर रूपवती की पीठ पर हाथ रख लिया और अपने स्वभावसिद्ध ढग से बोले, "सचमुच है तो रोने का ही मौका क्योकि आजादी नही मिली और जेल से छूट आए।"

श्यामा ने आनन्दकुमार का हाथ पकडते हुए नटखट ढग से कहा, "चाचाजी! यह आनन्दाश्रु है, इसे रोना नही कहते।"

इस पर रूपवती भी हस पडी।

आनन्दकुमार के लिए उनकी निजी मोटर तैयार थी। सब लोग चलकर उसमे बैठ गए और काशी के लिए रवाना हो गए।

४

आनन्दकुमार ने जब श्यामा और राजेन्द्र को एक साथ जेल के फाटक पर अगवानी करते हुए पाया तो उन्हे न जाने क्यो बहुत खुशी हुई कि शायद दोनों मे जो मनमुटाव हुआ था, वह अन्त मे दूर हो गया। पर इस सम्बन्ध में वे किसी निश्चित नतीजे पर नही पहुच सके। ज्योही मौका मिला त्योही उन्होंने रूपवती से इस सम्बन्ध मे पूछा, तो मालूम हुआ कि नही, दोनो में किसी प्रकार का समझौता नही हुआ।

रूपवती बोली, "राजेन्द्र तो जब-तब मेरे पास आता रहता था, पर श्यामा जब से हमारे घर से गई, तब से आज ही दिखाई पडी थी। मुझे तो ऐसा मालूम होता है कि दोनो मे अब कोई सम्बन्ध नही रहा और आगे भी सम्बन्ध सुधरने की कोई सम्भावना नही है।"

आनन्दकुमार के छूटने की खबर पाकर बाहर लोग मिलने आए हुए थे, इस-लिए जल्दी मे आनन्दकुमार इतना ही पूछ पाए, "आज सन्ध्या समय जब श्यामा

आएगी, तो क्या मैं उससे यहा रहने के लिए कहू ?"

"पर वह तो किसी और पथ की पथिक बन चुकी है, ऐसा मालूम होता है।"

कौन-सा पथ, यह न तो आनन्दकुमार ने पूछा और न रूपवती ने ही बतलाया। शिष्टाचार निभाते और शुभेच्छाओ का उत्तर देते-देते दिन किधर से किधर निकल गया कुछ पता नही लगा, पर रूपवती से जो थोडी-सी बातचीत हुई थी, उससे उन्होने कुछ नतीजे निकाले और जब रात के समय उनके न्योते पर श्यामा उनके घर खाने के लिए आई तो उन्होने मिलते रहने की बात तो कही, पर उसे अपने घर बुलाकर रखने की बात बिलकुल नही छेडी। राजेन्द्र भी निमन्त्रित था, पर उसने ऐन मौके पर किसी कार्यवश आने मे असमर्थता प्रकट की।

सचमुच श्यामा दूसरे ही पथ की पथिक बन चली थी। इस बीच मे अविनाश और रामानन्द अपनी-अपनी लम्बी सजाए काटकर छूट चुके थे, पर उनसे श्यामा इतनी प्रभावित नही हुई, जितनी कि वह उन्हीके जरिए परिचित बंगाल से आए हुए दो साधुओ से प्रभावित हुई। असल मे ये दोनो व्यक्ति साधु नही थे, पर काशी के हजारो साधुओ मे घुल-मिलकर पुलिस की आखो से बचने के लिए इन लोगो ने गेरुआ कपडे पहन रखे थे और रामकृष्ण मिशन के साधु लगते थे।

इन लोगो ने अपना नाम ब्रह्मचारी कुणाल और ब्रह्मचारी अमिताभ रखा था, पर इनके असली नाम कुछ और ही थे। इन लोगो ने दो कमरो का एक छोटा-सा मकान ले रखा था और उसपर हिन्दी, बगला और अग्रेजी मे कल्याणाश्रम लिखा हुआ था।

अविनाश ने श्यामा को इन लोगो के पास ले जाते हुए रास्ते मे बताया था, "ये दोनो बहुत पुराने क्रान्तिकारी हैं। प्रथम महायुद्ध के आरम्भ मे यह फौजी छावनियो मे विद्रोह का प्रचार करते रहे, बडे विद्वान और सुलझे हुए है, सबूत न मिलने के कारण नजरबन्द किए गए थे और १६१६ मे छोड दिए गए थे।"

श्यामा ने पूछा, "तब से ये क्या कर रहे थे ?"

"इनमे से एक यानी ब्रह्मचारी अमिताभ ने बाहर आते ही अपने को

असहयोग आन्दोलन मे डाल दिया पर कुणाल जी चुपचाप पड़े रहे।"

"क्यो ?"

"यह आप उन्हीसे पूछ लीजिएगा, पर मेरा ख्याल है कि उन्हे विश्वास नही था कि अहिंसा से कुछ हो सकता है, इसलिए वे चुपचाप पडे रहे और जब उन्होंने देखा कि असहयोग आन्दोलन उसके नेता के हाथो से ही समाप्त कर दिया गया, तो वे फिर क्रान्तिकारी सगठन करने पर जुट पडे।"

दोनो साथ-साथ चल रहे थे, पर अविनाश ने एकाएक श्यामा से कहा, "आप आगे बढिए। घर तो आप जानती ही है, मैं कुछ घूम-फिरकर आऊगा। शायद सी० आई० डी० मेरा पीछा कर रही है। मै उन्हे चकमा देकर आपसे मिल जाऊगा, और न भी मिलू तो कोई बात नही। कुणाल जी आपसे मिलेगे। उनको सब पता है।"

बात यह है कि अविनाश जेल काटकर आया था और पुलिस को यह पता लग चुका था कि वह फिर से किसी न किसी प्रकार का क्रान्तिकारी सगठन कर रहा है इसलिए उसकी निगरानी होती रहती थी। इसके अलावा आज यह तय था कि अविनाश श्यामा को कुछ दूर तक ले जाएगा, उसके बाद वह डुबकी लगा जाएगा और रामानन्द जो इस समय किसी और वेश मे होगा श्यामा पर निगरानी रखते हुए उसे कल्याणाश्रम के दरवाजे तक पहुंचते देखेगा। उसे दूर से ही ऐसा करना था, जिससे कि श्यामा न जान पाए कि उसके साथ कोई है।

श्यामा बिना किसी झिझक के कल्याणाश्रम के साइनबोर्ड वाले छोटे-से मकान मे दाखिल हो गई। कुणाल और अमिताभ बगल के कमरे मे कुछ बात-चीत कर रहे थे, उसी तरह बहस करते रहे। कुणाल कह रहे थे, "मैं मानता हू, देशोद्धार के काम मे स्त्रियो को हाथ बटाना चाहिए, पर इस आन्दोलन मे स्त्रियो को सक्रिय सदस्या बनाना कहाँ तक उचित रहेगा, इस सम्बन्ध मे मेरे मन मे कुछ सन्देह है। अब तक क्रान्तिकारी आन्दोलन मे त्याग और तपस्या का जो कठोर वातावरण रहता था, वह इससे लुप्त हो जाएगा। सम्भव है कि बहुत-से लोग रोमास खोजने की प्रवृत्ति से इसमे आए।"

अमिताभ बोले, "आप जो सन्देह कर रहे है, वह बहुत पुराना है। भगवान बुद्ध ने भी इसी तरह सन्देह किया था और आनन्द से कहा था कि जो मेरा

संघ यो हजार वर्ष चलता, वह स्त्रियो के प्रवेश की वजह से पांच सौ वर्ष चलेगा।"

कुणाल ने बीच मे टोकते हुए कहा, "यह मुझे मालूम है। मेरे मन मे उस तरह की कोई धार्मिक ढग की आपत्ति नही है, बल्कि बिल्कुल ही सासारिक ढग का सन्देह है। अभी तो हमारे दल मे जो भी आता है, वह कठोर त्यागी बनकर आता है, तब शायद लोग इतने निर्लिप्त न रह सके।"

अमिताभ घडी की ओर देखकर हसते हुए बोले, "मैं कहता हू कोई लिप्त होकर फासी पर चढ जाए, तो हमे उस पर क्या आपत्ति हो सकती है? यदि फासी चढते समय उसकी आखो के सामने भारतमाता की अशरीरी मूर्ति के पीछे कोई सशरीर रमणी हो, तो उसमे क्या हर्ज है।"

"पर यह भी हो सकता है कि भारतमाता की मूर्ति बहुत ही मद्धिम पड जाए और उसकी जगह पर नारी-मूर्ति ही रह जाए।"

अमिताभ ने चिन्तित होकर उठते हुए कहा, "ऐसा हो सकता है, पर हमे यह जोखिम उठाना पडेगा। स्त्रियो के भाग लेने से पुलिस का काम बहुत कठिन हो जाएगा। यह तो आप मानते है न?"

"मानते क्या है, हम तो बराबर मातृस्थानीय स्त्रियो और दूसरी स्त्रियो से सहायता लेते भी हैं, पर प्रश्न है सक्रिय सदस्या बनाने का।"

कहकर दोनो सहजात बुद्धि से परिचालित होकर बाहर के कमरे मे गए और वहा श्यामा को प्रवेश करते हुए देखकर वे एक दूसरे से अर्थपूर्ण ढग से दृष्टि-विनिमय करने लगे।

"कुणाल ने बिल्कुल सरल ढग से कहा, "आपके आने के उपलक्ष्य मे हम लोगो मे बडी बहस शुरू हो गई है। आपके कानो मे कुछ शब्द पडे होगे..."

श्यामा ने भी पूर्ण सरलता से कहा, "हा, कुछ शब्द तो पड़ ही गए, पर सम्भव है आप लोगो की यह बहस भी योजना के अनुसार हो..."

कुणाल और अमिताभ हसे। उनकी इस हसी का अर्थ योजनाबद्धता की स्वीकृति थी या नही यह श्यामा को मालूम नही हो पाया।

थोडी देर मे रामानन्द और अविनाश भी वहा पर आ गए और बात ऐसे चलने लगी मानो क्रान्तिकारी दल की स्थापना का प्रस्तावमात्र हो, जबकि स्थिति यह थी कि दल की स्थापना, बल्कि पुनःस्थापना हो चुकी थी और बडे

ज़ोर-शोर के साथ काम हो रहा था। अन्य लोग श्यामा को ही बोलने का अधिक मौका दे रहे थे। श्यामा ने कहा, "मैं इस नतीजे पर पहुची हू कि न तो कौसिल-प्रवेश से ही कोई लाभ होगा और न कथित रचनात्मक कार्यक्रम से। ये काम बेशक चलें, पर इनसे स्वतन्त्रता कैसे मिलेगी, यह समझ मे नही आता।"

कुणाल ने श्यामा के मन की अच्छी तरह थाह लेने के लिए कहा, "इतना बडा ब्रिटिश साम्राज्य है, जिसके सामने जर्मन कैसर हार गया, वह थोड़े-से नौजवानो के द्वारा कैसे मिटाया जा सकता है।"

श्यामा कुछ देर तक चुप रही क्योकि वह जानती थी कि वे लोग पक्के क्रान्तिकारी है और अपने क्रान्तिकारी कार्यों के लिए दीर्घकाल तक जेल मे भी रह चुके है। वे इस समय ऐसा क्यो पूछ रहे है, यह स्पष्ट था। वे यह देखना चाहते है कि उसके मन मे कोई सन्देह है या नही। स्थिति यह थी कि उसके मन मे सन्देह था। इसलिए वह बोली, "यही तो मुझे आप लोगो से पूछना है।"

जब श्यामा ने इस प्रकार हथियार डालकर आत्मसमर्पण कर दिया और उसने एक शिष्या की तरह प्रश्न किया, तब ब्रह्मचारी अमिताभ का चेहरा जोश से तमतमा गया, बोले, "हम इतना जानते है कि हमारा लक्ष्य सही है और हमने जो उपाय अपनाए है, वे भी वही है, जिन्हे दूसरे देशों ने अपनाकर स्वतन्त्रता पाई है। हम न तो कुर्बानियो से पीछे हटने वाले हैं और न इस बात से घबड़ाने वाले है कि हमारा यह सग्राम आयरलैण्ड की तरह सैकडो वर्ष चल सकता है। सबसे बडी बात तो है इस मरी हुई जाति मे प्राण का सचार करना। सैकड़ो वर्षों से हम इस प्रकार कुचले और पीसे गए है, हमे गलत इतिहास और दर्शनशास्त्र की घुट्टी इस प्रकार पिलाई गई है कि हम 'उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्यवरान्निबोधत' के सन्देश को भूल गए है। हममे आस्था की कमी है। हम जो कुछ कहते है, उसे करते नही है। विचारो के क्षेत्र मे हम बहुत ऊंची उडाने भरते रहते हैं, पर हमारा आचरण गन्दगी के स्तर से ऊपर नही उठ पाता। हम हर समय यह कहते रहते है। 'नैन छिन्दन्ति शस्त्राणि नैन दहति पावक.' पर हम जीवन से इस बुरी तरह चिपटे रहते है जैसे हमे कभी मरना ही नही है। नतीजा यह है कि हमारी जाति ढोगियो की जाति हो गई है। हम मुँह से 'शृण्वन्तु विश्वे अमृतस्य पुत्रा' कहते रहते है, पर जरा-सी विपत्ति सामने आते ही हमारा जी धुकुर-पुकुर करने लगता है '"

ब्रह्मचारी अमिताभ देर तक इसी लहजे मे बोलते गए। श्यामा सुनती रही और सुनती रही। और थोडी देर सुनने के बाद उसकी स्थिति यह हो गई कि वह वाक्यो के बिना सुने ही यानी शब्दार्थ के बिना ही, ब्रह्मचारी अमिताभ के आशय को हृदयगम करने लगी। उसे ऐसा मालूम हुआ जैसे पहले अन्धकार रहा हो, फिर उसे चीरकर न जाने कैसे एक नन्हा-सा दिया बल उठा। वह दिया भी कुछ क्षणो तक अन्धकार की मात्रा को देखकर यह नही समझ पाया कि उसे जीना है या नही। उसकी लौ लडखडाई, कई बार ऐसा मालूम हुआ जैसे अन्धकार के गह्वर मे उसकी समाधि हो जाएगी, पर धीरे-धीरे वह आत्म-प्रतिष्ठित हो गया। उसकी लौ मे आत्मविश्वास की उज्ज्वलता आई और फिर श्यामा ने देखा इधर-उधर पास और दूर कई दिए जल उठे। अन्धकार पीछे हटता हुआ मालूम हुआ और दिगन्त मे उन दीयो से कुछ रेखाए खिचने लगी, जो मिलकर कभी उसे अपनी मा, भारतमाता, आनन्दकुमार, महात्मा गाधी और कितने ही ज्ञात और अज्ञात वीर तथा शहीदो से मिलाने लगी।

अमिताभ कह रहे थे, "सबसे बडी बात है खोई हुई आस्था का पुनरुद्धार। यदि यह हो गया तो फिर स्वतन्त्रता मिलने मे कितनी देर लगती है ? सच तो यह है कि स्वतन्त्रता यानी राजनैतिक स्वतन्त्रता तो साधारण लोगो के लिए है, नही तो किसी शहीद को लीजिए जैसे खुदीराम, कन्हाईलाल, कर्तारसिंह, इनके लिए जैसी स्वतन्त्रता वैसी परतन्त्रता क्योकि इनका मन इतने ऊचे सुर में बंध चुका था कि राजनैतिक स्वतन्त्रता मिलने पर उन्हे कोई विशेष लाभ नही होता। इस प्रकार से इनकी लडाई को एक रूप और मिलता है, वह यह कि वे अपने लिए नही लड रहे थे बल्कि साधारण जनता के लिए लड रहे थे।

श्यामा ने आकस्मिक रूप से बीच मे बोलते हुए कहा, "आप ऐसे लोगो मे महात्मा गांधी को गिनते है या नही ?"

यह प्रश्न सुनकर अमिताभ एक क्षण के लिए जैसे कुछ हतप्रभ हो गए। वे इस प्रश्न के लिए तैयार नही थे, पर अगले ही क्षण उनकी विचार-शक्ति ने कार्य किया और वे बोले, "अवश्य ही हम ऐसे लोगो मे उनको भी गिनेगे। महात्मा गाधी सम्पूर्ण रूप से मुक्त हो चुके है। दूसरे शब्दो मे स्वतन्त्रता मिलने पर उन्हे व्यक्तिगत रूप से कुछ मानसिक लाभ नही होगा। फिर भी यहा मै बता दू कि ऐसी स्थिति मे पहुच जाने का एक खतरा भी है।"

अब की बार श्यामा ने नही बल्कि रामानन्द ने प्रश्न किया, "क्या ?"

ब्रह्मचारी अमिताभ बोले, "वह खतरा यह है कि जो इस स्थिति मे पहुंच जाता है उसे स्वतन्त्रता-प्राप्ति की कोई जल्दी न रह जाए, ऐसा हो सकता है और उसमे यह प्रलोभन हो सकता है कि वह स्वतन्त्रता के लिए सबसे सरल, सीधा और द्रुत मार्ग न अपनाकर किसी प्रकार के प्रयोगो के चक्कर मे पड जाए। गाधी जी ने ऐसा ही किया। जहा तक उनके व्यक्तित्व का सम्बन्ध है, वे उसी मिट्टी से बने हुए है, जिससे शहीद बने होते है, उन्हे व्यक्तिगत रूप से न परतन्त्रता से कोई डर है और न स्वतन्त्रता से कोई विशेष लाभ। पर सत्य के प्रयोग के नाम पर वे देश को सदिग्ध मार्गो पर ले जा सकते हैं। भारतीय इतिहास मे उनकी बडी भारी देन है कि उन्होने जनता से सीधे-सीधे सम्पर्क ही स्थापित नही किया, बल्कि जनता को लेकर क्रान्ति की ओर बढे, पर जब क्राति का मुहूर्त आ गया, तब वे कथित हिंसा के भय से पीछे हट गए। इस प्रकार उन्होने एक बहुत भारी मौका खो दिया। पता नही यह मौका फिर कभी आए या न आए।"

इतना कहकर ब्रह्मचारी अमिताभ ने एक बार चारो तरफ देख लिया, पर असल मे वह देख नही रहे थे, बल्कि उनका मन अपनी ही गहराइयो मे किसी चीज़ को ढूढ रहा था। शायद वह चीज़ नही मिली। वे बोले, "महात्मा जी तो आराम से जेल मे बैठ गए। उनकी जिम्मेदारिया खत्म हो गई। अब हमे कुछ करना है "

श्यामा ने पूछा, "यह मैं मानती हू कि कुछ न कुछ करना चाहिए, पर जैसा कि रघुवंशनाथ कहते है, प्रश्न तो यह है कि क्या थोडे-से नवयुवक मिलकर इस परम शक्तिशाली ब्रिटिश साम्राज्य का सामना कर सकते है ? मुझे इस सम्बन्ध मे बहुत भारी सन्देह है।"

अबकी बार ब्रह्मचारी कुणाल बोल पडे, "हम इतना ही जानते है कि यही एक उपाय हमारे हाथ मे है और हमे इस साम्राज्य के विरुद्ध लडना है। लडना ही हमारे लिए एक धर्म है। हम इस बात की परवाह नही करते कि विजय होती है या नही। हमे तो किसी भी तरह अलख जगा रखनी है।"

इसपर ब्रह्मचारी अमिताभ ने जो उपस्थित लोगो मे सबसे अधिक उम्र के थे और जिनकी कनपटी के कुछ बाल सफेद पड़ चले थे, बोले, "कुणाल जी,

आप ठीक कह रहे है, पर आप जो कुछ कह रहे है उसमे भावुकता अधिक है और हिसाब कम······"

कुणाल ने कहा, "तो क्या भावुकता का हमारे सग्राम मे कोई महत्व नही है ?"

"हम अवश्य महत्व देते है, मैं केवल इसे महत्व ही नही देता बल्कि यहा तक कहता हू कि हमारा सारा सग्राम ही भावुकता-प्रधान है, पर भावुकता का अर्थ हवा मे उडना नही है। भावुकता बहुत ठोस हो सकती है। कम से कम हमारे सग्राम मे जिस भावुकता की जरूरत है उसे ठोस होने की आवश्यकता है। भावुकता तो गोश्त-पोश्त है जिसके बगैर ठठरी किसी काम की नही। हमे यह नही भूलना चाहिए कि हमारा सग्राम भी एक युद्ध है और जैसे साधारण युद्ध मे सभी बातो की गिनती और हिसाब करके तब आगे बढा जाता है, उसी प्रकार इसमे भी है। वह सेनापति बहुत बेवकूफ समझा जाएगा, जो यह नही जानता कि शत्रु के पास कितनी तोपे, कितनी बन्दूके, कितने सैनिक हैं और अपने पास कितने है।"

कुणाल ने बीच मे टोकते हुए कहा (पता नही वे सचमुच भीतर से कह रहे थे या महज बातचीत के हर कोने मे तर्क की रोशनी पहुचाने के लिए कह रहे थे) "तब तो यह एक पेशेदारी युद्ध हो गया।"

"अवश्य, जहा तक यह युद्ध है, वहा तक इसपर जिसे आप पेशेदारी कह रहे हैं, उसी ढग से विचार करना पडेगा। यदि हम ऐसा नही करते और केवल भावुकता मे बहते रहते है, तो उमसे लक्ष्य की प्राप्ति नही हो सकती।"

कुणाल ने कहा, "तब तो फिर थर्मोपली या हल्दीघाटी का युद्ध बिल्कुल बेकार कहा जाएगा।"

अमिताभ ने हसकर कहा, "नही, हम अपनी सारी तैयारिया इस प्रकार करेगे, जैसे एक सेनापति यहा तक कि डाकुओ का सरदार करता है, पर हम भावुकता को अलग नही कर देंगे। सच तो यह है कि यदि हम भावुक न हुए तो हम इस सग्राम मे आ ही नही सकते। यह और बात है, और भावुकता में ही फंसकर रह जाना तथा उचित हिसाब न लगाना यह दूसरी बात है। थर्मोपली और हल्दीघाटी की जडे भावुकता मे है, पर उनका अन्त भावुकता में नहीं है। थर्मोपली और हल्दीघाटी के वीर लोगों को अनुप्राणित करते हैं और ठोस

बातो के लिए अनुप्राणित करते है । उन्ही ठोस बातो के लिए उनकी सार्थकता है । हमे असफलताओ से घबडाना नही चाहिए और न शत्रु की महान् शक्ति को देखकर सग्राम से विरत ही होना चाहिए, पर इसके माने यह नही है कि हम अपनी योजनाओ को इस प्रकार से न बनाए, जिससे कि अन्ततोगत्वा हमारी जीत हो ।"

इसी प्रकार देर तक बातचीत चलती रही । चलते समय श्यामा ने यह कहा, "मैं दूर से ही आप लोगो के विषय मे सुनती थी, अब मुझे आप लोगो को जानने का मौका मिला, मैं सोचकर कोई निर्णय करूगी ।"

श्यामा उसी तरीके से बाहर निकली और चल पडी । कुछ देर तक कोई उसके साथ नही रहा, फिर अविनाश मिल गया और उसने पूछा, "कहिए, कैसा देखा ?"

श्यामा बोली, "सब आदमी तो बडे अच्छे है । आप लोगो मे बैठकर मन बहुत ही ऊचे सुर मे बध जाता है । अजीब बात है कि मेरे मन मे बार-बार फासी का तख्ता आ रहा था । ऐसा मालूम होता था कि आप लोग फासी के तख्ते के लिए ही बने है । है न बहुत अजीब बात ?"

अविनाश ने कुछ नही कहा ।

श्यामा बोली, "हमारे देश मे ऐसे कितने लोग होगे ?"

अविनाश ने लम्बी सास लेते हुए कहा, "बहुत थोडे ।"

जब श्यामा और अविनाश अलग होने लगे तो अविनाश ने जैसे याद करके कहा, "एक बात याद रखिए ! किसी से आज की बातचीत के विषय मे कुछ न कहिएगा । हा, त्रिलोचन से भी कुछ न कहिएगा ।"

श्यामा को इसपर बहुत आश्चर्य हुआ, बोली, "क्यो, त्रिलोचन तो आप लोगो का ही आदमी है ।"

"हा, है और नही भी । उसे हम लोग सदस्य नही बल्कि सहानुभूति रखने वाला मात्र मानते हैं"—कहकर वह चला गया ।

श्यामा को इस बात से बहुत आश्चर्य हुआ बल्कि कुछ ठेस भी लगी क्योकि वह त्रिलोचन को बहुत महत्व देती थी । उसके कल्पना-नेत्रो के सम्मुख क्रान्ति-

कारियों के सम्बन्ध मे जो अत्यन्त सुन्दर चित्र उभर रहा था, उसका कैनवास जैसे कही से फट गया। वह अजीब उधेडबुन मे अपने स्थान पर लौटी।

५

श्यामा के पिता रायबहादुर वशीधर ने इन दिनो सारे सार्वजनिक कामों से बिल्कुल हाथ खीच लिया था। और वे अधिकतर समय घर पर ही रहते थे। श्यामा के घर छोड देने के कारण वे वैयक्तिक रूप से गाधी जी से बहुत नाराज़ थे, पर साथ ही उन्होने बडे सरकारी अफसरो से मिलना-जुलना कम कर दिया था। कह देते थे कि मै बुड्ढा हो गया हू, अब इधर-उधर जाना मेरे वश का नही है।

उनकी पत्नी रमादेवी न तो राजनीति से कोई मतलब रखती थी और न किसी प्रकार की अन्य सार्वजनिक बातो से। उन्हे इस बात पर बडा दु.ख था कि श्यामा का जीवन नष्ट हो गया और वह घर से निकल गई। उनकी आखो मे जीवन नष्ट होने का अर्थ अच्छे रुपए वाले व्यक्ति से शादी न होना और उसके बाद जो-जो बाते होती है यानी बाल-बच्चे आदि का न होना था।

यद्यपि रायबहादुर वशीधर घर पर ही रहते थे, पर रमादेवी देवदर्शन आदि के उपलक्ष्य मे बाहर बहुत जाया करती थी। लडके यह चहाते थे कि वे कार पर जाया करे, पर वे अक्सर पैदल ही निकल जाती थी। जब बडे लड़के श्रीकान्त ने एक बार बहुत मजबूर किया कि इस तरह पैदल चलने से खानदान की प्रतिष्ठा मे बट्टा लगता है, तो वे बहुत बिगड़ गईं और बोली, "तुम लोगो ने झूठी प्रतिष्ठा की ऐसी ऊची दीवार बना रखी है कि उसमे दम घुटने लगता है और वह प्रतिष्ठा है क्या बला? शायद इसीकी घुटन से घबडाकर श्यामा यहा से भाग गई। जब मैं चिता पर अकेली चढूगी तो कोई वजह नही कि जीते समय मैं आधे दर्जन लोगो को अपने आगे-पीछे लिए रहू।"

बहू प्रमिला बहुत धनी घर से आई थी और अपने को सब बहुओ मे सुन्दरी भी समझती थी। एक हद तक वह ससुर और सास की मुंहलगी भी थी,

बोली, "माजी, आप चिता की बात करती है, पर चिता मे भी गरीब और अमीर का फर्क तो होता ही है। एक लाश चन्दन की लकडी से जलाई जाती है और दूसरी के लिए नीम की लकडी भी नही मिलती।"

रमादेवी ने जो यह सुना तो और भी गुस्से मे आ गईं। असल मे कुछ दिनो से वह अपने खानदान के सब लोगो से इस बात पर नाराज़ रहती थी कि ये लोग श्यामा की कोई खबर नही लेते। वे ऐसा व्यवहार करते थे मानो वह मर चुकी हो। प्रयास करके घर मे उसके सम्बन्ध मे कोई बातचीत आने ही नहीं दी जाती थी। भरी हुई तो रहती ही थी, बोल पडी, "माना कि चन्दन की लकडी नीम की लकडी से महगी है, पर उसमे प्रतिष्ठा अधिक है, ऐसा कैसे कहा जाए। मैं तो यही देखती हूं कि रायबहादुर की तुलना मे उनकी मास्टरनी बेटी की जनता मे अधिक प्रतिष्ठा है। अखबारो मे उसके चित्र छपते है और हर सभा मे उसका भाषण होता है।"

बडी बहू हठी होने पर भी यह समझती थी कि कहा बोलना चाहिए और कहा नही। वह जान गई कि इस बहस को आगे बढाना उचित न होगा। इसलिए वह किसी बहाने वहा से चली गई।

इसी हालत मे जब रमादेवी विश्वनाथ के मन्दिर की तरफ जा रही थी तो वह रास्ते मे राजेन्द्र से टकरा गईं। कभी रायबहारदुर वशीधर और रायसाहब राजकिशोर के खानदान मे आपस मे बहुत आना-जाना था। पर जब राजेन्द्र और श्यामा की शादी राजेन्द्र के जेल जाने के कारण नही हो पाई (जो बाद को भी नही हुई) तो दोनो खानदानो मे मनमुटाव-सा हो गया था। रमादेवी को सबसे बुरा यह मालूम होता था कि राजेन्द्र तो जेल काट-कूटकर घर लौट आया, पर श्यामा जो गई सो गई।

राजेन्द्र को देखते ही रमादेवी का माथा ठनका और वह अपने आपे मे नही रही, बोली, "श्यामा कहा है ?"

राजेन्द्र समझ गया था कि इस भेट का नतीजा अप्रिय ही होगा, पर बिना किसी भूमिका के वही बात छिड़ जाएगी, उसे ऐसी शका नही थी। वह समझता था कि दो-चार बातो के बाद वह बात छिड सकती है, पर यहा तो पहले ही वाक्य मे वही बात आगई। एक क्षण के लिए वह सुन्न रह गया, बोला, "चाचीजी, मुझे तो उसके सम्बन्ध मे कुछ भी पता नही।"

इस उत्तर से रमादेवी के क्रोध मे और आहुति-सी पडी। वह राजेन्द्र को ऐसा समझती थी जैसे उसने उनकी लडकी भगाई और फिर उसे छोड दिया। छूटते ही बोली, "तुमने उसे घर से निकाला और फिर उसे छोड दिया।"

राजेन्द्र ने आत्मरक्षार्थ कहा, "मुझमे ऐसी सामर्थ्य कहा जो मै उसे निकालता। असहयोग की आधी ने सैकडो लोगो को घर से निकाला, ऐसे ही लोगो मे वह भी एक थी।"

"हा तुम भी एक थे, पर तुम तो फिर से घर पहुच गए, पर वह अभी तक मारी-मारी फिर रही है।"

राजेन्द्र को निश्चित रूप से कुछ पता नही था, पर रमादेवी को एक मानसिक धक्का देने के लिए उसने कहा, "अब तो वह क्रान्तिकारी दल मे हो गई।"

रमादेवी का पैर कुछ लडखडाया, पर वह सम्भलकर बोली, "यानी बमपार्टी मे हो गई?"

"हा सुनता यही हू"

"तुमने उसे समझाया?"

"मुझसे उससे भेट ही नही होती।"

रमादेवी ने कुछ रुककर कहा, "तुमने राजनीति छोड दी?"

"नही, मैं सी०आर० दास की पार्टी मे हो गया हू।"

"ओह, यानी अब तुम कौसिल के मेम्बर बनोगे?"

यह बातचीत अब कष्टकर हो रही थी। राजेन्द्र समझ रहा था कि रमादेवी के मन मे उसके प्रति कूट-कूटकर घृणा भरी है। वह उस विश्वव्यापी घृणा से उठते हुए धुए को सूंघ सकता था। वह बोला, "माजी मैं जल्दी मे हू, आज यहा प० मोतीलाल नेहरू और सी० आर० दास पधारने वाले हैं।" —कहकर वह संक्षिप्त-सा नमस्कार कर भीड में गायब हो गया।

रमादेवी को पहले तो खीझ-सी हुई कि वह सारी बात कह नहीं पाई, पर बाद को खुशी ही हुई, क्योकि राजेन्द्र उन्हे एक जीवित व्यक्ति नही बल्कि एक लाश मालूम पड रहा था। क्यो ऐसा हो रहा था, इसका कोई संयत कारण वह बताने मे असमर्थ थी, पर उससे करीब-करीब बदबू-सी आ रही थी, शायद भीतर कीडे भी पड़ गए हो। यो ऊपर से वह पहले से अधिक

स्वस्थ और तगडा मालूम होता था। इस बीच मे उसकी उम्र जितनी बढी थी, उससे कई गुना बढी हुई मालूम देती थी, फिर भी वह रमादेवी को भूतपूर्व राजेन्द्र की लाश ही लगा। जैसे एक शहीद रातोरात एक व्यापारी और सट्टेबाज बन गया हो। चलो रमादेवी को एक बात की तसल्ली हो गई कि श्यामा ने इस व्यक्ति से सम्बन्ध-विच्छेद करके अच्छा ही किया है। उनकी लडकी एक लाश से तो शादी नही कर सकती।

एकाएक रमादेवी के मन मे यह ख्याल आया कि आज बार-बार यह सब क्या विचार आ रहे है। पहले सवेरे-सवेरे उठकर बहू से चिता की बात चलाई, फिर अब एक जीते-जागते युवक से मिली, जो उन्हे लाश के रूप मे लगा। केवल लगा ही नही, उससे तो वही बू आ रही थी जो मणिकर्णिका और हरिश्चन्द्र घाट की हवा मे तिरती रहती है। यह सब क्या हो रहा है? ससार किधर को जा रहा है? वह स्वयं किधर को जा रही है?

एकाएक रमादेवी के मन मे आया कि वह विश्वनाथ के मन्दिर में क्यो जा रही हैं, वहा क्या धरा है? वह मन की शाति के लिए ऐसे स्थानो पर आया करती है, पर विश्वनाथ जी क्या कर सकते है? ससार मे घोर से घोर अन्याय होता रहता है। यही राजेन्द्र कैसा था। शायद इसीने श्यामा के मन मे देशभक्ति की भावना भरी, पर वह स्वय किसी दूसरे ही मार्ग पर चल निकला और श्यामा जहा की तहां रह गई।

अन्नपूर्णा का मन्दिर आ गया, पर आज अदर जाने की इच्छा नही हुई, फिर भी वे आगे बढती चली गईं। और विश्वनाथ का मन्दिर आ गया। वे सहजात बुद्धि के अनुसार भीतर चली गईं। पर आज उन्हे सभी कुछ अजीब मालूम हो रहा था। नित्य जब वे यहा आती थी तो लोगो को भक्ति करते देख उनके मन की भक्ति दुगुनी हो जाती थी, और उनकी चेतना वहा की सामूहिक चेतना मे खो जाती थी। पर आज उन्हे यहा के सब लोग खिलौना खेलते मालूम हुए। उन्होने न तो ठीक से दर्शन ही किया, न प्रदक्षिणा, और वे वहा से जल्दी निकलकर चल पडी, चलती रही। तब तक चलती रही जब तक कि वे एक गली के छोटे-से मकान के पिछवाडे पहुच नही गईं। वहां उन्होने कुछ पूछा और फिर घूमकर मकान के अन्दर घुसकर एक कमरे मे जा पहुची। वे यहा कभी नही आई थी, केवल एक बार किसीसे सुना था कि

श्यामा अमुक स्थान पर रहती है ।

श्यामा कमरे मे मौजूद थी, वह कुछ लिख रही थी। उसे इस गरीबी के वातावरण मे सुखी देखकर रमादेवी के मन मे एक अजीब आनन्द की स्फूर्ति हुई। साथ ही उन्हे एक डर-सा लगा, जो किसी हद तक मृत्युभय से मिलता-जुलता था। उन्होने आकर बड़े प्यार से श्यामा की पीठ पर हाथ रख दिया और पुकारा, "श्यामा !"

श्यामा हडबडाकर खडी हो गई। उसे स्वप्न मे भी आशा नही थी कि उसकी मा यहा आ सकती है। वह उठकर मा से लिपट गई और बोली, "मा तुम यहा क्यो आई हो ?" कहकर चारो तरफ देखकर जैसे कुछ खोजती हुई बोली, "यहा तो तुम्हारे बैठने लायक कोई जगह भी नही है। तुम यहा क्यो आई हो ?"

रमादेवी श्यामा वाली कुर्सी पर बैठ गई और प्यार से बोली, "जहा मेरी बेटी बैठ सकती है, वहा मै भी बैठ सकती हू।"

श्यामा खडी रही, बोली, "तुम्हे भैया ने यहा आने दिया ?"

"तुझे यहां किसने आने दिया था ? मै रोज की तरह विश्वनाथ जी और अन्नपूर्णा जी का दर्शन करने आई थी, आज अन्नपूर्णा जी का दर्शन छूट गया था, तो मैंने सोचा चलो आज पत्थर की अन्नपूर्णा न सही साक्षात् अन्नपूर्णा का दर्शन कर आऊं।"

इस पर श्यामा की आखो मे आसू उमड पडे। रमादेवी की आखे भी भर आईं। बोली, "तुम घर क्यो नही चलती ?"

श्यामा ने कोई उत्तर न देकर आसू पोछ लिए।

रमादेवी ने आश्वासन देते हुए कहा, "तुम घर चलो। मैं विश्वास दिलाती हूं कि तुम जो काम यहां करती हो वही काम वहा भी करती रहोगी। कोई तुम्हारे किसी काम मे बाधा नही पहुचाएगा।"

श्यामा ने कुछ सोचकर कहा, "नही मा, ऐसा नही हो सकता।"

"क्यो नही हो सकता ? राजेन्द्र तो जेल भी काट आया और घर मे भी रहता है।"

"उसकी बात और है"—कहकर उसने प्रसग बदलने के लिए कहा, "मैं तुम्हारे लिए चाय बनाऊं ? अभी तो तुमने चाय नही पी होगी ?"

रमादेवी बोली, "पी क्यो नही ? बेड टी ली है। मै जानती हूं कि यह ठीक नही है, पर अब तो यह मेरे लिए दवा बन चुकी है, इसलिए मुझे पूरा विश्वास है कि विश्वनाथ जी मुझे क्षमा कर देगे। अच्छा अब चाय की बात रहने दो, यह बताओ कि तुम्हारी बात और क्योकर है ? यदि राजेन्द्र घर पर रहकर काग्रेस का काम कर सकता है, तो तुम भी कर सकती हो।"

श्यामा ने कहा, "काग्रेस का काम तो कर सकती हू, पर मान लो मैं और कोई काम करू ?"

रमादेवी समझ नही पाई कि कौन-सा काम। इसलिए उन्होने पूछा, "कौन-सा काम ?"

"रहने दो मा, इन झगडो मे न पडो क्योकि इनका कोई अत नही है। महात्मा जी तो अपने चेलो को मझधार मे छोडकर जेल मे पहुच गए, पर देश को तो आगे बढना ही है। यदि एक उपाय से काम नही हुआ तो दूसरा उपाय अपनाना ही है। देश तो किसीकी प्रतीक्षा नही कर सकता। महात्मा जी ने ब्रिटिश सरकार के साथ इतनी शराफत बरती कि जरा-सी हिंसा हो गई, बस उन्होने सारा आदोलन बद कर दिया। पर ब्रिटिश सरकार ने उनके साथ कोई शराफत नही बरती। ज्योही वह समझ गई कि अब क्राति की परिस्थिति खतम हो चुकी है और महात्मा जी को गिरफ्तार करने पर उसके लिए कोई खतरा पैदा नही होगा त्योही वे गिरफ्तार कर लिए गए। सरकार ने यह बिल्कुल नही देखा कि इस व्यक्ति ने उसके साथ कितना अच्छा सलूक किया। यह स्पष्ट है कि महात्मा जी इसलिए गिरफ्तार किए गए, जिससे कि जनता मे आतक फैले और इस बीच मे उसमे जो उत्साह पैदा हुआ है. वह समाप्त हो जाए।"

रमादेवी बोली, "तू जो कह रही है सब ठीक है, महात्मा जी इसी कारण महात्मा कहलाते है। पर ब्रिटिश सरकार कोई महात्माओ की जमात नही है। वह तो अपने ढग से ही चलेगी। उसे किसी सिद्धात का प्रतिपादन या प्रचार नही करना है। उसे तो किसी तरह अपने को कायम रखना है।"

श्यामा बोली, "ठीक है, पर ब्रिटिश सरकार को यह भी याद रखना चाहिए कि भारत मे कुछ लोग ऐसे पैदा हो चुके हैं, जो तुर्की-बतुर्की उनका जवाब देने को तैयार हैं। महात्मा जी जेल मे पहुचा दिए गए, पर कुछ लोग

अब भी ऐसे है जो ब्रिटिश सरकार के तरीको से ही उससे लडने को तैयार है ।"

"मैं कब कहती हू कि लोग न लडे । देशबन्धु चितरजनदास और मोतीलाल नेहरू जो स्वराज्य पार्टी बना रहे है वह इसीलिए है । तुम शौक से उसमे काम करो । तुम्हारे पिताजी स्वराज्य पार्टी से बहुत खुश है । कहते है अब ललमुहे कब्जे मे आएगे ।"

इस बार श्यामा बहुत जोर से हस पडी । यह समझ मे नही आया कि वह इस बात पर हसी कि मा उसकी बात समझ नही पाई या ललमुहा शब्द पर हंसी । रमादेवी भी हसी ।

श्यामा हस चुकने के बाद बोली, "तो पिताजी भी भीतर से अगरेजों से नाराज़ हो गए ?"

रमादेवी इस बात पर कुछ गौरव का अनुभव करती हुई बोली, "हो गए क्या ? वे हमेशा से उन लोगो के खिलाफ थे । जब तुम लोग छोटे-छोटे थे तब भी वे कई बार नाराज होकर कहते थे—पता नही कब इनसे छुटकारा होगा । यद्यपि वे ऊपर से राजभक्त रहे और मन से भी यही समझते थे कि राजभक्ति की नीति ही उस समय भारत के लिए सबसे अच्छी नीति है, फिर भी कई बार वे क्षुब्ध होकर लौट आते थे । साधारण अंगरेज अफसरो का व्यवहार उन्हे कतई पसन्द नही था और वे कई बार बडे दुखी होते थे ।"

मा और बेटी मे इसी प्रकार बातचीत हो रही थी फिर इतने मे त्रिलोचन भीतर घुस आया और उसने श्यामा को वन्देमातरम् किया, फिर वह पास बैठी हुई महिला से किस प्रकार सम्भाषण करे, इस असमञ्जस मे पड़ा ही हुआ था कि श्यामा ने कहा, "यह मेरी माताजी है ।"

त्रिलोचन ने फौरन रमादेवी को वन्देमातरम् कर हाथ जोड दिया, पर रमादेवी ने उसका कोई उत्तर नही दिया या दिया भी हो तो वह इतना अस्पष्ट और लघु था कि कम से कम श्यामा को यही प्रतीत हुआ कि रमादेवी ने त्रिलोचन की सम्पूर्ण रूप से अवज्ञा की । उसने त्रिलोचन से कहा, "त्रिलोचनजी आप इस वक्त जाए, फिर कभी आइएगा ।"

बाते कुछ रुखाई से ही कही गई थी, यह बात रमादेवी ने आसानी से देख लिया । उन्हे कुछ अस्पष्ट-सी याद पड रही थी कि किसीने उनसे यह कहा है कि इस त्रिलोचन के कारण ही राजेन्द्र से श्यामा का सम्बन्ध टूट गया है ।

उन्होने ध्यान से त्रिलोचन को देखा, तो वह बिल्कुल ही साधारण प्रतीत हुआ। अब तक उन्होने उसे देखा नही था, इस कारण कुछ सन्देह था, पर उसे देखकर उनके मन मे यह पक्का विश्वास हो गया कि राजेन्द्र सोलहो आने गलती पर है। श्यामा इस अतिसाधारण युवक को कभी भी अपना हृदय-दान नही कर सकती। मन पर पहली छाप यही पडी, पर वे इसकी गहराई मे जाना चाहती थी।

श्यामा की रुखाई के बावजूद त्रिलोचन कुछ आकुलता के साथ ही बोला, "मै आपसे कब मिलने आऊ?"

रमादेवी ने बीच मे बोलते हुए कहा, "नही-नही, तुम बैठो, मै जा रही हू।"

कहने को तो उन्होने यह बात कह दी, पर जब यह बात कही जाचुकी तो उन्हे ये उच्चारित शब्द कुछ विसदृश लगे। बोली, "मैं विश्वनाथ दर्शन करने आई थी, सो यहा आ गई।"

पर श्यामा ने इसका विरोध-सा करते हुए कहा, "मा बहुत दिनो बाद मिल रही हैं, आप अभी जाए।"

पर त्रिलोचन ने उसी व्याकुलता से कहा, "मैं आपसे कब मिलने आऊ?"

श्यामा तैश मे आ गई। उसका यह तैश मे आना इतना स्पष्ट था कि रमादेवी ने भी इसे देख लिया फिर भी श्यामा कुछ सम्हलती हुई बोली, "आप मुझसे काग्रेस के दफ्तर मे मिलिएगा।"

सुनकर त्रिलोचन लौट पडा और अनिच्छापूर्वक बाहर चला गया। उसके जाते ही रमादेवी ने पूछा, "यह कौन है? तुम तो उससे बहुत बुरी तरह पेश आईं···।"

यह राजेन्द्रजी के साथ जेल मे रहा।

श्यामा ने अब स्टोव पर चाय बनाना शुरू कर दिया था। रमादेवी बोली, "तुमसे कैसे परिचय हुआ?"

श्यामा कुछ-कुछ ताड गई कि मा क्या सोच रही है, बोली, "मां, यह राजनीतिक जीवन अथाह समुन्दर है। इसमे आए दिन जाने कितने लोगो से परिचय होता ही रहता है।"

मा ने और कुछ पूछना उचित नही समझा, फिर भी जब वह चाय के घूट पी चुकी तो बोली, "मुझे तो बिलकुल चरकटा लगता है। बुरी बास आती है। अजीब म्याऊ-म्याऊ करके बोल रहा था, जैसे नया-नया सभ्य बना हो।"

श्यामा समझ गई कि मा के इन शब्दो मे अधिक से अधिक तिरस्कार और अवज्ञा छिपी हुई थी। वह बोली, "मा, यह एक जन आन्दोलन है। इसमे हर तरह के लोग आते है, सच तो यह है कि हर तरह के लोग आते है इसीलिए इसकी बडाई है। त्रिलोचन एक बहुत ही मामूली आदमी है, किसी दुकान मे बही लिखता था, राजनीति से कोई सरोकार नही था, पर सामने जुलूस देखा तो ताव आ गया, नारा लगाया और गिरफ्तार हो गया। फिर भी साथ के लोगो से नही पटी, जेल मे बन्द क्रान्तिकारियो से गुप्त रूप से पत्रव्यवहार करता रहा, वह भी कुछ है—ऐसा दिखाने के लिए वह लोगो मे क्रान्तिकारी विचारो का प्रतिपादक बन गया। थोडे मे यही इसका इतिहास है।"

रमादेवी ने जैसे इन सारे ब्योरो को सुना ही नही, बोली, "तुमसे क्या चाहता है ? वह तो चला गया, पर कमरा अभी तक बुरी तरह महक रहा है।"

श्यामा अभी दो मिनट पहले तक समझ रही थी कि रमादेवी बहुत बदल गई हैं, पर उसने निराशा के साथ देखा कि साधारण जनता के लोगो के प्रति उनमें उच्च रईस-सुलभ घृणा उसी प्रकार बनी हुई है। कुछ झुंझलाहट के साथ बोली, "यह जो गन्ध आ रही है, यह बीडी की है। भारत के साधारण लोग मिस्र या मनीला का सुगन्धित तम्बाकू या सिगरेट नही पीते। गाधी जी के कारण बीडी को तरजीह दी जाती है।"

"पर गाधीजी तो बीडी के हक मे न होगे।"

"हां, पर वे विलायती सिगरेटो के मुकाबले मे बीडी को ही पसन्द करेंगे।* बीडी पीना कोई गुनाह नही है।"

रमादेवी ने कहा, "तू तो उसे सामने दुत्कार रही थी और पीठ पीछे उसका पक्ष ले रही है।"

"मैं उसका पक्ष नही ले रही हू, साधारण जनता का पक्ष ले रही हू, जो कीमती शराब और सिगरेट नही पी सकती।"

---

* १९२२-२३ के जमाने में अच्छी सिगरेट बाहर से ही आती थीं।

त्रिलोचन के आने के पहले मा और बेटी के बीच मे जिस प्रेमपूर्ण वातावरण की सृष्टि हुई थी, उसमे एक हद तक दरारे पड गई थी। इसके बाद भी रमादेवी कुछ मिनट बैठी, पर बात पूरी तरह जमी नही। दोनो के बीच एक खाई बनी ही रही। मा और बेटी दोनो ने अनुभव किया कि यद्यपि दोनो का उद्भव एक ही चोटी से हुआ बल्कि एक ही जलधारा से अलग होकर दूसरी का अस्तित्व बना और उनमे एक ही तरल पदार्थ प्रवाहित हो रहा है, पर दोनो के सोचने के ढग मे इतना अन्तर पड चुका है कि योगसूत्र लगभग छिन्न-भिन्न हो गया है।

जब रमादेवी उठी, तो उनका मन पहले से अधिक बोझिल था, पर वह बोझ किस बात का था, यह वह समझ नही पाई।

६

अभी रमादेवी बाहर गई ही थी कि त्रिलोचन फिर से भीतर आ गया। वह शायद बाहर रमादेवी के जाने की बाट देख रहा था। वह इस प्रकार चोर की तरह घुसा कि पहले तो श्यामा को उसके आने का पता ही नही लगा, पर जब पता लगा तो उसने लगभग झिडकते हुए कहा, "आप फिर आ गए ?"

त्रिलोचन एक हद तक इस प्रकार के स्वागत के लिए तैयार था, फिर भी उसके मुह से निकल गया, "आपकी माता जी क्यो आई थी ?"

श्यामा को यह प्रश्न बहुत ही गुस्ताखी भरा लगा, बोली, "मा बेटी के पास किसलिए आती है ?"

"पर वह इसके पहले तो कभी नही आई।"

"इससे क्या ?" कहकर उसने त्रिलोचन की तरफ देखा और फिर एकाएक बोली, "यह आप हर समय बीडी क्यो पीते रहते है ?"

प्रश्न बहुत ही अप्रत्याशित था। त्रिलोचन बोला, "यह मेरी कमजोरी है। आपने कभी कहा नही, नही तो आप आज्ञा दे तो मैं बीडी पीना छोड दूं।"

श्यामा को यह उत्तर बहुत अजीब लगा, बोली, "आप इस तरह बात न

किया करे। मैने आपको उस दिन मना कर दिया था कि आप मेरे यहा आया न करें और आज भी मैंने कहा कि आप मुझसे केवल काग्रेस के दफ्तर मे मिल सकते हैं, फिर भी आप बाहर प्रतीक्षा करते रहे और माताजी के जाते ही यहा आकर डट गए।"

त्रिलोचन इस दुत्कार से बहुत दुखी हुआ, बोला, "मै तो इसलिए आता हू कि आपकी कोई सेवा करू"—कहकर शायद उसने अनुभव किया कि सेवा शब्द उपयुक्त नही है। इसलिए उसने कहा, "कोई सौदा-सुलुफ लाना हो या और कोई काम करना हो तो मै तैयार हू। इसके अलावा मैंने सोचा कि आप अकेली रहती है, आपकी सब प्रकार से रक्षा करना मेरा धर्म है।"

श्यामा यह सुनकर बहुत नाराज हुई, बोली, "मुझे किसीके सरक्षण की जरूरत नही है। मै अपनी रक्षा आप कर सकती हू। यदि मुझे अपनी रक्षा की इतनी परवाह होती तो मैं किसीके घर की बहू बनकर बैठी होती।"

त्रिलोचन ने देखा कि बातचीत का यह रास्ता भी अच्छी गली मे खतम हो रहा है, तब उसने कहा, "आप माजी की बात पर राजी तो नहीं हुई" कहकर वह इस प्रकार से श्यामा के चेहरे की तरफ देखने लगा मानो इसके उत्तर पर उसका जीवन-मरण निर्भर हो। वह यह भली भाति जानता था कि यदि श्यामा घर लौट गई, तो वहा उसके फरिश्ते भी नही पहुच सकेंगे।

श्यामा ने त्रिलोचन को फिर ध्यान से देखते हुए कहा, "आपकी बातें दिन-ब-दिन अजीब होती जा रही है। आप ऐसी बाते कर रहे हैं जैसे आप मेरे गुरु हो और आप ही के कहने पर मै राजनीतिक आन्दोलन मे भाग ले रही हूं।"

इसपर त्रिलोचन कुछ बोला नही, पर न तो वह बैठा और न वहा से गया ही। श्यामा को यह परिस्थिति बहुत अजीब लगी और उसने कहा, "खड़े क्यों है? यह क्यो नही बताते कि आप किसलिए आए?"

बुझे हुए बल्ब मे जैसे करेन्ट आ गया। त्रिलोचन का चेहरा खिल उठा, बोला, "मैं यह पूछने आया था कि अन्त तक आपने क्या तय किया? स्वराज्य पार्टी का साथ देना है या कि 'नोचेजर'* बने रहना है?"

---

* जो लोग कौसिल-प्रवेश के विरोधी और रचनात्मक कार्य के पक्ष में थे, वे 'नोचेंजर' कहलाते थे।

एक क्षरण के लिए श्यामा के चेहरे पर हसी की एक रेखा कौध गई। बोली, "इसका अर्थ ?"

"इसका अर्थ यह कि इस समय काग्रेस मे जो दो धाराए चल रही है—एक कह रही है कि कौसिल-प्रवेश करो और उन्हे सुधारो या खत्म करो, और दूसरी कह रही है कि चर्खा-करघा आदि का रचनात्मक कार्य करो—इन दोनो मे से किसे अपनाना है ? मेरा मतलब यह है कि चाहे हम और कुछ करें, पर कम से कम दिखाने के लिए तो इनमे से एक को अपनाना है ।"

श्यामा बोली, "मैने जो भी तय किया हो, इससे आपको क्या मतलब ? क्या आपका कहने का मतलब यह है कि मैं जो रास्ता चुनूगी, आप भी उसी पर चलेगे ? यदि चलेगे तो इसका माकूल कारण क्या है ? क्या मेरी सेवाएं या त्याग आदि इतने महान है कि आपने अपनी बुद्धि को तिलाजलि देकर मेरा अनुसरण करने का निश्चय किया है ?"

अभी त्रिलोचन कुछ कह नही पाया था कि श्यामा ने फिर से अपनी वाक्य-धारा को जारी करते हुए कहा, "मैने तो सुना था कि आप जेल मे बहुत स्वतन्त्र चिन्तक के रूप मे प्रसिद्ध हो गए थे ।"

"पर स्वतन्त्र चिन्तन मे भी विचार-विनिमय का स्थान तो है ही ।"

उसने बात ठीक ही कही थी, श्यामा की आत्मा ने भी उसकी गवाही दी। पर वह मन ही मन जानती थी कि असली बात कुछ और ही है। वह बोली, "आप जाकर आनदकुमार, रघुवंशनाथ, डाक्टर, अब्दुल करीम या और किसीसे विचार-विनिमय कीजिए। मुझसे विचार-विनिमय करके आपको क्या मिलेगा ?"

इसके उत्तर मे एक बार त्रिलोचन का चेहरा फिर प्रदीप्त हो गया, बोला, "मैं तो आपको इन सबसे बढकर मानता हू ।"

श्यामा अधैर्य दिखाते हुए बोली, "फिर वही बात ! मैंने कह दिया कि मुझे ऐसी बाते अच्छी नही लगती। मैं आपसे बिल्कुल स्पष्ट कह देना चाहती हू कि आपका आना मुझे पसन्द नही है। इसके अलावा इसके दूसरे पहलू भी है। यदि आप मुझे इस तरह परेशान करेंगे तो मैं घर लौट जाने के लिए मजबूर हो जाऊगी। मैं किसी भी हालत मे जग-हसाई की पात्री नही बनना चाहती।"

मालूम होता था यह धमकी काम कर गई। त्रिलोचन हतप्रभ होकर बोला, "आप व्यर्थ मे मुझपर नाराज हो रही हैं। मैं तो केवल आपसे एक राजनीतिक

बात पूछने आया था, पर आप उसे तंग करना मान रही है।"—कहकर वह लौट पड़ा, पर जाते-जाते दूसरी तरफ मुह करके बोला, "आप मुझसे जैसा व्यवहार कर रही है, उससे वर्गवाद पर मेरा विश्वास और दृढ ही हो रहा है। मैं एक बनिया की बही लिखता हू, गरीब आदमी हू, इसीलिए आप अपने यहा मेरा आना-जाना पसद नही करती। आपको मेरा बीडी पीना बुरा मालूम होता है, यद्यपि सच पूछा जाए तो बीडी और सिगरेट मे कोई मौलिक प्रभेद नही है। हा, एक चादी की थाली है तो दूसरी पीतल की "

कहकर वह जैसे अपने ही जोश से अभिभूत होकर एक कदम पीछे की ओर हटकर श्यामा की आख से आख मिलाते हुए बोला, "मैने सुना कि आप क्रातिकारी दल मे शामिल होना चाहती है, पर यह याद रखिए कि आप कभी क्रातिकारी नही हो सकती। आप अपने अहम् को कभी छोड नही सकती, क्योकि वह अहम् आपका अहम् होने के साथ ही आपके वर्ग का अहम् भी है, यद्यपि आप इस समय एक मजदूर का जीवन व्यतीत कर रही है पर यह सिर्फ सतही है—आप जानती है कि आप इससे अलग है। यदि कोई करोडपति स्टेशन के बेंच पर बैठ जाए, तो उससे वह क्रातिकारी नही हो जाता क्योकि मानसिक रूप से देखा जाए तो वह उस बेच पर कभी बैठा ही नही, वह तो उस समय भी गद्देदार कुर्सी पर बैठा हुआ है, जिस समय वह देखने मे बेच पर बैठा हुआ लगता है..."

श्यामा जवाब मे कुछ तिलमिला देने वाली बाते कहने ही वाली थी कि उसने देखा कि त्रिलोचन की आखो से झर-झर आसू जारी हो गए और वह जल्दी से कमरे से निकल गया। जब त्रिलोचन चला गया तो श्यामा धम् से अपने कमरे की एकमात्र कुर्सी पर बैठ गई और सोचने लगी, 'अजीब उलझा हुआ प्राणी है यह मनुष्य। वह वैयक्तिक धरातल पर जीते-जीते सामूहिक धरातल पर चला जाता है और सामूहिक धरातल पर जीते-जीते वैयक्तिक धरातल पर पहुच जाता है। त्रिलोचन कहना क्या चाहता है? वह इस अजीब ढग से उससे मिलता क्यों है? एक समय उसे उसके सहारे की कुछ जरूरत थी क्योकि उसे रूपवती की छत्रछाया से, वह छत्रछाया जिससे उसके मन की टहनियो की वृद्धि रुक रही थी, मुक्त होना था। पर अब वह चला क्यो नही जाता? फिर यह इस प्रकार बच्चो की तरह गालिया क्यो देता है? सबसे बुरी बात यह है

कि वह रोता क्यो है ?

पर अब अधिक सोचने का समय नही था, क्योकि स्कूल जाने का समय हो रहा था, इसलिए वह जल्दी से मु ह-हाथ धोकर तैयार होने लगी। रोज स्कूल जाने के पहले वह अपने लिए कुछ भारी नाश्ता-सा बना लेती थी, पर आज रमादेवी और उसके बाद त्रिलोचन के आने का नतीजा यह हुआ कि वह नाश्ते से रह गई।

७

स्कूल मे श्यामा का मन नही लगा। उसके मन मे कई तरह की उधेडबुन पैदा हो गई थी और बहुत कोशिश करने पर भी उसका मन बोझिल ही बना रहा। स्वतन्त्रता प्राप्त करने की जो आकाक्षा उसके मन मे थी और जिसके कारण उसने इस तरुण उम्र मे ही सन्यास-सा ले लिया था, उसकी लौ यो ही कुछ धीमी-सी पड गई थी क्योकि उसे प्रज्वलित रखने के लिए जन आन्दोलन का पेट्रोल नही था। तिस पर कई वैयक्तिक किस्म की उलझने पैदा हो गई थी, जिनमे यह त्रिलोचन वाली उलझन सबसे दुःखदायी थी। त्रिलोचन के रग-ढग से उसे बडी निराशा हो रही थी क्योकि उससे उसे यह अनुभव हो रहा था कि श्यामा भले ही यह समझे कि उसके अस्तित्व का शत-प्रतिशत केवल देश-सेवा के लिए है, पर वह एक युवती है और लोग उसे इस दृष्टि से देखते हैं यहा तक कि ईमानदार राजनीतिक कार्यकर्त्ता भी।"

स्कूल के बाद डेरे पर जाकर खाना पकाने की इच्छा नही हुई। सच तो यह है कि कुछ भी करने की इच्छा नही हो रही थी। मन की ऐसी स्थिति मे वह क्या करे, कहा जाए, सोच ही रही थी कि पता नही कैसे उसकी आखो के सामने आनन्दकुमार का हसमुख चेहरा कौध गया। उसे एक आनन्द की सिह रन का अनुभव हुआ। मिनटो के अन्दर वह आनन्दकुमार के घर के सामने थी। वह प्रवेश करे या न करे इस सम्बन्ध मे कुछ उलझन मे थी कि इतने मे 'उसने देखा कि जिस तरफ से वह आई थी, उसकी उल्टी तरफ रूपवती जा रही थी।

वह काफी दूर जा चुकी थी, शायद टहलने जा रही हो। उसकी रही-सही हिचकिचाहट दूर हो गई और वह लगभग एक छलाग मे आनन्दकुमार के अध्ययन-कक्ष मे पहुच गई। वह जानती थी कि वे अवश्य वही पर होगे।

सचमुच आनन्दकुमार कोई मोटी-सी पुस्तक इतने ध्यान से पढ रहे थे मानो अगले दिन उनकी परीक्षा होने वाली है। एक हाथ मे लाल पेसिल थी।

जब श्यामा वन्देमातरम् कहकर उनके पास वाली कुर्सी मे बैठ गई तो उन्होने जैसे एकाएक बहुत उच्च जगत् से उतरकर उससे कहा, "आओ! आओ! तुम बडे मौके से आई। यह देखो सोफोक्लीज ने कितनी अच्छी बात लिखी है। तुमने सोफोक्लीज का नाम तो सुना है न?"

श्यामा बोली, "हा-हा, सुना है। वे ग्रीक नाटककार थे।"

इसपर आनन्दकुमार कुछ खुश नही हुए। बोले, "खैर वे नाटककार तो थे ही, पर उनके विषय मे जो सबसे मजेदार बात मैं इस समय पढ रहा था, वह यह है कि वे उच्च राजनीतिक और सैनिक पदाधिकारी थे, पर वे अपने पद मे न तो विशेष क्रियाशील थे और न दक्ष ही"—कहकर वे बहुत जोर से हसे फिर बोले, "इतना बडा चिन्तक अच्छा प्रशासक या सैनिक पदाधिकारी भला कैसे होता? अच्छा प्रशासक और सेनाध्यक्ष होने के लिए तो मतिमन्द होना जरूरी है।" —कहकर वे फिर एक बार जोर से हसे।

अबकी बार जो वे हसे तो उनका ध्यान एक क्षरण के लिए श्यामा के चेहरे पर गया। उनके मन पर फौरन ही कुछ ऐसी छाप पडी कि कोई ऐसी बात है जो नही होनी चाहिए। पर वह क्या बात है, उसे वे ताड नही पाए। उनके हंसते हुए चेहरे पर खिन्नता की एक रेखा दौडकर ही विलीन हो गई, फिर वे उस मोटी पुस्तक की ओर देखकर बोले, "सोफोक्लीज जब पहली बार कविता की प्रतियोगिता मे शामिल हुए तो उनकी कविता सर्वश्रेष्ठ मानी गई। इसके बाद तो उन्हे बराबर सफलता मिलती रही। वे नब्बे वर्ष की उम्र तक जीवित रहे और कहते है कि मृत्यु के पहले उन्होंने दो नाटक लिखे जो सर्वश्रेष्ठ माने गए। फ्रायड ने जो एडिपस जटिलता चलाई उसी एडिपस पर सोफोक्लीज ने लगभग ढाई हजार वर्ष पहले नाटक लिखा था···।"

कहते-कहते आनन्दकुमार को कुछ ऐसा अनुभव हुआ कि वे श्रोता का ख्याल न करके ही बोले जा रहे हैं। उन्होने फट से किताब बन्द कर दी और पेसिल

मेज पर रखते हुए कहा, "मैं भी अजीब आदमी हू कि अपनी ही बात कहता जा रहा हू।"

श्यामा बोली, "नही, आप अजीब आदमी नही है, आप बहुत उच्चकोटि के व्यक्ति हैं कि साधारण उलझनो मे फसे न रहकर पुस्तको मे डूबे रहते हैं।"

आनन्दकुमार के चेहरे पर खून की लाली और अधिक हो गई, वे बन्द की हुई पुस्तक को लगभग प्यार से फिर उठाते हुए बोले, "श्यामा, तुम अपने अनजान मे बहुत बडी बात कह रही हो। मुझे याद नही आ रहा है कि किस अगरेजी कवि ने यह कहा है कि वही व्यक्ति धन्य है जो चुने हुए मित्रो और पुस्तको मे उलझा रहता है। मित्र तो सबको मिलते नही, पर पुस्तके सबके लिए सुलभ हैं।"

"देखने मे तो सुलभ है, पर चित्त जब चचल हो जाता है तब वह पुस्तको मे नही बैठता।"

इस पर आनन्दकुमार ने श्यामा के चेहरे की तरफ बहुत ध्यान से देखा और एकाएक जैसे गीयर बदलते हुए बोले, "अरे मैंने तो आज चाय-वाय कुछ पीही नही, चलो-चलो कुछ खाया-पिया जाए।"

कहकर वे उठ खडे हुए, श्यामा भी उठ खडी हुई, पर बोली, "चाचाजी आप तो चाय पी चुके है।"

कुछ याद करते हुए आनन्दकुमार बोले, "मुझे तो याद नही पड़ता। तुम्हे कैसे मालूम ?"

श्यामा बोली, "मुझे ऐसे मालूम कि अध्ययन कक्ष के बाहर चाय के बर्तन रखे हुए हैं। आप मुझे पिलाने के लिए ऐसी बात कह रहे है।"

आनन्दकुमार ने प्यार से श्यामा की पीठ पर हाथ रखते हुए कहा, "जब तुम कह रही हो और प्रत्यक्ष प्रमाण मौजूद है, तो मैं उससे इन्कार कैसे करूं, पर तुम्हारा यह ख्याल गलत है कि तुम्हे पिलाने के लिए जान-बूझकर मैने सत्य का अपलाप किया।"

दोनो बाहर निकले तो सचमुच चाय के बर्तन अभी बाहर रखे थे। आनन्दकुमार कुछ झेंप के साथ बोले, "अब मैं इस परिस्थिति को सुलझाने के लिए ग्रीक द्वन्द्ववाद का सहारा लूगा। मैंने पी भी है और नही भी पी है। सच तो यह है कि मैं पुस्तक मे डूबा रहा, चाय आई होगी, मेरे मुह ने चाय पी भी

होगी, पर मुझे कुछ पता नही चला।"

दोनो एक दूसरे कमरे मे पहुच चुके थे। आनन्दकुमार ने रूपवती को बुलवाना चाहा पर श्यामा ने बता दिया कि वे टहलने गई है। खैर, कोई दिक्कत नही हुई, बल्कि रूपवती के टहलने जाने की खबर से दोनो मे बातचीत और भी घनिष्ठता के साथ हो सकी।

श्यामा ने कुछ खाते हुए कहा, "क्या हम लोग आपकी तरह नही हो सकते कि पानी मे रहते हुए कमल की तरह निर्लिप्त रहे ?"

आनन्दकुमार ने हसते हुए कहा, "यह कोई मुश्किल बात नही है। तुम कोई पुस्तक ऐसी न पढो जो गत पन्द्रह सौ वर्षो मे लिखी गई हो, बस फिर चित्त कभी विचलित नही होगा। जो ज्ञान इतनी शताब्दियो तक बचा हुआ है, वह इसीलिए बचा हुआ है कि उसमे कुछ ऐसे गुण होगे जो उसे मरने नही देते।"

श्यामा बोली, "पर आप तो एक बार यह कहते थे कि जो कुछ प्राचीन है वह सही हो ऐसी बात नही है। आपने कोई श्लोक भी कहा था 'पुराणमित्येव न साधुसर्वम्' और आज आप यह बात कह रहे है।"

आनन्दकुमार बोले, "देखो तुम पूरी तरह सतर्क होकर बात नही कर रही हो। उस समय मैंने कहा था कि 'सही नही है' और इस समय मै कह रहा हू कि उसमे कुछ ऐसे गुण है, जिनके कारण वह शताब्दियो तक जीवित रहा है। दोनो वक्तव्यो मे बडा फर्क है। सही का अर्थ यह है कि इस समय भी वह ग्रहणीय या अनुकरणीय है। जिस गुण के कारण कोई वस्तु शताब्दियो से टिकी हुई है उसका स्वरूप अफीम या शराब के नशे की तरह हो सकता है। न जाने कितनी शताब्दियो से महापुरुष और पैगम्बर नशो का विरोध कर रहे हैं, कही कानून बनते है तो कही नशीले पदार्थों पर टैक्स लगता है, फिर भी वे चालू ही हैं क्योकि हर युग मे, हर शताब्दी मे कमजोर लोगो को नशे की जरूरत रहती है।"

श्यामा सारी बात सुनकर चुप रह गई, जैसे वह कही हुई बातों की थाह ले रही हो। कितनी गम्भीर बाते थी और उनमे शताब्दियो का ज्ञान किस प्रकार हिलोरे ले रहा था।

चाय आ गई और आनन्दकुमार श्यामा का साथ देने के लिए बडे उत्साह

के साथ अपने स्वभाव के विरुद्ध जल्दी-जल्दी खाने-पीने लगे। जब श्यामा ने भी खाने-पीने का क्रम चालू कर दिया, तो आनन्दकुमार ने कहा, "इतिहास का यही क्रम है। हमेशा प्राचीन और नवीन मे सग्राम होता रहता है। कई बार यह सग्राम तीव्र हो जाता है और नवीन बलपूर्वक अपने को प्राचीन पर स्थापित करना चाहता है···।"

"ऐसा भी तो हो सकता है कि नवीन बिल्कुल प्राचीन का मूलोच्छेद कर दे और उसकी भस्मराशि पर अपनी अटारी खडा करे।"

आनन्दकुमार जैसे हसे, बोले, "देखने मे ऐसा ही मालूम होता है, पर वास्तविक रूप से प्राचीन का मूलोच्छेद कभी नही होता। वह किसी न किसी रूप मे नवीन मे समा जाता है, अवश्य उसका एक हिस्सा नष्ट भी हो जाता है क्योकि परिस्थितिया बदल जाने पर उसकी जरूरत नही रहती।"

श्यामा ने दिन भर लगभग कुछ नही खाया था। अब जो उसने कुछ खाया-पिया तो उसके चेहरे पर चमक आ गई, साथ ही एक मानसिक स्फूर्ति भी आई, बोली, "आपकी क्या राय है? अब असहयोग तो समाप्त हो चुका, स्वराज्य पार्टी की बात मेरी समझ मे नही आती। वे यह जो चाहते है कि कौसिलों मे जाकर वे कौसिलो को या तो खतम कर देगे या उन्हे जनता की प्रतिनिधि सस्था बना देगे, यह मेरी समझ मे नही आता···"

आनन्दकुमार ने बीच मे ही बोलते हुए कहा, "मेरी समझ मे भी नही आता, पर उसकी भी उपयोगिता है। यदि लडाई नही चालू है तो भी सैनिको का जोश बनाए रखने के लिए साथ ही कुछ न कुछ हो रहा है, यह धारणा बनाए रखने के लिए ऐसी बातो की जरूरत है। इसके अलावा इससे प्रचार तो होता ही रहेगा।"

"तो आप स्वराज्य पार्टी के पक्ष मे हैं?"

"पक्ष मे इस अर्थ मे हू कि कुछ न होने से यही अच्छा है, कम से कम लोगो मे एक चहल-पहल तो रहेगी। इसके अलावा जब-तब ब्रिटिश सिह की दुम मरोड़ते रहना भी क्या बुरा है।"

श्यामा ने झुझलाकर कहा, "आप तो सभी चीजो मे भलाई देखते हैं, इसलिए आपसे पथ-प्रदर्शन मिलना मुश्किल होता है।"

आनन्दकुमार ने हसते हुए कहा, "तो मैं पथप्रदर्शक होने का दावा कब करता हूं ?"

आनन्दकुमार ने यह वाक्य इस प्रकार से कहा था कि उसमे कोई कडवापन या डक नही था। वह तो वस्तुस्थिति का मानो एक विवरण था।

श्यामा कुछ देर तक चुपचाप खाती रही, फिर बोली, "क्रान्तिकारी दल के बारे मे आपका क्या विचार है ?"

आनन्दकुमार इस प्रश्न के लिए मानो तैयार ही थे, बोले, "क्रान्तिकारी दल भी अपनी जगह पर ठीक ही है। क्रान्तिकारियो ने उस समय स्वतन्त्रता का झंडा उठाया, और केवल झडा ही नही उठाया, उसके लिए वे फासी पर भी चढे और काले पानी गए, जब स्वतन्त्रता का नामलेवा और पानीदेवा कोई नही था। यद्यपि उनके इक्के-दुक्के हमलो से ब्रिटिश सरकार को कोई भौतिक हानि नही हुई पर साम्राज्य जिस साख पर जीवित रहा करते है, उसपर भारी बट्टा लगा। इसके अतिरिक्त भारतवासियो के मुरझाए हुए दिलोदिमाग के लिए उनके कार्यों तथा अदालत मे दिए हुए जोशीले वक्तव्यों ने बिजली का काम किया। यह मानना पडेगा कि राष्ट्रीय आन्दोलन मे उनका योगदान महत्वपूर्ण रहा।"—कहकर उन्होने अन्तिम रूप से चाय की प्याली मेज पर रख दी और यद्यपि वे वही बने रहे पर चेहरा देखने से पता लगता था कि वे कही दूर बहुत दूर चले गए हैं।

श्यामा ने उनके उद्भासित चेहरे की ओर देखा इसलिए वह जो कुछ कहना चाहती थी, वह नही बोली, पर वह जो प्रश्न पूछने वाली थी उसे जैसे किसी रहस्यमय तरीके से जानकर आनन्दकुमार ने कहा, "फिर भी मैं स्वय क्रान्तिकारी बनना नही चाहूंगा। यह महज अधिकार भेद की बात है, मैं औरो की तरह उसमे हिंसा अहिंसा का प्रश्न लाकर बात को और धुधला नही करना चाहता। महात्मा गाधी अहिंसा की बात करते हैं, वह मेरी समझ मे आती है, पर जो लोग अहिंसा के बहाने क्रान्तिकारी तरीको को बिलकुल गर्हित बतलाना चाहते है, वे बहुत गलत काम करते हैं। यदि हर हालत मे बलप्रयोग करना बुरा समझा जाएगा, तो हमे अपनी संस्कृति और सभ्यता के बहुत-से अंशों को त्यागना पडेगा। इसकी बजाय हम तो यह समझते हैं कि कम से कम सामूहिक क्षेत्र मे दोनो उपाय एक दूसरे के परिपूरक हैं।"

श्यामा ने कहा, "आप तो बहुत ऊचे निकल गए । मैं अब व्यावहारिक बात पर आती हू । इधर मै कुछ क्रान्तिकारियों से मिली थी । उनकी सब बातें मुझे अच्छी लगी, पर वे पग-पग पर जिस अविश्वास को लेकर चलते हैं, वह बहुत ही अखरने वाला है । मैं तो थोडे समय मे ही उससे ऊब गई ।"

आनन्दकुमार शायद मुस्कराए क्योकि उन्होंने जो धारणा बना रखी थी, उसका शायद इस वक्तव्य से समर्थन हुआ । बोले, "उनके लिए इस प्रकार का अविश्वास बिल्कुल स्वाभाविक है । इसमे कोई घबडाने की बात नही है । जल-चर और थलचर सभी प्राणी आक्सीजन से जीते है, पर निवास की स्थिति में फर्क होने के कारण उनके फेफडो की बनावट कुछ अलग है । थोडे दिनो मे तुम्हारा फेफडा भी उसी तरह का हो जाएगा, तब तुम्हे वह वातावरण अस्वा-भाविक नही लगेगा । उस समय तुम्हे भी यही लगेगा कि वही स्वाभाविक है और बाकी सारी बाते अस्वाभाविक हैं, पर तुमने अच्छी तरह सोच तो लिया है ?"

श्यामा कुछ देर तक चुप रही, फिर कुछ भावुकता के साथ बोली, "आप जानते हैं कि मेरे लिए दूसरे रास्ते बन्द हो चुके है ..."

उसने यह वाक्य ऐसे कडवेपन के साथ कहा कि आनन्दकुमार एक बार स्तब्ध रह गए, जैसे किसी तहखाने की वर्षो से रुकी हुई हवा एकाएक भभके के साथ बाहर निकली हो । आनन्दकुमार बोले, "क्या तुम अपने को क्रान्तिकारी दल के उपयुक्त पा रही हो ? उसमे बडा सघर्ष है । इसके अलावा क्या उसमें बहुत-सी स्त्रिया भी है ?"

श्यामा ने सहसा कोई उत्तर नही दिया । कुछ देर बाद बोली, "इन्ही सब बातो को समझने के लिए मैं आपके पास आई थी ।"

आनन्दकुमार ठहाका मारकर हस पडे, बोले, "यह अच्छा तमाशा रहा कि तुम मेरे ऐसे घरघुस्सू ग्रन्थकीट से ऐसे विषय मे सलाह लेने आई हो ।"

देर तक श्यामा और आनन्दकुमार मे बातचीत होती रही, पर कोई निर्णयात्मक बात नही हो सकी ।

८

पर घटनाए किसीका मुह न देखकर तेज़ी से आगे बढ रही थी। त्रिलोचन ने जाकर अविनाश से बिना किसी भूमिका के कहा, "अविनाश जी, मुझे आप कुणाल जी और अमिताभ जी से मिलाइए, बहुत जरूरी बात है।"

अविनाश ने हवा को सू घते हुए कहा, "क्या बात है? जल्दी कहिए, क्या पुलिस ने कुछ पता पाया है?"

"नही-नही, यह पुलिस की बात नही है, यह मेरी निजी बात है।"

"निजी बात? आपकी निजी बात से उन लोगो का क्या सम्बन्ध?"

त्रिलोचन बोला, "कुछ सलाह लूगा।"

अविनाश को पहले ही यह बात कुछ बुरी लगी थी कि यह पहले सारी बातें मुझे बताया करता था, अब हर बात के लिए कुणाल और अमिताभ के पास दौडना चाहता है; अब निजी बात के नाम पर और भी बुरा लगा। क्या वह अब किसी काबिल नही रह गया। उसने झु झलाकर कहा, "पहले मुझसे तो बात कीजिए। कैसी निजी बात?"

त्रिलोचन इस प्रश्न से सिटपिटा गया। कुछ रुककर बोला, "वह श्यामा जो है न?"

"हा, तो क्या हुआ?" आखे कुछ तरेरकर आश्चर्य के साथ अविनाश बोला।

"मैं यह बताने आया हू कि श्यामा जी कभी सच्ची क्रान्तिकारिणी नही बन सकती। वे इस बात को भूल नही सकती कि वह एक राजा की परपोती और रायबहादुर की बेटी है। ऐसे लोगों को दल मे लेने से क्रान्तिकारी दल को हानि ही पहुचेगी।"

अविनाश को इस आकस्मिक विस्फोट से कुछ आश्चर्य हुआ क्योकि वह समझता था कि त्रिलोचन का श्यामा पर बहुत अधिक प्रभाव है। इसके अतिरिक्त त्रिलोचन अब तक बराबर श्यामा की बहुत उच्छ्वसित प्रशसा करता रहता था, उसे यह भी मालूम था कि श्यामा या त्रिलोचन मे से कोई भी अभी तक दल के सदस्य रूप मे नही लिया गया। उनको अभी सिम्पेथाइजर या दल

से सहानुभूति रखने वालो की श्रेणी मे ही रखा गया था। अविनाश को तो अब कुछ-कुछ विश्वास हो चला था कि त्रिलोचन क्रान्तिकारी दल के लिए बहुत उपयुक्त नही हो सकता क्योकि उसमे व्यक्तिवाद बहुत प्रबल है। उसके इस प्रकार एकाएक फूट पडने से भी मानो इसीका समर्थन हुआ। अविनाश ने कहा, "आप तो उसकी बडी तारीफ किया करते थे, क्या बात है ?"

अविनाश के इस कथन मे एक चुनौती-सी अन्तर्निहित थी, इसलिए त्रिलोचन सम्भल गया, बोला, "मै जो कुछ कह रहा हू वह बहुत अच्छी तरह सोचने के बाद ही कह रहा हू।"

अविनाश बोला, "मुझे भी तो बताइए कि आपके इस मत-परिवर्तन का क्या कारण है ? आपने उसमे एकाएक कोई ऐसी बात पाई होगी जो पहले नही देखी होगी। वह बात क्या है ?"

त्रिलोचन भावुकतावश एक बात कह गया था, वह इतनी लम्बी जिरह के लिए तैयार नही था। बोला, "अब तक मैं सारी बात गम्भीर रूप से नही ले रहा था, इसलिए मैं उसकी प्रशसा उसके नारी होने के नाते कुछ अधिक करता था, पर अब जब कि मैंने देखा कि कुणाल जी आदि उससे मिल रहे हैं तो मैंने चेतावनी दे देना उचित समझा।"

सुनकर अविनाश का चेहरा कडा पड गया। उसने कहा, "आपने कैसे जाना कि वह कुणाल जी से मिल रही है ? क्या उसने आपसे यह बात कही ?"

एक क्षण मे ही त्रिलोचन समझ गया कि वह जिरह की भवर में बुरी तरह फस गया है। बोला, "नही, उसने नही बताया, मुझे मालूम हुआ।"

लहजे को और रूखा बनाते हुए अविनाश ने कहा, "आपको मालूम कैसे हुआ ? क्या आप कल्याण आश्रम पर निगरानी रखते है ?" कहकर उसने समझा कि शायद वह जरूरत से ज्यादा सख्ती कर गया। इसलिए बोला, "या आप उस समय आकस्मिक रूप से उधर से जा रहे थे जब श्यामा आश्रम मे जा रही हो ?"

डूबते हुए को तिनके का सहारा मिल गया। त्रिलोचन बोला, "हा। मैं उधर से जा रहा था, तब मैने देखा।"

अविनाश इसपर भी नही रुका, बोला, "उस समय श्यामा भीतर जा रही थी या निकल रही थी ?"

"भीतर जा रही थी।"

सुनकर अविनाश चुप हो गया, कुछ देर रुककर जैसे घटनाओ की थाह लेते हुए बोला, "कही आप श्यामा का पीछा तो नही कर रहे थे।"

"पीछा क्यो करूगा ?" कुछ झेपकर त्रिलोचन ने कहा।

अविनाश कुछ देर चुप रहा, फिर बोला, "आपको मालूम है न कि इस दल मे बिना प्रश्न किए आज्ञा पालन करना पडता है। मैं आपको आज्ञा देता हू कि आज से आप श्यामा से किसी प्रकार का सम्बन्ध न रखे, यहा तक कि रास्ते मे मिल जाने पर भी आप उससे बात न करे।" कहकर उसने अपनी आज्ञा की व्याख्या-सी करते हु(कहा, "आपकी अपनी रिपोर्ट के अनुसार वह पूर्ण विश्वास योग्य नही है, फिर उससे मिलने का आपका प्रयोजन ही क्या हो सकता है ?"

त्रिलोचन ने जो यह सुना तो उसके पैरो के नीचे से जमीन खिसकती जान पड़ी। वह एक क्षण के लिए तो भौचक्का रह गया, उसकी आखे बन्द हो गई, फिर वह अस्वाभाविक नम्रता के साथ बोला, "आप मुझे गलत समझ गए।"

पर अविनाश कुछ सुनने को तैयार नही था, बोला, "मैं इतना समझ गया कि आपका श्यामा से मिलना दल के लिए अच्छा नही हो सकता। आप उसमे जिस तरह दिलचस्पी लेते रहे है, वह अत्यन्त सन्दिग्ध है। मै आपपर कोई अभियोग नही लगाता, पर उसके पीछे घूमना किसी प्रकार समर्थन योग्य नही है......"

त्रिलोचन बीच मे ही बात काटते हुए बोला, "मैने बताया कि मै उसके पीछे नही गया था।"

"पीछे नही गए थे तो और भी बुरी बात है, क्योकि इसके माने यह हुए कि आश्रम मे कौन आता-जाता है आप यह देख रहे थे। मै मानता हू कि इसमे आपका कोई बुरा उद्देश्य नही रहा होगा, पर अनर्थक कौतूहल, विशेषकर अपने आदमियो के सम्बन्ध मे कौतूहल क्रान्तिकारियो के लिए बिल्कुल त्याज्य है।"

त्रिलोचन ने देखा कि वह अपने ही जाल मे बहुत बुरी तरह फस चुका है और भागने के लिए उसके पास कोई रास्ता ही नही है। बोला, "अविनाश जी आप तो ख्वाह-म-ख्वाह मुझपर तरह-तरह के लाछन लगा रहे है, पर मैं आपको विश्वास दिलाता हू कि यह बिल्कुल आकस्मिक बात थी कि मैंने श्यामा

को आश्रम मे प्रवेश करते हुए देख लिया था।"

पर अविनाश इससे असन्तुष्ट नही हुआ, बोला, "मेरा तजुर्बा बताता है कि इसमे कही न कही कोई गलत बात है। जब तक सारी बातें साफ-साफ सामने नही आ जाती तब तक मैंने आपको जो आज्ञा दी है आप उसका पालन करे।"

त्रिलोचन ने देखा कि वह पूरी तरह डूब चुका है। अब बचने का कोई रास्ता ही नही है। उसने निराश-सा होकर कहा, "मै अभी आपके सामने सारी बाते स्पष्ट किए देता हूं।"

दोनो पार्क के अन्दर खडे-खडे बाते कर रहे थे। अब वे अपेक्षाकृत एकात देखकर घास पर बैठ गए। त्रिलोचन ने इधर-उधर देखकर कहा, "बात बहुत छोटी-सी है। वह यह कि मै श्यामा से प्रेम करता हू।"

सुनकर अविनाश बहुत गम्भीर हो गया। बोला, "और वह भी आपसे प्रेम करती है ?"

"नही, तभी तो सारी परेशानिया है। यदि वह मुझसे प्रेम करती तो फिर मै इस तरह परेशान न होता।" कहकर उसने सास ली। वह भूल गया कि वह किसी मित्र से नही बल्कि एक तपे हुए पुराने क्रातिकारी से बाते कर रहा है। उसने कहा, "जब मैंने उसे पहली बार देखा, तभी से मै उससे प्रेम करता हू, पर उसे देश के उद्धार की चिन्ताओ के अतिरिक्त कोई चिता ही नही है। वह तो मेरी बात सुनती ही नही।"—कहकर वह रुआसा-सा होकर अविनाश की तरफ देखने लगा।

अविनाश को ऐसा मालूम हुआ जैसे उसके कानो मे किसी ने गरम सीसा डाल दिया हो, तैश मे आकर बोला, "तभी आपने बदला चुकाने के लिए मुझसे यह कहा कि वह कभी क्रातिकारिणी नही बन सकती। यदि वह आपके प्रेम-निवेदन को स्वीकार कर लेती तब शायद आप आकर मुझसे यह कहते कि वह बहुत अच्छी क्रातिकारिणी है। है न यही बात ?"

त्रिलोचन ने अविनाश का हाथ पकडते हुए कहा, "नही-नही आप मुझे एकदम गलत समझ रहे है। मैंने यह बिल्कुल दूसरे ही कारण से कहा। मैंने यह समझ लिया कि वह एक धनी घराने की लडकी है, इसलिए वह क्रान्तिकारिणी नही बन सकती।"

अविनाश ने झटके से हाथ छुडाते हुए नाराज होकर कहा, "नहीं आपने यह समझा कि वह आपका प्रेम-निवेदन न मानकर क्रान्ति के मार्ग मे जाना चाहती है, इसलिए आपने सोचा कि उसका वह मार्ग बन्द कर दिया जाए तो वह लौटकर आपकी बात मानेगी। दूसरे शब्दो मे आपने सारा काम ही गलत ढंग से किया है। अफसोस तो यह है कि आपने क्रान्तिकारी दल को इश्कबाजी का साधन बनाना चाहा और मुझे गुमराह करना चाहा। आप जानते है कि यह बहुत ही जघन्य अपराध है।"

कहकर अविनाश उठ खडा हुआ और जाने लगा। पर त्रिलोचन उसके पीछे-पीछे चला और गिडगिडाते हुए बोला, "आप मुझे कोई भी आज्ञा दीजिए, पर यह आज्ञा न दीजिए। आपके कहने पर मैं खुशी से डफरिन* पुल से गंगा में कूद पडूंगा, पर आप हमे कोई दूसरी सज़ा दे।"

अविनाश बोला, "आप भूल रहे है कि मेरा-आपका सम्बन्ध एक कठोर अनुशासन वाले दल के नाते है। आपके लिए जो बात मैंने कही है, वह तो कुछ भी नही। कुणाल जी और अमिताभ जी सुनेगे तो वे आग-बबूला हो जाएगे।"

इतनी देर तक बात करने के बाद त्रिलोचन इतना तो समझ ही गया था, फिर भी उसका मन नही मानता था, बोला, "अविनाश जी, यह याद करिए कि मैं जेल मे केवल आपकी चिट्ठियो को पढकर आपका चेला बन गया। आप मुझपर दया कीजिए।"

अविनाश बडी तेज़ी से चल रहा था, एकाएक ठिठककर खडा हो गया, बोला, "आपको मैंने बुद्धिमान् समझकर अपनाया था, आपने कुछ काम भी किया, पर आप यह जानते हैं कि एक क्रातिकारी के लिए इश्कबाजी की कोई गुंजाइश नही है। भारत स्वतन्त्र होने पर ही हम जीवन के दूसरे पहलुओं पर दृष्टि डाल सकते हैं, पर इस समय तो हमारे सामने केवल एक ही लक्ष्य है—देश को स्वतन्त्र करना।"

त्रिलोचन गिडगिडाते हुए लगभग अस्फुट ढग से बोला, "आप लोगो के लिए इतना ऊचा आदर्श ठीक है, पर मैं कमज़ोर आदमी हू, मैं उतने बडे आदर्श

---

*इस समय यह पुल पुनर्निर्मित होकर मालवीय पुल कहलाता है।

को लेकर नही चल सकता…"

अविनाश फिर से चलना शुरू करते हुए बोला, "हमारे दल मे कमजोर आदमियों के लिए कोई गुजाइश नही है। और एक बात याद रखिए ! जो आज्ञा आपको दी गई है, वही आज्ञा श्यामा को भी दी जाएगी, इसलिए सावधान, आप अक्षरश: मेरी आज्ञा का पालन करे।"

अब तक त्रिलोचन यह समझ रहा था कि अविनाश अन्त तक पसीज जाएगा, पर जब उसने यहा तक कह दिया कि श्यामा को उससे बोलने नहीं दिया जाएगा तो वह शिकारियो द्वारा घेर लिए गए पशु की भाति निराश होकर हमला करने ही वाला था कि कुछ सोचकर चुप रह गया। अविनाश तेजी से चला गया और वह वही खडा दूर तक उसे अपनी क्रुद्ध बल्कि क्षुब्ध दृष्टि से घूरता रहा।

९

रूपवती ने सवेरे की चाय के समय आनन्दकुमार से आकस्मिक रूप से कहा, "महात्माजी छोड दिए गए*। अब क्या होगा ? क्या फिर से आन्दोलन छिडेगा ?"

आनन्दकुमार ने भी यह खबर अभी थोडी देर पहले पढी थी। वे सोच रहे थे कि इसका परिणाम क्या होगा, बोले, "कुछ कहा नही जा सकता। आदोलन छिडने का सवाल बहुत कम उठता है। अब शायद परिस्थितिया आदोलन के पक्ष मे नहीं रह गईं।"

आनन्दकुमार अभी और कुछ बोलने वाले थे कि राजेन्द्र हाफता हुआ आया, जैसे वह दौड लगाकर आया हो। बोला, "आपने सुना है ! महात्मा जी छूट गए ?"

---

* ५ फरवरी १९२४ को महात्मा गांधी जी गहरी बीमारी के कारण छोड़ दिए गए थे।

रूपवती ने सवेरे का अखबार उठाकर उसके हाथ मे दिया। राजेन्द्र को कुछ निराशा हुई कि उसके पहले ही खबर यहा पहुच चुकी थी, बोला, "अब क्या होगा ?"

आनन्दकुमार ने हसते हुए कहा, "इसीकी तो हम लोग भी चर्चा कर रहे थे। जहा तक मै समझ पा रहा हू, अभी कोई खास बात हो नही सकती। इस के अलावा महात्मा जी अभी बहुत कमज़ोर भी हैं। जब ब्रिटिश सरकार ने उन्हे बीमारी के बहाने छोडा है, तो समझना चाहिए कि वे ज़्यादा बीमार हैं। फिर महात्मा जी कुछ दिनो तक यह भी तो देखेंगे कि उस बीच मे देश की हालत कितनी बदली है।"

इस उत्तर से राजेन्द्र को कुछ निराशा नही हुई बल्कि ऐसा मालूम हुआ कि कुछ खुशी ही हुई। आनन्दकुमार ने यह बात ताड ली और बिना किसी व्यग्य के बोले, "जब महात्मा जी ने चौराचौरी हत्याकाड के कारण आदोलन स्थगित कर दिया था, तब बहुत से लोग उनपर बिगडे थे, पर मैंने उन दिनो यही कहा था कि महात्मा जी ने हमे कुश्ती का पहला सबक दिया है और थोडी पकड कराकर ही कुश्ती छुडा दी है।"

—"हा आपने कहा था कि अब की बार इतने दिनो की पकड ही काफी रही। आगे ज्यों-ज्यो लडने वालो का दम बढता जाएगा, त्यो-त्यो पकड भी लबी होती जाएगी। इसके अनुसार हम लगभग दो साल सुस्ता चुके, अब दूसरी पकड होनी चाहिए।"

आनन्दकुमार ने कहा, "एक जाति के जीवन मे दो साल क्या होते हैं ? यह तो महात्मा जी सोच सकते है कि अब फिर पकड होनी चाहिए या नही।"

राजेन्द्र कुछ अप्रसन्न होकर बोला, "आपको महात्मा जी पर पूरा विश्वास है ?"

"हां, पूरा विश्वास है। जो साधन उन्होने अपनाया है, उसकी कुछ सीमाए है, पर उन सीमाओ के अन्दर वे अच्छे से अच्छा प्रयत्न करेगे, इसमे मुझे कोई सन्देह नही है।"

राजेन्द्र महात्मा जी की रिहाई की खबर देकर आनन्दकुमार को चौंका देने आया था, शायद वैसा करने मे सफल न होने के कारण उसमे कुछ क्षोभ था, अब उसने एक दूसरी खबर देकर उसकी क्षति पूर्ति करनी चाही, बोला,

"आपको मालूम है कि उत्तर भारत मे तेजी से क्रान्तिकारी सगठन हो रहा है? यदि महात्मा जी कोई रास्ता नही बताएगे तो यह आन्दोलन जोर पकडेगा।"

आनन्दकुमार ने कहा, "मुझे मालूम है कि क्रान्तिकारी आन्दोलन फिर से सिर उठा रहा है, मुझे उससे कोई परेशानी नही है। महात्मा जी कोई रास्ता दिखाएं या न दिखाए अब क्रान्तिकारी रुकने वाले नही है। पहली बार वे चकाचौंध मे पड गए थे और उन्होने जन आन्दोलन को मौका दिया था, पर अब वे मानने वाले नही है, चाहे आन्दोलन छिडे या न छिडे।"

राजेन्द्र ने कहा, "आपको इस विषय की कोई चिन्ता नही है कि क्रातिकारी आन्दोलन देश मे पनपे या न पनपे? आप यह नही मानते कि क्रान्तिकारी आदोलन हमारी सभ्यता और सस्कृति के बिलकुल विरुद्ध पडता है··?"

आनन्दकुमर ने चाय पीना समाप्त करते हुए निर्णयात्मक ढग से कहा, "नही, मैं ऐसा नही समझता। जहा तक संस्कृति और सभ्यता का सम्बन्ध है, वहा तक इस प्रसग मे उनका नाम लेना ही अप्रासंगिक है। हमारी प्राचीन सभ्यता और सस्कृति मे जो अवतार माने गए है, विशेष कर राम, कृष्ण, परशुराम, उनमे से कोई भी अहिंसा का पुजारी नही कहा जा सकता। अवश्य तुम बुद्ध और महावीर को ले सकते हो। हमारी सभ्यता मे इस प्रकार दोनों धाराए बराबर रही है। इसलिए मै इस प्रसग मे सभ्यता और सस्कृति के आधार पर कोई तर्क स्थापित नही करना चाहता। मैंने इसपर बहुत गहराई से सोचा है और सारी परिस्थितियो पर विचार करने के बाद मैं इतना भी नहीं जान पाया कि अहिंसा कहा समाप्त होती है और हिंसा कहा शुरू होती है। शरीर को लिया जाए तो इसमे तरह-तरह के जीवाणु है, कुछ जीवन के दूत हैं और कुछ मृत्यु के। दोनो मे निरन्तर सघर्ष ही जीवन है। दूसरी बात देखो कि यदि अनुभूतिशीलता, सुख-दु ख बोध, वृद्धि और ह्रास जीवन के लक्षण माने जाएं तो अणुवीक्षण से ही दीख पडने वाले भी जीव है, जिनकी हम हर समय लाखो की सख्या मे हत्या कर रहे है। वनस्पतिया भी जीव की श्रेणी में ही आ जाती है··।"

राजेन्द्र इस प्रकार के दार्शनिक-वैज्ञानिक तर्क-वितर्क के लिए तैयार नही था, वह ऊबकर बोला, "तो आपके विचार मे महात्मा गाधी का मार्ग भी ठीक है और क्रातिकारियो का मार्ग भी ठीक है।"—कहकर उसने अप्रत्याशित रूप

से पूछा, "तो आप श्यामा को भी ऐसी ही सलाह देते होगे।"

आनन्दकुमार के चेहरे पर एक क्षण के लिए क्रोध की एक रेखा आकर ही मिट गई, बोले, "मैं जब किसीसे कुछ कहता हू तो यह शर्त नही रखता कि वह उसे माने ही।"

"फिर भी आपके द्वारा कही हुई बात पर आपके भारी व्यक्तित्व का वजन तो पडता ही है।"

"जरूर पडता होगा क्योकि यह भी एक नियम है, मेरी यह सीमा तो है ही कि जो कुछ मैं कहता हू वह मेरी ही राय होती है।"

रूपवती ने वातावरण को कुछ हलका करने के लिए कहा, "श्यामा तो बहुत दिनो से आई ही नही।"

आनन्दकुमार ने बीच मे बोलते हुए कहा, "नही, वह आई थी। उस समय तुम घर पर नही थी। मेरे साथ लगभग एक घन्टे बैठी, फिर चली गई।"

राजेन्द्र जो बात जानना चाहता था, इससे उसपर कोई रोशनी नही पड़ी, पर राजेन्द्र को यह हिम्मत भी नही हुई कि वह श्यामा के सम्बन्ध मे और कुछ पूछे।

उसने पूछा, "शायद सरकार ने स्वराज्य पार्टी को खतम करने के लिए ही महात्मा जी को इस समय छोडा है।"

राजेन्द्र ने इस बात को इस ढग से नही सोचा था, पर इस समय उसके मुंह से यह बात निकल गई।

आनन्दकुमार बोले, "सरकार ने क्या समझकर उन्हें छोडा है, यह तो वही जाने, पर इस समय महात्मा जी भी स्वराज्य पार्टी को खतम नही कर सकते। प्रसव के बाद मा भी अपने बच्चे को पूरे तरीके से नियन्त्रित नही कर सकती। जन्म की घडी से ही बच्चा एक स्वतन्त्र जीवन व्यतीत करने लगता है। यह बात व्यष्टि के सम्बन्ध मे भी सत्य है, समष्टि के सम्बन्ध मे भी।"

राजेन्द्र मानो यही बात सुनने के लिए आया था। उसका चेहरा चमक उठा, बोला, "इसका अर्थ यह हुआ कि स्वराज्य पार्टी कौसिल तथा स्थानीय सस्थाओ के चुनावो मे भाग लेगी।"

"हा, वह भाग लेगी, पर वह इन सस्थाओ मे निर्लिप्त होकर रहेगी।"

राजेन्द्र ने शायद उनका यह उत्तर सुना ही नही, बोला, "फिर अगले

चुनाव मे आप खडे क्यो नही हो जाते ?"

आनन्दकुमार ने असन्तुष्ट होकर कहा, "मुझे राजनीति से कोई मतलब नही। मै तो समझता हू कि उसमे तुम्हारे ऐसे लोगो की जरूरत है, जो हर समय तुर्की-बतुर्की जवाब देने के किए तैयार रहे। मुझे तो ज्यादा इधर-उधर घूमना भाता नही है और न यह मेरे बस का है कि हर समय झगडता रहू।"

सुनकर राजेन्द्र भीतर से खुश हुआ, पर कुछ बोला नही। रूपवती ने बीच मे ही कहा, "आपने राजाओ की सभा मे पडितो को कैसे नाको चने चबवाया था, फिर भी आप कहते है कि आपको यह सब करना नही आता।"

राजेन्द्र ने सूखी हसी हसते हुए कहा, "हा-हा, आपने तो उस दिन कमाल ही कर दिया था। जनता उस दिन से आपको जितना जानती है, उतना किसीको नही जानती।"

थोडी देर और इसी तरह की बातचीत के बाद चाय की सभा विसर्जित हो गई।

१०

घटनाएं बडी तेजी से आगे बढ रही थी। बंगाल मे क्रान्तिकारी दल के कुछ छुट-पुट कार्य जनता के सामने आए। १९२३ के अगस्त मे ही कलकत्ता के शखारी टोला डाकघर पर क्रान्तिकारियो ने हमला किया। इस सम्बन्ध में एक युवक को काले पानी की सजा हुई। गोपी मोहन साहा ने सर चार्ल्स टेगर्ट नामक कुख्यात पुलिस अधिकारी के धोखे मे एक सौदागर अगरेज को मार डाला, जिसपर बडा जोश फैला। क्रान्तिकारी डाके भी पड रहे थे, उनके सम्बन्ध मे पुलिस को हर समय पता नही होता था।

बनारस की पुलिस बहुत सक्रिय थी और कल्याणाश्रम से लेकर श्यामा ऐसे लोगो पर भी जो अभी दल के कच्चे सदस्यमात्र थे, निगरानी हो रही थी। कुणाल और अमिताभ ने जो सारी परिस्थिति पर विचार किया तो वे समझ गए कि ये बादल महज दिखावे के नही है, जल्दी ही धर-पकड़ होगी। इसीलिए

जल्दी मे अन्तरग समिति की एक बैठक बुलाई गई, जिसमे अविनाश, रामानन्द के साथ-साथ प्रान्त भर से कई युवक आए। यह बैठक एक सिनेमाघर के पीछे वाले कमरे मे हुई। सिनेमाघर का मालिक कुणाल का भक्त था। सभा मे आने वाले लोगो ने बाकायदा जाकर टिकट खरीदे और फिर भीतर जाकर पता नही किधर से होते हुए उस कमरे मे पहुचे।

कुणाल ने कहा, "अब उत्तर भारत मे दल काफी तगडा हो चुका है इसलिए कल्याणाश्रम से जो कल्याण होता था वह हो चुका और आज से वह बंद कर दिया जाता है।"

बैठक के सामने जो समस्याए रखी गई, उनमे एक यह भी थी कि पुलिस बहुत सक्रिय हो रही है।

अविनाश ने दल को यह खबर दी कि पुलिस इस बात की बहुत चेष्टा कर रही है कि अपने कुछ लोगो को दल का सदस्य बना दे। इसके अलावा वह दल के सदस्यो को भी लालच देकर अपना जासूस बनाने की कोशिश कर रही है।

कुणाल और अमिताभ को सारी बाते मालूम थी, पर कानपुर से आए हुए अजीतप्रसाद ने पूछा, "क्या पुलिस किसी सदस्य को अपना गुर्गा बनाने मे सफल रही है ?"

अविनाश ने कुणाल के चेहरे की तरफ देखा। उनका चेहरा एकदम निस्पृह बना हुआ था। अविनाश समझ गया, बोला, "हमारे यहा एक त्रिलोचन नाम से एक कार्यकर्ता है", कहकर उसने त्रिलोचन का सारा इतिहास कह सुनाया। अन्त मे उसने वह बात सुनाई जब उसने त्रिलोचन को आज्ञा दी थी कि वह श्यामा से नही मिल सकता।

उसने आगे कहा, "मै उसे आज्ञा देकर चला गया, पर फौरन ही मुझे न जाने क्यो सन्देह हुआ कि यह अभी श्यामा के पास जाएगा। इसलिए मैं तुरंत श्यामा के डेरे के पास गया और वहा ऐसी जगह खडा रहा कि मुझे कोई न देख पाए और मै आने-जाने वालो को देख लूं। थोडी देर मे मैंने देखा कि सचमुच त्रिलोचन चला आ रहा है। वह कुछ जोश मे था और इधर-उधर बिना देखे ही भीतर घुस गया। मैं भी उसके पीछे-पीछे गया और श्यामा की कोठरी के ऐन बाहर जहा तक बन पडा, छिपकर खडा रहा।

"श्यामा ने जो उसे देखा तो बहुत ज़ोर से बिगड पडी। पर त्रिलोचन ने

कोई परवाह नही की। उसने कहा, 'मैं तुम्हे एक बहुत जरूरी बात बताने आया हू।'

"'मैं काई बात सुनना नही चाहती।'

"'मै तुम्हे अपनी बात सुनाकर ही जाऊगा। याद रखो, यदि तुमने मेरी बात नही सुनी तो मै फौरन जाकर आत्महत्या कर लूगा। इसलिए मेरी बात सुन लो।'

"तब श्यामा को राज़ी होना ही पडा। त्रिलोचन ने कहा, 'मैंने अभी-अभी अविनाश से बात की। मालूम हुआ कि तुम इस बीच मे बहुत आगे बढ चुकी हो। मैं तुम्हे चेतावनी देने आया हू कि तुम इन लोगो का साथ छोड दो। ये अच्छे आदमी नही है। इनके इर्द-गिर्द अविश्वास का अजीब वातावरण है। कोई किसीका विश्वास नही करता। दम घुटने लगता है, मालूम होता है वहा की हवा किसी जहर के बोझ से भारी है।

"कुछ देर तक कोई आवाज़ नही आई। शायद श्यामा सोच रही थी, फिर वह बोली, 'इस घुटन के लिए क्रान्तिकारी उत्तरदायी नही है, बल्कि ब्रिटिश सरकार है, जिसके कारण उन्हे पत्ता खटकने पर भी सावधान हो जाना पड़ता है। यदि वे ऐसा न करे, तो उनकी पार्टी क्षणभर मे तितर-बितर हो जाए।'

"श्यामा के इस तर्क का त्रिलोचन पर कोई असर नही हुआ जैसे उसने यह बाते सुनी ही नही। वह बोलता गया, 'सबसे बुरी बात यह है कि ये लोग प्रत्येक के वैयक्तिक जीवन मे दखल देना चाहते है। यद्यपि उन्होने एक हद तक साम्यवाद की विचारधारा को अपनाया है, मजदूर-किसानो की बाते करते है तथा इन लोगो मे कुछ व्यक्ति धार्मिक सस्कारो से भी अपनी मुक्ति करा चुके है, फिर भी ये यतिवाद के प्रभाव मे है।'

श्यामा ने कहा, 'यतिवाद से यहा क्या मतलब है ?'

"त्रिलोचन बोला, 'यतिवाद से मेरा मतलब यह है कि वे ब्रह्मचर्य आदि पर बहुत जोर देते हैं, इन्हे मालूम नही कि ससार के सब बडे क्रान्तिकारी विवाहित थे। गैरीबाल्डी एनीता से अनुप्रेरित थे। इसी तरह लेनिन आदि सभी विवाहित रहे।'

"श्यामा ने इसपर एकाएक कहा, 'अब मैं आपकी सारी बात सुन चुकी, अब्र कृपया यहां से तशरीफ ले जाएं। जहा तक मेरा सम्बन्ध है मैं समझती हूं

कि वे सही रास्ते पर हैं। अभी भारत मे क्रान्तिकारी आन्दोलन के साथ यतिवाद का सम्बन्ध रहना उचित है। जब फासी पर चढना या कालेपानी मे तिल-तिल करके मरना ही है तो किसी दूसरे व्यक्ति को अपने साथ बाधा क्यो जाए ?'

इसपर त्रिलोचन भी क्रुद्ध हो गया और बोला, 'इसके माने यह हुए कि तुम मेरी बात मानने के लिए तैयार नही हो। तुम इस बेवकूफी मे ही पडी रहना चाहती हो। यह कोई क्रान्तिकारी दल नही बल्कि नवयतिवाद है।'

"श्यामा ने सक्षिप्त रूप से कहा, 'मुझे ऐसे ही लोग पसन्द है। एक स्त्री होने के नाते मै ऐसे लोगो के साथ ही काम करना पसन्द करूगी। आपके कहने से मेरे मन मे जो थोडी-बहुत हिचकिचाहट थी वह भी जाती रही। अब आप यहा से चले जाइए। मेरा आपका कोई सम्बन्ध नही रहा।'

"इसके बाद दोनो चुप रहे।"

अविनाश ने यह सारी बाते बताते हुए कहा, "इनकी इस चुप्पी से मैं कुछ शंकित हुआ। त्रिलोचन उस समय कुछ भी कर सकता था। मैंने झाककर देखा तो कुछ दिखाई नही पडा। क्योकि कमरे के जगले बन्द थे। खैर थोडी देर मे त्रिलोचन बोला, 'अच्छी बात है, मै जाता हू, पर तुम इस दिन के लिए पछताओगी।'"

अविनाश बोला, "मैं फौरन ही आड लेकर हट गया। त्रिलोचन बाहर निकला। मैंने देखा कि वह बड़ा उत्तेजित था। अब मुझे कौतूहल भी हुआ कि देखे यह कहा जाता है। वह वहा से निकलकर सीधे गगा के पुल पर गया। फिर पुल के बीच मे खड़ा होकर कुछ सोचने लगा। मैं समझ गया कि यह आत्महत्या की बात सोच रहा है। पर उसने थोडी देर बाद पीछे की ओर मुडकर देखा। यदि उसका दिमाग ठीक होता, तो वह खम्भे की आड़ मे पास ही मुझे खडा देख लेता, पर उसका दिमाग ठीक नही था।"

कुणाल ने कहा, "मनोवैज्ञानिको का यही कहना है कि आत्महत्या के समय मनुष्य की सामयिक रूप से ही सही मस्तिष्क-विकृति हो जाती है।"

अविनाश अपनी कहानी जारी रखते हुए बोला, "उसने पानी को फिर एक बार देखा और अन्तिम रूप से पीछे की ओर लौट पडा।"

कुणाल बोला, "तुमने उसे एक धक्का क्यो नही दे दिया। यह तो साफ ही था कि श्यामा उसे मिलने वाली नही थी, इसलिए जीने का फैसला करना उसके

लिए जीवन की पुकार नही बल्कि मृत्यु से बढकर किसी अधिक लज्जाजनक शक्ति की पुकार थी।"

अविनाश बोला, "उस समय मै शायद द्रुत फैसला करने वाला क्रान्तिकारी उतना नही रह गया था। उस समय मेरे अन्दर वही प्रवृत्ति जोर मार रही थी जो कहानी के पाठक के मन मे जोर मारती है। यानी मै यह जानना चाहता था कि आगे क्या होता है। आगे यह हुआ कि त्रिलोचन वहा से लौटकर शहर में आया और वह एक ताडी की दूकान मे घुस गया। ताडी वाले ने उसका जिस तरह से स्वागत किया, उससे मैं समझ गया कि सालो पहले वह इस दूकान मे आया करता था।"

रामानन्द ने कहा, "मनुष्य का चरित्र कितना अद्भुत होता है? यह १६२१ मे एकाएक जुलूस मे शामिल होकर जेल गया था और तब से एक जागरूक कार्यकर्ता की तरह काम कर रहा था, पर अब यह जाकर पुलिस मे मिल गया।"

अमिताभ ने कहा, "फिर भी इस व्यक्ति ने देश-सेवा की। गत चार-पाच सालो मे जनजागृति की जो विशाल अट्टालिका खडी हुई उसमे इसका भी दान है, रहा यह कि लकडी के पहियो से बैलगाडी तो चल सकती है, पर मोटर नही चल सकती। यदि वह अपना अधिकार समझकर जहा उसे बना रहना चाहिए वहा बना रहता, तो उसपर यह आपत्ति नही आती। खैरियत यह है कि वह कुछ विशेष नही जानता।"

कुणाल ने कहा, "फिर भी इतना तो जानता ही है कि कल्याणाश्रम का कल्याण कर दे। इसलिए आज से कल्याणाश्रम समाप्त होता है। आप लोग यहा का काम सम्भाल लीजिए। अमिताभ और मैं अब किसी दूसरे स्थल मे जाकर धूनी रमाएगे। मेरा ख्याल है कि दो-तीन दिन के अन्दर ही कुछ होगा, पर आप लोग ऐसा करे कि कल्याणाश्रम के बोर्ड के सिवा उनके हाथ कुछ भी न लगे। मैं तो यहा तक कहूगा कि अविनाश और रामानन्द भी काशी छोड़ दे।"

रामानन्द ने पूछा, "और श्यामा?"

"श्यामा के लिए यही अच्छा होगा कि वह अपने घर लौट जाए। उसे त्रिलोचन की सारी बात बता दी जाए और यह कह दिया जाए कि त्रिलोचन

कभी मिल जाए तो वह कह दे कि मुझे राजनीतिक आन्दोलन से ही घृणा हो गई, मैं अब घर मे ही रहूगी ।"

अविनाश बोला, "इससे श्रीमान त्रिलोचन की वह थीसिस भी सत्य हो जाएगी कि उच्चवर्ग की स्त्री होने के कारण क्रान्तिकारी आन्दोलन मे भाग लेना श्यामा के वश का नही है ।"

इसपर कहकहा लगा और कुछ जरूरी सगठन सम्बन्धी परामर्श करने के बाद सभा विसर्जित हुई ।

११

ऊषादेवी ने राजेन्द्र से कहा, "बेटा, सुना कुछ ?"

"नही, क्या बात है ?"

"श्यामा अपने घर लौट आई है ।"

राजेन्द्र ने इसपर कुछ नही कहा, "उसके माथे पर सिकुडने पड गईं ।" बोला, "मैं भी तो घर लौट आया ।"

फिर ठहरकर बोला, "कुछ परिस्थितिया ही ऐसी रही । सब लोग १९२१ मे यही सोचकर निकले थे कि या तो स्वराज्य होगा, या नही लौटेंगे, पर कुछ और ही बातें हुईं ।"

ऊषादेवी उसके राजनीतिक पहलू पर विचार करने के लिए तैयार नही थीं, बोली, "तुम्हे तो मालूम है कि मुझे इससे कोई दुःख नही है । अन्धा क्या मागे ? आखें । मैं तो केवल इतना ही चाहती हू कि तुम्हारी शादी हो जाए । मैंने इतनी लड़कियां लाकर तुम्हे दिखलाईं पर तुमने किसीको पसन्द नही किया । तो क्या फिर श्यामा की मा से बातचीत चलाऊ ? भले ही वह बाहर रह आई हो, मेरा विश्वास है कि वह बिल्कुल अच्छी है···"

राजेन्द्र ने इसपर झुझलाकर उठते हुए कहा, "तुमको तो बस एक ही बात लगी रहती है । मेरे भाइयो की बीविया मौजूद हैं, तुम उन्हे लेकर गुड्डा-गुड़िया क्यो नही खेलती ? तुम समझती हो कि दुनिया जहा थी वही खड़ी है ।

मान लो तुमने प्रस्ताव रखा और श्यामा ने उसे ठुकरा दिया, जिसका कि उसे पूरा हक है, तो क्या होगा ?"

कहकर वह घर से निकल गया।

वह वहां से सीधे आनन्दकुमार के घर पर पहुचा, पर आनन्दकुमार उस समय घर पर नही थे, वह रूपवती से टकरा गया। रूपवती १९२१ के जमाने मे राजेन्द्र को देखकर इतनी मुग्ध हो गई थी कि उसने उसे घर लाकर बेटे की साध पूर्ण करनी चाही थी, पर मोहावेश के वे रंगीन बादल राजनीतिक आधी से उडकर तितर-बितर हो गए थे। रूपवती के जीवन मे देखा जाए तो सब से कम परिवर्तन हुआ था, फिर भी उसके मानस-लोक मे बहुत गहरे परिवर्तन हुए थे। १९२१ के उन तूफानी दिनो के पहले वह बहुत कुछ एक आत्मतुष्ट महिला थी, बस उसे कोई कमी महसूस होती थी तो यही कि उसकी कोई सन्तान नही थी। पर इस बीच मे वह ऐसे महान् और विस्तृत जीवन के सम्पर्क मे आ चुकी थी कि वह वैयक्तिक दुःख उसे बिलकुल ही तुच्छ मालूम होता था। इसका अर्थ यह नही कि वह अब सन्तुष्ट थी; नही, इसके विपरीत वह पहले से कही अधिक असन्तुष्ट थी। यदि उससे पूछा जाता कि वह क्यो असन्तुष्ट है, तो वह इसका उत्तर शायद ही दे पाती।"

इस बीच मे राजेन्द्र भी बहुत बदल चुका था। विश्वनाथ की गली में तिलक-स्वराज्य फन्ड का बक्सा लेकर हरएक से चन्दा मागते हुए राजेन्द्र का रूप कुछ और था। उसे देखकर दर्शनार्थिनी रूपवती ही क्यो बहुत-सी अधिक उम्र की महिलाओ के हृदय मे मातृ-स्नेह उमड़ पडता था, वह तो जैसे बाल-गोपाल का ही एक रूप था। उस समय वे महिलाए उसे जो चन्दा देती थी, वह कहा तक गाधी जी के प्रति रोमाचकारी भक्ति के कारण, कहा तक देश-भक्ति के कारण और कहा तक दूसरे अप्रासगिक तत्वो के कारण देती थी, यह कहना कठिन है। अब तो राजेन्द्र कुछ और ही हो गया था। वह जब-तब आकर आनन्दकुमार से इधर-उधर की बाते कर जाता था, पर अब रूपवती की हृत्तंत्री के वे तार उसकी बातो से झकृत नही होते थे, जो उन दिनों स्वर्गीय स्वर-लहरी मे फूट पडते थे। इसके अलावा इस बीच मे रूपवती को राजेन्द्र से कभी अकेले मे मिलने का मौका नही लगा था।

इसलिए आज जब दोनो को एकाएक यह मौका मिला तो दोनों अजीब ढंग

से अकडकर रह गए। जिससे कभी पहले बहुत स्नेह रहा हो, पर अब केवल जान-पहिचान ही रह गई हो उससे अकेले मे मिलने पर जो हालत होती है, वही हालत उनकी हुई। दोनो को ऐसा लग रहा था जैसे पहले का वह सम्बन्ध यदि गलत नही तो हास्यास्पद जरूर था।

रूपवती उसे बैठाकर जलपान का प्रबन्ध करने के लिए चली गई। बोलती गई, "अभी वे आते ही होगे, तुम बैठो।"

यदि राजेन्द्र का वश चलता तो वह भाग जाता। उसने कहा भी, "अभी तो चाय पीकर आया हू, मै फिर कभी आ जाऊगा।"

पर उधर किसीने उसकी बात सुनी नही और वह बैठा रह गया। बैठे-बैठे एक सत्य उसे भासित हुआ कि पहले वह जो था, अब वह वैसा नही रह गया है। भीतर ही भीतर एक आत्मग्लानिमूलक टीस उठी, साथ ही न जाने क्यो श्यामा की बात याद आई। वह भी तो वैसी नही रह गई जैसी पहले थी। बहुत दिनो तक वह जो युग जा चुका है, उसके पैतरे बनाए रही, पर अन्त मे उसने भी आत्मसमर्पण कर दिया और घर लौट आई। यदि पहले ही आती तो कितना फर्क हो जाता।

रूपवती आई तो उसके साथ-साथ एक पडोस की दस साल की लड़की थी—पूर्णिमा। रूपवती ने पूर्णिमा को परिचित कराते हुए कहा, "यह हमारे पडोस के प्रसिद्ध इजीनियर रामकृष्ण बाबू की लडकी है, बातूनी नम्बर एक है।"

राजेन्द्र जब तक रहा, रूपवती पूर्णिमा के ही बारे मे बातचीत करती रही या दोनो मिलकर पूर्णिमा की बात सुनते रहे। शायद यह लडकी एकाएक ही आ गई थी, पर इसमे सन्देह नही कि रूपवती ने एक अजीब परिस्थिति से बचने के लिए इसका इस्तेमाल एक ढाल के रूप मे किया।

लगभग घण्टे भर तक बेकार की ही बातचीत होती रही। जब उसके बाद भी आनन्दकुमार नही आए (वे किसी पुस्तक की खोज में 'कारमाइकेल' पुस्तकालय मे गए थे, फिर उन्हे जल्दी क्यो होती?) तो राजेन्द्र दोनो से विदाई लेकर चला गया। वह जिस गुत्थी को लेकर आया था वह उसी प्रकार रह गई। पहले तो उसे ऐसा प्रतीत हो रहा था कि यह बुरा हुआ, पर जब वह आनन्दकुमार के घर से बाहर निकला तब उसने सोचा कि अच्छा ही हुआ कि आनन्दकुमार नही मिले क्योकि उस गुत्थी को आनन्दकुमार क्या सुलझाते, उसे

तो केवल वही सुलझा सकता था या श्यामा ।

राजेन्द्र ने एक बार यह सोचा कि जाकर श्यामा से मिले, पर अभी उस सम्बन्ध मे वह कुछ निर्णय नही कर पाया था कि उसने सोचा आखिर मिले तो क्यो ? जिसे बिना किसी कारण के ठुकरा दिया, उससे अब वह किस मुह से जाकर मिल सकता था ? एकाएक उसे वह दृश्य याद आया जब जेल जाने के पहले वह रूपवती के इसी घर मे टिका हुआ था और श्यामा एकाएक आई थी और आसन पर बैठकर चर्खा कातने लगी थी । आज भी वह कल्पना मे चर्खे की वह मधुर ध्वनि सुन सकता था, पर अब उसकी याद करना व्यर्थ था । कितनी ही तरह की अद्भुत, विकट तथा परस्पर को काटने वाली आवाज मे चर्खे की वह ध्वनि जाने कहा डूब गई थी । अब प्रत्यावर्तन असम्भव था । जिन्दगी की जो घडी बीत जाती है, उसे वापस बुलाना असम्भव है ।

वह इसी प्रकार सोचता हुआ जा रहा था कि सामने से आनन्दकुमार आते हुए दिखाई पडे । सच तो यह है कि राजेन्द्र का ध्यान उनपर नही गया था । आनन्दकुमार ने जब उसका नाम लेकर पुकारा तभी उसे पता चला कि वह आनन्दकुमार के सामने है । आनन्दकुमार के बगल मे एक मोटी-सी पुस्तक दबी हुई थी और वे बहुत खुश मालूम हो रहे थे ।

आनन्दकुमार ने कहा, "कहो राजेन्द्र, क्या तुम मुझसे मिलने आए थे ?"

राजेन्द्र अभी इसका उत्तर भी नही दे पाया था कि आनन्दकुमार ने कहा, "आज मैंने एक बहुत बडा आविष्कार किया । जिस पुस्तक की वर्षों से तलाश थी, आज वह पुस्तक एकाएक मिल गई । सोचो कि कितनी बडी बात है । मैं इसके लिए कहा-कहा पत्र व्यवहार कर चुका और यह पुस्तक हमारे यहा के पुस्तकालय मे ही मौजूद थी । कोई जानता नही था कि यह कौन-सी पुस्तक है क्योकि यह जर्मन भाषा मे है, खैरियत है कि इसे गुदड़ी बाजार मे बेच नही दिया गया ।"

आनन्दकुमार अपनी शिशु सुलभ प्रफुल्लता मे और भी कुछ कहना चाहते थे कि इतने मे उनका ध्यान राजेन्द्र के चेहरे पर गया । राजेन्द्र उन्हे निविष्ट चित्त से देख रहा था, शायद उसका ध्यान उनकी बातो पर नही था । ढाल पर चलती हुई नई गाडी मे जैसे एकाएक ब्रेक लग गया । वे माफी-सी मागते हुए बोले, "एक दृष्टि से मैं बडा स्वार्थी हू, पुस्तको के प्रेम मे मैं सब कुछ भूल जाता हू,"

कहकर उन्होने उस मोटी-सी पुस्तक का एक बार फिर से आलिगन कर लिया और उसे सू घते हुए बोले, "मुझे पुस्तको की गध बहुत अच्छी लगती है, पर तुम अपनी बात बताओ।"

राजेन्द्र बिल्कुल अप्रत्याशित ढग से बोला, "क्या हम लोग आपकी तरह नही हो सकते ?"

आनन्दकुमार हसे, उनकी यह हसी उस बच्चे की तरह थी, जिसकी प्रशसा घर के बाहर के लोग कर चुके हो। यदि मा या बाप प्रशसा करे तो बच्चा उनसे लिपट जाता है पर बाहर वाले के मुह से प्रशसा सुनकर वह अजीब तरह से ऐंठकर रह जाता है। आनन्दकुमार बोले, "मै तो कई बार बडा लज्जित हो जाता हू, पर आदत से मजबूर हू, तुम्हारी चाचीजी को भी मेरा यह पुस्तक-प्रेम पसन्द नही है, पर वह इसे सहन कर लेती है···"

"पर मै तो ऐसा होना चाहता हू, जिससे कोई फिक्र न रहे।"

आनन्दकुमार ने चुपके से पुस्तक का फिर से आलिगन किया। असल मे उन्हे इस बातचीत मे कोई विशेष रस नही आ रहा था क्योकि बडी मुश्किल से पुस्तकालयाध्यक्ष ने इसे चौबीस घण्टे के लिए पुस्तकालय के बाहर ले जाने की अनुमति दी थी। इस समय एक-एक मिनट कीमती था। फिर भी आनन्दकुमार शिष्टाचार से मुह मोडना नही चाहते थे, बोले, "मेरे लायक कोई काम तो नही है ?"

राजेन्द्र हसकर बोला, "आपके पास किसी काम से आऊ इतना बडा अहमक मैं नही हू। आपके पास तो मै उस तरह से आता हू जैसे लू का सताया हुआ आदमी जुडाने के लिए हिमालय की गोद मे भागता है।"

राजेन्द्र कभी इतना भावुक नही था, इसलिए आनन्दकुमार को सन्देह हुआ कि कोई भेद जरूर है। बोले, "राजेन्द्र, मुझे ऐसा मालूम हो रहा है कि तुम दुखी और घबडाए हुए हो। क्या मै तुम्हारे लिए कुछ कर सकता हूं ?"

राजेन्द्र बोला, "मेरे लिए कोई भी कुछ नही कर सकता क्योकि मैं तो अपनी नावे जलाकर इस टापू मे बैठा हू।"

आनन्दकुमार एक क्षण तक सोचते रहे, फिर बोले, "तुम राजनीतिक सेवा मे लग जाओ, यदि तुम्हारे मन मे कोई कष्ट है, तो वह दूर हो जाएगा। आज राजनीति ही सबसे बडा धर्म है। तुम उसीमे शान्ति पाओगे।"

"पर चाचा जी, राजनीति मे हम जो सास लेते है, उसमे कुछ गन्दगी भी होती है।"

"सबके लिए नही, निस्पृह होकर सेवा करो तो गन्दगी पास नही फटक सकती। महात्मा गाधी को देखो, वे किस प्रकार से जल मे एक पद्म-पत्र की तरह बने रहते है।"

"पर सब महात्मा तो नही हो सकते।"

आनन्दकुमार ने कहा, "नही हो सकते, यह बात शायद उतनी सत्य नही है, जितनी यह बात है कि नही होना चाहते। न सही बड़ा महात्मा प्रत्येक व्यक्ति यदि वह चाहे तो महात्मा बन सकता है। ऐसा बनने का रहस्य यह है कि निस्पृह होकर कार्य किया जाए।"

राजेन्द्र बोला, "यही तो हमसे नही होता। हा, उस समय मैं जरूर निस्पृह था जब माजी के कहने पर मै आपके घर मे आया था और उसके बाद जेल चला गया था। पर उसके बाद तो जैसे वह सुर कट ही गया। जाने कौन-कौन-सी वासनाए सिर उठाने लगी। इसमे सारा दोष हमारा हो ऐसी बात नही, नेता लोग भी तो भिन्न-भिन्न बाते बताते है। कोई कुछ बताता है कोई कुछ। इधर तो यह हालत है, उधर ब्रिटिश सरकार तेजी से तप रही है।"

आनन्दकुमार ने हाथ से पुस्तक की जिल्द की परीक्षा करते हुए कहा, "पर इससे विक्षिप्त होने की कोई जरूरत नही। जब सघर्ष नही होता तो लोग बैठे-ठाले बाल की खाल निकाला करते हैं। फिर जब संग्राम आएगा तो यह प्रवृत्ति सूर्यालोक के सामने अन्धकार की तरह भागती नजर आएगी।"

राजेन्द्र कुछ सोचकर बोला, "पर उस समय को लाना तो हमारे हाथ मे नही है। एक बहुत जबर्दस्त मौका खो गया, अब वैसा मौका आए या न आए।

आनन्दकुमार ने पुस्तक को सहलाते हुए, मानो उससे अनुप्रेरणा लेते हुए कहा, "मैं तुम्हारी बातो में सर तेजबहादुर सप्रू ऐसे लोगो की बातो की भनक पा रहा हू, जिन्होने गाधी जी को असहयोग के पहले यह चेतावनी दी थी कि वे असहयोग न चलाएं, नही तो यदि वह आन्दोलन असफल हो गया, तो देश दो सौ वर्ष तक सिर नही उठा सकेगा। पहले तो मैं ऐसे विषयो पर सोचता नही था, पर अब जबकि मैंने सोचना शुरू किया है, मुझे ऐसा मालूम होता है कि यह सब विचार कायरो के ही उपयुक्त है। मैं तो स्पष्ट देख रहा हू कि सारी

घटनाएं संग्राम की ओर जा रही है और देश मे फिर एक बार जोर से आन्दोलन होगा। अब की बार देश का दम बढा है, इसलिए सम्भव है कि पकड आखिरी हो या ऐसा हो सकता है कि पकड बहुत दीर्घ हो और फिर अगली बार अन्तिम पकड हो, जिसमे ब्रिटिश सत्ता ढेर हो जाए।"

आनन्दकुमार इस प्रकार तीक्ष्णता के साथ कोई बात नही कहते थे, इसलिए राजेन्द्र को कुछ आश्चर्य हुआ, पर साथ ही उसे मालूम हुआ कि व्यक्तिगत रूप से उसपर भी लाच्छन लगाया गया है। उसका उत्तर-सा देते हुए उसने कहा, "वामपथी लोग भी तो यह कहते है कि महात्मा जी ने मौका खो दिया और वामपथी ही क्यों सी०आर० दास, मोतीलाल नेहरू, जवाहरलाल नेहरू सभी इसी राय के है..."

आनन्दकुमार ने कहा, "वामपथियो और ईमानदार काग्रेसियो के कहने मे और नरमपंथियो के कहने मे बड़ा अन्तर है। सर तेजबहादुर ऐसे लोग कानून पढते-पढते उसके नीचे इतना दब गए है कि वे यह सोच ही नही सकते कि जब इतिहास कोई छलाग भरता है तो वह कानून तोडकर ही छलाग भरता है। यदि समाज का विकास कानूनी पंडितो के कारण रुका रहे तो हो चुका, कानून को केवल इतने से सन्तुष्ट रहना चाहिए कि वह एक प्रगतिशील समाज के पीछे-पीछे चल सके। हा, हम ऐसे कानून की भी कल्पना कर सकते है, जो समाज को उसी तरह से रास्ता दिखाते हुए चले जैसे खोदी हुई नहर फालतू पानी को रास्ता बनाकर प्यासी धरती के पास ले जाती है।

इसी प्रकार खडे-खडे दोनो मे कुछ देर तक बाते होती रही, पर जो गुत्थी राजेन्द्र के मन मे थी, वह उसके मन मे ही रह गई और वह कुछ कह न सका। फिर भी जब वह आनन्दकुमार से अलग होकर अपने घर की ओर चला, तो उसके मन मे वह दुःख और खिन्नता नहीं थी जिसे लेकर वह घर से चला था। उसके घावो पर जैसे हिमालय की हवा ने हौले से हाथ फेर दिया था। उसे ऐसा मालूम होने लगा जैसे इतनी बडी-बडी बातों के सामने उसका व्यक्तिगत दुख तुच्छ है।

अविनाश दशाश्वमेध घाट से लौटकर एक गली मे दाखिल हो ही रहा था कि पीछे से किसी महिला ने उसे पुकारा, "अविनाश जी आपको ही कहते है ?"

अविनाश का चेहरा कडा पड गया और वह घूमकर बहुत कुछ बचावात्मक ढग से खडा हो गया, पर जब उसकी आख तनकर खडी महिला पर पडी, तो वह एक क्षण के लिए हतबुद्धि हो गया। वह कुछ समझ नही सका कि यह महिला कौन है। पहले तो उसने समझा था कि वह कोई गुप्तचरी है क्योकि इधर खबर मिली थी कि क्रान्तिकारी दल मे स्त्रिया प्रविष्ट होने के कारण पुलिस विभाग ने भी गुप्तचरिया नियुक्त की है। बोला, "जी हा, मेरा नाम अविनाश है"—कहकर कुछ ठहरते हुए बोला, "आप कौन हैं ? आप मेरा पीछा क्यों कर रही हैं ?"

वह महिला कदाचित् कुछ हसी, बोली, "मैं किसीका पीछा नही करती। आप शायद डर रहे होगे कि मै खुफिया विभाग की ओर से हूं, पर यह बात नही ..."

महिला की वाचालता से अविनाश के मन मे और भी गाठ पड गई, बोला, "तो आप कौन है ?"

वह महिला कुछ हिचकिचाई, बोली, "यही तो मैं अपने से पूछती हू कि मैं कौन हू ? अपने परिचय के विषय मे मैं केवल इतना ही कह सकती हू कि मैं एक अति साधारण स्त्री हू और कुछ नही।"

अविनाश ने देखा कि पास ही एक व्यक्ति सिगरेट सुलगाने के बहाने संध्या समय एक युवक और एक सुन्दरी मे क्या बातचीत होती है, यह सुनने के लिए खडा हो गया है। अविनाश को बहुत बुरा लगा, बोला, "आप झट से असली बात पर आइए, माना कि आप एक साधारण महिला है, पर आपने मुझे क्यों पुकारा ?"

वह महिला बोली, "यह स्पष्ट है कि आप मेरा विश्वास नही कर रहे है। मैं तो केवल इतना पूछना चाहती थी कि कल्याणाश्रम मे जो दो साधू रहते थे, वे कहा है ?"

यह प्रश्न सुनकर वह व्यक्ति सिगरेट का कश लेता हुआ और इधर बढ आया। अब महिला की दृष्टि भी उस व्यक्ति पर पडी, बोली, "मैं समझ गई कि आप क्यो मेरा विश्वास नही कर रहे है। खैर, चलिए मै आपको अपने सम्बन्ध मे प्रमाण दूगी।" कहकर वह महिला उधर चलने लगी जिधर अविनाश जा रहा था। अविनाश कुछ समझ नही पाया, पर उसे उस महिला के साथ चलना पडा। पीछे-पीछे वह व्यक्ति भी आ रहा था। महिला ने यह बात देखी और फुर्ती से एक के बाद एक गली इस तरीके से पार करने लगी कि पीछा करने वाले व्यक्ति से उसे छुटकारा मिल गया। अविनाश अपने अनजान मे उस महिला के साथ-साथ चल रहा था। उस महिला मे कोई ऐसा आकर्षण था, जिसके कारण वह उसे न पहचानते हुए भी उसके साथ-साथ चलता गया। विशेषकर जब उस महिला ने उस खुफिया से छुटकारा कर लिया तो उसके प्रति अविनाश की प्रशसा की भावना बढ गई।

वह महिला नगरपालिका की एक बत्ती के सामने खडी हो गई और उसने कही से निकालकर एक फोटो अविनाश के हाथ मे दिया।

अविनाश ने फोटो हाथ मे लेकर देखा तो वह कम उम्र वर-वधू का चित्र था। उसने उसे अच्छी तरह देखा, पर उसकी समझ मे कुछ नही आया और उसके मन मे यह सन्देह होने लगा कि कही यह स्त्री पगली तो नही है। वह फोटो हाथ मे लेकर उस महिला को बडे ध्यान से देखने लगा। इसपर वह महिला खिलखिला कर हस पडी। अविनाश इससे और भी घबड़ा गया। रात का समय, सुन्दरी युवती और इस तरह की परिस्थिति! यह स्त्री कहना क्या चाहती है?

अविनाश ने फोटो लौटाकर उस महिला से अपनी छुट्टी करनी चाही, पर उस महिला ने फोटो वापस लेने से इन्कार किया, बोली, "अभी आपने इसे ध्यान से देखा नही। और अच्छी तरह देखिए।"

अविनाश ने फिर से फोटो देखा तो उसमे उसे वरवधू दिखलाई दिए और कुछ नही। उसने कहा, "मै तो इसमे कुछ भी नही देख रहा हू, सिवा इसके कि एक वर और दूसरी वधू है। शायद इनका विवाह अभी-अभी होकर चुका है।"

उस महिला ने सुधारते हुए कहा, "नही, अभी नही, १९१० मे यह विवाह हुआ था। अब आप कुछ समझे? ध्यान से देखिए।"

अविनाश ने ध्यान से देखा। तरुण या तरुणी कोई जैसे पहचान मे आ रही थी, पर कुछ ठीक से पल्ले नही पड रहा था। उसने फिर फोटो लौटाने के लिए हाथ बढाया। पर महिला ने फोटो नही लिया, बोली, "इस फोटो मे जो लडकी है, वह मै ही हू। अब आगे पहचानिए''"

अविनाश ने फोटो ध्यान से देखा तो बात सच्ची मालूम हुई। वही बड़ी-बडी आखे, इस समय वे जैसे खोई-खोई है, पर उस समय वे भोली-भाली थी। वही सुन्दर ललाट, पतले ओठ, अनुपात से बनी हुई बगाली सुन्दरी की नासिका। पता नही क्यो अविनाश सिहर उठा, जैसे इतिहास की एक पूरी पुश्त उसकी आखो के सामने से निकल गई हो। इस महिला के सौन्दर्य मे मादकता थी, पर साथ ही उसमे कुछ ऐसी पवित्रता थी जैसी हज़ारो फुट ऊपर पहाडी झीलो मे देखने मे आती है। उसका पानी इतना ठडा होता है कि उसमे गोता लगाने की इच्छा नही होती बल्कि किनारे पर दौडकर चिरंतन रहस्यो पर ध्यान करने की इच्छा होती है।

अविनाश के मुंह से निकल पडा, "आप कौन है माताजी ? अपना परिचय क्यो नही बताती ?"

उस महिला ने जो माताजी शब्द सुना तो उसमे अद्भुत परिवर्तन हुआ। उसके चेहरे पर एक कडवी हसी खेल गई। बोली, "मैने सुना था कि तुम बहुत बडे क्रान्तिकारी हो, पर तुमने फोटो मे अपने कुणाल जी को नही पहचाना ?"

अविनाश ने जो अब फोटो पर दृष्टि दौड़ाई तो साफ झलक गया कि वह तरुण कुणाल ही है। उसे यह पता नही था कि कुणाल की शादी भी हो चुकी है। सच तो यह है कि कुणाल के बारे मे उसे सिवाय इसके कुछ पता नही था कि वे एक पुराने तपे हुए क्रान्तिकारी है और प्रथम महायुद्ध के समय मे कई वर्षों तक जेल मे रहे। बोला, "मुझे स्वप्न मे भी यह सन्देह नही था कि कुणाल जी की शादी हो चुकी है।"

इतना कहकर ही वह रुक गया। क्योकि उसके मन मे इसके साथ ही जो सैकडो प्रश्न उदित हुए, उनको वह पूछना उचित नही समझता था। वह महिला बोली, "तुम मुझे माताजी मत कहो—इस शब्द से मुझे बहुत नफरत है।" कहकर जैसे कुछ सोचकर बोली, "कोई कुमारी माता नही हो सकती। तुम मुझे रुक्मिणी दीदी कहा करो।"

अविनाश हतबुद्धि होकर बोला, "अभी तो आपने बताया कि आपकी शादी हो चुकी है फिर आप कुमारी कैसे है ?" कहकर उसने प्रश्न भरी दृष्टि से रुक्मिणी की ओर देखा ।

रुक्मिणी ने कहा, "यही बात तो तुम नही समझ सकते हो । कुमारी एक अवस्था का नाम है, जो किसी एक रस्म को अदा करने से स्वत. बदल नही जाती । मेरी शादी तो हुई, पर उसके बाद ही तो वे स्वदेशी आन्दोलन में घर-बार छोडकर चले गए । इसलिए मुझे बिना परिश्रम के यह माता की पदवी कतई पसन्द नही है ।"

अविनाश इसपर क्या कहता, चुप रहा । वह अनुभव कर रहा था कि रुक्मिणी के मन मे कितना कडवापन है । तभी न वैसा कह रही है । बोला, "तो दीदी, आप भी क्रान्तिकारिणी क्यो नही बनी ?"

रुक्मिणी अपनी बडी-बडी आखे फैलाकर हसी, बोली, "मैं क्यों क्राति-कारिणी बनती ? मुझे तुम लोगो की विचारधारा से सख्त नफरत है। हो सकता है तुम लोग देश का कल्याण कर रहे हो, पर तुम लोग परिवार-तोडक हो । जब परिवार नही तो देश कैसा ? तुम्हारा देश स्वतन्त्र भी हो जाए तो मुझे क्या मिल जाएगा ? नारी के रूप मे मेरा जीवन तो व्यर्थ गया ।"

उसका एक-एक शब्द, गरम छुरी जिस प्रकार मक्खन मे जाती है, उसी प्रकार से अविनाश के हृदय को चाक किए दे रहा था । किसी मे इतना कडवा-पन हो सकता है, विशेषकर कुणाल की पत्नी मे इतना कडवापन हो सकता है, इसकी उसे कल्पना नही थी । वह बिल्कुल किंकर्तव्यविमूढ हो गया । बोला, "आपका त्याग निरर्थक नही है । वह रग ला रहा है ।"

"हा वह रंग ला रहा है, पर मेरा तो रग हमेशा के लिए उड़ गया । मैं इस बात को कभी नही मान सकती कि मेरा बलिदान इस रूप मे जरूरी था। यह न समझो कि मै कष्ट नही झेल सकती या जेल नही जा सकती । मैं असहयोग आन्दोलन मे जेल भी हो आई । चौरीचौरा के बाद छूटी हूं ।"

"उन्हे यह सब मालूम है ?"

इस प्रश्न से रुक्मिणी बहुत नाराज़-सी हो गई, बोली, "मैंने उन्हे मालूम कराने के लिए जेल-यात्रा नही की थी । असली बात तो यह है कि मुझे असहयोग मे भी कोई विश्वास नही था, फिर भी मै इसलिए जेल गई थी कि देखू

मैं जेल जा सकती हू या नही । मैं क्रान्तिकारी आन्दोलन के विरुद्ध हूं । इसलिए असहयोग मे जेल गई थी ।"

"आपकी बाते बहुत अजीब है, पर आपको देखने से यह विश्वास नही होता कि आप इन विचारो पर चलती है ।"

रुक्मिणी एकाएक खिलखिलाकर हस पडी और बोली, "मालूम होता है, तुम मेरे रूप पर रीझ गए हो । नही तो जब मै स्वय कह रही हू, तो तुम मेरी बात पर विश्वास क्यो नही करते ? अजीब बात है कि सब लोग मेरे रूप पर रीझते है, सिवा उस व्यक्ति के जिसे मुझपर रीझना चाहिए था ।"

अविनाश ने प्रतिवाद करते हुए कहा, "यह आप क्या कह रही हैं ? मैं तो आपको एक देवी मानता हू, पर आपके विचार बहुत ही अद्भुत है, और उनका ऐसा होने का कारण समझ मे आता है, आपको दु ख बहुत मिला है ।"

रुक्मिणी फिर झुंझलाकर बोली, "फिर वही बात, क्या तुम मुझे मुझसे ज्यादा जानते हो ? फिर तुम यह क्यो नही समझ पाते कि मेरे कहने के बावजूद जो तुम हमे अच्छी समझ रहे हो, वह रूप के मोह के अतिरिक्त कुछ नही है ।"

"दीदी, आप मेरे लिए ऐसे शब्दो का प्रयोग न करे ।"

"क्यो न करू ? क्या तुम समझते हो कि तुम लोग भौतिक नियमो के बाहर हो ? फिर एक रूपवती स्त्री को देखकर इतना घबराते क्यों हो ? बस यही तुम्हारा भौतिकवाद है ? मै तो यही कहूगी कि तुम लोग कहने को तो भौतिकवादी हो, पर तुम लोगो से बढकर अध्यात्मवादी कोई नही है। तुम्हे तो बल्कि यह कहना चाहिए था कि जब कुणाल जी ने आपको नारीत्व के अधिकारो से वचित किया तो मै आपको ग्रहण करता हू ··"

यह सुनकर अविनाश यन्त्रचालितवत् दो कदम पीछे हट गया जैसे उसे साप ने डस लिया हो। इस पर रुक्मिणी बहुत जोर से हसी, बोली, "देख लिया तुम्हारे भौतिकवाद और नास्तिकवाद को। डरो मत, तुम अगर मुझे ग्रहण करना भी चाहते तो मैं कब तुम्हारी बात मानने वाली थी ? क्या दुनिया मे पुरुषो की कमी है ? मैं चाहती तो अच्छे से अच्छे पुरुष को अपने चरणो का दास बना लेती, पर यहा तो मुसीबत यह है कि एक तुम्हारे गुरुजी के अलावा और किसीको मै पुरुष करके देख ही नही पाई । मन को बहुत समझाया, बहुत कोशिश की, पर मन नही माना तभी न इस तरह बावली बनकर घूम रही हूं ।"

अविनाश पूर्ण रूप से इस अद्भुत नारी के जादू मे आ चुका था। पता नहीं क्यो उसे ऐसा मालूम हुआ कि इस नारी मे महाक्रान्ति स्वय मूर्त होकर बोल रही है और उसकी आवाज़ कुणाल और अमिताभ ऐसे सैकडो लोगो से जबर्दस्त है क्योकि उसके अन्दर से मूक त्याग करने वाली समस्त नारी-जाति की आवाज़ गूज रही थी।

दोनो को एक जगह पर खडे-खडे बातचीत करते-करते काफी देर हो गई थी। यह बात एकाएक दोनो के ध्यान मे एक साथ आई, तब दोनो फिर चलने लगे और चू कि काशी के सारे रास्ते दशाश्वमेघ की ओर जाते है, इसलिए वे उसी तरफ चल पडे। अविनाश ने चलते-चलते कहा, "रुक्मिणी दीदी! आपके विचार जैसे भी हो, आपकी सहायता करना मेरा कर्तव्य है।"

रुक्मिणी बोली, "मेरी सहायता कोई नही कर सकता। क्या तुम मुझे यह बता सकते हो कि वे किधर गए। मैं वह रोगी हू जिसे अपने वैद्य का पता मिल गया है, पर वैद्य बराबर उससे भाग रहा हो, फिर मेरी दवा कैसे होगी?"

दोनो दशाश्वमेघ की सीढियो पर पहुच गए और वहा एकात देखकर एक जगह सीढी पर ही बैठ गए। अविनाश ने थोडे मे वह सारी परिस्थिति बताई जिसके कारण कुणाल और अमिताभ यहा से अन्तर्हित हो गए थे। उसने बताया, "शायद मुझे भी जाना पडे।"

रुक्मिणी कुछ देर तक सोचती रही, फिर बोली, "जेल से छूटकर मैंने कोशिश की कि उनसे मिलू। मुझे पहले से ही पता था कि वे असहयोग आन्दोलन मे जेल नही गए थे। छूटे ही थे कि असहयोग आ गया। मैंने सुना कि उन्हे असहयोग का हृदय-परिवर्तन वाला दर्शन बिलकुल पसन्द नही आया, पर वे गाधी जी द्वारा चलाए हुए सफल जन आन्दोलन से बहुत प्रभावित थे। जब आन्दोलन बन्द हो गया, तो अन्य पुराने क्रान्तिकारियो के साथ वे संगठन करने निकल पडे। सुनने मे आया कि वे स्वास्थ्य सुधारने गए हैं। मैं समझ आई कि वे पछाह मे ही होगे। इतने दिनो मे मैं यहा पहुची, तो अब वे यहा से उड़ चुके हैं। अब फिर मुझे यात्रा करनी पडेगी।"

डरते-डरते अविनाश ने कहा, "आप यहा कुछ दिन रहिए, मै आपके रहने का प्रबन्ध कर देता हूं।"

"इसके पहले भी मेरे रहने का प्रबन्ध कइयो ने करना चाहा है, पर मै कही

रहने पर राजी नही हुई । तुम मुझे उनका पता बता दो तो मै चल दूं ।"

अविनाश ने कहा, "आप तो फिर हसी कर रही हैं। मै आपके रहने का प्रबन्ध श्मामा नामक एक सदस्या के साथ किए देता हू, मुझे आशा है कि आपको वह लडकी बहुत पसद आएगी ।"

"तुम्हारा यह अनुमान गलत है। चू कि तुम्हे वह लडकी पसन्द आई इसलिए मुझे वह पसन्द आएगी, ऐसी कोई बात नही है। इसके अलावा मेरे साथ रहने से डर यह है कि वह लडकी भी पार्टी से अलग न हो जाए । मैं उसे समझाऊगी कि इन बातो मे कुछ नही रखा है ।"

अब अविनाश भी इस अद्भुत नारी की वाक्यावली से परिचित हो गया था, बोला, "कही वह आपको न समझा ले ।"

"जिसने कान ही बन्द कर लिए हो उसे कोई कुछ सुना कैसे सकता है। मैं किसीकी कोई बात सुनने के लिए तैयार नही हू। मेरे जीवन का उद्देश्य यह है कि मैं उन्हे घर लौटाऊ, इसके अलावा मेरा कोई उद्देश्य नही है ।"

अविनाश इसपर हंसा, पर कुछ बोला नही। अन्धकार मे उसकी हसी रुक्मिणी को दिखाई नही पडी, पर वह बोली, "मैं जानती हू भाई कि तुम हंस रहे हो, पर मैंने अपने सामने जो लक्ष्य रखा है, वह सौ-पचास टुटही पिस्तौलो और दो-चार सौ पटाखो से भारत स्वतन्त्र करने के लक्ष्य से कम हास्यास्पद है। अभी उनमे जोश है, कर्मशक्ति है, पर हमेशा ऐसा नही रहेगा। पर कभी उन्हे एक आश्रम की जरूरत होगी ।"

"उन्हे या आपको ?"

"आश्रम की जरूरत पुरुष और स्त्री दोनो को रहती है, पर उन्हे अधिक रहेगी क्योकि वे एक क्रातिकारी है। दस-पाच साल मे उनके रहे-सहे सगी-साथी मर-खप चुके होगे, यदि वे स्वय जिन्दा रह गए तो उन्हे सान्त्वना की ज़रूरत होगी ।"

इसी प्रकार कुछ देर तक और तरह-तरह की बाते होती रही। अविनाश को रुक्मिणी की बातो मे अद्भुत रस आता रहा। बाते अद्भुत होते हुए भी उनमे कही पर कमज़ोरी का नामोनिशान नही था। वह ऐसे बोलती थी जैसे उसने पहले ही से प्रत्येक बात सोच-समझ रखी हो।

अभी वे इसी तरह बात ही कर रहे थे कि रुक्मिणी एकाएक पगली की

तरह उठ खडी हुई, बोली, "वे अभी यही पर थे। शायद हम लोगो की बातें सुन रहे थे..."

अविनाश भी खडा हो गया और चारो तरफ देखने लगा। जिधर रुक्मिणी देख रही थी, उधर एक छाया-सी हिली। रुक्मिणी उधर दौड़ पडी। पीछे-पीछे अविनाश भी दौडा। थोडी देर खोजने के बाद रुक्मिणी रुक गई, बोली, "तुम मुझे पगली समझ रहे होगे, पर नही, मैने उनकी गन्ध उसी तरीके से पाई जैसे मैं तुम्हे देख रही हू। यह वही थे। इसमे मुझसे कोई भूल नही हो सकती।"

अविनाश बडे चक्कर मे था कि क्या कहे। वह जानता ही था कि कुणाल काशी के बाहर जा चुके है, यदि होते तो भी यहा क्यो होते? अभी-अभी वह रुक्मिणी को बहुत बुद्धिमती स्त्री समझ रहा था, पर अब वह उसे फिर अर्ध-विक्षिप्त मालूम हो रही थी। उसने प्रसग समाप्त करने के लिए कहा, "वे यहा हो ही नही सकते। वे तो किसी और प्रान्त को सगठित करने गए हैं।"

रुक्मिणी हसी, बोली, "प्यारे भाई, मेरी आखो को भले ही कोई धोखा दे सके, पर मेरी घ्राणशक्ति को कोई धोखा नही दे सकता। मै आज कल्याण आश्रम मे गई थी, मैने वहा हर जगह उनकी गन्ध पाई। अवश्य वहा और भी गन्धे थी, पर जहा वे सोते थे, वहा उन्हीकी गन्ध थी।"

अविनाश गन्ध वाली यह अद्भुत बात मानने के लिए तैयार नही था, बोला, "आप तो कहती थी कि सालो से उनसे भेट नही हुई है, फिर आप उनकी गध को कैसे पहचानती हैं? आप भ्रम मे है।"

"आखो से भेट नही हुई, पर मैं तो चौबीसो घण्टे उन्हीको देखती रहती हू। छोडो इस बात को, क्योकि यह तुम्हारी भौतिकवादी बुद्धि मे नही आएगी। पर इतना बता दू कि आदमी की गन्ध कभी बदलती नही है यानी वह उतनी ही बदलती है जितना कि चेहरा बदलता है। वे जरूर यही पर थे। चलो उन्हे खोजा जाए।"

बडी कठिनाई से अविनाश उसे इस खोज से रोक सका। वह अन्त तक यही कहती रही कि कुणाल अवश्य पीछे आकर खडे थे।

१३

रुक्मिणी को समझा-बुझाकर श्यामा के सुपुर्द करके जब अविनाश रामानद के घर पहुचा, तो उसे साकेतिक लिपि मे एक पत्र मिला, जिसका आशय यह था कि आज रात बारह बजे किसीके घर पर क्रातिकारी दल की कार्य-समिति की एक महत्वपूर्ण बैठक हो रही है।

अविनाश ने एक दवा की दूकान मे जाकर घडी देखी तो मालूम हुआ कि ग्यारह बज चुके है। उसने जल्दी से जाकर कुछ खा लिया और बहुत सावधानी के साथ बच-बचाकर बताए हुए स्थान पर पहुंचा। वहा उसने देखा कि कुणाल और अमिताभ के अलावा बगाल तथा पंजाब से आए हुए कई पुराने क्रातिकारी मौजूद थे। यह स्पष्ट था कि कुछ बहुत महत्वपूर्ण फैसले होने जा रहे थे।

यह अजीब बात है कि अविनाश का मन होने वाले फैसलों पर केन्द्रित नहीं था। वह तो यही सोच रहा था कि रुक्मिणी ने कुणाल की उपस्थिति कैसे जान ली? क्या सचमुच उसे कुणाल की गन्ध आई थी या यह केवल अटकल-पच्चू था? पर यह अटकल-पच्चू था तो सच कैसे हुआ? तो क्या···?

कुणाल ने अविनाश को कई बार देखा, क्या उस दृष्टि मे कोई नई बात थी? उसके मन मे एक बार इच्छा हुई कि कुणाल को सारी बात बता दे, पर उसका मौका नही था। कुणाल स्वय ही उसके पास आए, बोले, "अब घमासान युद्ध शुरू होने वाला है"

इन थोडे-से शब्दो मे कुछ ऐसी सक्रामक शक्ति थी कि अविनाश की नसों मे रक्त की धारा द्रुत हो गई। उसकी आखो के सामने एक दृश्य आ गया, मानो रणक्षेत्र मे सैकडो लाशे पडी हुई हो और पिस्तौले तथा बम चटक रहे हों। फिर भी अविनाश ने पूछा, "आप सध्या के बाद दशाश्वमेध घाट गए थे?"

कुणाल के चेहरे पर पडा हुआ स्वाभाविक पर्दा और घना हो गया। बोले, "मैं तो जब भी काशी आता हू तो एक बार दशाश्वमेध और मणिकर्णिका की सैर जरूर करता हू। क्यो कोई खास बात है क्या?"

प्रश्न पूछने को तो कुणाल ने पूछ दिया, पर उसके उत्तर के लिए वे ठहरे नही क्योकि इस बीच मे उन्हे कोई इशारा मिल चुका था। वे जल्दी मे उधर चले गए और सभा की कारंवाई शुरू हो गई।

कुणाल ने अपने प्रारम्भिक भाषण मे कहा, "आज हमारा क्रान्तिकारी दल पहले के मुकाबले मे बहुत तगडा है। आज कोई भी यह नही कह सकता कि हमारा प्रयास सौ-पचास टुटही पिस्तौलो और दो-चार सौ पटाखो से भारत स्वतन्त्र करने का प्रयास है। स्वतन्त्रता के लिए जो असली उपादान है, वह है स्वतन्त्र मन। जिनका मन स्वतन्त्र हो गया, उनका देश स्वतन्त्र हो या न हो, वे तो स्वतन्त्र हो ही चुके। क्रान्तिकारी दल को यह श्रेय है कि उसने हजारों व्यक्तियो के चित्तो को स्वतन्त्र कर दिया। हमारा असली उपादान पिस्तौल या पटाखे नही है, जैसा कि हमारे आलोचक समझते है। बल्कि हमारी असली पूंजी हमारे और आपके स्वतन्त्र मन है।

"पर मै मन के अलावा चीजो को कम महत्व नही देता। सच तो यह है कि आज यह सभा उसीके सम्बन्ध मे बुलाई गई है। हमारे पास संगठनकर्ता भी हैं और लोग हमारे दल मे आने के लिए उत्सुक भी है, पर हमारे पास साधनो की कमी है। हमे और क्रान्तिकारी साहित्य चाहिए, और अस्त्र-शस्त्र चाहिएं, और धन चाहिए। हमे कुछ चदा मिलता है, हममे से बहुतो ने अपने घर मे चोरी की है, पर अब उसकी भी सीमा खत्म हो चुकी है, इसलिए हमारे पास एक ही उपाय रह गया है, वह उपाय है डकैती द्वारा धन प्राप्त करना। आयरलैण्ड, रूस और भारत के पुराने क्रातिकारियो ने इस उपाय का प्रयोग किया है। पर इसमे विपत्तिया बहुत है और पुलिस के साथ सघर्ष भी अधिक तीव्र होगा, पर हमे इससे घबडाने की जरूरत नही है। अब तक हमने जिस प्रकार से सारी कठिनाइयो का सामना किया है आगे भी हम उसी प्रकार से सारी मुसीबतो का सामना करेगे और आशा है कि हमको विजय प्राप्त होगी।"

इसी ढग से और भी लोगो ने भाषण दिए। यह तय हुआ कि पहले डकैतियां इस प्रकार से की जाए कि पता न चले कि क्रातिकारी दल की ओर से यह डकैतिया हो रही है। डाके अत्याचारी साहूकारो और ऐसे लोगो के घर मे डाले जाए जिनसे जनता नाराज है। अपने को मामूली डकैत साबित करने के लिए डकैती के समय गालिया आदि दी जाएं और किसी भी हालत मे स्त्रियों का अपमान न हो। छः महीने बाद कार्य-समिति इस बात पर विचार करेगी कि इन डकैतियो से क्या तजरबा रहा।

रामानन्द ने यह प्रस्ताव रखा कि अभी से मुखबिरो तथा अत्याचारी पुलिस-

अफसरो की खबर ली जाए, पर कार्य-समिति ने यह राय दी कि अभी ऐसी बातो से बचना चाहिए, जिनके कारण पुलिस के साथ सम्मुख युद्ध शुरू हो सकता है। अभी तो नीति यही है कि सिर नीचा करके छिपकर रहा जाए। आगे तो खुलकर लडना ही है।

अविनाश उस सभा से लौटा। निकलकर घर गया और सो गया। जब वह सवेरे उठा तो उसे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि रुक्मिणी उसके सामने खड़ी है। वह बिना किसी भूमिका के खिलखिलाकर हसती हुई बोली, "मै जानती थी कि तुम उनसे मिलोगे और तुम उनसे मिले। यह तुम्हारी कमीज से साबित है।"

अविनाश की समझ मे नही आया कि वह क्या कहे, बोला, "कमीज़ से साबित है, इसके क्या माने ?"

"इसके माने यह है कि कल किसी समय वे तुम्हारे बहुत पास आए थे और तुम्हारी कमीज़ का कोई हिस्सा उनसे छू गया था।" इतना कहने के बाद जब उसने देखा कि उधर से 'हा' 'ना' कुछ उत्तर नही आ रहा है तब वह बोली, "मैं तुमसे कोई गूढ रहस्य नही पूछू गी, बस इतना बता दो वे मिले थे कि नही ?"

"मिले थे।"

"मेरी बावत कुछ बोले ?"

"नही, मैंने दशाश्वमेध घाट का नाम लिया ही था कि उन्होने बतलाया कि वे जब भी काशी आते है, तो वे दशाश्वमेध और मणिकर्णिका की सैर अवश्य करते हैं।"

रुक्मिणी ने इतने श्रद्धाभाव से यह छोटी-सी बात सुनी जैसे कोई बहुत गूढ मन्त्र बताया गया हो। भावुकता के साथ बोली, "हा, दशाश्वमेध जीवन का प्रतीक है। उसका निमन्त्रण यह है कि अश्वमेध करो, विश्वविजय करो। इसके विपरीत मणिकर्णिका यह बताती है कि याद रखो कि अन्त मे राखो का ढेर होना है। एक है पहिया और दूसरा उसका ब्रेक है। वे आज भी सध्या के बाद जरूर इनकी सैर करेंगे। अच्छा भाई, क्या तुम मुझे उनसे मिला नहीं सकते ? बस एक झलक और कुछ नही।"

अविनाश ने कहा, "दीदी, आप सब कुछ जानकर भी अनजान बन रही

है। आप जो बात मुझसे करने को कह रही है, उसकी मुझे अनुमति नही है...''

"तो इसका अर्थ यह हुआ कि तुम्हारी क्रान्तिकारी विचारधारा मे हृदय को कोई स्थान नही है। उसमे केवल मस्तिष्क ही मस्तिष्क है।''

इसपर अविनाश बडी अजीजी के साथ बोला, "आपसे मैं तर्क करके जीत नही सकता, फिर भी एक बात यह बता दूं कि क्रान्तिकारी को जान-बूझकर छोटी बातो के प्रति हृदयहीन होना पडता है क्योंकि उसे अपने सामने हर समय देशोद्धार के महान् लक्ष्य को रखना पडता है।''

उस समय इससे अधिक बातचीत नही हुई। रुक्मिरणी जिस प्रकार अप्रत्याशित रूप से आई थी, उसी प्रकार अप्रत्याशित रूप से बिना विदाई लिए चली गई।

दिन भर कोई खास घटना नही हुई, पर ग्यारह बजे रात को जब अविनाश सोने जा रहा था तो उसने ठीक उसी जगह पर जहां सवेरे रुक्मिरणी खडी थी, कुरणाल को खडा देखा। उसका दिल धक् से हो गया। क्योकि उसे ऐसा मालूम हुआ जैसे वह कोई स्वप्न देख रहा हो।

कुरणाल हसे, बोले, "तुम्हे आश्चर्य हो रहा होगा कि मै यहा कैसे आया हू। बात यह है कि तुम्हे एक बात बताना जरूरी था। मैं अभी थोडी देर हुए मरिण-करिणका मे बैठकर एक चिता की तरफ इकटक देख रहा था और मृत्यु से जीवन के लिए अनुप्रेरणा ले रहा था। पता नही इस ध्यानस्थ अवस्था मे कितना समय बीता होगा, चिता की चिटचिटाहट मे मुझे शहादत का आह्वान मिल रहा था। मैं बिल्कुल अन्यमनस्क हो गया था। इतने मे एक खुफिया पुलिस का आदमी मेरे सामने आया और मेरा हाथ पकड़कर बोला, 'चलो थाने मे चलो।' मैं यह सोच ही रहा था कि क्या करू, उससे छुटकारा तो मैं पा ही लेता क्योंकि वह अकेला था, पर इतने मे बिजली की गति से तुम्हारी दीदी हम दोनो के बीच में कूद पडी और उस खुफिए को अपनी बाहो मे जकड लिया। यदि कोई पुरुष उसपर हमला करता तो वह शायद कुछ सोच पाता, पर एक स्त्री के आलिंगन मे वह बिल्कुल किंकर्तव्यविमूढ हो गया। मौका पाकर मै फौरन खिसक आया और अभी मैं बाहर जा रहा हूं।''

अविनाश को न जाने क्यों इस बात की खुशी हुई कि रुक्मिरणी ने कुरणाल

की झलक पा ली । पर साथ ही उसे यह अजीब लगा कि कुणाल जी अपनी पत्नी को ऐसी खतरनाक हालत मे अकेली छोडकर चले आए । उसे वह सवेरे वाली बात याद आई कि तुम क्रांतिकारियो मे हृदय का कोई स्थान नही है। अविनाश बोला, "अब मै क्या करूं ? आपकी क्या आज्ञा है ?"

"मेरी कोई आज्ञा नही है क्योकि वह दल की कोई सदस्या नही है…"

अविनाश के अन्दर की विद्रोह भावना उमड पड़ी । बोला, "दल की सदस्या न होते हुए भी उन्होने वह काम किया, जिसके लिए दल को हमेशा उनके प्रति कृतज्ञ रहना चाहिए ।"

"तुम तो जानते हो कि वह दल की विचारधारा का सम्पूर्ण रूप से विरोध करती है । वह तो हमारे काम को एक बच्चो का खेल समझती है …"

'ऐसा वे मुंह से ही कहती है। उनके विचार कुछ और है जैसा कि उनके व्यवहार से ज़ाहिर है ।"

कुणाल दो कदम चलकर अविनाश की खाट पर बैठ गए । फिर बडे प्रेम से बोले, "उसने जो मेरी रक्षा की वह इस नाते नही की थी कि मैं एक क्रान्तिकारी हू । उसने मेरी रक्षा इसलिए की कि आज से लगभग पन्द्रह साल पहले अग्नि-साक्षी करके एक पुरोहित ने कुछ मन्त्र पढाए थे ।"

अविनाश बोला, "ठीक है, पर इसका मानवीय पहलू भी तो है …"

"हा है, इसी नाते मैं तुम्हारे पास आया। अब मानवीय पहलू से तुम जो करना चाहो, सो करो । मैं चला ।"

कुणाल उठ खडे हुए, पर अविनाश ने उनको रोकते हुए कहा, "जाने से पहले आप अपनी व्यवहृत कोई चीज़ दे जाइए…"

"क्या तुम भावुक हो रहे हो ? एक-दो बार मिलकर ही क्या तुम उसकी विचारधारा मे आ गए ? सावधान !"

अविनाश बोला, "नही, मैं भावुक नही बना। पर मै भावुकता की कद्र करता हू। आप अपना रूमाल देते जाइए, मैं दीदी को उपहार के रूप मे दूगा ।"

कुणाल हसते हुए रूमाल निकालकर अविनाश के हाथ मे देने लगे। पर अविनाश ने अपने हाथ मे रूमाल लेने से इनकार कर एक ताखा दिखला दिया फिर बोला, "आप रूमाल वहा रख दीजिए। मैं इसे अपने स्पर्श से विजड़ित

नही करना चाहता ।"

"अच्छा, मै समझा । पर इस रूमाल मे तो मेरी अपेक्षा बारूद की गन्ध कही अधिक आएगी क्योकि यह रूमाल उसी जेब मे रहा है, जिसमे मेरी पिस्तौल पडी है···"

"मै बारूद को कोई अपवित्र चीज नही मानता, विशेषकर जबकि वह एक सर्वस्व-त्यागी क्रातिकारी की जेब मे पडी हो । यह तो सोने मे सुहागा ही होगा। ऐसे हाथो मे पडकर बारूद इतिहास के रास्ते मे पडे हुए पहाडो को तोडकर मार्ग-निर्माण करती है ।"

कुणाल ने बताए हुए स्थान पर रूमाल रख दिया और एक भी शब्द बिना कहे वहा से चले गए ।

अविनाश उसी समय श्यामा के पास पहुचा । बडी मुश्किलो से उसे जगाया और सारी बात बताई । दोनो देर तक सोचते रहे, पर कुछ समझ मे नही आया कि पुलिस के हाथ से रुक्मिणी का उद्धार कैसे किया जाए ? अन्त मे दोनो उसी हालत मे आनन्दकुमार के घर पर गए । अभी तक आनन्दकुमार के कमरे मे बत्ती जल रही थी । श्यामा बोली, "वे पढ रहे होगे ।"

दोनो ने मिलकर आनन्दकुमार को सारी परिस्थिति समझाई । बडी मुश्किल से आनन्दकुमार जेनो और सोफोक्लीज की दुनिया से उतरे, फिर बोले, "तो मैं क्या करू ? वह लडकी तो बडी अच्छी है पर उसे बचाऊ कैसे ? कुछ समझ मे नही आता ।"

श्यामा बोली, "आप जानते ही है कि पुलिसवाले कैसे होते है । यद्यपि रुक्मिणी दीदी की उम्र तीस से कम न होगी, पर वह लगती बीस ही की है, बिल्कुल आग की लपट है ·· ।"

आनन्दकुमार हसकर बोले, "यह तो मै देख ही रहा हू कि लडकी होकर भी मेरी श्यामा बिटिया उसपर आसक्त है । पर उसने अपने पतिदेवता को बचाया ही क्यो, गिरफ्तार हो जाता, तो मुकद्दमा चलता, रोज दर्शन होते··· ।"

श्यामा हसी, बोली, "इस समय हसी का समय नही है । आप चाहे जितना हंस लीजिएगा पर अभी उन्हें छुडा तो लीजिए ।"

आनन्दकुमार ने घडी की तरफ देखा, देखकर आश्चर्य के साथ बोले, "अरे ! यह तो एक बज रहा है, मैं तो समझ रहा था कि ज्यादा से ज्यादा दस बजे

होगे ।" कहकर उन्होने टेलीफोन उठाया और सुपरिन्टेन्डेन्ट पुलिस से मिलाकर कहा, "मेरी एक (यहा पर वे कुछ हिचकिचाए) रिश्ते की बहन है, जिसका कुछ दिन हुए पतिवियोग हुआ है। वह जब भी छूट जाती है तो श्मशान मे अपने पति को ढूंढने पहुचती है। दो बार हम उसे पकड लाए हैं, पर आज उसका पता नही लग रहा है। डर यह लग रहा है कि कही वह डूब तो नही गई है।"

उधर से जो साहब बोल रहे थे, वह पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट नही थे बल्कि एक इन्स्पेक्टर था, जिसे अपनी नीद खराब किए जाने पर (यद्यपि उन महाशय की ड्यूटी थी) नाराज हो रहे थे। बोले, "कोई लडकी डूबी नही है। अब सवेरे ही पता मिलेगा।"

पर आनन्दकुमार कभी स्वय मजिस्ट्रेट रह चुके थे, इन बातो मे आने वाले नही थे, बोले, "मैं यह नही कहता कि वह डूब ही गई होगी, पर किसीको और किसी रूप मे दीख गई हो, पगली ही ठहरी।"

उधर से सूखा-सा जवाब आया, "हमारे पास कोई ऐसी रिपोर्ट नही है", फिर उधर से आवाज़ आई, "हुलिया बताइए।"

आनन्दकुमार ने टेलीफोन हाथ से दबाकर के श्यामा से कहा, "मेरी बहन का हुलिया तो बताओ।"

फिर वे, श्यामा जो कुछ कहती गई, उसीको टेलीफोन पर अदालती भाषा मे कहते गए, "चेहरा गोल, रग बहुत गोरा, इकहरा बदन, काली धारी की साडी पहने हुए, कई भाषाए बोलती है। कद लम्बा है। नाम यो बहुत-से हैं, पर रुक्मिणी कहते है।"

उधर से कुछ देर के लिए बातचीत बन्द रही और अन्त मे यह उत्तर आया, "थोडी देर मे खबर दूगा, आप टेलीफोन पर ही रहे।"

इस बीच मे शोर सुनकर रूपवती भी आ गई थी। उसको पूरी बात मालूम नही थी, इसलिए श्यामा ने सक्षेप मे सारी बात बताई। आनन्दकुमार ने कहा, "जहा तक मैं समझता हू, आज रात को इसका कुछ हल नही निकलेगा। इसलिए मेरी राय है कि तुम लोग अपने-अपने घर चले जाओ।"

श्यामा बोली, "नही, पता नही कब क्या ज़रूरत पडे। मुझे दीदी के बारे मे बहुत चिन्ता हो रही है। चाचीजी मेरी मा को फोन कर दे कि मैं आज रात

को यही रहूंगी ।"

तदनुसार ऐसा ही किया गया । श्यामा रूपवती के साथ सोने चली गई और अविनाश तथा आनन्दकुमार पुस्तकालय मे ही रहे । पुस्तकालय मे एक सोफा सेट था । उसीमे से एक कुर्सी पर अविनाश पड रहा । आनन्दकुमार फिर से पुस्तको मे डूब गए ।

१४

अगले दिन श्यामा और आनन्दकुमार रुक्मिणी को हवालात से छुडाने गए । इस बीच मे जानसन की जगह पर मिस्टर बनर्जी पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट बने थे । उन्होंने आनन्दकुमार से कहा, "यह स्त्री तो बिल्कुल पगली है, इसको आपने छोड कैसे रखा है ? मै तो इसे जाच के लिए पागलखाने भेज रहा था ।"

आनन्दकुमार ने कहा, "मानसिक धक्के कई बार ऐसे प्रबल होते है कि उनसे कार्य-कारण सम्बन्ध के तन्तु एकदम से टूट जाते है ।"

"आपने कल टेलीफोन से इन्स्पेक्टर से क्या कहा था कि इस स्त्री का पति मर गया है, इसलिए यह इस तरह हो गई है ?"

आनन्दकुमार ने कहा, "हा ·· ।"

उधर से रुक्मिणी बोल उठी, "नही-नही यह झूठ है। मेरा पति नही मरा है । देखते नही हो मैंने सिंदूर लगा रखा है ?"

मिस्टर बनर्जी ने रुक्मिणी की बातो पर ध्यान नही दिया । उधर श्यामा ने रुक्मिणी को बडे ज़ोर से आख मारी कि चुप रहो । पर रुक्मिणी और भी तेज़ होकर बोली, "मैं यह किसी तरह नही मान सकती कि मेरा पति मर गया है । मैं तो कहती हू वही जिन्दा है बाकी सब मरे हुए है ।"

मिस्टर बनर्जी ने कनखी से तुच्छता भरी दृष्टि से रुक्मिणी को देखते हुए आनन्दकुमार से कहा, "साहब इसके पागलपन की कल हमे बहुत बुरी कीमत अदा करनी पडी । चरनसिंह ने एक रूहपोश मुलजिम को करीब-करीब पकड़ लिया था कि यह न जाने कहा से झपटकर आई और चरनसिंह से लिपट गई ।

तब तक वह मुलज़िम भाग गया ।"

श्यामा ने बीच मे बोलते हुए कहा, "कोई बडा भारी डाकू रहा होगा ?"

मिस्टर बनर्जी सारी बात बताना नही चाहते थे, इसलिए बोले, "जी हां, बड़ा भारी डाकू था ।"

आनन्दकुमार ने कहा, "यह भी हो सकता है कि चरनसिंह को भ्रम हुआ हो । भला बडा भारी डाकू मणिकर्णिका घाट क्यो आने लगा ? मणिकर्णिका कोई सैर-सपाटे की जगह तो है नही, फिर इतनी रात गए ।"

श्यामा ने छौक-सी लगाते हुए कहा, "डाकुओ की आत्मा श्मशान मे फिरती होगी, उसीमे से कोई दीख गई होगी ।"

मिस्टर बनर्जी सारी बात बताना नही चाहते थे इसलिए बोले, "कुछ अजीब भावुक किस्म के डाकू है । सबसे बुरी बात तो यह हुई कि इस स्त्री ने चरनसिह को पकड लिया और उसे दो घटे तक नही छोडा जब आप टेलीफोन कर रहे थे, तब चरनसिह इससे छूटने की कोशिश कर रहा था । सुना जितने लोग दाहक्रिया आदि के लिए वहा आए हुए थे, सब लोग इकट्ठे हो गए थे और कुछ ने तो यह भी कहा कि कोई भैरवी उतर आई है और उसने इसे पकडा है, क्योकि यह म्लेच्छ होकर श्मशान मे आया था । खैरियत यह है कि और सिपाही आ गए और ठाकुर होने के कारण यह जनेऊ दिखा सका, नही तो पता नही चरनसिंह की क्या गति बनती ।"

आनन्दकुमार ने कहा, "फिर भी गनीमत हुई, ऐसी अवस्था मे वह कुछ भी कर सकती थी ।"

मिस्टर बनर्जी ने अप्रसन्न होकर कहा, "कुछ भी हो, लेकिन मुझे अफसोस इस बात का है कि वह डाकू छूट गया ।"

श्यामा ने फिर बीच मे बोलते हुए कहा, "डाकू श्मशान मे किसीकी अर्थी के साथ आया होगा ।"

आनन्दकुमार सब कुछ जानते थे, फिर भी कौतुक करने के लिए बोले, "मिस्टर बनर्जी, आपने इस पहलू पर तो सोचा ही नही होगा । आखिर डाकू वहा आया होगा तो किसी कारण से आया होगा । या तो वह डाकू दार्शनिक था, यह मानना पडेगा ।"

मिस्टर बनर्जी इस बात पर अधिक आलोचना नही करना चाहते थे, इस-

लिए बोले, "अच्छा आप लोग इस स्त्री को ले जाइए, पर अब यह बाहर न दिखाई पडे।"

आनन्दकुमार इस बात पर राजी हो गए और सब लोग बात बिना बढाए वहा से निकल पडे।

श्यामा ने मोटर मे आनन्दकुमार का परिचय रुक्मिणी से कराया। फिर वह उससे बोली, "दीदी, आपने तो कमाल कर दिया। नही तो कुणाल जी जेल-खाने के अन्दर होते।" फिर वह आनन्दकुमार की तरफ देखकर दुष्टता भरी हसी हसती हुई बोली, "और दीदी, आपने सबसे बडा कमाल यह कर दिया कि एक बुजुर्ग अहिसावादी को सत्य का अपलाप करने के लिए मजबूर किया।"

आनन्दकुमार बिलकुल विचलित न होकर बोले, "यही न कि मैंने रुक्मिणी को अपनी बहन बताया, इसमे एक शब्द भी गलत नही है।"

"कैसे ?"

"ऐसे कि आदम और हव्वा के नाते हम सभी भाई-बहन है और जो अहिसा की बात तुमने कही, सो मै तुम्हे बता देता हू कि मेरी अहिसा कुणाल ऐसे सर्वस्व त्यागी और कहना चाहिए प्रातः स्मरणीय व्यक्तियो की मानवीय नाते मदद करने से नही रोकती।"

रुक्मिणी ने भी इसमे योगदान करते हुए कहा, "पर मेरी तो स्थिति बिल-कुल भिन्न है। मै न हिसा की पुजारिन हू न अहिसा की। मेरा तो बस एक ही ध्येय है दूसरा नही। यह एक आकस्मिक बात है कि मेरे कार्य से क्रान्तिकारी दल को लाभ हो गया, पर मेरा उद्देश्य उसे लाभ पहुचाना नही था। इसलिए श्यामा, तुम मुझे जो श्रेय दे रही हो, उसकी मैं अधिकारिणी नही हू।"

आनन्दकुमार बोले, "पर बहन, उस दृष्टि से न सही दूसरी किसी दृष्टि से सही, तुमने जो कार्य कल किया और जो विपत्ति उठाई, वह नारी जाति के इति-हास मे एक अमर कहानी के रूप मे बनी रहेगी। मै यह सोच ही नही सकता कि ऐसी स्त्री के उद्धार मे अहिसा किसी प्रकार बाधक हो सकती है। यदि हो सकती है तो मैं कहूगा कि अहिसा मे ही कुछ कसर है और वह जीवन की सबसे बडी मान्यता नही हो सकती।"

सब लोग चुप हो गए, और मोटर तेजी से चलने लगी। श्यामा ने कहा, "दीदी, आपका अगला कार्यक्रम क्या है ?"

रुक्मिणी ने दूर अन्तरिक्ष की ओर देखकर कहा, "क्या मै जानती हू कि मेरा अगला कार्यक्रम क्या है ? यदि मैं सोचकर कुछ कर पाती तो पहले से बता सकती थी, पर मै सोचती हू, तो वह सोचना पीछे रह जाता है और किसी अदृश्य शक्ति से परिचालित होकर मै चलने लगती हू।

"कल जब मै पागल की तरह उस पुलिस वाले और उनके बीच मे कूद पडी तो पहली बार कम से कम बहुत सालो के बाद उनका हाथ मेरे हाथो से छू गया, तब से मै यही सोच रही हू कि यह शायद शुभ नही हुआ। मणिकर्णिका युग-युगान्तर से विच्छेद—चिरविच्छेद का स्थल रहा है। मै सोच रही हू, वहा यह मिलन कैसा ? यह मिलन किस बात का सूचक है ? आसन्न चिरविच्छेद का या और किसी बात का ? अब की बार तो मैने जैसे-तैसे उनको जेल से बचा लिया, पर आगे कहा मै ऐसे मौको पर उनके पास रह सकूगी ?"

किसीने कुछ नही कहा और मोटर चलती रही।

१५

अमिताभ ने अविनाश से कहा, "दो-तीन दिनो के अन्दर ही हम पहली डकैती करेंगे।"

अविनाश बोला, "मेरे लिए भी यह पहला ही तजरबा होगा। उस दिन जब दल की ओर से धन एकत्र करने के लिए डकैती का कार्यक्रम निश्चित हुआ तबसे मै यही सोच रहा हू कि अजीब बात है कि हम लोग सबसे अच्छे नागरिक हो सकते थे, पर हम डकैती ऐसा घृणित कार्य करने जा रहे हैं।"

"कोई कार्य उद्देश्य के अनुसार घृणित या उचित होता है।"

"हम यह मानते है और हर समय यह बताते भी रहते है। हत्यारा शरीर पर अस्त्र प्रहार करता है और डाक्टर भी, बल्कि डाक्टर तो बेहोशी की हालत मे अस्त्र प्रहार करता है। यह सब जानते हुए भी कुछ हिचकिचाहट होती है, कुछ अफसोस भी होता है।"

अमिताभ बोले, "जब बुद्धि बताती है कि बात सही है, उस हालत मे यह

हिचकिचाहट कमजोरी का ही एक दूसरा रूप है और यदि कमजोरी नही है, तो इसमे घरघुस्सून के उपादान हैं। केवल घर बैठे अच्छी बातो का सकल्प करने से इतिहास का निर्माण नही होता। यदि इतिहास का निर्माण ऐसे होता, तो विश्वविद्यालयो के अध्यापक और वाग्विलासी लेखक सबसे बडे इतिहास निर्माता होते।"

अविनाश इन सारी बातो को जानता था। वह चुप रहा फिर भी वह कुछ खिन्न ही बना रहा।

नियत समय पर तीसरे दिन एक निर्दिष्ट गाडी से अविनाश मुगलसराय पहुचा और वहा से वह एक दूसरी गाडी पर कानपुर की लाइन मे रवाना हुआ, हिदायत यह थी कि यदि कोई जान-पहचान का क्रान्तिकारी मिल भी जाए, तो उससे बात न करे। हा, जो उसके द्वारा क्रान्तिकारी दल मे लाए हुए दो साथी थे, वे तो उसीके इगित पर चल रहे थे, पर वे भी उससे अलग डिब्बो मे बैठे थे।

दो घटे की यात्रा के बाद वे एक स्टेशन मे उतरे तो वहा उसने श्यामा को देखा। अवश्य वह जिस प्रकार के कपडो मे रहा करती थी, आज बिल्कुल दूसरे ही ढग के कपडो मे थी। न खद्दर था न उस प्रकार का कोई और चिह्न। वह तो बिल्कुल रेशम मे थी और कीमती गहने पहने थी। उसके साथ एक मोटा-सा बिस्तरा था, जिसे वह कुली से उठवाकर प्रतीक्षालय की ओर गई।

अविनाश को बडा आश्चर्य हुआ कि क्या श्यामा भी डकैती मे भाग लेने जा रही है। अजीब बात है। पर इस ढग से सोचने का समय नही था। कही से अमिताभ दिखाई पड गए और उनका इशारा पाकर अविनाश अपने दोनों साथियो सहित स्टेशन के बाहर चला गया।

यहा यह बता दिया जाए कि श्यामा डकैती में भाग लेने के लिए नही आई थी, बल्कि वह जो बिस्तरा लेकर आई थी, उसमे दल के अस्त्र-शस्त्र आए थे। उस बिस्तरे को अमिताभ के बताए हुए व्यक्ति को सिपुर्द कर वह पन्द्रह मिनट बाद आने वाली दूसरी गाडी से कानपुर चली गई। उसे यह हिदायत थी कि छ: घन्टे बाद कानपुर से जो गाडी आए, उसमे वह उच्चवर्ग के डिब्बे मे बैठकर आए, उसका वह बिस्तरा उस समय फिर उसे मिलने वाला था।

अविनाश को इन बातो का कुछ पता नही था। इसलिए जब वह आगे बढा

तो वह अंधेरे मे भी हर पास आने वाले व्यक्ति को ध्यान से देखता रहा कि चेहरे से न सही चाल से वह पहिचाने कि इसमे श्यामा है या नही। उसे अमिताभ पर पूरा विश्वास था कि अमिताभ जो भी करेंगे ठीक करेंगे। साथ ही उसे श्यामा के सम्बन्ध मे कुछ कौतूहल भी था।

दो घन्टे सीटियो तथा पास आकर दी हुई हिदायतो के सहारे चलने के बाद अविनाश को यह पता लगा कि पन्द्रह-सोलह आदमी एक ही लक्ष्यस्थल की ओर जा रहे है। वे सडक पर चल रहे थे। अब रात हो गई थी, फिर भी इधर की सडक काफी चालू थी और थोडी-थोडी देर मे कोई न कोई बैलगाडी, मुसाफिर या टट्टू पर सवार लोग गुजर जाते थे। अविनाश तथा उसके साथी हिदायत के अनुसार जोर-जोर से बाते करते हुए जा रहे थे, जिससे मालूम हो कि वे बेफिक्र है।

इतने मे जिधर वे जा रहे थे उधर की ओर से खट-पट, खट-पट की आवाज आई जैसे कुछ लोग मार्च करते हुए आ रहे हो। अमिताभ इधर से उधर आ-जा रहे थे और एक ही ओर जाने वाली अपनी टुकडियो मे सम्बन्ध स्थापित कर रहे थे। अमिताभ ने जो यह आवाज सुनी तो उनके कान खडे हो गए, क्यो कि इसमे कोई सन्देह नही था कि यह आवाज़ पुलिस की गारद या सैनिक गारद के आने की आवाज थी। उनका माथा ठनका। तो क्या किसीने पुलिस को खबर दे दी है ? इतनी सावधानी बरती गई, फिर भी यह हालत हुई ? एक क्षण के लिए अमिताभ को याद पडा कि जब वे राजघाट के स्टेशन से रेल पर सवार हो रहे थे तो उस समय प्लेटफार्म पर त्रिलोचन दिखाई पडा था। खैरियत यह है कि राजघाट से चढने वाले लोगो मे सिर्फ वही थे और त्रिलोचन उन्हे शायद देख नही पाया था।

खट-पट की आवाज़ और बढ रही थी। अमिताभ ने हिसाब लगाकर देखा कि लगभग छः आदमी होगे। पर यह छः आदमी पूरी भीड की तरह शोर मचाते हुए आ रहे थे। वे जिस तरह शोर मचाकर आ रहे थे, उससे अमिताभ को कुछ इतमीनान हुआ कि ये लोग यों ही इस इलाके का राउण्ड कर रहे हैं, खबर पाकर नही आए है। यदि यह गारद खबर पाकर आती, तो कही चुपके से घात लगाकर बैठती, पर ये लोग तो बिल्कुल निश्चित होकर अपना समय काट रहे हैं।

अब तो उनकी बातचीत कुछ-कुछ सुनाई भी पड रही थी, पर अंधेरा पाख

होने के कारण कुछ दिखाई नही पडता था। जब गारद के लोग इस प्रकार बतकही करते हुए एक फर्लांग के अन्दर आ गए, तब अमिताभ ने सबको यह हिदायत दी कि बाई तरफ की झाडियो मे दुबक जाए और जब गारद निकल जाए तथा तीन दफे खासी सुनाई पडे तब निकलकर जैसे पहले चल रहे थे, वैसे ही चलने लगे।

लोगो ने ऐसा ही किया। सडक की एक ओर दुबकने की हिदायत का अर्थ और लोग नही समझे पर अमिताभ इसका अर्थ जानते थे। यदि किसी कारण से गोलिया चली तो सडक के दोनो ओर छिपने से यह भय था कि अपने ही लोगो की गोलियो से अपने आदमी मारे जाएगे।

पर कोई घटना नही हुई और गारद के लोग चिल्ला-चिल्लाकर बात करते हुए गुजर गए। ये लोग स्पेशल डकैती पुलिस के अग थे। इधर के इलाको मे कुछ डकैतियां पडी थी। इसीलिए सरकार की ओर से इन पुलिस टुकडियो की व्यवस्था हुई थी। जैसे ये अपने कर्तव्य निभा रहे थे, उसका वर्णन तो किया ही जा चुका। यदि अमिताभ चाहते तो इन लोगो पर हमला करके इनके सारे अस्त्र-शस्त्र छीन लिए जा सकते थे, पर क्रान्तिकारियो को पुलिस की इन बन्दूकों का लोभ नही था क्योकि १८५७ के विद्रोह के बाद से ब्रिटिश सरकार की यह नीति हो गई थी कि पुलिस वालो को वे ही हथियार दिए जाते थे जो सैनिको के लिए अनुपयुक्त माने जाते थे। क्रान्तिकारी दल को तो ऐसे हथियारो की जरूरत थी जो छोटे होने के साथ ही दूर तक मार करने वाले हो, जैसे जर्मन माउजर पिस्तौल जो एक साथ दस गोली लेती है और कुन्दा चढाई हुई हालत मे एक हजार गज़ तक की मार करती है।

खट-पट, खट-पट डूब गई। निश्चित सकेत पाकर सब लोग बाहर निकल आए और पहले की तरह चलने लगे। एक घटा और चलने के बाद अमिताभ ने सबको इकट्ठा कर लिया। अब करीब-करीब सन्नाटा हो चला था। सब लोग आम के एक बाग मे गए और वहां श्यामा वाला बिस्तरा जो तीन-चार टुकडों मे होकर आया था, पूर्ण रूप से खोला गया और उसमे के सारे अस्त्र-शस्त्र पूर्व निश्चय के अनुसार बाटे गए।

आम के उस बाग से वह गाव आधे मील के फासले पर था, जिसमे एक साहूकार के यहा डाका डालना था। इस काम के लिए इन नौजवानो मे सभी

नए थे, केवल अमिताभ को डकैतियो का तजुर्बा था, इसके अलावा रामानन्द भी प्रथम महायुद्ध के समय दो-एक डाको मे भाग ले चुका था। फिर भी सबमे उत्साह था और किसीमे कोई भय का चिह्न नही था। यह हिदायत दी गई कि अविनाश तथा दो और तगडे युवको को लेकर रामानन्द उस साहूकार के घर की दीवार फादकर उसमे दाखिल हो और दरवाजा खोल दे। बाहर दरवाजे पर अमिताभ तथा तीन-चार सशस्त्र नौजवान गांव वालो को रोके और रामनद के नेतृत्व मे भीतर माल इकट्ठा करने का काम हो।

सारा काम योजना के अनुसार न हो सका। पहली बात तो यह हुई कि अभी वे गाव मे घुसे ही थे कि कुत्ते भूकने लगे। कुछ लोग जगकर पूछने लगे, "तुम लोग कौन हो ?"

पर यह टुकड़ी कोई उत्तर बिना दिए ही जल्दी-जल्दी उस साहूकार के घर की तरफ बढी, तब गुहार मच गई। फिर भी रामानन्द एक साथी के कन्धे पर चढकर जल्दी से साहूकार के आगन मे कूद पडा और उसने दरवाजा खोल दिया। पर उसीके साथ-साथ एक बीस गाव वाले अमिताभ की टुकडी पर कूद पडे। तब अमिताभ ने हवा की तरफ रुख करके गोली दागी। हमला करने वाली भीड एकाएक कई हाथ पीछे हट गई। अब अमिताभ ने डकैतो की भाषा मे (क्योकि यह हिदायत थी कि यही मालूम पडे कि ये साधारण डकैत है) लोगो को ललकारना और चेतावनी देना शुरू किया। पर भीड ने यह समझा कि डकैतो के पास बन्दूक नही बल्कि पटाखे हैं। उनमे से एक ने कहा, "अरे सालो के पास पटाखे है, अभी इनको मारकर गिराए लेते है।"

ऐसा कहना था कि वह भीड, जो इस समय तक बीस-पचीस से लगभग सौ आदमियो की भीड हो चुकी थी, आगे बढी। तब अमिताभ ने दोनाली बन्दूक हाथ मे लिए हुए अपने साथी को पूर्व निश्चित नाम के अनुसार पुकारते हुए कहा, "शमशेरसिंह, दो सालो को खाने भरं को।"

इतना कहना था कि शमशेरसिंह ने जो टेरिटोरियल फोर्स मे बन्दूक चलाने की शिक्षा पा चुका था, भीड के पैरो को ताककर एक के बाद एक छर्रे वाली दो गोलिया चलाईं। छर्रे लगभग दस-बारह आदमियो को लगे और वे चिल्लाते-चीखते हुए पीछे की ओर भागे। साथ ही भीड भी भाग खडी हुई। कही हमला फिर से न हो, इसलिए अमिताभ ने शमशेर से कहा, "फिर से दो लगाओ ताकि

यह न समझें कि यह पटाखे है ।"

शमशेर ने बन्दूक भरकर फिर छर्रे चलाए । भीड का पता नही था, पर लोग अब आड लेकर गालिया दे रहे थे । मजे की बात है कि कुत्ते जो हल्ला मचाने मे सबसे आगे थे, गोली की आवाज के बाद से एकदम चुप हो गए थे ।

भीतर रामानन्द अपना काम कर रहा था । साहूकार के पास से अभी लोहे के सन्दूक की चाभी नही मिली थी । वह कह रहा था, "चाभी तो मेरा लडका ले गया, जो आज रात को शहर गया है ।"

हिदायत के अनुसार अविनाश आदि ने मामूली डाकुओ के ढग पर उसे लात-घू से मारे । यहा तक कि स्वय रामानन्द छुरा लेकर खडा हो गया कि अभी मैं भोकता हू, पर वह गिडगिडाकर वही बात कहता रहा, साथ ही वह बडे ध्यान से सबके चेहरे ताडता रहा कि कोई पहचान मे आता है या नही ।

यह खबर अमिताभ को दी गई । बाहर का चार्ज शमशेर पर छोडकर अमिताभ भीतर आ गए, बोले, "यह ऐसे नही मानेगा, इसकी अगुलिया जला दो" कहकर पता नही कहा से उन्होने कुछ लत्ते निकाले और उनमे मिट्टी का तेल डालकर आग तैयार की और उस साहूकार का हाथ पकडकर उसके हाथ को आग के सामने करने लगे । साथ ही यह कहा, "इसपर भी यह न बताए तो इसे यही बाँध दो और घर मे तेल छिडककर आग लगा दो । यह अपना धन लेकर इसीमे रह जाए ।"

अमिताभ का सकेत पाकर लोग एक टीन तेल कही से निकालकर लाए और तेल को घर के चारो ओर छिडकने लगे । स्त्रियो और बच्चों को पहले ही एक कमरे मे बन्द किया गया था । अमिताभ ने कहा, "उस कमरे मे भी आग लगा दो ।"

जब साहूकार ने देखा कि स्थिति यहा तक पहुच गई तब वह चाभी देने पर राजी हो गया ।

चाभी लेकर रामानन्द को देते हुए अमिताभ ने कहा, "अब्दुल, सारा काम जल्दी से करो और जो माल हो उसे लारी मे लाद दो ।···"

कहकर वह बाहर चले गए । उन्होने बाहर कदम रखा ही था कि अद्भुत दृश्य देखा, दो आदमी बन्दूक समेत शमशेर को पकड चुके थे और अब शमशेर को छुडाने के लिए उसके साथी हाथापाई कर रहे थे । अमिताभ हुकुम दे गए

थे कि शमशेर के अलावा कोई गोली न चलाए, इसलिए साथियों ने रिवाल्वर नही चलाया था। गाव वालो की सफलता देखकर उधर भीड जमा हो गई थी और वह हमला करने ही वाली थी। अमिताभ ने एक ही दृष्टि मे सारी परिस्थिति समझ ली। उन्होने फौरन एक साथी से रिवाल्वर लेकर बारी-बारी से उन दोनो आदमियो की जाघो पर एक-एक गोली मारी। वे चीखते हुए भागे, पर इस भागा-भूगी मे वे शमशेर की भरी हुई बन्दूक भी ले भागे।

यह सब देखते ही देखते हो गया। अमिताभ भी देखते ही रह गए और बन्दूक छिन गई। बन्दूक जाने का उतना गम नही था जितना कि यह डर था कि कही कोई गाव वाला बन्दूक चलाने वाला निकला तो पता नही क्या हो जाए ? अवश्य उसमे छर्रे ही थे, पर सीने पर लगने से छर्रों से भी आसानी से मौत हो सकती है। सबके लिए भारी खतरा पैदा हो गया था।

अमिताभ ने पूरी स्थिति का मन ही मन सिंहावलोकन किया और शमशेर को एक साथी का रिवाल्वर देते हुए बोले, "तुम इन्चार्ज रहो, जो भी पास आए फौरन गोली चलाना और अब की बार सीना तानकर चलाना, मैं आता हू।"

शमशेर आदि यह पूछ भी नही पाए कि आप कहा जा रहे है, क्यों जा रहे है, कि अमिताभ मकान की बाईं तरफ अदृश्य हो गए। वे अकेले थे और उनके हाथ मे वह दस गोलियो वाला माउजर और कमर मे एक छुरा था। अमिताभ अपने साथियो से अलग जाकर आधे मिनट तक सोचते रहे बल्कि सुनते रहे, उधर कही से गाव वाले रामभरोसे को बुलवा रहे थे, जो शायद पल्टन मे था। जहा से आवाज़ आ रही थी, अमिताभ आड़ लेकर उधर को चले और बिल्कुल उस भीड से पाच हाथ की दूरी पर पहुचकर जब देख लिया कि बन्दूक वही रखी है तो उन्होने एक के बाद एक पाच गोलिया चलाई जिससे दो आदमी वही गिर पडे, भगदड मच गई और अमिताभ बन्दूक छीनकर साहूकार के दरवाजे पर लौट आए, फिर तुरन्त ही वह भीतर गए और जब देखा कि सारा काम समाप्त-सा हो चुका है, तो उन्होने सीटी बजाई और फौरन ही सब लोग उसी आम के बाग के लिए रवाना हो गए।

जल्दी-जल्दी आम के बाग मे सारा काम समाप्त कर सब लोग स्टेशन की ओर रवाना हुए पर इस बार वे उस स्टेशन पर नही गए जिसपर उतरे थे, बल्कि वे उसके बाद वाले स्टेशन मे गए। यथासमय श्यामा उच्चवर्ग की यात्री

के रूप मे ट्रेन मे आई और उसके साथ वही बिस्तरा कर दिया गया, साथ मे एक बडा-सा पुलिदा भी था।

जब श्यामा मुगलसराय स्टेशन पर पहुची, तो वह अभी सामान उतरवा ही रही थी कि उसे रुक्मिणी सामने ही खडी मिली। रुक्मिणी ने श्यामा का सामान देखकर कहा, "लाओ, अपना टिकट लाओ, मै इस सामान को बाहर ल जाती हू और ये लो प्लेटफार्म टिकट।"

श्यामा इस सामान से जितना जल्दी हो छुटकारा पाना चाहती थी, पर उसे इस प्रकार की कोई हिदायत नही थी कि वह सामान किसी और को दे। इसके अलावा वह जानती थी कि रुक्मिणी दल की सदस्या नही है, इसलिए उसके हाथो मे यह सब छोडना उसे उचित नही मालूम हुआ। बोली, "दीदी, आप यहा कैसे आ गईं? आप अपने काम से काम रखिए। इन बातो मे न पडिए। मैं इस समय कुछ ज़रूरी काम कर रही हू।"

रुक्मिणी अजीब ढग से हसती हुई बोली, "ज़रूरी काम है तभी तो मैं बीच मे पड रही हू। तुम्हारा बिस्तरा होता तो इसे पहुचाने मे मुझे कोई दिलचस्पी नही होती। ओवर ब्रिज पर त्रिलोचन तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा है।"

सुनकर श्यामा कुछ नही बोली, उसने चुपके से टिकट का लेन-देन कर लिया और चल पडी। सचमुच उसे ओवरब्रिज पर त्रिलोचन दिखाई पडा। अपने माल के सम्बन्ध मे अब श्यामा को चिन्ता नही थी। अब उसे चिन्ता थी अमिताभ तथा दूसरे लोगो की, जो उसकी जानकारी के अनुसार इसी गाडी पर आ चुके थे। (पर यह धारणा गलत थी। एक-एक, दो-दो करके सब साथी बडे-बडे स्टेशनो मे उतर चुके थे। केवल अमिताभ भेष बदलकर इसी गाडी मे श्यामा की रखवाली के लिए कह लीजिए या उसपर देख-रेख के लिए चल रहे थे और उनके साथ वही भरी हुई माउजर पिस्तौल थी।)

श्यामा ने अपने साथियो को बचाने के लिए एक तरकीब सोची। उसने त्रिलोचन से कहा, "चलो तुमसे कुछ ज़रूरी बाते है..."

त्रिलोचन ऐसी बात की आशा नही रखता था, इसलिए एक बार हिचकिचाया, फिर गद्गद् होकर बोला, "मुझसे ज़रूरी बात है?"

"हा-हा, तुम्हीसे है। मुझे घर अच्छा नही लगता।"

त्रिलोचन निर्बोध की तरह हसते हुए बोला, "चलिए-चलिए।"

श्यामा उसे लगभग घसीटकर एक प्रतीक्षालय मे गई और लगभग आध घंटे तक उससे बातचीत करती रही। उधर अमिताभ जो गाड़ी मे ही मुसलमान का भेष धारण कर चुके थे, सारी बात देखकर चकित हो रहे थे। श्यामा माल छोड़कर चली गई। फिर वह त्रिलोचन के साथ प्रतीक्षालय मे गई सो गई, निकली ही नही। उन्हे यह सारी बात बहुत रहस्यमय मालूम हुई। यहा न तो शौर्य-वीर्य दिखाकर कुछ करने का मौका था और न श्यामा से बातचीत ही की जा सकती थी। यहा से भागने मे ही भलाई थी।

पर अमिताभ बिस्तरा और पुलिंदा का लोभ पूरी तरह नही छोड सके। उन्होने देखा कि एक अपरिचित सम्भ्रान्त महिला सारा माल लेकर बनारस की गाडी मे सवार हो गई। अमिताभ उस गाड़ी मे लगे हुए तीसरे दर्जे के डिब्बे मे बैठ गए। गाडी छूट गई फिर भी श्यामा उस गाडी मे नही आई।

१६

जब श्यामा काशी वापस आ गई और उसे मालूम हुआ कि माल आदि जहा पहुचना चाहिए था वहा पहुच गया तो उसे बहुत खुशी हुई और वह रुक्मिणी से लिपटकर बोली, "आपने दल की सदस्या न होते हुए भी दोबारा दल की बहुत भारी सेवा की। यदि आज आप वहा न होती तो पता नही क्या होता। आप त्रिलोचन को कैसे जानती हैं। आपने यह कैसे जाना कि मैं इस गाड़ी से आने वाली हू और इस तरीके से मेरे पास बहुत भयकर सामान होगा?"

रुक्मिणी ने मुस्कराकर उत्तर दिया, "तुमने एकदम से बहुत सारे प्रश्न पूछ डाले। मा के पेट से कोई किसीको जानकर नही आता। मैंने जैसे तुम्हे जाना, वैसे ही त्रिलोचन को। गत कई दिनो से मैने इसे तुम्हारे घर के इर्द-गिर्द चक्कर लगाते देखा। कुछ शक हुआ। मैंने देखा उसमे खुफिया पुलिस के लक्षण हैं, साथ ही कुछ और भी है। जब-जब वह तुम्हे आड़ से देखता था, उसका चेहरा खिल जाता था। इससे मैंने कुछ नतीजे निकाले।"

कहकर रुक्मिणी ने श्यामा को बड़ी तीक्ष्ण दृष्टि से देखा। श्यामा नही

चाहती थी कि यह प्रसग ज्यादा बढे क्योंकि वह इसे अपना अपमान समझती थी कि कोई यह जाने कि त्रिलोचन उसका प्रेमिक है। बात काटती हुई बोली, "आप मुगलसराय कैसे पहुच गई ?"

रुक्मिणी इसके उत्तर मे रहस्यमय तरीके से बोली, "जिसे जहा पहुचना बदा होता है वह वहा पहुच जाता है। मैं उस दिन रात को मणिकर्णिका घाट कैसे पहुची थी ?"

श्यामा ने समझा कि अधिक पूछना व्यर्थ है। यह रहस्यमयी नारी अपना रहस्य किसीपर नही खोल सकती। वह बोली, "दीदी, आप धन्य है। लोगो का उपकार भी करती है और धन्यवाद तक नही देने देती।"

"तुम तो धन्यवाद दे रही हो, पर कुछ लोग तो धन्यवाद देने मे विश्वास नही करते।"

श्यामा समझ गई कि यह कड़वा उल्लेख कुणाल के सम्बन्ध मे है कि चरनसिह से छुडा दिया पर मुडकर भी नही देखा, न उस समय न बाद को। श्यामा व्द्यर्थक ढंग से बोली, "कर्तव्य बडा कठोर होता है।"

"हा, कर्तव्य बहुत कठोर होता है।"

श्यामा ने कहा, "दीदी, आप क्रान्तिकारी दल की सदस्या क्यो नही हो जाती। उसमे आपको बड़ी सात्वना मिलेगी। फिर आपके लिए यह भी तो एक खुशी की बात होगी कि आप उसी दल की सदस्या है, जिसके कुणाल जी है। न सही साधारण पति-पत्नी के रूप मे, पर सहयोगी के रूप मे आप उन्हे पाएंगी।"

रुक्मिणी ने इसका कोई उत्तर नही दिया। प्रसग बदलकर बोली, "तुम त्रिलोचन का क्या करोगी ?"

"मैं क्या करूगी ? जो दल करेगा वही करूंगी। दल कुछ न कुछ तो करेगा ही क्योकि अब उसकी गतिविधि असह्य हो गई है।"

रुक्मिणी बोली, "दल तो केवल एक ही बात कर सकता है, वह यह कि उसे गोली से उडवा दे, पर तुम जानती हो कि ऐसा करना दल के हक मे अच्छा नही होगा। इस समय तो तुम्हारे दल की यही नीति है न ! कि किसीपर यह खुलने न पाए कि जबानी जमाखर्च के अलावा कुछ हो भी रहा है।"

"पर मैं क्या कर सकती हूं ?"

रुक्मिणी बोली, "करना चाहो तो तुम सब कुछ कर सकती हो। वह कहावत सुनी है न ! साप भी मर जाए और लाठी भी न टूटे,। त्रिलोचन के रहते यहा दल की खैर नही है।"

श्यामा फिर भी यही कहती रही, "दल ही कुछ कर सकता है, मैं कुछ नही कर सकती।"

रुक्मिणी बोली, "तुम पहले मुझे त्रिलोचन का पूरा इतिहास विशेषकर अपने साथ उसका इतिहास बताओ, मुझे ऐसा मालूम होता है कि मैं कुछ न कुछ तरकीब सुझा सकूगी।"

पहले श्यामा हिचकिचाई, फिर उसने एक-एक करके कई दिनो मे सारी बाते बताईं। तब रुक्मिणी ने एक प्रस्ताव रखा। रखकर बोली, "मेरा कुछ नही है, मेरे लिए जैसा त्रिलोचन, तैसी तुम, पर दुष्ट को सजा तो मिलनी ही चाहिए। त्रिलोचन पहले एक दिशा मे जोशीला था, अब वह उसकी विपरीत दिशा मे जोश दिखा रहा है। पुलिस वाले भी इतना जोश नही दिखाते।"

श्यामा ने प्रस्ताव की बात रामानन्द से कही जो इस समय कुणाल तथा अमिताभ के चले जाने के कारण इस अचल का नेता नियुक्त हो चुका था। सब कुछ सुनकर रामानन्द ने कहा, "ठीक है ! हम उससे छुटकारा चाहते हैं। ऐसे छुटकारा मिले तो बहुत ही अच्छा है, पर हम इसमे आपकी कोई मदद नही कर सकते। हमे तो ऐसा मालूम होता है कि दीदी कुछ अधिक कल्पनावादी हो रही हैं।"...

श्यामा ने फिर कहा, "फिर भी देखा जाए। प्रेम मे बडी शक्ति होती है, वह कायर को साहसी बना सकता है और उसके आवेश मे लोग हसते-हसते जान दे सकते है।"

उसी दिन सन्ध्या समय श्यामा त्रिलोचन से कह रही थी, "प्रेम मनुष्य को ऊचे उठता है, नीचे नही गिराता, यदि नीचे गिराए तो समझना चाहिए कि वह प्रेम नही है। और एक बात है कि कोई कितना भी गिर जाए, वह उठ सकता है।"

त्रिलोचन बोला, "श्यामा, तुम सच मानो। मैं कभी भी नीचे नही गिरा। तुमने प्रेम के सम्बन्ध मे जो कुछ कहा है, वह सही है, पर प्रेम मे एक दाहिका शक्ति होती है, जो बाधा पाकर न जाने क्या कर डाले। शायद अपने को भी

जला डाले। जब तुमने मुझे बिल्कुल ही त्याज्य करार दे दिया, मेरे लिए साधारण मिलना-जुलना भी असम्भव हो गया, तब मै और रास्ते ढूढने लगा, जिससे कि कम से कम यह सात्वना बनी रहे कि किसी न किसी रूप मे तुम्हारे साथ मेरा सम्पर्क बना हुआ है।"

श्यामा बोली, "पुरानी बातो को जाने दो, उस दिन जब मैंने तुम्हे मुगलसराय के ओवरब्रिज पर देखा, तब मुझे एकाएक ऐसा मालूम हुआ कि तुम वहा खडे होकर मुझे ही खोज रहे हो। मुझे ऐसा जान पडा कि कई सालो से मै जिस अगियाबैताल का पीछा कर रही हू, वह तुम्ही हो।" यहा पर श्यामा रुक गई। रुक्मिणी ने जो बाते रटाई थी वे इतनी हास्यास्पद थी कि उसे हसी आने लगी। वह दूर अन्तरिक्ष की ओर देखकर अन्यमनस्क होने की चेष्टा करती रही, जिससे कि हसी न आए।

पर त्रिलोचन ने यह समझा कि वह इतनी भावाविष्ट हो गई है कि उसका गला रुध रहा है। बोला, "क्या बताऊ, मै उस दिन सचमुच तुम्हारी टोह मे ही खडा था। मै जानता था कि आज कोई महान् घटना होगी। उसीकी प्रतीक्षा मे मै खडा था।"

रुक्मिणी ने यह नही बताया था कि त्रिलोचन ऐसी बात कहे तो उसके उत्तर मे क्या कहना चाहिए, इसलिए श्यामा ने अपनी बुद्धि से कहा, "क्या तुमको पुलिस से मालूम हुआ था कि मै इधर से आऊगी या और कोई बात थी?"

पुलिस का नाम सुनकर त्रिलोचन चौक पडा। उसने ध्यान से श्यामा के चेहरे को देखा। श्यामा समझ गई कि वह गलत दिशा मे गई है, बोली, "तुम तो वह अग्रेजी कहावत जानते हो न, कि प्रेम और लडाई मे कोई भी बात नाजायज नही है।"

श्यामा के इस कथन से परिस्थिति कुछ सभल गई, पर उस दिन बात कुछ अच्छी तरह नही जमी। श्यामा ने जाकर रुक्मिणी से सारी बात बताते हुए कहा, "मुझे तो सारा काम कुछ गडबड ही मालूम होता है। इससे कुछ होता-जाता नही है। आप कहती हैं कि प्रेम सब कुछ करने मे समर्थ है, पर प्रेम मे भी शायद इतनी शक्ति नही है कि कोई कायर अपने को कायर करके मान ले। वह तो पुलिस का नाम सुनकर ऐसा चौका कि मै घबडा गई। खैरियत यह है

कि वह कहावत समय पर याद आई।"

रुक्मिणी बोली, "तुम तो दो ही दिन मे घबडा गईं, प्रेम को अभीष्ट ऊचाई तक पहुचाने मे समय लगेगा। जब प्रेम पागलपन मे पहुच जाए तभी सुधार का कार्य शुरू हो सकता है, उसके पहले नही। लोहा लाल होने के पहले जो उसपर हथौडा मारेगा, वह अपनी ही शक्ति का क्षय करेगा।"

इसलिए श्यामा को फिर से त्रिलोचन से भेट कराने का कार्यक्रम जारी करना पडा। मजिल दूर मालूम होती थी, फिर भी प्रयत्न जारी रहा। अब रुक्मिणी की सीख के अनुसार श्यामा ने यह कहना शुरू किया, "कुछ बाते तुम्हारी तरफ से ऐसी है और कुछ बाते मेरी तरफ से ऐसी है कि हम लोगो का मिलन नही हो सकता। यह ससार बहुत ही क्रूर है। इसमे वास्तविक प्रेम के लिए कोई गुजाइश नही है। मेरे माता-पिता कभी इस शादी पर राजी नही होगे। फिर सभव है कि क्रातिकारी ही मुझे मार डाले।"

शेषोक्त बात पर त्रिलोचन तैश मे आ गया। बोला, "क्रातिकारियो की क्या मजाल कि तुम्हारा बाल भी बाका करे। थोडे दिनो मे उनका खुद ही कबाडा होने वाला है। हमारे देश की सस्कृति ऐसी है कि इसमे हिंसात्मक आदोलन पनप नही सकता।"

इन बातो पर श्यामा को इतना क्रोध आया कि इच्छा हुई कि उसको एक तमाचा मारे और यह कहे—तुम्ही एक रह गए हो भारतीय सस्कृति के ठेकेदार ? पर रुक्मिणी का चेहरा याद आया। वह रुआसी होकर बोली, "ऐसी हालत मे बस एक ही उपाय रह गया है, वह उपाय यह है कि हम-तुम दोनों जहर खाकर जान दे दे और इस कृतघ्न ससार से छुटकारा पा ले। इसके अलावा तो मुझे कुछ सूझता ही नही है।"

पर त्रिलोचन ने इस सम्बन्ध मे कुछ न कहते हुए कहा, "हम लोग किसी दूर देश मे चले चले, वहा तो हमे कोई नही सताएगा।"

रुक्मिणी ने जो बातें सिखाई थी, उसमे इस प्रश्न का उत्तर नही था, फिर भी कुछ कहना तो था ही, इसलिए वह बोली, "उसकी कोई गुजाइश ही नही है। एक तरफ मुझपर पुलिस निगरानी रखती है, दूसरी तरफ जब से मैं तुमसे मिल रही हू, क्रातिकारी मुझपर नाराज है और तीसरी तरफ घरवाले भी मेरा पूरा विश्वास नही करते।"

त्रिलोचन बोला, "तुम किसीकी परवाह मत करो, मैं ऐसी व्यवस्था कर दूगा कि हम भाग जाएगे और किसीको कानो कान खबर नही होगी।"

उस दिन श्यामा ने जाकर रुक्मिणी से इस नए अड़गे की बात कही।

सब कुछ सुनकर रुक्मिणी ने कहा, "अच्छी बात है, इसीमे से कोई रास्ता निकालना चाहिए।"

फिर दोनो मिलकर आधी रात तक परामर्श करती रही। अगले तीन दिन के अन्दर ही भागने की तारीख निश्चित हुई। श्यामा बोली कि मै अपने साथ कुछ गहनो के अलावा कुछ नही ले जा सकूगी।

त्रिलोचन बोला, "तुम चिन्ता मत करो मै सब कुछ ले चलूगा।"

श्यामा बोली, "पर एक शर्त है कि यदि हम लोग भागने मे असमर्थ रहे या किसी कारण से पकडे जाने को हुए तो हम पकडे जाने के पहिले ही आत्म-हत्या कर लेगे।"

त्रिलोचन इस बात पर राजी हो गया। उसे पूर्ण विश्वास था कि कोई अडचन पैदा ही नही होगी।

निर्दिष्ट तारीख को श्यामा और त्रिलोचन सध्या समय सबसे तेज़ डाकगाडी जो भी मिली, उसपर सवार होकर काशी से निकल गए। वे रात के अन्तिम प्रहर मे एक जक्शन पर उतरे और वहा एक खाली प्रतीक्षालय देखकर उसमे रुके, पर श्यामा को प्रतीक्षालय मे रहने से डर मालूम हो रहा था। इसलिए वह जागती रही। त्रिलोचन भी जागता रहा। श्यामा बार-बार यही कहती रही, "मेरी आत्मा कह रही है कि हम लोग ज़रूर पकडे जाएंगे।"

पर त्रिलोचन उसे समझाता रहा।

वह जितना ही समझाता रहा, श्यामा उतना ही घबड़ाती रही। फिर भी अन्त मे दोनो की आखे लग गई। रात बहुत थोडी ही रह गई थी, इतने मे किसीने बाहर से दरवाजा भडभडाया। बस श्यामा बिलकुल घबडा गई, बोली, "लोग आ गए।"

त्रिलोचन उठकर आख मलते हुए बोला, "कोई मुसाफिर होगा। भीतर आना चाहता होगा। यह कोई हमारा घर तो है नही। यहा तो सबको आने का अधिकार है।"

इतने मे बाहर से और जोर से भडभडाहट हुई। श्यामा एकदम से पागल-सी

हो गई । बोली, "अब तो कोई शक नही कि यह हम लोगो को पकडने आए है, कितनी लज्जा की बात होगी, हो सकता है कि क्रातिकारी ही हो", कहकर उसने कही से दो पुडिया निकाली और एक त्रिलोचन को देती हुई और दूसरी को खोलती हुई बोली, "मैं तो जाती हू प्रियतम ! तुमसे विदाई है।"

कहकर उसने उस पुडिया की दवा अपने मुह मे रख ली । भडभडाहट और तेज हुई । जब त्रिलोचन ने श्यामा को वह पुडिया खाते देखा और 'प्रियतम विदाई' सुना तो उसने भी उस पुडिया की दवा अपनी जीभ पर रख ली और खाते ही एक मिनट के अन्दर वह वहा बेहोश होकर गिर पडा । श्यामा ने दरवाज़ा खोल दिया क्योकि उसने जो पुडिया खाई थी, उसमे पोटाशियम साइनाइड न होकर उसी रग का मामूली-सा पाउडर था ।

दरवाज़ा खोलते ही सामने रुक्मिणी और उसके बाद रामानन्द दिखाई पडे । तीनो जल्दी-जल्दी वहा से रवाना हो गए और जो भी गाडी मिली उसी-पर सवार हो गए ।

त्रिलोचन की लाश एक अज्ञात स्टेशन पर इस प्रकार मिली, फिर भी पुलिस को कोई सन्देह नही हुआ क्योकि आत्महत्या पैक्ट करते समय श्यामा और त्रिलोचन दोनो ने यह लिखकर रख लिया था कि इस ससार से ऊबकर मै आत्महत्या कर रहा हू । और इसके लिए और कोई जिम्मेदार नही ।

१७

आनन्दकुमार ने पुस्तक से आखें उठाकर एक अपरिचित व्यक्ति को सामने खडा देखा । वे पुस्तक को रखकर खडे हो गए और अपनी स्वभावसिद्ध भद्रता के साथ बोले, "मेरा नाम आनन्दकुमार है । क्या मै आपकी कुछ सेवा कर सकता हू ?"

उस व्यक्ति ने प्रश्न का उत्तर न देते हुए कहा, "आप तो दिन-रात पुस्तकों मे डूबे रहते है । यह कौन-सी पुस्तक है ?" कहकर उसने वह मोटी-सी पुस्तक उठा ली और कहा, "यह तो अफलातून की पुस्तक है ।"

दोनो बैठ गए। आनन्दकुमार भूल गए कि इस व्यक्ति का परिचय अभी लेना है, खुश होकर बोले, "क्या आपको अफलातून के साहित्य मे रुचि है ?"

वह व्यक्ति बोला, "यो तो मै आपके सामने इस सम्बन्ध मे क्या कहू, पर मेरा कुछ काम ही ऐसा है कि सभी विषयो मे थोडी-थोडी रुचि लेनी पडती है।"

आनन्दकुमार ने कहा, "तो आप पत्रकार होगे ?"

"जी हा ! मै पत्रकार हू, पर इतना पत्रकार नही कि चिरन्तन मूल्यो और मान्यताओ से बेखबर रहू। अफलातून तो खैर बहुत बडे चिन्तक थे। लगभग एक हजार वर्ष तक सारा पाश्चात्य जगत् उनके और अरस्तू के पीछे चलता रहा।"

"हा मै समझता हू कि अफलातून, अरस्तू, कपिल, कणाद, बुद्ध जो कुछ विचार दे गए है ससार उसीको लेकर चल रहा है।"

"आप यह नही मानते कि ससार के चिन्तन मे नई-नई बाते हुई हैं ?"

आनन्दकुमार बोले, "इसका उत्तर द्वन्द्वात्मक ढग से देना पडेगा। नई बाते हुई भी है और नही भी हुई है। जो नई बात है वह कई बार पुरानी बात का पुनराविष्कारमात्र है। आखिर नई बात बिल्कुल नई तो हो नही सकती। पुराने का जुज लेकर ही नए की उत्पत्ति होती है। जो बात जीवजगत् मे सही है, वही बात विचार के क्षेत्र मे भी सही है। सन्तान मे माता और पिता की निरतरता जारी रहती है साथ ही वह माता और पिता से भिन्न होती है।"

आनन्दकुमार और भी कुछ कहने जा रहे थे, पर उस व्यक्ति ने देखा कि अब विषय उसकी पहुच से बाहर हुआ जा रहा है। उसने तो यो ही बात छेड दी थी कि कुछ लिखने को मिले। एकाएक प्रसगान्तर करते हुए बोला, "आप तो जैसा मैं देख रहा हू, दिन-रात व्यास, वाल्मीकि, कणाद, कपिल, अफलातून, अरस्तू मे डूबे रहते है, फिर आप चुनाव की तैयारी कैसे करते हैं ?"

आनन्दकुमार तो इस समय ईसा से कम से कम ६०० वर्ष पहले की दुनिया मे थे, उन्हे एकाएक धक्का-सा लगा, बोले, "चुनाव की कैसी तैयारी ? मेरा तो किसी चुनाव से कोई सम्बन्ध नही है।"

वह व्यक्ति जल्दी से नोटबुक निकालकर उसमे कुछ लिखते हुए बोला, "तो आपको यह मालूम नही कि स्वराज्य पार्टी की ओर से आपको कौसिल के लिए खडा किया जा रहा है ?"

ग्रानन्दकुमार बहुत ही ग्राश्चर्य मे पडकर बोले, "नही तो, मुझे कुछ भी नही मालूम। मैं तो इन झगडो मे पडना ही नही चाहता। मुझे तो किसीने कुछ नही बताया।"

वह पत्रकार अपने श्रेष्ठ ज्ञान के कारण खुश होता हुआ बोला, "आपका नाम तो पहले था भी नही। बात यह है कि यहा के जितने बडे-बडे काग्रेसी है जैसे रघुवशनाथ, कुमारानन्द, अध्यापकप्रसाद सभी 'नोचेजर' है। राजेन्द्र जी चाहते थे कि उनका नाम रखा जाए, पर स्वराज्य दल के प्रातीय नेताओ ने उनका नाम नही रखा। जब आपका नाम रखा गया तो राजेन्द्र ने कहा, 'यो तो मै उनका प्रशसक हू, पर उनकी विचारधारा बडी उलझी हुई है। इधर तो वे क्रातिकारियो से भी कुछ सम्बन्ध रखने लगे है।' जब राजेन्द्र ने ऐसा कहा तो स्वराज्य दल के नेताओ ने उनका नाम भी रख लिया और आपका भी। अगली बैठक मे स्वराज्य दल ने यह तय किया कि काशी से दो सीटो के लिए लडना है, आप शहर से रहेगे और राजेन्द्र देहात से। आश्चर्य है कि अभी तक आपको इसकी खबर नही लगी।"

आनन्दकुमार इसपर ऐसे लज्जित हुए जैसे यह उन्हीका दोष हो, बोले, "मुझे क्यो ख्वाह-म-ख्वाह इसमे रखा। राजेन्द्र ने ठीक ही कहा है कि मेरे विचार उलझे हुए हैं। सचमुच ऐसा ही है। फिर मुझे फुरसत भी तो नही है कि मैं लोगो से वोट मागता फिरू।"

पत्रकार बोला, "मैं तो समझता हू आपके खिलाफ कोई खडा ही नही होगा।"

आनन्दकुमार बोले, "चुनना तो ऐसे ही व्यक्ति को चाहिए, जिसके खिलाफ कोई खड़ा ही न हो। लोकतन्त्र तभी पूर्ण रूप से सफल होगा, जब ऐसे लोग बहुसख्या मे मिलेगे। लोकतन्त्र जिस रूप मे काम कर रहा है और चुनाव मे जिस तरह भद्द पीटी जा रही है, उससे वास्तविक रूप से सेवाभावयुक्त व्यक्ति चुनाव मे पडना ही नही चाहेगा, और सब तरह-तरह के गिरोहबन्द लोगो की बन आएगी, जो गिरोह के स्वार्थ में जनता को उल्लू बनाते रहेगे। यह जरूरी नही कि जो आदमी गिरोहबन्दी मे पटु हो, वह ईमानदार जनसेवक भी हो।"

वह पत्रकार पेन्सिल सम्भालते हुए बडी व्याकुलता के साथ बोला, "तो मैं

यह लिख दूं कि आप उसी हालत मे चुनाव लडेगे, जबकि आपके खिलाफ कोई खडा न हो।"

आनन्दकुमार ने एकाएक इसका कोई उत्तर नही दिया, बोले, "खडे होने को तो ऐसे-ऐसे पागल पडे है कि वे पडित मोतीलाल नेहरू और सी० आर० दास के विरुद्ध खडे हो जाए, मेरा मतलब ऐसे सिरफिरे लोगो से नही है जो जमानत ज़ब्त करवा कर ही सही, कुछ यश लूटने के फेर मे रहते हैं। ऐसे लोगो का शुमार तो विकृत मस्तिष्को मे होना चाहिए। मेरा मतलब असरदार विरोधी नही होना चाहिए यानी जनमत से एक ही आवाज़ निकलती हो।

"आपका आदर्श बहुत ऊचा है, तो आपका मतलब है कोई महत्वपूर्ण व्यक्ति आपके खिलाफ खडा न हो तभी आप चुनाव मे पडने को तैयार होगे ?"

आनन्दकुमार ने कहा, "हा, ऐसा ही समझिए।"

पत्रकार ने कहा, "आप रचनात्मक कार्यक्रम मे विश्वास नही रखते ?"

आनन्दकुमार बोले, "मै काग्रेस के रचनात्मक कार्य मे सोलहो आने विश्वास रखता हू।"

"तब तो आप 'नोचेजर' हुए।"

"मुझ पर कौन-सा लेबिल लगना चाहिए यह आपही बताइए, पर मैं साथ ही कौसिल-प्रवेश मे कोई बुराई नही देखता। कौसिलो के अन्दर से काग्रेस का प्रचार-कार्य करने मे क्या बुराई है ?"

"आप एण्ड और मेण्ड* मे विश्वास करते है ?"

"मैने बताया कि मेरे विचार बडे उलझे हुए हैं। यदि कौसिलो मे हमारा बहुमत होता है, तभी हम इस नारे को कार्यान्वित कर सकते है, नही तो हम कौंसिलो के अन्दर से अपने वक्तव्य दे सकते है, जनता को उस हालत मे शिक्षा मिलेगी कि उन्हे किसे चुनना चाहिए था।"

पत्रकार दीवार पर टगी हुई घडी की ओर देखकर चौक पड़ा और आनन्दकुमार से विदाई लेकर चला गया। रूपवती शायद सारी बातें सुन रही थी, सामने आकर बैठती हुई बोली, "यह आदमी किस चुनाव की बाते कह रहा

---

*कौसिलों को खतम करो या उन्हें सचमुच प्रतिनिधि संस्था बनाओ। यह स्वराज्य पार्टी का एक नारा था।

था ? उसमे जेल तो नही जाना पडेगा ?"

आनन्दकुमार ने रूपवती का भय निवारण करते हुए कहा, "बल्कि मैं तो यह समझता हू कि जेल न जाने के लिए ही लोगो ने स्वराज्य दल की स्थापना की है। इसमे जेलयात्रा की लेशमात्र सम्भावना नही है।"

इस प्रकार पूरी बात हो भी नही पाई थी कि राजेन्द्र आ गया। रूपवती उसे देखकर बिना कुछ बोले एकाएक उठ गई, पर आनन्दकुमार ने हमेशा की तरह राजेन्द्र का तपाक् से स्वागत किया।

राजेन्द्र ने बैठने के पहले ही जल्दी-जल्दी कहा, "आपको मालूम है न कि स्वराज्य पार्टी की ओर से आपको और मुझे खडा किया जा रहा है। मैने आपके लिए बहुत ज़ोर डाला।"

"पर तुमने अच्छा नही किया, तुम जानते हो कि मैं इन झगडो से दूर रहने के लिए ही कभी किसी सभा-सोसाइटी मे तब तक नही जाता जब तक मजबूर न हो जाऊ।"

राजेन्द्र बोला, "आपके ऐसे आदमी दूर भागेगे तो फिर लोकतत्र कैसे सफल होगा ?"

"क्यो, तुम्हारे ऐसे होनहारो के रहते हुए आदमियो की कमी क्या है ?"

"मै तो आपके पीछे-पीछे हू, पर अब आप एक बढिया-सा घोषणा-पत्र तैयार कीजिए जो आपके और मेरे हस्ताक्षर से प्रकाशित हो।"

आनन्दकुमार ने कहा, "अच्छी बात है, पर जानते ही हो मेरे विचार कुछ अजीब है। मैं घोषणा-पत्र मे यह लिखू गा कि यदि कोई भी असरदार आदमी हम लोगो के खिलाफ खडा हुआ तो हम चुनाव से अलग हो जाएगे। हम उसी हालत मे कौसिल मे जाना स्वीकार करेगे जबकि एकमत से या लगभग एकमत से चुने जाएगे ! तुम्हे यह स्वीकार है न ?"

राजेन्द्र ने प्रश्न बचाकर कहा, "मै तो अब एक दल मे हू, उसीके अनुशासन मे रहूगा। यदि उस दल ने कहा कि आपवाली शर्त ठीक है, तो मैं भी उसी शर्त को मानकर चलू गा।"

"पर मेरा तो इस सम्बन्ध मे पक्का विचार है कि मुझे तू-तू, मैं-मैं मे नही पड़ना है।"

राजेन्द्र को जैसे कुछ याद आया, बोला, "तब तो आपकी शर्त पहले ही टूट

चुकी है क्योकि मैने सुना है कि आपके विरुद्ध रायबहादुर वशीधर खडे होने वाले हैं।"

"कौन ? श्यामा के पिता ?"

"हा, अब उनको राजनीति का मर्ज सवार हुआ है।"

आनन्दकुमार बोले, "तो तुम मेरी तरफ से स्वराज्य दल के नेताओ को सूचित कर दो कि मुझे इस झगडे से अलग रखे। यो मुझसे जो सेवा बनेगी, वह मै करूगा।"

राजेन्द्र इस अत्यन्त महत्वपूर्ण खबर को पहुचाने के लिए तुरत इलाहाबाद रवाना हो गया।

रूपवती सारी बाते सुन रही थी, वह बहुत नाखुश हुई, पर कुछ बोली नही। न जाने क्यो उसे एक भय भी था कि शायद किसी न किसी रूप मे इसका अन्तिम नतीजा जेलयात्रा होगी।

१८

श्यामा ने रुक्मिणी से कहा, "अभी मुझे रामानन्द जी ने बतलाया कि जिस प्रकार से त्रिलोचन से आत्महत्या कराई गई, उससे कुणाल जी बहुत नाराज हुए। इसी कारण रामानन्द को जिले के सचालक के पद से हटाकर अविनाश को यह पद दे दिया गया है।"

रुक्मिणी बोली, "उनका कहना मैं समझ सकती हू।"

पर श्यामा प्रतिवाद करती हुई बोली, "मैं तो कुछ नही समझी। उस आदमी को किसी न किसी रूप मे हटाना ही था, साथ ही दल इस समय इस स्थिति मे नही था कि उसे उस प्रकार गोलियो से उडा दे जैसे गोपीनाथ साहा ने कलकत्ते मे टेगर्ट को उडाने की कोशिश की थी। ऐसी हालत मे कुछ दूसरा उपाय अपनाना ही था।"

रुक्मिणी बोली, "यह बिल्कुल सही है, फिर भी इसमे गलती यह हुई कि इस प्रकार ऐसा काम किया गया है, जो क्रातिकारी दल के चरित्र के विरुद्ध

है । प्रत्येक सस्था का अपना चरित्र भी तो होता है ।

"कुणाल जी बिलकुल सही बात कह रहे है । वे कहते है कि क्रातिकारी दल एक विशेष पद्धति से काम करता है, यदि वह पागलो का दल है, तो इन पागलो के पागलपन मे एक विशेष तरीका है । त्रिलोचन की आत्महत्या इस पद्धति से मेल नही खाती ।"

रुक्मिणी फिर बोली, "और यह बिलकुल ठीक बात है ।"

श्यामा छोटी लडकी की तरह चिढकर बोली, "पर दीदी, मैने तो सारा काम तुम्हारी ही सीख के अनुसार किया था । अब तुम यह बात कह रही हो । तुम कुछ तो ख्याल करो कि आदर्श पत्नी को अपनी सारी सत्ता पति के मतवाद मे डुबा नही देनी चाहिए ।"

रुक्मिणी मुस्कराकर बोली, "यह तो मै भी मानती हू । मैं अपनी सत्ता उनकी सत्ता मे डुबा देती तो मैं भी एक क्रान्तिकारिणी होती । पर इस मामले मे उनका कहना बिल्कुल सही है । और हम गलती पर थी । शहीदो का खून रग लाता है पर देश-द्रोह के कारण मारे हुए लोगो का खून भी चेतावनी के रूप मे होता है । त्रिलोचन मर गया । क्रान्तिकारी दल के मार्ग का एक कण्टक दूर हुआ । पर उससे न तो किसीको चेतावनी मिली और न और कोई बात ही हुई ।"

श्यामा बोली, "कण्टक का दूर होना कोई बात ही नही है ?"

रुक्मिणी बोली, "बात क्यो नही है, पर जो बात होनी चाहिए, वह नही हुई । एक उदाहरण लो ! एक आदमी को हत्या के अपराध मे फासी की सजा होती है, पर फासी होने के पहले ही वह हैजे से मर जाता है । यहा वह व्यक्ति मर गया, पर न्याय की आखो मे जो बात होनी चाहिए थी, वह बात नही हो पाई ।"

श्यामा फिर भी नही मानी, "आगे बहुत मौके आएगे जब मुखबिरो को मारना पड सकता है । यदि कुणाल जी चाहते हैं कि शिक्षा देनी चाहिए तो चरनसिह या बनर्जी को ही गोलियो से उडवा दें ।"

"चरनसिंह और त्रिलोचन की बाते भिन्न है । चरनसिंह तो एक नौकर मात्र है, पर त्रिलोचन एक विश्वासघातक था । जो बात उसे सजा देने मे हो सकती है, वह चरनसिंह को देने मे नही हो सकती ।"

श्यामा बोली, "हमे इस सम्बन्ध मे सबसे बुरी बात यह लगी कि रामानन्द को सज़ा दी गई।"

"श्यामा, तुम तो बहुत व्यक्तिगत ढग पर सोचती हो, दल का नेता तो दल की दृष्टि से ही सारी बातो को सोच सकता है। रामानन्द ने कतई बुरा नही माना होगा।"

"बिल्कुल बुरा नही माना और वह भी तुम्हारी तरह कुणाल जी के मत का समर्थन कर रहे है। मैने अविनाश जी से इसलिए बात नही की कि उन्हे इस घटना का पता ही नही है।"

रुक्मिणी बोली, "इसका अर्थ यह हुआ कि तुम सब लोग मुझे कोस रहे हो? तुम्हारे कुणाल जी हमे कुछ सजा क्यो नही देते?"

श्यामा बोली, "उन्होने तो सुनती हू यह दिखलाया ही नही कि उन्हे यह मालूम है कि इस मामले मे तुम्हारा भी कोई हाथ है।"

"उनका कुछ न कहना ही सबसे बडा तिरस्कार है, अच्छा यह बताओ रामानन्द ने क्या कहा?"

"रामानन्द की तो स्थिति बहुत जटिल है। वह एक तरफ तो कुणाल जी के मत का समर्थन करते हैं, दूसरी तरफ आपके प्रति उनकी प्रशसा भावना और भी बढ गई है।"

"और भी से क्या मतलब? सजा पाकर?"

"यह तो तुम्ही समझो।"

रुक्मिणी मधुरता से मुस्कराकर बोली, "यह सब उसी एडिपस जटिलता का खेल है।"

श्यामा बोली, "दीदी, यहा तो मै मारी जा रही हू और तुम मज़ाक कर रही हो। मै सोच रही थी कि जाकर आनन्दकुमार जी से कुछ शान्ति प्राप्त करूं, पर उधर का रास्ता भी बन्द हो गया।"

"क्यो? क्यों? क्या उन्हे भी सारी बात मालूम है?"

"नही, पर एक दूसरी बात हो गई है, जिससे मै बडी उलझन मे पड़ गई हू।"

"वह क्या?"

"वह यह कि आनन्दकुमार जी स्वराज्य दल की ओर से कौसिल के लिए

खडे हो रहे है और इधर मेरे पिताजी भी लिबरल पार्टी की ओर से खडे हो रहे है। अब मुझे मालूम होता है कि फिर से घर छोडना पडेगा।"

रुक्मिणी चिन्तित होकर बोली, "क्या कुछ ऐसा नही किया जा सकता, जिससे बाबूजी अपना नाम वापस ले ले ?"

"मैने उन्हे करीब-करीब राजी कर लिया था, पर रिश्तेदारो ने उन्हे चग पर चढा दिया और वे अब पीछे हटना नही चाहते। मुझे पूरा विश्वास है कि वे हार जाएगे, पर उनके सगी-साथी, जिनका उद्देश्य केवल उन्हे लूटना है, उन्हे उल्टी सलाह दे रहे है।"

रुक्मिणी बोली, "तो इसमे तुम्हारा क्या दोष है ? आनन्दकुमार जी को जहा तक मैने समझा है, वे किसी भी हालत मे किसीको गलत नही समझेगे।"

श्यामा बोली, "यह तो मै भी जानती हू, फिर भी कुछ असमजस मे तो पड ही गई हू। इसके अलावा सबसे बुरी बात यह है कि आनन्दकुमार जी ने यह कह रखा है कि यदि नाम वापस लेने के अन्तिम दिन तक उनके खिलाफ कोई उम्मीदवार रहा, तो वे स्वय ही अपना नाम वापस ले लेगे। दीदी, तुम पिताजी को समझाओ न। वह तो तुम्हे थोडे ही दिनो मे बहुत मानने लगे है।"

रुक्मिणी ने इसके उत्तर मे हा-ना कुछ नही कहा। बोली, "आनन्दकुमार जी का यह कहना ठीक ही है कि तू-तू, मै-मै मे न ही पड़ना चाहिए और जनता का सेवक तभी जनता का प्रतिनिधि बने, जब जनता उसे कबूल करे।"

श्यामा बोली, "पर जनता का अर्थ अधिकाश जनता से है, कुछ लोग तो हमेशा बेवकूफी पर उतारू रहेगे, इसीलिए उनसे डरकर चुनाव से हट जाने का अर्थ लोकतन्त्र को सहायता देना नही बल्कि लोकतन्त्र की विरोधी शक्तियो को खुली छूट दे देना है। इसकी बजाय डटकर लडना चाहिए, जिससे उन्हे मुह की खानी पडे।"

रुक्मिणी बोली, "बात तो तुम ठीक कह रही हो, स्वराज्य दल के नेताओं ने भी आनन्दकुमार जी को यही बात समझाई थी, पर आनन्दकुमार जी नही माने। मै समझती हू कि तुम्हारे पिताजी को समझाने की बजाय आनन्दकुमार जी को समझाना आसान भी होगा और उचित भी।"

श्यामा खुश होकर बोली, "तो उन्हीको समझाओ।"

इसपर रुक्मिणी बोली, "एक मामले मे मैंने थोडी दिलचस्पी ली, सो

बेचारा रामानन्द मारा गया। अब तुम मुझे फिर इन बातो मे डाल रही हो। मैं समझती हू कि मुझे अब इन बातो मे नही पडना चाहिए। इसके अलावा अब मैं यहा से जाने वाली हू। वे यहा से चले गए और शायद कभी न लौटे। मुझे तो फिर उन्हे ढूंढ निकालना है।"

१९

विशेष पुलिस के प्रातीय इचार्ज जानसन ने कहा, "इसमे तो कोई शक नही कि त्रिलोचन ने आत्महत्या की, पर यह समझ मे नही आता कि उसने आत्महत्या के लिए यहा से १५० मील दूर के एक स्टेशन के प्रतीक्षालय को क्यो इसका गौरव दिया। हस्तलिपि विशेषज्ञ ने यह निश्चित रूप से बताया है कि जो पत्र उसकी जेब मे मिला है, वह उसीका लिखा हुआ है। उनका कहना है कि कई बार हस्तलिपि का अच्छा अनुकरण किया जा सकता है, पर वैज्ञानिक जांच मे वह भी नही ठहर पाता।"

मिस्टर बनर्जी ने कहा, "इसके अलावा दो बिस्तरो का रहस्य भी समझ मे नही आता। वहा के कुलियो का कहना है कि कोई महिला थी, उससे हमने यह अनुमान लगा लिया कि श्यामा ही रही होगी, क्योकि वही इन दिनो त्रिलोचन से बहुत मिलती थी। पर जब कुलियो को श्यामा का फोटो दिखाया गया, तो वे बिल्कुल पहचान नही सके। इससे यह मालूम होता है कि यदि श्यामा रही भी होगी तो, उसने इस तरह छद्मवेश धारण किया होगा कि जिसने उसे उस रूप मे देखा वह अब उसे साधारण रूप मे देखे तो पहचान नही सकता। हमारे जो दो-एक गुप्तचर हैं, जिनसे हमे दल की खबर मिलती रहती है, वे भी कुछ विशेष नही बता सके। दल मे त्रिलोचन को मारने की कोई चर्चा नही थी।"

सरदार हरनामसिंह ने इधर इलाहाबाद मे क्रान्तिकारी दल के विरुद्ध अच्छा काम किया था। उन्होने बम का एक कारखाना पकडा था, इस नाते उन्हें अभी डिप्टी सुपरिन्टेन्डेन्ट बनाया गया था और इस सम्मेलन मे विशेष करके बुलाया

गया था। वे बोले, "कहा जाता है कि जो व्यक्ति आत्महत्या करता है, वह सामयिक रूप से ही सही विकृत मस्तिष्क हो जाता है। ऐसा हो सकता है कि किसी प्रकार के आवेश मे उसने दो बिस्तरे बनाए हो और कभी इसमे और कभी उसमें लेटा हो और फिर अन्त मे जहर खाकर आत्महत्या कर ली हो।"

मिस्टर जानसन ने मुस्कराते हुए कहा, "आपके इस सिद्धान्त मे सारे तथ्यों को फिट करने के लिए यह भी कल्पना करनी पडेगी कि वह बारी-बारी से पुरुष और स्त्री बन रहा होगा, पर उस हालत मे इस बात की व्याख्या करनी पड़ेगी कि स्त्री के कपडे कहा गए।"

मिस्टर बनर्जी ने कहा, "त्रिलोचन ने आत्महत्या तो की, फिर भी इसके साथ कुछ और बाते भी थी। वे बाते क्या थी, इनका कुछ सुराग अभी तक नही मिला। यह नही समझ मे आया कि त्रिलोचन उस दूर के स्टेशन मे क्यो गया था। श्यामा उसके पहले दिन भी त्रिलोचन से मिली थी।"

जानसन बोला, "मैं इस लडकी को तब से जानता हू, जब मै यहां पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट था। वह बहुत ही चालाक लडकी है। अफसोस है कि वह क्रान्ति-कारियो मे मिल गई। मेरा अनुमान है कि उसका इस आत्महत्या मे कुछ न कुछ हाथ जरूर होगा।"

मिस्टर बनर्जी बोले, "मेरा भी यही अनुमान हे, पर उस चिट्ठी ने हमारे हाथ-पैर बिल्कुल बाध दिए है।"

जानसन बोला, "केवल हाथ-पैर ही नही, बुद्धि भी बध गई है। मेरे मन मे एक अनुमान यह उठ रहा था कि श्यामा ने उसे कहा होगा कि तूने बहुत बुरा काम किया, तुझे आत्महत्या कर लेनी चाहिए। यह कोई असभव बात नही है। उस लडकी ने उस दुर्बल चित्त व्यक्ति मे ग्लानि की भावना इतनी बढा दी होगी कि उसने आत्महत्या करना स्वीकार किया, पर दूर स्टेशन मे जाने की क्या जरूरत थी ? क्यो सरदार जी ! आत्महत्या के लिए बनारस मे कोई कम मौका है ?"

सरदार जी बोले, "शायद वह यह चाहता रहा हो कि वह आत्महत्या कर ले और कोई न जाने।"

"ऐसा तो वह पत्थर बाधकर डफरिन पुल से गगा मे कूदकर भी कर

सकता था। फिर यह बताइए कि दो बिस्तरे क्यों लगाए गए ? वह लेडी कौन थी ?"

सरदार जी इसका कोई उत्तर नही दे सके और न मिस्टर बनर्जी ही कुछ सुझाव दे सके। जानसन ने कहा, "इसमे सबसे शकित होने की बात यह है कि हमारे विरुद्ध कोई बहुत ही बडा मस्तिष्क काम कर रहा है, जिसका हम बिल्कुल पता नही पा रहे है। त्रिलोचन मर गया तो क्या, ऐसे कई त्रिलोचन पैदा होगे, पर जब तक हम उस मस्तिष्क को काबू मे नही लाते या उसे शिकस्त नही देते, तब तक हमारा कल्याण नही है। मिस्टर बनर्जी ! आप कुछ बता सकते है कि यह किसका मस्तिष्क है ?"

मिस्टर बनर्जी ने कहा, "मुझे तो यह सारा प्रपंच जगदीश उर्फ कुणाल का किया हुआ मालूम होता है। हम इसीलिए उसे पकडने की जी तोड़ कोशिश कर रहे है, पर वह बनारस से ही जाता रहा है।"

जानसन बोला, "राजकुमार भी तो एक नम्बर का शैतान है।"

बनर्जी ने कहा, "जी हा, राजकुमार उर्फ अमिताभ बहुत खतरनाक आदमी है। वह कुणाल से शायद कम बुद्धिमान है, पर खूख्वार अधिक है।"

जानसन ने कहा, "मेरी तो राय यह है कि जितने सन्दिग्ध लोग है, सबको पकड लिया जाए, फिर आदोलन स्वय समाप्त हो जाएगा।"

मिस्टर बनर्जी अधिक वैधानिक रूप से सोचते थे, बोले, "जैसा आप कहते है, वैसा हो सकता तो अच्छा रहता, पर सरकार ऐसा होने कब देती है ? हा ! १६२४ का बगाल आर्डीनेन्स है, उसका हम प्रयोग कर सकते है, पर उसमे केवल बगाल से सम्बद्ध लोगो को ही पकडा जा सकता है। १८१८ का रेगुलेशन ३ तो काम मे लाने ही नही दिया जाता। अगर हम इन थोडे-से कानूनो को भी अच्छी तरह काम मे ला सकते, तो आन्दोलन का दमन हो सकता था।"

जानसन ने शायद अन्तिम बाते नही सुनी, वह एकाएक बोला, "अच्छा, आपने एक महिला की बात बताई थी, जो कुणाल को गिरफ्तार करते समय पगली बनकर चरनसिंह पर कूद पडी थी, उसपर आप निगरानी रख रहे है ? कही उसीने तो त्रिलोचन को उल्लू बनाकर आत्महत्या नही करवाई ? आपने तो बताया था कि वह बहुत सुन्दर है।"

मिस्टर बनर्जी ने कहा, "मै उसपर बराबर निगरानी रख रहा हूं। पर

सारी रिपोर्टों से यही पता चलता है कि वह क्रान्तिकारी दल की सदस्या नही है।"

जानसन ने जरूरत से ज्यादा जोश मे आते हुए कहा, "क्रान्तिकारी दल की सदस्या नही है, फिर भी उसने उस शैतान कुणाल को छुडा लिया, और शायद उसीने त्रिलोचन की भी हत्या करवाई। मुझे तो यह विश्वास हो रहा है कि वह जो लेडी उस दिन स्टेशन मे देखी गई थी वही है और वह दूसरा बिस्तरा उसीका था।"

मिस्टर बनर्जी ने अदब के साथ कहा, "पर हुजूर, त्रिलोचन से उस महिला का कोई वास्ता ही नही रहा।"

जानसन ने जब देखा कि यह गली भी अन्धी गली निकली, तो उसने दूसरी तरफ जाते हुए कहा, "आखिर उस महिला का पूर्व इतिहास क्या है?"

मिस्टर बनर्जी बोले, "आनन्दकुमार उसे अपनी बहन कहकर छुडा ले गए थे, पर पता लगा कि यह उनकी कोई नही है। उसका इतिहास जानने की कोशिश की गई, पर अभी तक कुछ मालूम नही हो सका।"

जानसन तिरस्कार के लहजे मे बोला, "यह तो हमारी तहकीकात की हालत है। कुणाल कहा है, पता नही; अमिताभ क्या कर रहा है, पता नही; त्रिलोचन कैसे मरा, पता नही, और वह महिला कौन है यह पता नही।" कहकर दूसरी बात छेडते हुए बोला, "कही आनन्दकुमार का ही मस्तिष्क तो सारी बातो के पीछे नही है? इसका भी बडा रहस्यमय चरित्र रहा है। असहयोगी न होते हुए भी इसने अमन सभा की तरफ से सगठित एक सभा को भंग किया और उसमे उपस्थित राजा तथा पडित लोग पिटते-पिटते बचे। जेल मे गया, तो सबका नेता बन बैठा, स्वराज्य दल का न होते हुए भी दल की ओर से कौसिल का चुनाव लडने जा रहा है।"

मिस्टर बनर्जी ने कहा, "वह तो कह रहा है कि यदि रायबहादुर वशीधर ने अन्त तक अपना नाम वापस नही लिया, तो वह चुनाव से हट जाएगा।"

जानसन क्रोध मे बोला, "यह सब ढोग है, आप देख लीजिएगा, वह लडेगा और जरूर लडेगा। अच्छा यह बताइए कि उसकी जीत होने की कहा तक सम्भावना है?"

मिस्टर बनर्जी ने कहा, "मुझे तो जहा तक मालूम है ९९ प्रतिशत वोट

मिलेगे। उसके पक्ष मे सभी दल है। क्रान्तिकारी दल के कारण सब नौजवान कार्यकर्ता उसके पक्ष मे है। बहुत-सी महिलाएं भी उसके पक्ष मे प्रचार कर रही है।"

इस प्रकार से यह सम्मेलन चलता रहा। यह निश्चय हुआ कि कुणाल, अमिताभ आदि पुराने दागी लोग फौरन पकड लिए जाए और बाकी लोगो पर तगडी निगरानी रखी जाए। आनन्दकुमार पर भी बडी निगरानी रखने का निश्चय किया गया।

२०

राजेन्द्र ने आनन्दकुमार से कहा, "आपने जो रुख ग्रहण किया है, वह सुन्दर होते हुए भी बडा अजीब है। कोई भी दल इस प्रकार नही चल सकता।"

आनन्दकुमार ने कहा, "भाई, बात यह है कि मैने दल से कभी नही कहा कि वह मुझे कौंसिल के लिए खडा करे, न मैने स्वराज्य दल के प्रतिज्ञापत्र पर हस्ताक्षर ही किए, पर मै चित्तरजनदास और मोतीलाल नेहरू को उतनी ही श्रद्धा से देखता हू, जितना गाधी जी को। मैं तो यहा तक सोचता हू कि स्वराज्य दल चलाकर इन दो महानुभावो ने काग्रेस को शान्तिकाल के लिए एक ऐसा कार्यक्रम दिया है, जिससे और मोर्चों पर युद्ध जारी रह सके। गाधी जी ने जो कार्यक्रम दिया, वह जन सम्पर्क तथा उससे कही बढकर जनमत को शिक्षित और सगठित करता है, पर उस जन सम्पर्क को काम मे लगाकर दुश्मन के किले के अन्दर घुसाकर लडाई जारी रखने का गुर इन दो नेताओ ने बताया है।

राजेन्द्र अधीर होकर बोला, "आप सारी उपमाए और दृष्टान्त तो सैनिक विषयो का दे रहे है, पर क्या कोई सेना बिना अनुशासन के चल सकती है? आपका रुख अनुशासन को दुर्बल करता है।"

आनन्दकुमार ने कहा, "इसी कारण तो मै राजनीति से अलग रहना चाहता हू, तुमने देखा होगा कि मै काग्रेस की किसी सभा आदि मे जाने से बचता हू।"

राजेन्द्र बोला, ' फिर भी आप छात्रो, युवको, काग्रेसियो, दार्शनिकों, शिक्षा-विशेषज्ञो सबमे बोलते ही रहते है और रोज पत्रो मे आपके सम्बध मे कुछ न कुछ छपता ही रहता है ।"

रुक्मिणी कही पीछे से खडी सारी बाते सुन रही थी, एकाएक सामने आकर बोली, "राजेन्द्र जी, आप ऐसे बात कर रहे है मानो भैया की इस पब्लिसिटी से आप दुखी है । भैया ने कभी किसीको यह तो नही कहा कि आप पब्लिसिटी न कराए। आप चाहे तो दल से कहकर भैया का नाम उसके उम्मीदवारो से निकलवा सकते है । फिर भी मुझे विश्वास है कि वे ही जीतेंगे ।"

आनन्दकुमार बीच मे पडते हुए बोले, "बहन, तुम मेरे साथ बडा अन्याय कर रही हो। इससे भी बढकर अन्याय तुम राजेन्द्र के साथ कर रही हो। वह इस समय एक दल की ओर से बोल रहा है, वह जो कुछ कह रहा है सो ठीक कह रहा है । अनुशासन के बिना दल कैसे चल सकता है ? उन्हे यह भी तो डर होगा कि मै चुना जाकर कौसिल मे चला गया, और वहा किसी विषय पर मैने दल के आदेशो के विपरीत वोट दे दिया, तब तो दल की भद्द होगी ।"

रुक्मिणी बिना कुछ सोचे ही बोली, मानो वह इसके लिए तैयार ही थी, "दल को आपके कहने पर चलना चाहिए ।"

आनन्दकुमार बोले, "बहन, तुम स्नेहवश गलत बात कह रही हो । स्वराज्य दल मे कितने ही बडे-बडे नेता है जो त्याग, तपस्या, बुद्धि, मेधा सभी दृष्टियो से मेरे लिए पूज्य है ।"

रुक्मिणी इसके विरुद्ध कुछ नही कह सकती थी, पर वह बोली, "आपने तो पहले से ही बता दिया था कि कोई भी आपके विरुद्ध खडा होगा, तो आप नाम वापस कर लेगे । बाकी बातो मे आप दल के साथ है । दल को उसी समय निर्णय करना चाहिए था ।"

राजेन्द्र बोला, "मैं आज यही बात कहने आया हू, कि आप देख रहे हैं कि रायबहादुर वशीधर किसी हालत मे नाम वापस लेने वाले नही हैं । फिर तो आप नाम वापस ही कर ले । अभी आप नाम वापस करेंगे तो हमने जो बाबू बनवारीलाल को खडा किया है, हम उनकी ओर से प्रचार-कार्य शुरू करे । वे १९२१ मे जेल नही जा पाए, पर वे हमेशा हमारे साथ रहे । वे खद्दर भी पहनते है ।"

आनन्दकुमार ने कहा, "मै तो अभी अपना नाम वापस लेने के लिए तैयार हू । लाओ मै अभी लिखे देता हू," कहकर उन्होने कागज और कलम सभाली ।

राजेन्द्र ने जब देखा कि आनन्दकुमार सचमुच अपना नाम वापस लेने पर तैयार है, तो वह हिचकिचा गया । बात यह है कि उसे स्वराज्य दल की ओर से ऐसी कोई हिदायत नही थी कि वह उनसे नाम वापस करा ले । उलटा उसे यह डर था कि कही ऐसा करने पर उसे दल के सर्वोच्च नेताओ के सामने जवाब-देही न करनी पडे ।

खैरियत यह है कि इसी समय रुक्मिणी बीच मे बोल पडी, "भैयाजी, आप अपना नाम वापस क्यो लेते है ? सम्भव है जो परिस्थिति आप चाहते है वह उत्पन्न हो जाए · "

आनन्दकुमार ने कहा, "बहन, मै इसकी कोई सम्भावना नही देखता । इसके अलावा नाम वापस लेकर मैं अपने को एक और विपत्ति से बचाना चाहता हू । तुम जानती हो कि मेरा और श्यामा का क्या सम्बन्ध है , ऐसी हालत मे मै इस चुनाव-युद्ध से बचने मे ही अपनी भलाई समझता हू ।"

रुक्मिणी बोली, "तो क्या आप एक व्यक्ति के प्रति अपने स्नेह के कारण देश के प्रति कर्तव्य भुला देगे ? यह तो फिर मोह हो गया । मै आपको विश्वास दिलाती हू कि स्वय श्यामा इसको दूसरे ही रूप मे लेती है । यह निश्चित है कि वह आपकी तरफ से ही काम करेगी ।"

"फिर वही बात हुई न कि मैं उससे ख्वाह-म-ख्वाह बहुत बडा त्याग कराऊगा ।"

"पर यह त्याग आपके लिए तो नही होगा । वह तो देश के लिए होगा ।"

फिर भी आनन्दकुमार अपनी बात पर डटे रहे, बोले, "जब देश का स्वार्थ एक व्यक्ति की हार-जीत के जरिए प्रतिफलित होता है, तो यह तुम नही कह सकती कि कहा पर देश का स्वार्थ समाप्त होता है, और कहा व्यक्ति का स्वार्थ शुरू होता है । मै इसीलिए ऐसी बातो मे पडना नही चाहता ।"

राजेन्द्र बोला, "यदि आप अपना नाम वापस भी ले ले, तो जिस उद्देश्य को आप सिद्ध करना चाहते है, वह सिद्ध नही होगा क्योकि आपको अपना नाम वापस लेते हुए जनता से यह कहना पडेगा कि आप बाबू बनवारीलाल के पक्ष

मे ही नाम वापस ले रहे है।"

रुक्मिणी बोली, "माफ कीजिएगा राजेन्द्र बाबू, आप बार-बार उसी बात को कह रहे है। मै कहती हू कि आप जाकर बाबू बनवारीलाल से कहे कि वे अपना नाम वापस ले ले और यह वक्तव्य दे दे कि जनता आनन्दकुमार जी को वोट दे।"

कहकर उसने आनन्दकुमार के हाथो से कलम ले ली और पैड से एक पृष्ठ फाडकर राजेन्द्र को देते हुए कहा, "जाइए! जल्दी से बाबू बनवारीलाल से वह वक्तव्य लिखवा लीजिए ताकि कल वह जरूर छप जाए।"

जबसे राजेन्द्र कौंसिल के लिए खडा किया गया था, तबसे अपने को बहुत बडा नेता समझता था। हा, आनन्दकुमार भी खडे किए गए थे, पर यह तो उनके साथ एक शराफत मात्र थी। असल मे दल का मान्यता-प्राप्त प्रतिनिधि तो वही था। वह रुक्मिणी के इस व्यवहार को सहन करने के लिए तैयार नहीं था, कागज़ को रुखाई के साथ मेज़ पर डालते हुए बोला, "आप इतनी महत्व-पूर्ण बातचीत मे बीच मे क्यो बोल रही है? मुझे तो आपके परिचय का सौभाग्य भी नही है।"

आनन्दकुमार माफी-सी मागते हुए बीच मे बोल पडे, "यह मेरा ही कसूर है कि मैंने परिचय नही कराया। आप है राजेन्द्रकुमार, एम० ए० कर चुके हैं, डाक्टरेट की तैयारी कर रहे थे कि इतने मे देश की पुकार पर जेल चले गए। अब स्वराज्य दल की ओर से कौंसिल मे जा रहे है और आप हैं रुक्मिणी बहन, आप भी असहयोग मे जेल जा चुकी है।"

रुक्मिणी ने बीच ही मे टोकते हुए आनन्दकुमार से कहा, "भैयाजी, आपने व्यर्थ ही परिचय कराया। इनसे परिचय प्राप्त किए बगैर ही मेरा जीवन कट सकता था।"

राजेन्द्र बोला, "मुझे भी आपसे परिचय प्राप्त करने की कोई इच्छा नही मालूम होती।" इस प्रकार दोनो खुलकर एक दूसरे के सामने आ गए। आनन्द-कुमार को रुक्मिणी के इस व्यवहार से पहले तो आश्चर्य हुआ, पर बाद मे वे समझ गए कि रुक्मिणी इसलिए नाराज है कि राजेन्द्र ने श्यामा के साथ दुर्व्यवहार किया था। इसके अलावा वह जो बार-बार आनन्दकुमार से नाम वापस करने के लिए कह रहा था, उससे भी रुक्मिणी बिगडी होगी और सरल

प्रकृति की स्त्री होने के कारण उसके मन मे जो बात आई उसने उसे बिना किसी हिचकिचाहट के सामने रख दिया।

आनन्दकुमार ने बीच-बचाव करते हुए कहा, "राजेन्द्र, मै तुम्हे इनका पूरा परिचय अभी नही दे रहा हू, जब उसका समय आएगा, तो तुम्हे आज के दिन की याद करके बहुत खुशी नही होगी।"

"मै समझ गया कि ये कोई क्रातिकारिणी होगी, पर इसका अर्थ यह नही है कि आप इस तरह से बाते करेगी।"

रूपवती शायद बाहर बैठकर सारी बाते सुन रही थी, उसने आनन्दकुमार को इस परिस्थिति से बचाने के लिए रुक्मिणी को अपने पास बुला लिया और राजेन्द्र को उसी प्रकार से खाली हाथ जाना पडा जिस प्रकार से वह आया था।

२१

काशी से चालीस मील के अन्दर एक शहर मे दो व्यक्ति एक पार्क मे बैठे हुए प्रकृति का दृश्य देख रहे थे। पर वे जो बातचीत कर रहे थे, उसका प्रकृति से कोई सम्बन्ध नही था। वे किसी प्रकार की गुत्थी सुलझा रहे थे। बीच-बीच मे दोनो चुप हो जाते थे और कभी-कभी वे कनखियो से अपने पीछे भी देख लेते थे। चेहरे से दोनो मुसलमान मालूम पडते थे क्योकि दोनो खसखसी दाढी रखाए हुए थे और दोनो के कपडो की सिलाई मे भी कोई ऐसी बात थी, जिससे उनके मुसलमान होने की बात प्रमाणित होती थी।

वे तो प्राकृतिक दृश्य देख रहे थे और उलझी हुई बाते कर रहे थे, पर दो व्यक्ति उन्हे पार्क के बाहर से देख रहे थे। वे भी उलझन मे पडे हुए थे, पर उनकी उलझन दूसरे ढग की थी। वे इसी पर विचार विनिमय कर रहे थे कि बेच पर बैठे लोग मुसलमान है या नही ? एक का तो पूरा निश्चय था कि यह मुसलमान नही है, पर दूसरा कह रहा था, "ये लोग जरूर मुसलमान है और तुम जो समझ रहे हो, वे नही है।"

बेंच पर बैठे हुए लोग इस गुत्थी को सुलझाने मे लगे हुए थे कि गावो मे तो कई डकैतिया की जा चुकी, पर उनसे आर्थिक प्रश्न सुलझता नही मालूम होता, इसलिए अब क्या किया जाए। उनमे से एक कह रहा था, "गाव की डकैतिया अक्सर इस माने मे असफल रहती है कि उनसे ज्यादा धन नही मिलता।"

दूसरे ने कहा, "पर यही एक रास्ता है जिससे हम पुलिस की आखो से बचे रहकर कुछ धन प्राप्त कर सकते है। यदि हम सरकारी खजानो और बैंको पर डाका डालते है तो ब्रिटिश सरकार इसे एक चुनौती के रूप मे लेगी और भयकर रूप से दमनचक्र चल निकलेगा। इसलिए हमे इससे बचना चाहिए।"

जो दो व्यक्ति बेंच पर बैठे हुए लोगो के हिन्दुत्व और मुसलमानत्व के सम्बन्ध मे चिन्तित थे उनमे से एक व्यक्ति जो उनके सम्बन्ध मे बता रहा था कि ये मुसलमान नही है, बोला, "पास चलकर देखा क्यो न जाए कि ये कौन हैं? मुझे तो पक्का विश्वास है कि इन लोगो के इर्द-गिर्द हवा ही ऐसी जाती है कि मै आसानी से ताड लेता हू। अच्छा मै जाता हू, तुम यही खडे रहो।" कहकर वह 'बिछुडे हुए मिलेगे फिर मौला ने गर मिला दिया' इस गाने को बेतुकी ढग से गाता हुआ बेंच की ओर प्रकृति निरीक्षण करते हुए चल पडा। अब बेंच पर बैठे हुए दो सज्जन तो प्रकृति निरीक्षण छोडकर इसकी गतिविधि देखकर ही कुछ सावधान हो गए और उन्होने आख दौडाई, तो वह दूसरा आदमी भी दिखाई पड गया। वे एक साथ बेंच छोडकर खडे हो गए और पार्क के बाहर की ओर चलने लगे।

अपने बिछुडे हुए यार से मिलने वाले व्यक्ति ने पता नही गाने-गाने मे ही कुछ इशारा कर दिया कि वह दूसरा आदमी गायब हो गया और थोडी ही देर मे जब तक कि बेंच पर बैठने वाले आदमी पार्क के फाटक के बाहर नही हो पाए थे कि पार्क घेर लिया गया। अवश्य घेरने वालो की सख्या बहुत थोड़ी थी।

कुणाल ने अपने साथी को बिना बताए अपनी माउजर पिस्तौल निकाल ली और उसने पहली गोली तो उस गाने वाले को मारी, जिससे कि वह शायद अपने बिछुडे हुए यार से मिल गया क्योंकि उसका गाना फिर नही सुनाई पडा। उसके बाद कुणाल और उनके साथी दोनो ने मिलकर एक-एक गोली फाटक के

दोनो तरफ के दो सफेदपोश सिपाहियों को मारी और फिर वे लपककर पार्क से बाहर निकले। इसके बाद क्या हुआ कुछ ठीक पता नही। पुलिस ने गोली चलाई पर उनकी गोलिया बेकार गईं।

अगले दिन अखबार मे इसका जो वर्णन निकला, उसमे बडी अजीब बाते थी। एक अखबार ने तो यह लिखा कि उनके लिए एक मोटर खडी थी और उसमे चढकर वे गायब हो गए। दूसरे ने यह लिखा कि उन्हे किसीकी एक साइकिल खडी मिल गई और उसीमे डबल सवारी करके वे गलियो मे गायब हो गए। एक अखबार के सम्वाददाता ने प्रत्यक्ष दर्शियों का सवाद लेकर यह लिखा था कि असल मे आदमी तीन थे, और तीनो एक मोटर साइकिल मे रवाना हो गए।

सभी अखबार केवल एक बात पर सहमत थे कि ये लोग क्रान्तिकारी थे और पुलिस का एक आदमी मारा गया था। पर पुलिस विभाग की तरफ से किसी के मारे जाने का समर्थन नही हुआ था।

जब रुक्मिणी ने श्यामा के घर मे बैठकर यह खबर पढी तो वह एकदम उत्तेजित हो गई। श्यामा सामने ही बैठी हुई थी। रुक्मिणी उसे खबर दिखाती हुई बोली, "यह और कोई नही, वे ही है।"

श्यामा का भी यही मत था, पर वह ऊपरी मन से बोली, "देश भर मे ऐसी बाते हो रही है, कोई भी हो सकता है।"

पर रुक्मिणी बोली, "नही-नही, मेरा मन कह रहा है कि वे ही थे। जिन्दगी मे वे कई बार ऐसी मुठभेड मे फस चुके है। हर बार जब वे बच निकलते है, मै यही सोचती हू कि अबकी बार तो वे बच निकले, पर अगली बार क्या होगा? पता नही उन्हे इस प्रकार जिन्दगी बिताने मे क्या रस आता है।"

श्यामा बोली, "इन्ही बातो के कारण वे हम सबके पूज्य है। यद्यपि उनका कहीं चित्र नही छपा, तो भी देशवासियो के हृदय मे उनका एक भव्य चित्र है, उनका कोई प्रचार नही हुआ, फिर भी घर-घर उनका नाम है। असीम अन्धकार पुञ्ज के बीच मे क्रान्तिकारियो के वीरतापूर्ण कार्य चिनगारियो के रूप मे जलते-बुझते रहते है। इस गोली काड की खबर पढकर कितने ही लोगो को अनुप्रेरणा मिलेगी।"

सारी बातें सुनकर रुक्मिणी ने मुह बना लिया और बोली, "तुमने मेरे

साथ जो कुछ किया उसके लिए धन्यवाद है। अब मैं चली...।"

श्यामा जल्दी से उठकर रुक्मिणी से लिपटती हुई बोली, "दीदी, तुम कहा जाओगी ? यदि यह घटना उन्हीसे सम्बन्धित है; तो वे अब तक वहा से सैकडों मील दूर पर होगे।"

रुक्मिणी का चेहरा एकाएक सौम्य हो गया, जैसे उसपर किसी अज्ञात अग्निशिखा की लौ पडी हो, बोली, "पगली, मैं तो तीर्थ-यात्रा के लिए जा रही हू। जहा-जहा उनपर गोली चली या जहा उन्होने गोली चलाई, वे सब स्थान क्या मेरे लिए तीर्थस्थान नही है ?"

श्यामा ने जोश मे आकर कहा, "ऐसा तो सारे भारत के लिए है, पर तुम्हारे लिए तीर्थ स्थान का क्या अर्थ है दीदी ? सब तीर्थ तो तुम्हारे अंगूठों मे केन्द्रित है।"

रुक्मिणी ने श्यामा को बहुत जोर से चिपका लिया, बोली, "एक दिन तुम तो कुछ ऐसा कह रही थी कि मैं आधुनिक स्त्रियो के लिए कलंकस्वरूप हू। मुझसे सीता और सावित्री की महक बहुत बुरी तरह आती है, आधुनिक पत्नी पुरुष की अनुगामिनी नही बल्कि सहचरी है, इत्यादि-इत्यादि और आज तुम ऐसा कह रही हो ?"

श्यामा बोली, "दीदी, तब मैंने तुम्हे सतही तौर पर जाना था, पर अब मैं जानती हू कि तुम छायामात्र नही हो, बल्कि तुम्ही वह केन्द्र हो, जहा से कुणाल जी अनुप्रेरणा लेते हैं।"

रुक्मिणी ने जीभ काटकर इसका निषेध किया और बोली, "ऐसी बात कहकर मुझे पाप की भागिनी मत बनाओ। शादी के बाद ही जब वे छोडकर चले गए तब मैं कई सालो तक यह नही जान सकी कि वे क्या है ? जब जान पाई तभी से कस्तूरी मृग की तरह घूम रही हू, पर फर्क इतना है कि मेरी कस्तूरी मेरे पास नही है।"

श्यामा बोली, "मै जो बात कहना चाहती हू, वह ठीक से नही कह पाई। मैं यह नही मानती कि तुम सिर्फ उस व्यक्ति के पीछे हो जिसके साथ तुम्हारी भावरे पडी थी। यदि आज वे त्रिलोचन की तरह हो जाए तो क्या तब भी तुम उनके पीछे-पीछे घूमोगी ?"

इस प्रश्न के उत्तर मे रुक्मिणी ने एक बहुत ही तेज़ छुरा अपने कपडों के

अन्दर से निकालकर दिखाया। फिर अपने इस कार्य से लज्जित और भीत होकर उस छुरे को भीतर रखती हुई बोली, "ऐसा कभी नही हो सकता।"

श्यामा ने इस विषय पर और बातचीत करना उचित नही समझा, बोली, "चलो मै भी तुम्हारे साथ तीर्थ-यात्रा करने चलती हू। त्रिलोचन के मामले में मुझे यदि कुछ पाप लगा हो तो इससे कट जाएगा।"

पर रुक्मिणी बोली, "नास्तिक तीर्थ-यात्रा के लिए नही जा सकता। पहले अपना कोई भगवान् तो पैदा करो, फिर तीर्थ-यात्रा करना।"

श्यामा बोली, "सबको तुम्हारी तरह भगवान मिलेगे ही ऐसी कोई बात नही है, सभी तुम्हारी तरह सौभाग्यवती नही हुआ करती‥।"

रुक्मिणी अट्टहास-सा कर उठी, बोली, "ठीक है, पर मेरी इच्छा यही है कि उनके अगले गोलीकाड के पहले ही मै इस ससार से उठ जाऊ। मुझे अब कुछ-कुछ भय हो रहा है। पहले कभी ऐसा भय नही होता था।"

इस बातचीत के एक घण्टे के अन्दर रुक्मिणी फिर अपनी यात्रा मे निकल पडी। उसकी यह यात्रा कैसी अद्भुत थी। वह एक साधारण कुलवधू थी, जब कुछ जिज्ञासा पैदा हुई तो मालूम हुआ कि उसके पति नज़रबन्द है। वह लोगो की सहायता से उस दूर की जेल मे पति से मिलने चली, पर उधर से खबर आई कि वे कहते हैं कि उनकी कोई पत्नी नही है और वे किसीसे मिलना नही चाहते। वह समझ गई कि पति था व्रत कठोर है, इसलिए उसका व्रत कठोरतर हो गया, फिर वे छूट गए और लुका-छिपी शुरू हुई। कही पता लगता कि वे आए है, तो वह वहा जा पहुचती, पर हमेशा देर मे पहुचती, हा, वह गन्ध जो विवाह की रात्रि के वस्त्रो मे सन्दूक के अन्दर सुरक्षित थी, उसे बार-बार मिलती रही। कही उनका लिखा हुआ कोई पत्र किसीके पास मिलता तो कही वह कुर्सी मिलती, जिसपर वे बैठ चुके थे। आज भी वह उसी प्रलोभन मे चल पडी थी, शायद उस बेंच मे, जिसपर वह बैठे थे, उनकी वह गन्ध मिल जाए और नही तो उस शहर मे तो होगी ही।

२२

श्यामा ने उसी समय जाकर आनन्दकुमार से सारी बात बता दी। आनन्द-कुमार पुस्तको को पटककर उठ खडे हुए, बोले, "अरे! यह तुमने क्या कर दिया? उसे तुमने जाने क्यो दिया? पुलिस वाले कितने नीच है, यह तुम जानती हो। अब तो वे मुझपर भी सन्देह करते है। जब भी मै कही जाता हू तो मेरे पीछे एक खुफिया चलता है।"

आनन्दकुमार ने रूपवती के पास जाकर कहा, "मै अभी बाहर जा रहा हू। वह लडकी रुक्मिणी अपने पति की तलाश मे वही जा रही है जहा गोली-काण्ड हुआ है। तुम भी चलो तो अच्छा है। मैं रुक्मिणी को कुछ समझा ही सकता हू। तुम लोग होगे तो कुछ जबर्दस्ती भी कर ली जाएगी।"

रूपवती ने कहा, "आप भी पागल हो रहे है, छाया को कोई वस्तु से अलग थोडे ही कर सकता है? मुझे तो यही ताज्जुब है कि इतने दिनो तक वह श्यामा के घर पर कैसे टिकी रही। मैं जानती थी कि वह देर-सवेर छोडकर चली जाएगी। आप श्यामा को ले जाए। मै जब रुक्मिणी को देखती हू तो मुझे यही तरस आती है कि वह पूर्ण सौदर्य की देवी है, पर भिखमगिन की तरह सारी जिन्दगी भटकती रही।"

अतएव यह तय हुआ कि श्यामा और आनन्दकुमार जाएगे। उस समय उस तरफ को कोई ट्रेन नही जाती थी, इसलिए कार मे ही जाना तय हुआ।"

जब मोटर पूरी गति से दौडने लगी तब श्यामा ने उच्छ्वास के साथ कहा, "चाचाजी, मैं सोचती हू कि रुक्मिणी दीदी मे कितना आकर्षण है कि आप ऐसे आदमी जिनका घर के ही पुस्तकालय से खाने की मेज तक ले जाना टेढी खीर होता है, वह इस तरह पागल की भाति उसके पीछे जा रहा है।"

आनन्दकुमार बोले, "सच मानो श्यामा, आज मैं उसी प्रकार के जोश का अनुभव कर रहा हू जैसा मैंने उस दिन अनुभव किया था जब गाधी जी की पुकार पर मैं राजाओ और पडितो की उस सभा मे गया था। उस दिन भी तुम मेरी गाइड थी और आज भी तुम मेरी गाइड हो।"

श्यामा बोली, "मैं उस दिन भी बिचवैया थी, आज भी बिचवैया हू। आकर्षण तो वह कर रही है।"

आनन्दकुमार बोले, "नही, वह और कुणाल केवल यही नही कुणाल और रुक्मिणी के पीछे खडा भारत का सारा युवक और युवती समाज। मैं जा तो रहा हू। पर मै यह नही जानता कि मै क्यो जा रहा हू। फिर भी यह न जानना मेरे उच्छ्वास मे बाधक नही है।"

मोटर बहुत तेजी के साथ भागी जा रही थी। सडक सुनसान थी इसलिए ड्राइवर को कोई दिक्कत नही हो रही थी। जहा-तहा गाय, भैस या कोई आदमी सडक को पार करते थे, पर उसका पूर्वाभास मिल जाता था। आनन्दकुमार कभी भी अपनी गाडी को ३५ से ऊपर चलने नही देते थे, पर इस समय ड्राइवर पर भी जैसे कोई जनून सवार था, वह बिना अनुमति के साठ पर मोटर भगा रहा था।

श्यामा ने कहा, "अब मुझे पूर्ण निश्चय है कि हम लोग रेल से पहले वहा पहुच जाएगे। जब रुक्मिणी देवी प्लेटफार्म से निकलकर मुझे और आपको देखेगी तो उन्हे कितना आश्चर्य होगा।

पर आनन्दकुमार ने कहा, "श्यामा अभी से खुश न हो, वह लडकी किसी नियम पर नही चलती। उसके पास कोई ऐसा कुतुबनुमा है जो हमारे पास नही है, इसलिए हम कहा तक उसे पाने मे सफल होगे, इसमे मुझे सदेह है।"

"पर वह तो वही गई है। बता रही थी कि उसी बेंच पर थोडी देर बैठेगी जहा वे लोग बैठे थे। फिर वे उस शहर मे घूमेगी जहा की सडके कुणाल जी के चरणरज से पवित्र हुई है। हो सका तो वही खाना खाएगी जहा उन्होने खाना खाया था।" कहकर उसने एकाएक आनन्दकुमार से पूछा "चाचाजी, आप ऐसी बातो के सम्बन्ध मे क्या सोचते है?"

आनन्दकुमार ने कहा, "मै इस सम्बन्ध मे क्या सोचूगा? मुझे इस सम्बन्ध मे सोचने का हक ही क्या है? हम लोग साधारण जीव है। हमे इन देवियो और देवताओ की बातो पर रायजनी करने का कोई अधिकार नही है। हमारे लिए इतना ही बहुत है, यदि हम राह चलते इन्हे पानी पिला दे या खाना खिला दे। हमारा लाभ केवल इतना ही है कि हम थोडी देर के लिए इनका सत्सग प्राप्त कर ले।"

सडक रेल लाइन से कही सटकर और कही गावो की हरियाली का मजा लेने के लिए लाइन से दूर पसर गई थी। मोटर तीव्र गति से चलती जा रही

थी। ड्राइवर ने एक इमारत को दिखलाते हुए कहा, "वह रहा स्टेशन।"

थोडी ही देर मे मोटर स्टेशन से लगकर खडी हो गई। श्यामा और आनन्दकुमार जल्दी से उतरे। पूछने पर पता चला कि गाडी अभी नही आई है।

उसका समय भी तो अभी तक नही हुआ था। आनन्दकुमार बिल्कुल दूसरे ही व्यक्ति मालूम हो रहे थे, उनकी उमर जैसे दो घन्टे के अन्दर बीस साल घट गई थी। वे अनुभव कर रहे थे कि वे एक ऐडवेंचर कर रहे है। श्यामा और वे गाडी की प्रतीक्षा मे प्लेटफार्म पर टहलने लगे।

थोडी ही देर मे दनदनाती हुई वह ट्रेन आई। आनन्दकुमार और श्यामा अलग-अलग रुक्मिणी को खोजने लगे। पर वहा तो रुक्मिणी कही दिखाई नही पडी। यहा तक कि गाडी सीटी देकर छूट भी गई पर, रुक्मिणी का कही पता नही लगा।

ड्राइवर भी टिकट बाबू की बगल मे खड़े होकर सब उतरने वालो को ध्यान से देख रहा था, पर उसे भी रुक्मिणी दिखाई नही पडी। वह दो-चार दफे रुक्मिणी को श्यामा के घर पहुचा आया था, इसलिए वह उसे बहुत अच्छी तरह पहचानता था। फिर रुक्मिणी का चेहरा लाखो मे एक था, इसलिए उसे देखकर कोई भूल जाए ऐसी बात सम्भव नही थी।

जब ट्रेन दूर सिगनल पार कर गई तब श्यामा और आनन्दकुमार एक दूसरे से मिले, दोनो की दृष्टि मे एक प्रश्न के साथ-साथ आतक था। इसके माने यह हुए कि रुक्मिणी पर कोई विपत्ति आई, तो क्या वह गिरफ्तार कर ली गई? नही तो वह यही के लिए चली थी, फिर क्या हुआ? इसमे कोई रहस्य जरूर था। श्यामा का अपना तजरबा था कि किस प्रकार से असहयोग के जमाने मे पुलिस कप्तान जानसन ने उसे अपने घर मे ले जाकर कैद कर रखा था।

दोनो मे आखो-आखो मे इन सारी भयकर सम्भावनाओं की बाते हो गईं। ड्राइवर से पूछा तो उसने भी वही कहा, जिसका भय था, "वह तो नही उतरी।"

एक बार श्यामा को यह ख्याल आया कि कही ऐसा तो नही कि वह थकी-मादी थी, सो गई हो और ट्रेन निकल गई हो। इसी प्रकार की बाते सोचते-सोचते तीनो मोटर की ओर चले।

वहा उन लोगो ने देखा कि एक लगभग परिचित व्यक्ति मोटर के पीछे वाले काच से उसमे झाक रहा है और उन लोगो को आते हुए देखकर वह दुबक-सा गया, पर वह रहा मोटर के ही पीछे। श्यामा को कुछ दिलचस्पी की बात मिल गई, उसने ड्राइवर को इशारा कर दिया। श्यामा एक तरफ हो गई और ड्राइवर दूसरी तरफ से। इस प्रकार वह आदमी घिर गया।

श्यामा ने उसे पहचानते हुए कहा, "अरे मुन्शी जी ! आप इधर कहा से आए ?"

मुन्शी जी नाम से सम्बोधित व्यक्ति कुछ लजाकर बोला, "ऐसे ही इधर सैर करने आ गया था, एक रिश्तेदारी भी पडती है।"

सब लोग समझ गए कि सम्भव है इसका सम्बन्ध रुक्मिणी के गायब हो जाने से हो। और रिश्तेदारी वाली बात महज झूठी है। श्यामा ने कहा, "आप कुछ घबडाए हुए मालूम होते है। बात क्या है ? यहा कोई नही है, सच-सच बताइए रुक्मिणी दीदी का क्या हुआ ?"

उस आदमी के चेहरे पर कई रग आए और गए, स्पष्ट ही वह कोई फैसला नही कर पा रहा था कि क्या कहे और क्या न कहे। बोला, "रुक्मिणी कौन ?"

श्यामा बोली, "वाह मुन्शी जी, आप सब कुछ जानकर बुद्धू बन रहे है। मोटर के अन्दर क्यो झाक रहे थे ? असली बात बताइए।"

उस व्यक्ति ने चारो तरफ अच्छी तरह देख लिया फिर बोला, "आप लोग शायद उन्हीको लेने के लिए आए थे ?"

"हा, पर वह तो रेल से उतरी नही, क्या हुआ ?"

वह आदमी फिर भी हिचकिचाता रहा, फिर बोला, "क्या बताऊ, बडी आफत हो गई।"

आनन्दकुमार ने आगे बढकर कहा, "क्या बात हो गई, उस लडकी पर कोई विपत्ति तो नही आई ?"

वह आदमी रुआसा होकर बोला, "बड़ी भारी आफत आ गई। मै तो कही का न रहूगा।"

श्यामा नाराज होती हुई बोली, "आप कुछ बताते तो है नही, फजूल की बाते कर रहे हैं, असली बात क्यो नही बताते ?"

मुशी ने कहा, "मुझे कुछ पता नही, क्या हो गया। कुछ समझ मे नही आता।"

श्यामा और भी तेज होकर बोली, "काहे का क्या हो गया ? कुछ कहिए तो सही।"

तब मुशी फिर से रुआसा हो गया और बोला, "मेरी यहा कोई रिश्तेदारी नही है। मुझे इस ट्रेन मे भेजा गया था कि मै उस मुसम्मात के पीछे-पीछे आऊ, उसने टिकट यही का लिया था, मुझपर यह जिम्मेदारी थी कि मै उसे स्टेशन के खुफिया के सिपुर्द कर अगली गाडी से वापस चला जाऊ। अब उसको तो पता नही क्या हुआ, वह तो यहा उतरी नही। मै अब किसे खुफिया के सिपुर्द करूं ? खुफियावाले मुझे खोज रहे है इसीलिए मैं भागा-भागा फिर रहा हू। सामने हुजूर की मोटर दिखाई पड़ी तो मैने सोचा शायद इसमे वह बैठी हो, पर यहा तो कोई नही है।"

श्यामा को मुशी पर बडी दया आई, पर साथ ही उसे रुक्मिणी का रहस्य और गहरा होता हुआ दिखाई पडा। वह रुक्मिणी के लिए चिन्तित हो गई, फिर भी वह मुशी से एक सरल दिल्लगी करने का लोभ सवरण नही कर सकी, बोली, "मुशी जी, आप अपने देश के आदमी है। वहा चाहे हमारा रिश्ता कुछ भी हो, पर इस परदेश मे आपकी मदद करना मेरा फर्ज है। आप ऐसा क्यो नही करते कि उस खुफिए को लाकर रुक्मिणी की जगह मुझे दिखा देवे। लोग न तो उसे पहचानते है न मुझे, आपकी भी जान बचेगी और मैं तो यह चली।"

मुशी जी को यह बात सोलहो आने जच गई, यद्यपि इस सुझाव को मानने मे कई खतरे थे, पर इस समय तो जान बचती थी। फिर मुशी जी ने सोचा कि ये लोग तो अभी मोटर से हवा हो जाएगे, इस स्टेशन के खुफिया की क्या मजाल कि उसका पीछा करे। बनारस में फिर भी पुलिस के पास एक-दो टूटी मोटरे है, पर यहा तो सवारी के नाम पर बैलगाडी ही है। वह फौरन दौड़ा-दौडा गया और उसने अपने खोजने वाले को बुलाकर श्यामा को दिखला दिया।

आनन्दकुमार ने श्यामा के इस बचपने को विशेष पसन्द नही किया, पर वे चुप रहे। फौरन मोटर चल निकली और श्यामा ने देखा कि वह खुफिया कुछ देर तक गाडी के पीछे भी दौडता रहा पर शीघ्र ही वह पीछे रह गया और

मोटर बनारस की ओर भागने लगी। जब मोटर कुछ दूर चली गई तो आनन्दकुमार ने श्यामा से कहा, "मुझे तो रुक्मिणी के बारे मे बडी शंका हो रही है, शायद अब तक पुलिस वालो ने पता पा लिया हो कि रुक्मिणी कुणाल की धर्मपत्नी है, इसलिए उसपर कुछ ज्यादती करे। बनारस मे वह हम लोगो के साथ थी इसलिए पुलिस की यह हिम्मत नही थी कि वह उसे चुरा ले या उडा ले, पर इन बीच के स्टेशनो मे क्या हो रहा है, इसे कौन जानता है ? सम्भव है उसे रेल से उतारकर कही ले गए हो।"

"पर चाचाजी, वह तो क्रान्तिकारिणी नही है, उसपर ज्यादती करने से ब्रिटिश सरकार के हाथ क्या लगेगा। इसके अलावा क्या यह कानून के विरुद्ध नही है ?"

आनन्दकुमार बोले, "अवश्य ही यह कानून के विरुद्ध है, पर इस बात को कौन देखता है ? जिसके हाथ मे सेनाए और तोपखाने है, वह कानून तोडे तो कौन क्या कर सकता है ?"

श्यामा कुछ देर चुप रही, फिर बोली, "चाचाजी, अब क्या होना चाहिए ? कुछ होना तो चाहिए। हम ऐसे चुपचाप तो घर नही लौट सकते।"

यह तय हुआ कि रास्ते मे जो भी स्टेशन पडे, उनपर उतरकर अच्छी तरह जाच की जाए कि इस तरह की कोई स्त्री उतरी है या नही, और उसे पुलिस ने पकडा है या नही। आनन्दकुमार और श्यामा को पूरा विश्वास था कि रुक्मिणी जहा भी उतरेगी वहा दस लोग उसे जरूर देखेगे।

२३

रुक्मिणी रेल मे बैठे-बैठे ऊंघ रही थी। अभी कई स्टेशन तय करना था और समय काटने के लिए ऊघना ही सबसे अच्छा उपाय था। इस प्रकार ऊघने मे नीद तो आती नही, इसलिए दिमाग पर पुरानी बातो का बोलबाला रहता है। वह जहां पैदा हुई थी, वह स्थान तथा माता-पिता की याद कभी-कभी आती थी, पर ऐसा मालूम होता था कि ये सारी बाते किसी पूर्वजन्म मे हुई

हैं। यहा तक कि एक घटना उसके मन के घोर अन्धकार मे एक रजत रेखा की तरह कौध जाती थी, यानी विवाह की घटना की स्मृति जो बहुत धुधली हो चुकी थी, और इधर की घटनाए तो बिल्कुल स्वप्न मे विचरण की तरह थी।

पिछले जीवन की बाते सोचते-सोचते वह शायद ऊघने की सीमा रेखा को पारकर निद्रा के क्षेत्र मे पहुच गई थी कि इतने मे वह चौककर जग पड़ी। नही, यह वही गध थी। उसने आख मलकर चारो तरफ देखा तो मालूम हुआ कि गाडी किसी स्टेशन पर खडी है। पर पास या दूर मे कही भी उनका चिह्न नही दिखाई पडा। एक क्षण तक वह हतबुद्धि रही, जैसे सोच रही हो कि क्या करे, फिर वह अपनी तीर्थयात्रा वाली पोटली लेकर उतर पडी। हा, यहा तो सर्वत्र वह गन्ध थी। वह पागल की तरह इधर-उधर देखती रही कि वे देखने को मिल जाए। वह इस बार कुणाल से सीधे-सीधे बात करने के लिए कटिबद्ध थी। उनका व्रत टूटे तो टूट जाए, उनका व्रत उसका व्रत तो नही है। सच तो यह है कि दोनो के व्रतो मे कही पर सूक्ष्म-सा विरोध भी है यानी यदि उनका व्रत पूरा होता है तो उसका व्रत पूरा नही होता, और एक ही का व्रत पूरा हो सकता है। फिर उस दिन मणिकर्णिका घाट पर जब वह बीच मे कूद पडी थी, तो उनका व्रत टूट ही गया था। उनका व्रत तो यह था कि वह न बोलेगे न स्पर्श करेंगे, पर स्पर्श तो हो ही गया था।

केवल यही बात नही, स्पर्श केवल शारीरिक नही मानसिक भी था। उस दिन उसने अपने त्याग के द्वारा उनका मन छू लिया था, तभी न उन्होंने जाकर अविनाश से सारी बाते कही थी और अविनाश श्यामा और आनन्दकुमार को लेकर उसके उद्धार के लिए पहुच गया था। क्या यह केवल शुष्क निस्पृह कर्तव्य पालन मात्र था या कर्तव्य सम्पादन के साथ-साथ कही पर प्रेम का एक स्फुलिंग भी था ?

एक तरफ तो वह ऐसा सोचती थी और अपने को सात्वना दे लेती थी, पर दूसरी तरफ वह यह सोचकर निराश होती थी कि उनके सामने एक बहुत बड़ा आदर्श है, उस विराट आदर्श के सामने उसकी क्या बिसात ? यदि राह चलते-चलते एक क्षण के लिए उनका मन पसीज भी गया होगा, तो अगले ही क्षण आदर्श की उत्तप्त किरणो से वह आर्द्रता जाती रही होगी।

रुक्मिणी गन्ध का अनुसरण करती हुई स्टेशन से बाहर निकल पडी। गंध

बिल्कुल ताजी थी। उसे आश्चर्य हुआ कि इस निर्जन स्थान पर वे क्यो आए होगे ? पर इन क्रान्तिकारियो के लिए कुछ भी असम्भव नही है। शायद वे इसी-लिए यहा आए होगे कि यह स्थान निर्जन है। एकान्त होने के कारण यहा पुलिस का उपद्रव भी कम होगा और साथ ही काशी केन्द्र के पास भी है।

यही सब सोचती हुई वह सड़क पर चल निकली। न तो उसे यह मालूम था कि यह सडक कहा को जाती है और न उसके सामने अपना गन्तव्यस्थल ही स्पष्ट था, फिर भी वह गन्ध का अनुसरण करती हुई या यों कह लीजिए अपनी नियति का अनुसरण करती हुई आगे चलती गई।

अभी वह थोडी ही दूर गई थी कि एक व्यक्ति ने उससे पूछा, "आप किस गाव को जाएगी ?"

रुक्मिणी को कुछ मालूम नही था, बोली, "मैने सुना है, इधर कोई प्रसिद्ध मन्दिर है, मै उसीमे जाना चाहती हू।"

उस आदमी ने कहा, "आपको किसीने गलत बता दिया। यहां कोई प्रसिद्ध मन्दिर नही है। यो तो हर गाव मे एक न एक मन्दिर मिल ही जाएगा। आप काशी क्यो नही जाती ? वहा अच्छे से अच्छे मन्दिर है।"

रुक्मिणी बोली, "भाई, उधर मन्दिर तो है, वे अच्छे भी है, पर उनमे प्राण नही है। उनमे तो पत्थर है, देवता का पता नही है। मै पत्थर के पीछे नही देवता की तलाश मे घूम रही हू। मेरी आत्मा कह रही है कि इधर कोई जाग्रत देवता है। अच्छा भाई, तुमने अभी किसी दुबले-पतले, लम्बे आदमी को जाते नही देखा है ? उनकी आखे बराबर जलती रहती है। दाहिनी ठुड्डी पर एक बड़ा-सा तिल है।"

वह आदमी बोला, "नही तो, मैनें तो किसीको नही देखा। मै ठहरा साधारण आदमी, मुझे भला देवता क्यो दर्शन देने लगे ? आपने तो उनका दर्शन किया होगा ?"

"हा-हा, किया है, पर वे फौरन ही आख से ओझल हो जाते है। पता नही कभी वे मिलेंगे या नही।"

कहकर रुक्मिणी आगे बढ गई। क्योंकि उसे तो कोई शक्ति जोर से खीच रही थी। उस व्यक्ति ने भक्तिभाव से उसे प्रणाम किया और बोला, "हमे तो देवता का दर्शन कहा हो सकता है। हम लोग तो आपके ही दर्शन कर लेते हैं;

जो उसका दर्शन करते है।"

रुक्मिणी प्रति नमस्कार करके आगे बढ गई और वह भारत के इन सरल ग्रामीणो के विषय मे सोचने मे तल्लीन हो गई। ये लोग कितने भोले-भाले और सरल है। पर साथ ही किस बुरी तरह अज्ञान मे डूबे हुए हैं। ईश्वर ने भाग्य मे यही लिखा है, यही कर्म का फल है, इत्यादि विचार रखकर वे हजारों वर्ष से अत्यन्त भयकर अन्याय सहते आए है। यह एक अजीब बात है कि इस्लाम ने अपने अनुयायियो को कर्म शक्ति दी, पर भारत के धर्मो ने केवल मुह पर ताले जडकर सब कुछ सहने के लिए प्रेरित किया है। पर नही, यह आलोचना ठीक नही, अब इस्लाम के आनुयायी भी तो एक हजार वर्ष तक कूद-काद कर ठडे पड गए है और आज दुनिया मे इस्लाम के अनुयायी ही सबसे पिछड़े हुए हैं। भारत के प्राचीन धर्म ने तो लोगो को कई हजार वर्षों तक सक्रिय रखा।

श्यामा से रुक्मिणी ने सुना था कि कुणाल बताते हैं कि भारत की प्रगति के मार्ग मे धर्म के द्वारा दृढीकृत भाग्यवाद यानी धर्म सिद्धान्त बाधक हो रहा है। ठीक ही है।

रुक्मिणी स्टेशन से लगभग दो मील आ चुकी थी, अब यह सडक दो शाखाओ मे विभाजित हो गई थी। पर रुक्मिणी को इससे कोई कुठा नही हुई। वह सैकडो बार तय किए हुए मार्ग पर चलने वाले नाविक की तरह दोनो मे से एक सडक पर चल पडी। उसका कुतुबनुमा उसे रास्ते का इतना सही दिग्दर्शन करा रहा था कि उसने इस विषय पर एक बार भी नही सोचा। उस सडक पर थोडी दूर चलने के बाद उसे एक गाव का बाहरी हिस्सा तथा एक मदिर की चूडा दिखाई पडी। यद्यपि रुक्मिणी न मालूम गत कितने वर्षों से इसी प्रकार यात्रा करती आ रही थी, पर उसके लिए भी इस प्रकार गांव मे जाना एक नई बात थी। वह जानती थी किं गाव के लोग शहर वालो की तुलना मे अधिक विवेकयुक्त होते है, फिर भी उसके मन मे कुछ झिझक थी। यदि वह गंध उसे इस बुरी तरह निमत्रण न देती, तो इसमे सदेह नही कि वह इधर कभी नही आती।

वह चलकर उस गाव मे पहुची। पहले वह सोचती रही कि इस गाव से आगे बढ़े या न बढे, पर जब उसने पानी पीने के लिए मदिर के कुए के पास

अपनी पोटली रख दी तो उसे मालूम हुआ कि वह इतनी थकी हुई है कि वह आगे नही जा सकती। थकावट का कोई कारण तो नही था, दो-चार मील चलना उसके लिए कोई बडी बात नही थी, फिर भी वह बुरी तरह थक गई थी। वह आगे न जाने का निश्चय कर वही पर रुक गई।

एक तीर्थयात्री की तरह उसने पकाने का सब सामान निकाल लिया। गाव के कुछ लोग उसे देखकर जमा हो गए और तरह-तरह के प्रश्न करने लगे। मदिर का नाम इसने पहले ही पूछ लिया था। वह सबसे यही कहती गई कि उसे स्वप्नादेश हुआ है, वह इसीलिए आई है।

धर्मो मे एक भलाई कह लीजिए या बुराई कह लीजिए, यह है कि उनके नाम पर और उनकी भाषा मे चाहे जो भी बात कही जाए, चाहे वह बात कितनी ही उद्भट और असम्भव हो, लोग उसे फौरन प्रमाणित और प्रामाणिक मान लेते हैं। कितने ही ठग इसकी बदौलत पल रहे है। जब रुक्मिणी ने स्वप्नादेश का नाम लिया तो लोगो ने एकदम से मान लिया, बल्कि उन्हे कुछ गौरव का बोध हुआ कि यह सुन्दरी महिला इतनी दूर से आई है। लोग उसे हर प्रकार की सहायता देने के लिए दौड पडे, पर उसने कोई विशेष सहायता नही ली।

लोगो ने स्वाभाविक रूप से यह भी पूछा कि तुम्हारे पति कहा है?

रुक्मिणी बोली, "मेरे पति तो मेरे अदर है।"

इस प्रकार वह फालतू प्रश्नो से बची। खाते-पीते सध्या हो गई। उसके बाद वह पुजारी से पूछकर मदिर के ही एक किनारे लेट गई।

शायद रात अधिक हो गई थी। चारो तरफ सन्नाटा था। बीच-बीच मे उस सन्नाटे को भग करता हुआ कोई उल्लू जातीय पक्षी बोल देता था, जिससे एक बार ग्रामलक्ष्मी सिहर उठती थीं, एकाध कुत्ता भूंकने लगता था, पर वह भी दो-चार बार बोलकर चुप रह जाता था। झींगुर बोल रहे थे, पर उनका बोलना इस सन्नाटे की फैली हुई चादर मे दरारे पैदा करने की बजाय पृष्ठ-सगीत के रूप मे उसके असर को और तीव्र कर रहा था।

किसी ने धीरे-से रुक्मिणी पर हाथ रखा। कम से कम रुक्मिणी को ऐसा ही मालूम हुआ। वह हडबडाकर उठ बैठी और सहजात बुद्धि से उसका हाथ अपने छुरे की तरफ गया, जिसे वह हमेशा साथ रखती थी। पर वायुमण्डल मे

वही गध तिर रही थी, जो उसे बिल्कुल विचलित कर देती थी, खडी होकर बोली, "कौन ?"

उधर से आवाज़ आई, "कोई डरने की बात नही है। मै कुणाल जी के आदेश से आया हू, आपसे कुछ कहना है।"

आवाज किसी पच्चास-छब्बीस साल के युवक की थी। रुक्मिणी बोली, "तुम कौन हो, सामने क्यो नही आते ?"

"सामने आने की ज़रूरत नही। मुझे तो एक सदेश देना है।"

रुक्मिणी के हृदय की गति बहुत द्रुत हो गई थी, तो क्या वह चिरप्रतीक्षित घडी आ गई ? पर नही, यदि उनको आना ही होता तो यह प्रतिनिधि का माध्यम क्यो होता ? फिर भी वे पास ही कही थे, इसमे सदेह नही। बोली, "यदि मै तुमको उनका प्रतिनिधि न मानू तो ? कोई भी आकर तुम्हारी तरह कुछ भी कह सकता है।"

युवक हिचकिचाया, फिर बोला, "आप जानती है कि वे यही मौजूद है ?"

"फिर वे दर्शन क्यो नही देते ? क्या वे मुझे इतनी तुच्छ समझते है कि बात भी नही कर सकते ? वे मुझे और कोई अधिकार न दे, पर एक नागरिक के अधिकार से कैसे वचित कर सकते है ? यदि वे मुझसे कोई नाता ही नही मानते तो फिर संदेश क्यो भेजते है ?"

युवक कुछ झिझका। शायद युवक की समझ मे भी इन प्रश्नो का कोई उचित उत्तर नही था। पर किसी ने जैसे उससे कहलवाया हो, "मैं जो सदेश दे रहा हू उसीसे आपको मालूम हो जाएगा कि सदेश प्रामाणिक है, आपको कोई सदेह नही रहेगा।"

हवा मे कोई ऐसी बात थी कि रुक्मिणी की बुद्धि वृत्ति को जैसे थपकिया देकर सुलाने लगी, वह एकाएक नम्र होकर बोली, "वह सदेश क्या है ?"

सन्देश बहुत ही स्पष्ट और दृढ कठ से कहा गया "आप जिस प्रकार से उनका अनुसरण कर रही है; उससे उनके लिए खतरा बढ जाता है। ऐसा हो सकता है कि आपको खोजते-खोजते पुलिस उनका सुराख पा जाए। आप समझ गई होगी कि यह खेल बहुत ही खतरनाक है।"

कही हुई बात रुक्मिणी को सोलहो आने जच गई, पर इसे मानने का अर्थ यह था कि अब तक गत कितने वर्षो से अपने जीवन का जो लक्ष्य बना

रखा था, उससे अपने को बलपूर्वक अलग कर लेना यानी कटी हुई पतग की तरह अपने को शून्य मे भटकने के लिए छोड देना। पतग फिर भी हवा पर आश्रित रहती है, पर यहा तो बिल्कुल ही कोई आश्रय नही रहेगा।

रुक्मिणी बोली, "आदेश बहुत कठोर है।"

युवक ने कहा, "क्योकि परिस्थिति गम्भीर है। आप यह तो नही चाहती कि आपके कारण वे पकडे जाए। यह तो आपको मालूम ही होगा कि पकडे जाने पर उनका क्या होगा ?"

कहने को कुछ नही था, इसलिए रुक्मिणी बिछा हुआ कपडा बटोरने लगी। युवक सामने आकर बोला, "माता जी, मुझे यह आदेश है कि मैं आपको स्टेशन तक पहुचा दू। लाइए सामान मुझे दीजिए।"

गन्ध जैसे घटने लगी। अब वह तीव्रता नही रही। रुक्मिणी एकाएक छोटी बच्ची की तरह मचलकर युवक से बोली, "अब तो मै जा रही हू। ऐसी बात कह दी गई कि अब मै कभी पीछा नही कर सकती? जाने के पहले मै एक बार उन्हे प्रणाम नही कर सकती ?"

वह गन्ध फिर तीव्र मालूम पडी। युवक सक्षिप्त रूप से बोला, "आदेश नही है।"

रुक्मिणी बोली, "तो मैं भी यही अनशन से प्राण दे दूगी।"

युवक कुछ नही बोल सका। वकील तो तभी वकालत कर सकता है, जब कि उसे मालूम हो कि मुकद्दमे मे कुछ दम है, पर जब खुद ही समझता है कि सारी बाते गलत है और अनावश्यक निष्ठुरता बरती जा रही है, तो वह क्या कह सकता है। युवक कुछ नही बोला। वह जानता था कि कुणाल सारी बात-चीत सुन रहे है। जब रुक्मिणी हिली नही, तो उधर कुछ हिला, फिर धीरे-धीरे एक दुबली-पतली नर-मूर्ति सामने आकर खड़ी हो गई। युवक बोला, "माता जी, वे आ गए।"

रुक्मिणी को यह घटना इतनी अप्रत्याशित मालूम हुई कि थोडी देर तक तो वह अपनी आखो पर विश्वास ही नही कर सकी, टूटा हुआ हिमपर्वत जैसे समतल की ओर दौडता है, उसी तरह दौडी और जगदीश उर्फ कुणाल के चरणो मे लिपट गई। कुणाल फिर भी एक बुत की तरह अकडे हुए खडे रहे। रुक्मिणी आवेश मे आकर जाने क्या-क्या कह गई, बोली, "तुम महासागर हो

और मै एक ऐसी छोटी-सी नदी हू जो किसी नदी मे ही खत्म हो जाती है, फिर भी मुझमे मिलन की व्याकुलता किसी महानदी से कम नही है। तुमने अपने सामने बहुत बडे-बडे लक्ष्य रखे है, पर मेरा तो छोटा-सा लक्ष्य है, वह है तुम्हारे चरणो मे आश्रय पाना। अब तुम स्वय आदेश देकर मुझे दूर भेज रहे हो, आगे मैं कैसे जीऊंगी, यह भी तो कुछ बता दो।"

पर वह मूर्ति कुछ भी नही बोली शायद और भी कडी पड गई। पता नही रुक्मिणी कितनी देर तक उनके चरणो मे लिपटी रही, पर एक समय रुक्मिणी को पता लग गया कि अब उसे नही रुकना चाहिए। अपने आसुओ से चरणों को सिक्त कर वह अलग हो गई, पर अलग होते समय यह क्या मालूम हुआ। ऐसा लगा जैसे उसके कधे पर तप्त जल की दो बूदे गिरी हो। वह मूर्ति तत्काल ही अन्तर्हित हो गई। और युवक पोटली उठाकर बोला, "मा! चलो! ..."

२४

आनन्दकुमार और श्यामा सारे स्टेशनो को देखकर जब बनारस नगर-पालिका के क्षेत्र के अन्दर दाखिल होने लगे तो चुंगी के पास उनकी मोटर रोक ली गई। उन्हे इसपर बडा आश्चर्य हुआ कि बात क्या है। सामने ही जानसन दिखाई पडा, इससे स्पष्ट हो गया कि कोई गम्भीर मामला है। उन्हे पता था कि जानसन इन दिनो स्पेशल ब्राच का डी० आई० जी० है। आनन्दकुमार ने जानसन से बात करनी चाही, पर वह सीधा कार की तरफ लपका और उसने कार के दरवाजे खोलकर उसे अच्छी तरह देखा, पर वहा तो कोई था ही नही।

जानसन ने पता नही कोई इशारा कर दिया या क्या हुआ कुछ सिपाहियो ने आकर आनन्दकुमार और श्यामा को घेर लिया। जानसन बोला, "मुझे दु ख है कि आपको 'हिज़ मैजेस्टी दी इम्परर' के नाम पर गिरफ्तार करना पड रहा है।"

आनन्दकुमार ने कहा, "क्या मैं जान सकता हू कि हम लोग क्यो गिरफ्तार किए जा रहे है ?"

जानसन आनन्दकुमार और श्यामा को उन्हीकी कार मे बैठने के लिए कहते हुए बोला, "आपको सब मालूम हो जाएगा। आपपर कई तरह के अभि-योग है, आपने फरार को आश्रय दिया और उसे मदद दे रहे है। आपने षड्यन्त्र कर, पुलिस की आखो मे धूल झोककर उस लडकी रुक्मिणी को उसके पति के पास पहुचा दिया।"

इसपर आनन्दकुमार ने सारी बाते बता दी। (हा, एक बात नही बताई कि रुक्मिणी क्यो उधर की यात्रा कर रही थी।) पर जानसन बोला, "माफ कीजिएगा, मैं आपका विश्वास नही करता। मेरे पास प्रमाण है कि आप स्टेशन से रुक्मिणी को गाडी पर बैठाने गए।"

आनन्दकुमार ने कहा, "नही-नही, वह रुक्मिणी नही थी, वह श्यामा थी।"

"यही तो आप लोगो की चालाकी है। श्यामा को कही बीच मे छोडकर गए थे, उधर से रुक्मिणी को ले आए, बीच मे रुक्मिणी को छोडकर फिर श्यामा को साथ कर लिया।"

श्यामा इसपर मन ही मन बहुत हसी कि यह सारा तमाशा मुशी को जो सलाह दी थी, उसीके कारण हो रहा था। पर वह कुछ बोली नही। आनन्द-कुमार बोले, "यह सारी बाते कपोल-कल्पना है।"

जानसन बोला, "जी हा, कपोल-कल्पना है। जगदीश ने एक आदमी को जान से मार डाला, शायद इसीके इनाम मे आप उसके पास उसकी बीवी पहुचा आए हैं। पुरस्कार अच्छा रहा।"

श्यामा बिगड गई। बोली, "आप मुह सम्भालकर बात कीजिए। रुक्मिणी दीदी का क्रातिकारियो से कोई सम्बन्ध नही है।"

जानसन हसकर बोला, "और न मिस्टर आनन्दकुमार और आपसे कोई सम्बन्ध है। अब कृपया गाडी मे बैठ जाइए।"

पर आनन्दकुमार और श्यामा ने वारट देखने की ज़िद की। इतने मे उधर से दो-तीन मोटरे और भी आ गईं, जिसमे रूपवती, रायबहादुर वशीधर और उनकी पत्नी रमादेवी तथा स्थानीय पत्रो के प्रतिनिधि आ गए। जानसन ने

जल्दी करनी चाही पर इन लोगो ने जब इन सबको देखा तो और भी देर कर दी ।

फिर भी थोडी देर के बाद आनन्दकुमार और श्यामा जानसन के साथ मोटर पर सवार हो गए और पीछे-पीछे दूसरी मोटरे भी चली । शहर के अन्दर जाते ही देखा गया कि एक बडी भीड जमा है, जिसने आनन्दकुमार और श्यामा की जय के नारे बुलन्द करने शुरू कर दिए थे ।

अगले दिन प्रातःकाल के अखबारो मे आनन्दकुमार और श्यामा की खबर काफी नमक-मिर्च के साथ निकाली गई थी । मजे की बात यह है कि अखबार वालो ने एक तरफ तो यह लिखा था कि आनन्दकुमार और श्यामा को बिना यथेष्ट कारण के गिरफ्तार किया गया है, पर साथ ही वे बाते लिखी थी कि जिससे यह साबित होता था कि इन लोगो ने षड्यन्त्र करके पुलिस की आखों मे धूल झोककर एक असामान्य सुन्दरी रुक्मिणी को बीच ही मे गायब कर दिया था ।

पर आज के अखबार मे सबसे अधिक आश्चर्य लोगो को यह पढकर हुआ कि रायबहादुर वशीधर ने कौसिल के उम्मीदवारो मे से अपना नाम वापस ले लिया था । उन्होने ऐसा करते हुए एक बयान दिया था जिसमे न केवल आनन्दकुमार का समर्थन करने के लिए जनता से कहा गया था बल्कि यह भी कहा गया था—घटनाए इस तीव्र गति से चल रही है कि ऐसा मालूम होता है कि अब लिबरल पार्टी की राजनीति के लिए कोई स्थान नही है । सरकार मे न्याय का उपादान कम हो गया है और चित्तरजनदास तथा मोतीलाल नेहरू की राजनीति ही सही राजनीति मालूम होती है ।"

यद्यपि राजेन्द्र स्वराज्य दल का था और उसकी तरफ से कौंसिल के लिए उम्मीदवार भी था, पर उसे रायबहादुर वशीधर के इस प्रकार अपना नाम वापस ले लेने से सोलहो आने खुशी नही हुई । उसे मालूम हुआ कि रायबहादुर के इस कृत्य से वह आनन्दकुमार की तुलना मे रातोरात एक बौना हो गया । वह कार्य-कारण तो समझ गया, पर आनन्दकुमार का प्रण इस अप्रत्याशित रूप से पूरा हो जाने से वह स्तम्भित रह गया क्योकि उसने इसमे भविष्य के लिए एक ऐसा इगित देखा जो बहुत सुखकर नही था । आनन्दकुमार की वह बहिन या क्या लगती है, उसकी बात तो सही हो गई । केवल यही नही प्रत्यक्ष

रूप से उसीके कारण सही हुई। न वह जाती न बाद की घटनाए होती।

राजेन्द्र जल्दी से तैयार होकर जेल की तरफ चला और उसने आनन्दकुमार से भेट करनी चाही। थोडी देर मे उसे अनुमति मिल गई, पर जेलर साहब साथ-साथ बैठे।

राजेन्द्र ने आनन्दकुमार से सबसे पहले बधाई देते हुए कहा, "रायबहादुर ने नाम वापस कर लिया। अब तो आप बिना विरोध के चुने हुए घोषित किए जाएगे।"

आनन्दकुमार ने इसपर कोई विशेष खुशी प्रकट नही की, बोले, "रुक्मिणी ने पहले ही बता दिया था कि ऐसा होगा, नही तो मैं उसी समय नाम वापस कर लेता।"

राजेन्द्र बहुत गम्भीर बाते करने के लिए आया था। इसलिए वह नही चाहता था कि इसमे कोई दूसरी बात उठाई जाए। क्षुब्ध होता हुआ बोला, रुक्मिणी कौन, वही जो उस दिन बीच मे पडकर लम्बी-चौडी बातें कर रही थी?"

आनन्दकुमार ने बिल्कुल शात भाव से कहा, "हा, क्रान्तिकारी कुणाल की पत्नी।"

राजेन्द्र बोला, "तो वह कुणाल की पत्नी थी? इसके माने यह हुए कि पुलिसवालो ने जो कहानी प्रेस को दी है, उसमे सचाई है।"

आनन्दकुमार ने कहा, "मुझे नही मालूम पुलिसवालो ने कौन-सी कहानी प्रेस के सामने प्रस्तुत की है, पर मैं इतना बता सकता हू कि श्यामा का और मेरा इसमे केवल इतना ही हाथ है कि हम लोग रुक्मिणी को खोजने गए थे।"

राजेन्द्र ने इसके विरुद्ध कुछ कहना उचित नही समझा, पर उसने आनन्दकुमार की बात का विश्वास नही किया, बोला, "आप ऐसे प्रतिष्ठित व्यक्ति का नाम इस मामले से जुड जाना न तो आपके लिए अच्छा है और न ही हमारे दल के लिए अच्छा है। इससे लोगो के विचारो मे स्पष्टता नही आ पाती।"

आनन्दकुमार हसे, बोले, "जीवन अखण्ड और अविभाज्य है। आगे बढने वाली जो शक्तिया है, वे भी इसी तरह अविभाज्य है। मैं स्वय तो जैसा हू उसे तुम जानते ही हो, पर गत कई दिनो में जो घटनाए हुई है, उनसे मेरी दृष्टि और विस्तृत हो गई है। राष्ट्रीय आन्दोलन मे महात्मा गाधी के साथ-साथ

त्यागमूर्ति मोतीलाल और चित्तरजनदास और दूसरी तरफ जीवित शहीद कुणाल ऐसे लोगो का स्थान है, पर इससे यह न समझो कि मैं अपना स्थान भूल रहा हू। फिर भी दृष्टि जब इस प्रकार विस्तृत हो जाती है तो फिर उसमें छुआछूत की गुंजाइश नही रहती।"

राजेन्द्र बोला, "आपने बहुत ऊची बात कही, पर जनता को तो सरल सत्य चाहिए, जिससे ज्यादा सोचना न पडे।"

आनन्दकुमार बोले, "मैं इस सम्बन्ध मे तुमसे मतभेद रखता हू। तुम जनता को एक 'स्ट्रेट जैकेट' मे रखकर उसपर एक लेबल चिपका देना चाहते हो। उसके विपरीत मैं यह चाहता हू कि जनता अपने लिए सोचे।"

इसी प्रकार राजेन्द्र और आनन्दकुमार मे बाते होने लगी, तब जेलर ने घडी की ओर देखा। आनन्दकुमार समझ गए, बोले, "जाने दो, तुम किसलिए आए हो यह बताओ।"

राजेन्द्र ने कहा, "मैं आपको छुडाने के लिए कुछ करना चाहता हू। आप तो चुनाव जीत ही गए। आपका उपयोग इस दल के अन्य चुनावो के लिए करना चाहते है।"

इसपर आनन्दकुमार ने कुछ नही कहा, वे चुप रहे। थोडा ठहरकर बोले, "मेरे लिए कोई चिन्ता मत करो। बस मेरी किताबे भिजवा देना।"—वे कहने जा रहे थे श्यामा को छुडाने के लिए कुछ करो, पर चुप रहे।"

राजेन्द्र ने स्वय कहा, "मै श्यामा से भी मिलना चाहता हू। आपकी क्या राय है?"

यदि उसकी रिहाई के लिए उससे मिलना चाहते हो तो व्यर्थ ही है क्योकि पुलिस तो अपनी सुविधा के अनुसार छोडेगी।"

राजेन्द्र ने इस विषय पर और अधिक बाते करना उचित न समझा और वह आनन्दकुमार से विदाई लेकर जेलर के साथ पास ही की औरत-जेल में पहुचा। श्यामा ने राजेन्द्र को मिलाई वाले कमरे मे देखकर अपना आश्चर्य करीब-करीब प्रकट कर दिया। राजेन्द्र ने परिस्थिति भापते हुए लगभग माफी-सी मागते हुए कहा, "मैं एक खुश खबरी देने आया हू। आपके पिताजी ने चुनाव से अपना नाम श्री आनन्दकुमार जी के पक्ष मे वापस ले लिया है।

श्यामा ने इसपर यही कहा, "दीदी ने यह पहले ही कह दिया था।"

राजेन्द्र को एक धक्का-सा लगा कि वह औरत क्या हुई इन सबकी गुरुआइन बन बैठी है। बडी अजीब परिस्थिति है। एक प्रसिद्ध क्रान्तिकारी की स्त्री ही सही, पर उसे इतना महत्व देना राजेन्द्र को बुरा लगा। बोला, "मुझे मालूम नही था कि उन्होने पहले ही ऐसा कह दिया था तो क्या उन्होने ये सारी बाते इसीलिए की कि ऐसी स्थिति पैदा हो, जिसमे रायबहादुर नाम वापस ले ले।"

श्यामा बोली, "बात ऐसी तो हुई नही, पर यदि हुई तो यह बहुत बडी बात है।"

राजेन्द्र ने देखा कि बात बढ जाएगी। वह यह भी समझ गया कि श्यामा उसे देखकर खुश नही हुई, इसलिए उसने भद्रता के नाते कहा, "क्या मैं आपकी कोई सेवा कर सकता हू ?"

श्यामा ने उसी प्रकार की भद्रता के साथ कहा, "नही, धन्यवाद।" और यह मुलाकात समाप्त हो गई।

२५

युवक ने रुक्मिणी को स्टेशन तक पहुचाकर भक्तिभाव से पैर छुए और विदा होने लगा। वह कुछ दूर निकल भी गया तो रुक्मिणी ने उसे बुलाया, बोली, "अभी रात काफी बाकी है, तुम अभी यही रहो।"

युवक बोला, "जितना आदेश था मै कर चुका, अब मै स्वतत्र हू, मेरा जी भी चाहता है कि आपके पास दो घडी बैठू, पर रात रहते ही मेरा लौट जाना उचित होगा।"

रुक्मिणी ने कौतुक-सा करते हुए कहा, "अभी तुमने कहा कि तुम स्वतंत्र हो, पर बात तो तुम परतन्त्रो की-सी कर रहे हो। तुम तो इधर के ही मालूम होते हो, फिर तुम्हे दिन मे भी लौटने मे क्या दिक्कत हो सकती है ?"

"दिक्कत कोई नही है, पर ध्रुव को छोडकर अध्रुव को..."

"मै समझ गई, अच्छा तुम एक बात बताकर चले जाओ।"

"क्या ?"

"क्या तुम हर समय कुणाल जी के साथ रहते हो ? वे क्या खाते है ? कौन उन्हे खिलाता है ? उनका बिस्तरा कौन लगाता है ? तुम कितने दिनो से उनके साथ हो ?"

युवक बोला, "वे अपना सब काम खुद करते है। बल्कि दूसरो का भी काम कर देते है। उनके साथ मै आज ही हुआ। वे आज ही गाडी से आए थे। मुझे पता नही लौटकर मैं उन्हे वहा पाऊंगा भी या नही।"

दोनो देर तक चुप रहे।

रुक्मिणी ने मौन भग करते हुए कहा, "मुझे उनके बारे मे बड़ी चिन्ता रहती है। अब पुलिस का जोर बढ रहा है, उनपर एक हत्या का अभियोग लगा ही हुआ है, पता नही क्या हो।"

उस युवक ने इसके उत्तर मे कहा, "हम लोगो को भी उनके सम्बन्ध मे बडी चिन्ता रहती है क्योकि वे ही हमारे दल की आशा है। हम लोग तुच्छ है, पर अपनी जान देकर भी हम उनकी रक्षा करना चाहते है।"

टन्-टन् करके कही पर तीन बजे। युवक ने रुक्मिणी का एकाएक चरण स्पर्श किया और बोला, "मैं चला। मुझे आशीर्वाद दीजिए कि मै उनका योग्य अनुयायी हो सकू।"

रुक्मिणी वही पर बुत बनी हुई बैठी रही। उसने उस युवक से विदाई के समय दो शब्द भी नही कहे। क्योकि जो बात वह कहना चाहती थी यानी 'मुझे भी साथ ले चलो', उसे वह कह नही सकती थी। उसे मालूम हुआ जैसे किसी ने बलपूर्वक उसके शरीर से एक फेफडा निकाल लिया। और अब उसे दो फेफडो की बजाय एक ही फेफडे पर जीना है। जीवन का जैसे कोई लक्ष्य ही नही रह गया। अब तो उसे सृष्टि के शून्य मे कटी हुई पतग की तरह गत्ते खाते हुए फिरना है। मुसीबत तो यह है कि कोई मध्याकर्षण भी नही है, जो उस कटी हुई गुड्डी को खीचकर अपने मे समेट ले।

एकाएक कोई ट्रेन स्टेशन पर आई। वह सम्भलकर उठ खड़ी हुई। पर वह कहा जाएगी ? क्यो जाएगी ? वह अपनी पोटली लेकर (पोटली उठाते समय उसके मन मे हुआ कि काश वह इस पोटली को छोड सकती) एक बेच पर बैठ गई। जो ट्रेन आई थी, वह यथा रीति छूट भी गई, पर उसे कोई अफ-

सोस नही हुआ। ट्रेन छूट गई तो छूट गई, इससे क्या ? बेंच पर बैठे-बैठे उसने उन्मुक्त आकाश की ओर दृष्टि डाली, उसमे अभी ग्रह तारे आ-जा रहे थे। अभी थोडी देर पहले जब वह पैदल आ रही थी तो तारो की जो स्थिति थी अब उससे भिन्न थी, पर इससे क्या ? सब तारे लुप्त हो जाएं तब क्या ? इस प्रकार सोचते-सोचते उसके मन मे आया कि जगदीश उर्फ कुणाल से उसका न तो कोई सम्बन्ध था न कोई सम्बन्ध है, किसीसे उसका सम्बन्ध नही है।

इस प्रकार सोचने मे भी उसे कुछ शान्ति नही मिली। सच तो यह है कि वह बिल्कुल ही सारी सृष्टि मे अपने को अकेली पा रही थी। तो क्या वह अब फिर अपने गाव-घर मे लौट जाए ? पर यह अकल्पनीय था। अब तो वह गाव-घर भी कुछ आकर्षक नही मालूम हो रहा था।

बैठे-बैठे उसे मालूम हुआ कि अब ऊषा की लालिमा आकाश के दूर कोनो पर व्याप्त होने लगी। वह यहा चिरकाल तक बैठी तो नही रह सकती। फिर उसे हर हालत मे यहा से निकल तो जाना ही है, नही तो कही पुलिस ने उसे यहा पा लिया तो ? सोचते ही वह सिहर उठी। किसी भी दशा मे वह यहा न मिले।

वह उठकर टिकट-घर की तरफ गई और वहा लोगो की बातचीत से मालूम हुआ कि बनारस की गाडी देर मे आ रही है। बस उसने बनारस का एक टिकट ले लिया। उसे यहा से तो जाना ही था।

थोडी देर मे गाडी आई और वह उसपर सवार हो गई। बनारस स्टेशन मे पहुंचने पर उसे मालूम हुआ कि स्त्रियो पर कुछ विशेष देख-रेख की जा रही है। उसने घूघट काढ लिया और स्त्रियो के एक गोल के साथ हो गई, फिर सीधे आनंदकुमार के घर पहुची क्योकि वही एक व्यक्ति उसे ऐसा मालूम पडा जो उसे उसी प्रकार से आकर्षित करता था जैसे पेड की चोटी थके-मादे पछी को खीचती है।

पर वहा उसे रूपवती ने जब सारी बाते बताई तो उसे ऐसा अनुभव हुआ कि उसीके कारण लोगो पर मुसीबत आई है और वह यहा न आती तो अच्छा रहता।

प्रश्न था कि अब वह क्या करे ? कुणाल ने उसे अच्छी मुसीबत मे डाल दिया, अपने चरणो मे आश्रय भी नही दिया बल्कि अब तो यह आदेश दे दिया कि

मुझसे दूर जाओ। अच्छा, वह दूर ही जाएगी। उसके लिए सब बराबर हैं।

रूपवती ने उसे टिक जाने के लिए कहा। पर उसने कुछ नही कहा। वह नहाने कमरे मे चली गई और देर तक नहाती रही। उसके बाद जब वह निकली तब ऐसा मालूम हुआ कि अब न तो उसमे कोई कुण्ठा है और न कोई संशय। उसने रूपवती से कहा, "मै समझती हू कि आनन्दकुमार जी तथा श्यामा को छुडाने के लिए मुझे कुछ करना चाहिए।"

"तुम क्या कर सकती हो ? वे छूट ही जाएगे, उनके विरुद्ध कोई केस तो है नही।"

इसके उत्तर मे रुक्मिणी ने रहस्यमय ढग से कहा, "घटनाए तो होती ही रहती है, उन्हे कोई रोक तो सकता नही। पर मनुष्य के हाथ मे इतना तो है कि वह उन्हे द्रुतीकृत करे या उसे विलम्बित कर दे। इतनी ही स्वतन्त्र इच्छा है"—कहकर वह घर से निकल पडी।

वहा से वह सीधे चौक की कोतवाली मे पहुची और बिना किसी हिचकिचाहट के भीतर चली गई। वहा उसने इचार्ज मुशी से कहा, "मेरा नाम रुक्मिणी देवी है। मै प्रसिद्ध क्रान्तिकारी कुणाल की पत्नी हू, मैने सुना है कि पुलिस मुझे गिरफ्तार करना चाहती है, इसलिए मै हाजिर हो गई हू।"

सुनकर मु शी हडबड़ाकर उठ खडा हुआ, वह अपनी रुखाई बल्कि बदतमीजी के लिए विख्यात था, पर उसने सामने जो एक अनिन्द्य सुन्दरी को खडी देखा, तो वह नम्र होकर बोला, "आप बैठिए, मै देखता हू कि सचमुच इस बारे मे क्या हिदायते है।"

रुक्मिणी एक रानी की तरह तनकर सामने वाली कुर्सी पर बैठती हुई बोली, "मै बहुत निराश हुई, आश्चर्य है कि आपको इस बारे मे कुछ पता नही है।"

मुंशी माफी-सी मागते हुए बोला, "आपका नाम तो स्पेशल ब्राच के सिपुर्द है, मैं तो चोर-बदमाशो से वास्ता रखता हू।"

मु शी वहा से उठकर चला गया, पर उसने और कुछ करने के पहले दो सिपाहियो को इशारा कर दिया कि वे चुपके से इस महिला पर निगरानी रखें, फिर उसने न जाने किसे-किसे टेलीफोन किया कि आध घन्टे के अन्दर कोतवाली के सामने कई मोटरे आ गईं और उनमे से एक से जानसन उतरा।

जानसन ने आकर रुक्मिणी से यह जानने की चेष्टा की कि वह दो दिनो तक कहां रही।

रुक्मिणी ने जान-बूझकर इसका बहुत रूखा उत्तर दिया, "मै अपने को सारे प्रश्नो का उत्तर देने के लिए मजबूर नही समझती।"

जानसन नरम पडता हुआ बोला, "मैने सुना है कि आप कुणाल की धर्मपत्नी है और आप चाहती है कि वे घर लौट जाए। आप हमे उनका स्थान बता दीजिए, मै उन्हे लाकर आपके पास पहुचा दूगा।"

रुक्मिणी हसी, बोली, "जिन्दा या मुर्दा ?"

इसी प्रकार हाजिर जवाबी की होड और नोक-झोक चलती रही, मतलब की बात नही निकली। तब जानसन ने कहा, "आप बहुत खतरे का काम कर रही है। मान लीजिए हम यह कहे कि उस पार्क मे जो दो क्रान्तिकारी थे, उनमे से एक कुणाल थे और एक लडके के भेष मे आप थी, तो फांसी का फदा आपके गले मे भी पड सकता है।"

रुक्मिणी ने बिल्कुल शान्त ढंग से कहा, "आप तो जान ही चुके है कि मै कल्पना मे भी अपने पति के साथ रहने के सुख के लिए फासी का फदा आसानी से झेल सकती हू।"

जानसन बोला, "माफ कीजिएगा, पर आप जिस ढंग से अपने पति के पीछे-पीछे चल रही है, वह पाश्चात्य देशो मे अकल्पनीय है। विवाह एक ठेका है, यदि वह उसका पालन नही करते···"

"तो मुझे उन्हे पकडा देना चाहिए। यही न ? आप भूल रहे है कि वह मेरे पति होने के अतिरिक्त और भी कुछ है और मै उनकी पत्नी होने के अलावा भारत की नागरिक भी हू। आपने पाश्चात्य देशों की स्त्रियो के सम्बन्ध मे जो कुछ कहा है वह भी गलत है। आपने लेनिन की पत्नी क्रुपस्काया का नाम तो नही सुना होगा और न मार्क्स की पत्नी जेनी का ही नाम सुना होगा। पर गैरीबाल्डी की पत्नी एनीता का नाम तो आपने सुना होगा···"

जानसन ने कुछ भी नही सुना था। बोला, "तो आप हमसे सहयोग नही करेगी ? आप थाने मे स्वय आ गईं इसलिए हमे भरोसा हुआ था कि आप हमसे सहयोग करेगी।"

"सहयोग तो कर रही हूं।"

"कहा ?"

"मैं आकर खुद गिरफ्तार हो गई नही तो आपकी पुलिस तो मुझे दस साल मे भी नही पा सकती है। इतने दिनो मे उसे यह पता लगा है कि मैं उनकी पत्नी हू।"

जानसन बोला, "कम से कम आनन्दकुमार और श्यामा को बचाने के लिए तो आप सारी बाते बता दे।"

"मैं उन्हीके लिए तो यहा उपस्थित हुई हूं।"

जानसन इस बात को भली भाति जानता था, वह बोला, "पर यदि हम आपको गिरफ्तार न करे तब ? गिरफ्तार करना न करना तो हमारी इच्छा पर है न ?"

"उस हालत मे मैं समझूगी कि आप लोग मुझे इसलिए गिरफ्तार करना नही चाहते कि मेरा पीछा करके आप क्रातिकारी दल का सर्वनाश करना चाहते है, ऐसे विचार से एहसान की भावना तो उत्पन्न नही होती न ?"

इस बातचीत से जानसन को कुछ लाभ नही हुआ और वह थोडी देर तक रुककर कुछ हिदायते देकर चला गया।

२६

रुक्मिणी के थाने मे हाज़िर होने के पहले ही बहुत उच्च सतह पर प्रान्तीय सरकार ने यह तय किया था कि आनन्दकुमार छोड दिए जाए। उनके खिलाफ तो कोई मुकदमा बनता ही नही था, और बनता भी तो प्रान्तीय सरकार की उसमे कोई दिलचस्पी नही थी क्योकि आनन्दकुमार की जनप्रियता ही बढी थी। रायबहादुर वशीधर के चुनाव से अलग हो जाने के कारण व्यक्तिगत रूप से आनन्दकुमार और दलगत रूप से स्वराज्य दल यानी काग्रेस (स्वराज्य दल काग्रेस के अंग के रूप मे ही स्वीकृत हुआ था) को लाभ पहुचा था।

आनन्दकुमार चौबीस घटे ही जेल मे रहकर छूट गए। उन्हे छूटने से पहले ही पता लग चुका था कि रुक्मिणी ने इस तरह स्वयं जाकर अपने को गिरफ्तार

करा लिया था । इससे वे बहुत परेशान थे । वे कुछ समझ नही पा रहे थे कि यह रहस्यमयी नारी गई तो क्यो गई, फिर लौटी तो क्यो लौटी और फिर लौट-कर अपने को गिरफ्तार क्यो करा दिया । उन्हे केवल इतना ही दिखाई पडा कि शायद उन्हे और श्यामा को छुडाने के लिए ही वह थाने में हाजिर हो गई थी । जो और बातें थी, वे उन्हे नही मालूम थी ।

अभी वे श्यामा के साथ घर पहुचे ही थे कि खबर पाकर रायबहादुर वशीधर तथा उनकी पत्नी रमादेवी भी आ गई । रूपवती से जो कुछ मालूम हुआ, उससे उनकी उत्कण्ठा और बढ़ी ।

उन्होने एक बार तृषित नेत्रो से अपने पुस्तकालय की ओर देखा, पर अभी उधर ध्यान देने का मौका नही था, अभी तो रुक्मिणी के लिए कुछ करना ज़रूरी था । आनन्दकुमार ने कहा, "मै अभी मजिस्ट्रेट साहब से मिलने जा रहा हू, उस लडकी के लिए कुछ करना है ।"

श्यामा मचल गई, बोली, "मै भी चलू गी ।"

पर आनन्दकुमार ने कहा, "तुम्हारे जाने से कोई लाभ नही होगा । इसकी बजाय यदि रायबहादुर मेरे साथ चल सके तो सबसे अच्छा हो ।"

सब उपस्थित लोग (जिनमे अब राजेन्द्र भी आ जुटा था) उत्कण्ठित हो गए कि रायबहादुर क्या कहते है, पर रायबहादुर ने स्वय ही बडे तपाक से कहा, "वह मेरे घर मे ठहरी हुई थी, इसलिए हर हालत मे मुझे तो जाना ही पड़ता ।"

इसलिए श्यामा के जाने का प्रश्न ही नही रह गया । आनन्दकुमार के चले जाने से जो परिस्थिति उत्पन्न हो सकती है, उसका अनुमान करते हुए श्यामा अपनी मा के साथ ही साथ घर चलने लगी । यह देखकर राजेन्द्र ने आनन्द-कुमार से कहा, "यों तो आप लोगो का जाना ही बहुत काफी है, पर स्वराज्य दल के एक उम्मीदवार के नाते यदि मैं भी चलू तो शायद आप लोगो को कोई आपत्ति न होगी ।"

आनन्दकुमार ने एक बार श्यामा की ओर देखा, एक क्षण के लिए वे उदास हो गए, पर तुरन्त ही सम्भलकर बोले, "ज़रूर-ज़रूर, तुम्हारे चलने से लाभ ही रहेगा । इस शिष्ट-मण्डल के अध्यक्ष रायबहादुर हुए ।"

रायबहादुर ने इसके उत्तर मे अपने को अध्यक्ष पद से हटा लेना चाहा, पर

आनन्दकुमार ने कहा, "आपके अध्यक्ष बनने से उद्देश्य की सिद्धि मे लाभ होगा। मुझे तो जानसन ने क्रातिकारी दल का एक नेता समझ रखा है," कहकर वे एक अपराधी की तरह हसे, जैसे उन्होने भद्र पुरुषो मे बैठकर कोई भद्दा मजाक कर दिया हो।

राजेन्द्र इसके उत्तर मे कुछ नही बोला क्योकि वह यदि आनन्दकुमार को क्रातिकारी दल का सदस्य नही समझता था, तो भी इतना तो मानता ही था कि वे उन लोगो के साथ खतरनाक ढग से मिला करते है। उसे इस मिलने पर विशेष रूप से आपत्ति इसलिए थी कि वह समझता था कि यह ढोग नही तो कुछ चालाकी अवश्य है, जिसके द्वारा वे जनता मे सस्ती ख्याति प्राप्त करते हैं। राजेन्द्र ने इस शिष्ट-मण्डल मे शामिल होना इसलिए स्वीकार किया कि राय-बहादुर के रहने से उसे किसी प्रकार का खतरा नही था, दूसरे वह श्यामा के पास अकेले पड जाने के सकट से बच गया।

तीनो व्यक्ति सीधे एलबर्ट टेगर्ट के घर पर पहुचे। सौभाग्य से मिस्टर बनर्जी भी वही मौजूद थे। रायबहादुर ने रुक्मिणी की रिहाई के लिए कहा पर मिस्टर टेगर्ट बोले, "अभी तहकीकात जारी है। पूरी बात बिना मालूम हुए मै स्पष्ट रूप से कुछ नही कह सकता।"

रायबहादुर ने कहा, "इसमे पूरी बात क्या मालूम करनी है। उसका पति एक क्रान्तिकारी है, वह इसके लिए जिम्मेदार नही ठहराई जा सकती। वह स्वय तो क्रान्तिकारी दल की सदस्या नही है।"

मिस्टर बनर्जी ने इसका उत्तर देते हुए कहा, "वह सदस्या न होते हुए भी हमे एक बार बहुत भारी नुकसान पहुचा चुकी है। हमने कुणाल को करीब-करीब गिरफ्तार कर लिया था, वह बीच मे कूद पडी और उसने कुणाल को छुडा लिया। पहले तो हमारा ख्याल था कि यह कोई पगली है।" कहकर उसने अर्थपूर्ण दृष्टि से आनन्दकुमार की ओर देखा और बोला, "पर बाद को मालूम हुआ कि उसके पागलपन मे भी कोई पद्धति है। वह दल की सदस्या न होते हुए भी खतरनाक हो सकती है और है।"

रायबहादुर ने अपनी पैरवी जारी रखते हुए कहा, "मुझे दुःख है मिस्टर बनर्जी, कि आप उसकी बातों को मानवीय दृष्टिकोण से नही देख रहे हैं। एक हिन्दू पत्नी के नाते वह अपने पति की रक्षा करेगी ही। इसलिए यदि उसने

पगली बनकर अपने पति को विपत्ति से मुक्त कर दिया तो उसमे कोई आश्चर्य की बात नही है।"

मिस्टर बनर्जी ने जोश मे आकर कहा, "आप जो बाते कह रहे हे, वही तो नही हुआ। उस समय कुणाल गिरफ्तार हो जाता तो शायद हमे उसे नजरबन्द करना पडता क्योकि उसके विरुद्ध बहुत-सी भयकर रिपोर्टें होते हुए भी हम शायद ही किसी मामले मे अदालतो के लायक प्रमाण उपस्थित कर सकते। पर अब तो उसके खिलाफ दिन-दहाडे हत्या करने का अभियोग है, इसलिए अब तो पकडे जाने पर उसे फासी ही होगी। क्या इसीका नाम खतरे से बचाना है?"

रायबहादुर इस हत्या के विषय मे सुन चुके थे और उन्हे यह बात बहुत नापसन्द थी। फिर भी इस शिष्टमण्डल के अध्यक्ष के नाते कुछ कहना ही था, इसलिए वे बोले, "भविष्य मे क्या होगा, इसे कोई भी नही जानता। बहरहाल कुणाल के साथ आप जो चाहे सो करे, मै उसमे कुछ नही कहता, पर रुक्मिणी के विरुद्ध आपके पास कहने के लिए कुछ भी न होगा। वह तो एक आदर्श पत्नी की तरह अपने पति का पीछा कर रही है। उसपर इसके लिए आप क्या दोष लगा सकते है?"

मिस्टर बनर्जी ने उसके उत्तर मे बिल्कुल बेशर्मी से कहा, "मान लीजिए कि उसके विरुद्ध हमे कुछ कहना नही है, पर हम उसका उपयोग कुणाल के पकडने मे कर सकते है। हम तो कहते है कि यह बता दे कि कुणाल कहा है? बस, हम उसे अभी छोड देते हैं।"

इतना कहना था कि रायबहादुर बिल्कुल आपे से बाहर हो गए और बोले, "मिस्टर बनर्जी, आपको शर्म नही आती कि आप कहते हैं कि रुक्मिणी अपने पति को पकडवा दे और इस प्रकार अपनी रिहाई कराए। आप गुलाम देश के हैं इसीलिए ऐसी भोडी बात कह गए; पर मिस्टर टेगर्ट समझ सकते हैं कि आपने कितनी बेहूदी बात कही है। आप समझते हैं कि हम लोग ऐसी रुक्मिणी का मुह देखना पसन्द करेंगे जो अपने पति को गिरफ्तार करा दे?"

"पति को नही, राज्य के विरुद्ध अपराधी को।"

रायबहादुर एकाएक खडे हो गए, उनके साथ-साथ आनन्दकुमार और राजेन्द्र भी उठ खडे हुए। रायबहादुर बोले, "मिस्टर टेगर्ट! मै यह नही

जानता था कि ब्रिटिश साम्राज्य का संगठन इतना ढीला हो गया है और उसकी पुलिस इतनी बेकार हो गई है कि अब वह डरा-धमकाकर पत्नी के द्वारा पति को गिरफ्तार कराकर जीवित रहने की आशा रखता है ।"

मिस्टर टेगर्ट ने कहा, "आप बैठिए, मैं नया आदमी हू । सारी बाते समझने की कोशिश कर रहा हू ।"

"सब लोग बैठ गए, थोडी देर और बातचीत चली पर कोई नतीजा नही निकला । सब लोग उठकर चले गए, तब मिस्टर टेगर्ट ने मिस्टर बनर्जी से कहा, "अगर मिस्टर जानसन उस लडकी को नही छोडना चाहते तो न छोडे, पर मैं उसे अब एक मिनट भी कोतवाली मे रहने नही दे सकता । उसे फौरन जेल मे भेज दिया जाए ।"

मिस्टर बनर्जी ने गिडगिडाकर कहा, "तब तो हमारा उद्देश्य सिद्ध नही होगा ।"

"सिद्ध हो या न हो, मैं उस लडकी पर किसी तरह का अत्याचार नही होने दे सकता । कानून के अन्दर सब कुछ कीजिए, पर कानून के बाहर मैं एक इच भी जाने को तैयार नही हू ।"

मिस्टर बनर्जी निराश होकर बोले, "हुजूर, आप अभी नए है, कभी-कभी कानून की रक्षा के लिए कानून तोडना पडता है ।"

"पर मैं ऐसी बात सुनने के लिए तैयार नही हू । मुझे यहा इसलिए भेजा गया है कि कानून का पालन करू न कि उसका हनन ।"

मिस्टर बनर्जी ने डरते-डरते कहा, "आप इस मामले मे मिस्टर स्मिथ से टेलीफोन पर परामर्श कर ले क्योकि यह मामला बहुत सगीन है और इसपर इस प्रान्त का बहुत कुछ निर्भर है ।"

मिस्टर टेगर्ट ने स्मिथ से बातचीत कर ली । स्मिथ ने कहा, "भारत मे योरोपीय मानदण्ड लागू करना उचित नही है, क्योकि यहा के लोग उतने सभ्य नही हैं, फिर भी जैसा आप उचित समझे, वैसा करे । यदि आपसे एकाध गलती भी हो जाएगी तो कोई हर्ज नही है । आदमी गलती करते-करते ही सीखता है ।"

टेगर्ट टेलीफोन रखकर बडी देर तक सोचता रहा कि स्मिथ की इन बातो का क्या अर्थ लेना चाहिए, पर वह किसी नतीजे पर नही पहुच सका । वह मिस्टर बनर्जी के साथ उसी समय कोतवाली पहुचा और यद्यपि रात इस समय

काफी हो चुकी थी, उसने देर तक रुक्मिणी से बातचीत की। कोई भी नई बात नही मालूम हुई।

दोनो जब कोतवाली से बाहर निकले तो मिस्टर बनर्जी ने कहा, "यह औरत बडी शैतान है। आपको तो भोली-भाली पतिपरायणा स्त्री मालूम हुई होगी। पर इसने कई जुर्म किए है। ऐसी चालाक है कि किसी भी जुर्म के लिए हमारे पास इसके विरुद्ध कोई प्रमाण नही है। इसने श्मशान के सामने पगली बनकर कुणाल को छुडा लिया, फिर इसने पता नही कैसे हमारे खुफिया त्रिलोचन से आत्महत्या करवा दी, और अब यह कुणाल से मिलकर आई है। पर बताती नही है कि वह कहा है।"

अन्त मे मिस्टर टेगर्ट इस बात पर राजी हुए कि रुक्मिणी रात भर के लिए कोतवाली मे ही रहे, पर उन्होने चेतावनी देते हुए कहा, "यह रमणी हजारो मे एक है। दुर्भाग्य से इसका देश पराधीन है इसलिए वह ऐसी बाते कर रही है जो हमारे कानून के विरुद्ध है, पर आप याद रखे कि किसी भी हालत मे कोई इसके नारीत्व का अपमान न करे।"

मिस्टर बनर्जी ने बात मान ली और वह कोतवाली मे ही रह गए।

अगले दिन प्रात काल मिस्टर टेगर्ट ने टेलीफोन पर मिस्टर बनर्जी से पूछा, "रुक्मिणी ने कुछ बताया ?"

"नही, कुछ नही बोली।"

कुछ देर चुप रहकर टेगर्ट ने कहा, "तो उसका वारण्ट पूरा करवाकर जेल भिजवा दीजिए।"

"जेल भेजना व्यर्थ है क्योकि हम उसे नजरबन्द तो कर सकते है, पर इसके लिए प्रान्तीय सरकार राजी नही है, रहा मुकदमा, सो कोई मुकदमा तैयार नही होता।"

"तो उसे छोड दीजिए।"

"यही हमने भी तय किया है। उसके पीछे खुफिया रखा जाएगा, शायद उससे ज्यादा काम बने।"

२७

अखबारो मे रुक्मिणी पर कोतवाली मे किए गए अत्याचारो का जो विवरण निकला, उससे सारे देश मे सनसनी फैल गई। उन विवरणो मे यह लिखा था कि रुक्मिणी से पहले तो कुणाल के सम्बन्ध मे पूछा गया फिर उसे तरह-तरह की धमकी दी गई। जब इस पर भी वह कुछ नही बोली तो उसके कपडे उतार लिए गए और उसे जबर्दस्ती हाथ पकडकर बर्फ की सिल्ली पर बैठाया गया। कई बार ऐसी स्थिति आई कि वह बेहोश होने लगी, तब उसे सिल्ली से उतार कर जबर्दस्ती ब्राण्डी पिलाई गई। कुछ ठीक होने पर फिर सिल्ली पर बैठाया गया। बीच-बीच मे उसे भद्दी और अश्लील गालिया दी जाती रही। इसी प्रकार रात दो बजे तक सताने के बाद उसे पहनने के लिए कपडे दे दिए गए और दवा पिलाकर सुला दिया गया। भारतीय पुलिस अफसर मिस्टर बनर्जी की देख-रेख मे ही उसे इस प्रकार नगा किया गया है और बर्फ की सिल्ली पर बैठाकर गालिया दी जाती रही।

एक अखबार ने जिसका झुकाव अमन सभा की ओर था, इस सम्बन्ध मे यह भी लिखा कि हमारा सम्वाददाता मिस्टर बनर्जी तथा मिस्टर टेगर्ट से मिला था, उन लोगो ने बताया कि रुक्मिणी देवी के द्वारा लगाए हुए सारे अभियोग झूठे है, न तो उसके कपडे उतारे गए और न उसे गालिया ही दी गई। हा, उससे पूछ-ताछ जरूर की गई। हमारा सम्वाददाता रुक्मिणी देवी से भी मिला, पर वह कोई ऐसा प्रमाण न दे सकी जिससे उसके बयान का समर्थन हो। हमारे सम्वाददाता ने उसे बिल्कुल स्वस्थ और प्रफुल्ल पाया।

जब इस अत्याचार की खबर क्रान्तिकारियो मे पहुची तो बडा तहलका मचा। क्रान्तिकारियो मे जो लोग उग्र थे, वे बोले, "अभी साले बनर्जी को खतम किया जाए।"

वह युवक महेन्द्र जो रुक्मिणी को स्टेशन पर पहुचाने आया था, कुणाल से बोला, "दादा आप आज्ञा दीजिए! मैं उस दुष्ट पर छ. पैसा खर्च करू।"

यह समझा जाता था कि रिवाल्वर की एक गोली का दाम छ. पैसा होता है, इसीलिए क्रातिकारी दल मे यह छ पैसे वाला मुहावरा चला हुआ था।

कुणाल स्वय बहुत उत्तेजित थे, पर वे उसे बाहर प्रकट होने देना नही

चाहते थे। बोले, "देखो बिरादर, क्रातिकारी दल एक उद्देश्य को सामने रखकर चल रहा है। वह उद्देश्य है देश को स्वतत्र करना। अपने मार्ग मे कई रोडे मिलते है, पर उन रोडो की दिक्कतो से ऊबकर हम रोडो मे लडना अपना उद्देश्य तो बना नही सकते। हम स्वतत्र नही है, इसीलिए यह ज्यादतिया हम पर होती है। इसीलिए हमे और भी दृढता के साथ अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर होना चाहिए।"

पर महेन्द्र का खून खौल रहा था, उसने कहा, "कई बार पथ के रोडे इतने भयानक हो जाते है कि हम उन्हे हटाए बगैर आगे ही नही बढ सकते, इसके अलावा लोगो पर क्या असर पड रहा है ? यह भी तो देखिए। जब बनर्जी ऐसा मूजी इस तरह हमारी माताओ और बहनो का अपमान करके बचा रहेगा तो उसका लोगो पर बडा अनैतिक असर पडेगा।"

कुणाल ने आधे दिल से कहा, "पर सिल्ली पर बैठाना कोई ऐसा अत्याचार नही है। इतने के लिए तो हर एक को तैयार रहना ही चाहिए।"

"पर यह कपडे उतारना ?"

कुणाल ने दात से दात दबाकर कहा, "यह जरूर बहुत बडी ज्यादती है। फिर भी हमे वृहत्तर लक्ष्य को सामने रखकर सारी बातो पर विचार करना चाहिए।"

महेन्द्र को इससे तृप्ति नही हुई। वह उस अखबार को लेकर बार-बार पढता रहा और उसका मन यही कहता रहा कि कुछ होना चाहिए।

कुणाल उसी दिन किसी अज्ञात स्थान को चले गए और महेन्द्र से जाते समय कह गए कि इधर सगठन बहुत तेज़ी से होना चाहिए। जो विश्वस्त सदस्य है उन्हे गोली चलाने का अभ्यास भी करना चाहिए, बोले, "मै चाहता हू कि तुम्हारे यहा का हरएक युवक तुम्हारी तरह पक्का निशानेबाज बने। मै गोलिया भेजने की व्यवस्था करूगा।"

उधर कुणाल चले गए और इधर महेन्द्र बस मे बैठकर उसी दिन काशी के लिए रवाना हो गया। उसे आनन्दकुमार का पता लगाने मे कोई दिक्कत नहीं हुई। वहां से वह श्यामा के घर पहुचा, जहा रुक्मिणी ठहरी हुई थी। सामने श्यामा मिली।

महेन्द्र ने कहा, "मुझे रुक्मिणी देवी से मिलना है।"

श्यामा ने उसे आज तक देखा नही था, बोली, "आप कौन है ?"

महेन्द्र ने सोचा यह तो बडी अजीब बात है। इसका उत्तर तो कभी सोचा नही था। बोला, "आप माताजी से मुझे मिला दीजिए, वह मुझे पहचान लेगी।'

"आप किसी पत्र के प्रतिनिधि तो नही है ?"

महेन्द्र को जैसे तिनके का सहारा मिल गया, बोला, "हा-हा, मैं 'मिर्जापुर दर्पण' की ओर से आया हू।"

"तब तो आप उनसे बिल्कुल नही मिल सकते।"

"क्यो ?"

"इसलिए कि आनन्दकुमार जी ने कहा है कि एक ही बात को बार-बार दुहराने का कोई मतलब नही होता। यदि आप चाहे तो मै उनके बयान की एक प्रति आपको भेट कर सकती हू। आप उसीमे अपनी कल्पना मिलाकर रिपोर्ट तैयार कर लीजिए।"

महेन्द्र ने देखा कि मिर्जापुर दर्पण का प्रतिनिधि बनने से तो काम और बिगड़ गया, बोला, "आप उन्हे दूर से मुझे दिखा दीजिए, फिर यदि वे मिलना चाहे तो मिलाइए।"

श्यामा ने कडाई के साथ कहा, "नही-नही, यह नही हो सकता। दीदी का चित्त बहुत ही दयालु है, वे किसीको कड़ी बात नही कह सकती। आए हुए को निकाल देना तो दूर की बात रही।"

इसपर महेन्द्र बोला, "माफ कीजिएगा, आपने उन्हे समझा नही है, वे तो वज्र से भी कठोर हैं और कुसुम से भी मृदु है।"

यह सब कहने पर भी श्यामा ने रुक्मिणी से महेन्द्र को मिलाना स्वीकार नही किया। बोली, "आप अपना नाम-प्रयोजन आदि लिखकर दे दीजिए, मैं फिर बताऊगी कि आप मिल सकते है या नही।"

महेन्द्र ने सोचकर कहा, "अफसोस तो यह है कि वे मेरा नाम नही जानती, इसलिए मैं क्या लिखकर दू ? आप एक मिनट के लिए मुझे उनसे मिला दें।"

पर श्यामा किसी तरह नही पसीजी। महेन्द्र ने देखा कि अब तो उसे लौट ही जाना पडेगा। वह दो कदम पीछे की ओर लौट भी पडा, पर इतने महत्व-पूर्ण कार्य के लिए आकर इस तरह खाली हाथ लौटना उसे बिल्कुल पसन्द नही

आया। तब वह फिर लौट पडा और उसका चेहरा कडा पड गया। उसने रिवाल्वर निकालकर श्यामा को दिखाते हुए कहा, "यदि इससे आपको विश्वास होता है तो ठीक है, नही तो मै अब भीतर जाने का निश्चय कर चुका हू," कहकर वह श्यामा को कोहनी से लगभग ढकेलता हुआ आगे बढा और दरवाज़ा खोलकर रुक्मिणी के कमरे मे घुस गया।

रुक्मिणी ने देखते ही महेन्द्र को पहचान लिया। उसने रुक्मिणी का पैर छूकर प्रणाम किया, फिर पीछे आई हुई श्यामा को दिखाकर बोला, "ये तो आपसे मिलने ही नही देती थी। मै जबरदस्ती घुस आया।"

श्यामा परिस्थिति समझ गई, बोली, "मुझे क्या पता था कि दीदी भीतर ही भीतर दल की नेत्री भी बन चुकी है। मै तो समझती थी कि दीदी से ज़ो लोग मिलने आएगे वे शरीफ होगे, पर यह तो मुझे रिवाल्वर दिखाकर आए है।"

महेन्द्र ने श्यामा का यह मन्तव्य पसन्द नही किया, बोला, "शराफत शरीफो के लिए होती है, मैने इन्हे बहुत समझाया कि मैं विशेष कार्य से आया हू, पर ये मुझे किसी तरह भीतर आने नही दे रही थी। तब मैंने कुछ सख्ती से काम लिया।"

रुक्मिणी ने श्यामा से कहा, "ये मेरे भाई लगते है, गो कि ये जबर्दस्ती मुझे माताजी कहते है, तुम इस नाते इन्हे माफ कर देना।"

वह अब इस विषय पर अधिक बातचीत करने के लिए तैयार नही थी क्योकि वह जानना चाहती थी कि वह विशेष कार्य क्या है जिसके लिए यह युवक आया है? क्या उन्होने कोई सन्देश भेजा है? क्या यह सम्भव है कि उन्होने बुलाया है? या केवल कुछ काम दिया है। जो भी हो वह यह जानने के लिए अत्यन्त उत्सुक थी कि मामला क्या है।

श्यामा समझ गई कि दीदी उसका अस्तित्व भूल गई हैं इसलिए परिस्थिति देखकर चुपके से निकल गई और जाते वक्त वह दरवाज़ा भेड़ना नही भूली।

श्यामा के जाते ही रुक्मिणी ने प्रश्नसूचक दृष्टि से महेन्द्र की ओर देखा। महेन्द्र बोला, "माताजी, मैं आपके पास बहुत ज़रूरी काम से आया हू।" कहकर उसने एक बार रुक्मिणी को सिर से पैर तक देखा, मानो वह कुछ खोज रहा हो, फिर एकाएक जोश मे आकर बोला, "उस दुष्ट बनर्जी ने आपके साथ जो

दुर्व्यवहार किया है, उसे मै भारत माता का ही अपमान समझता हू । मैंने अखबार मे उसका ब्योरा पढा तो मेरा खून खौल उठा।"

युवक जो कुछ कह रहा था, वह बहुत दिलचस्प था, पर रुक्मिणी के कान तो कुछ और सुनना चाहते थे, बोली, "क्या उन्होने भी अखबार पढा ?"

"पढा क्यो नही ? वे जहा भी रहते है अखबार जरूर पढते है।"

"उन्होने पढकर क्या कहा ?"

"वे पढकर कमरे के अन्दर इधर से उधर टहने लगे, कुछ बोले नही।"

रुक्मिणी ने कहा, "कुछ नही कहा ?"

"नही, मुझे अखबार देकर जहा खबर छपी थी उसे दिखाकर बोले, पढो।"

"और कुछ नही बोले ?"

"वे कुछ नही बोले, पर जब मैने पढ लिया तो मैने कहा इस अत्याचार को यो ही नही जाने दिया जा सकता। यह एक चुनौती है, जिसे हमे स्वीकार करना चाहिए।"

"इसपर उन्होने क्या कहा ?"

"उन्होने कहा, भारत मे ब्रिटिश सरकार जितने भी कार्य करती है, वे सब चुनौती है। मुझे उनके इस कथन से सन्तोष नही हुआ, मुझे मालूम पडा जैसे वे इस विषय को टालना चाहते हो।"

रुक्मिणी ने कहा, "विषय को टालना नही, वे उसे गहराई तक देख रहे थे।"

"जो कुछ भी हो मैंने उनसे कहा, उस मूजी बनर्जी को फौरन दोजख रसीद करना चाहिए; वह हरामजादा यह जाने तो सही कि देशद्रोह की क्या सजा है ?"

"इसपर वे क्या बोले ?"

महेन्द्र ने निराशा भरे स्वर में कहा, "वे कुछ बोलते तो फिर मुझे आपके पास आने की ज़रूरत क्या पडती ? वे बोले, बिरादर, यह छोटी-सी घटना है। इसपर इतने जोश मे आने की जरूरत नही है। हमारा उद्देश्य न तो चुनौती देना है, न चुनौती स्वीकार करना है। हमे तो देश को हमेशा के लिए इन विदेशियो के हाथ से मुक्त करना है। फिर यह घटना बहुत वैयक्तिक किस्म की

है। मैं इसपर कोई निर्णय करूंगा तो वह शायद इतना निष्पक्ष न होगा।"

रुक्मिणी की एकाएक बाछे खिल गई। जैसे उसके हाथ अचानक कुबेर का भडार लग गया हो, बोली, "उन्होने निष्पक्ष शब्द का प्रयोग किया ?"

"आप इसपर खुश हो रही है, पर मै कहता हू हम ऐसे मामले मे निष्पक्ष कैसे रह सकते है ? और ब्रिटिश साम्राज्यवाद एक पक्ष है, वहा तो मैं हमेशा उसके विरोधी पक्ष मे ही रहूगा। मैंने उनसे कहा कि आप मुझे आज्ञा दीजिए मै उस पापी को उसके अत्याचारो का फल चखाता हू। पर वे किसी प्रकार राजी नही हुए और अन्त मे बोले, मेरा यह आदेश है कि तुम इस मामले मे मुझसे कुछ मत कहो। मेरा चित्त इस मामले मे स्वय ही कुछ विचलित हो गया था, बडी कठिनाई से मै उसे काबू मे ले आया हू, तुम इस विषय को बिल्कुल भूल जाओ।"

यह बाते सुनकर रुक्मिणी को इतनी खुशी हो रही थी कि उसका हृदय बहुत जोर से धडक रहा था, बोली, "फिर क्या हुआ ?"

"जब मैंने देखा कि वे किसी तरह नही मानेंगे तो मैं आपके पास चला आया। उन्होने आज्ञा नही दी, पर आप आज्ञा दीजिए, मैं आज ही उसे हमेशा के लिए ठण्डा किए देता हू।"—कहकर उसने अपनी कमर मे छिपे हुए रिवाल्वर की ओर देखा।

अब तक रुक्मिणी सारी बाते दूसरे ढग से सुन रही थी। वह एक प्रेमिका थी जो एक दूत से अपने प्रेमिक की बाते सुन रही थी, पर ज्योही वह प्रसग समाप्त हो गया त्योही वह तनकर बैठ गई, बोली, "भाई, तुम क्या करना चाहते हो ?"

इसके उत्तर मे महेन्द्र ने रिवाल्वर निकालकर दिखाया। रुक्मिणी उसे लेती हुई बोली, "इसमे जो गोलिया है, उनके अलावा और भी गोलिया है ?"

युवक ने निकालकर छः और गोलिया दी। रुक्मिणी ने उन्हे भी अपने पास रख लिया और बोली, "तुम मेरे लिए ही इसका प्रयोग करना चाहते थे, समझो कि प्रयोग हो गया, मैंने इन्हे अपने पास रख लिया।"

महेन्द्र आश्चर्यचकित होकर बोला, "तो माताजी, आप भी उन्हीकी कोटि मे है !'

"उनसे ज्यादा। पहली बात तो यह है कि यह रिवाल्वर दल का है तुम्हारा

नही, तुम्हे इसको व्यवहार मे लाने का तब तक कोई अधिकार नही है, जब तक कि दल तुम्हे आदेश न दे। दूसरी बात यह है कि यदि उनके लिए इस मामले मे कुछ कहना व्यक्तिगत था तो मेरे लिए और भी व्यक्तिगत है। मै इस सम्बन्ध मे कभी न तो दल के एक रिवाल्वर को खतरे मे डाल सकती हू न उसके एक वीर को विपत्ति के मुंह मे भेज सकती हू। मै भी कहती हू, तुम इन सारी बातो को भूल जाओ। उन्होने ठीक ही कहा है कि एक-एक अपमान का बदला लेने की बजाय सारे अपमानो का बदला देश को स्वतन्त्र कराकर ले लेना चाहिए।"

महेन्द्र फिर भी तर्क करता रहा, पर रुक्मिणी टस से मस नही हुई। थोडी देर बाद उसने दरवाजा खोला। श्यामा मानो इसीकी प्रतीक्षा कर रही थी। वह खाने-पीने का सामान लेकर भीतर घुस आई और बोली, "पता नही आपके यह भाईजी किस सिद्धान्त मे विश्वास रखते है, पर मै तो इस सिद्धान्त मे विश्वास नही रखती हू कि, अक्कोधेन जिने कोधम्...."

रुक्मिणी ने कहा, "तुम बिल्कुल ठीक बात कह रही हो, हम लोग हिंसा से बहुत दूर है। तुम यह खाना-पीना यही रख दो, और फौरन हिंसा के इन प्रतीको को जाकर कही रख आओ। क्योकि इनके रहते युवक का मन फिर विचलित हो सकता है।" कहकर उसने श्यामा को भरा हुआ रिवाल्वर तथा छः गोलिया दी।

श्यामा और रुक्मिणी की आखो-आखो मे कुछ बाते हुईं, उसने सिर नीचा किए हुए युवक को एक बार देखा और चली गई।

२८

रुक्मिणी यह आशा करती थी कि चाय पीते-पीते श्यामा वापस आ जाएगी। शायद इसी उद्देश्य से उसने चाय पीने की प्रक्रिया को जितना दीर्घ बना सकती थी बनाया। ऐसा उसने इच्छापूर्वक कहा तक किया और कहा तक कुणाल की बातचीत छिड जाने के कारण उसका स्थान, पात्र, काल का ज्ञान

लुप्त हो गया था, यह कहा नही जा सकता। वह कुणाल के सम्बन्ध मे एक-एक बात को खोद-खोदकर पूछ रही थी। इस प्रसंग मे दोनो को रस आ रहा था, यद्यपि दोनो के उद्देश्य और दृष्टिकोण मे बहुत अन्तर था।

महेन्द्र ने अपने दल की बडाई करने के लिए कहा, "हमारे दल मे कुणाल जी की तरह कई जीवित शहीद है, जिनके सम्बन्ध मे यही कहना उचित होगा कि वे क्रान्ति के लिए जीते है। उनके जीवन मे न कोई और आकर्षण है न लक्ष्य।"

रुक्मिणी को यह बात पूरी तरह पसन्द नही आई, फिर भी वह अपने मन की बात सामने न रखकर बोली, "क्या तुम्हारे दल मे बहुत-से ऐसे लोग है, जिन्होने पत्नी को तिलाञ्जलि दे रखी है।"

महेन्द्र बोला, "यह कहना मुश्किल है क्योकि किसी क्रान्तिकारी के जीवन का कुछ पता तो लगता ही नही। यदि आप उस दिन उस तरीके से न आती तो मुझे कब यह पता लगता कि कुणाल जी का विवाह भी हो चुका है।"

रुक्मिणी चुप रही। कुछ देर तक सोचकर बोली, "तुम्हारा तो विवाह नही हुआ ?"

महेन्द्र ने ऐसे मुंह बनाया जैसे किसीने अनजाने मे उसका अपमान कर दिया हो, बोला, "आप भी अजीब बात पूछती है। मुझे विवाह से क्या काम ?"

"तुमने विवाह के विषय मे कभी कुछ सोचा है ?"

इसपर महेन्द्र हहराकर हस पडा, फिर सम्भलता हुआ बोला, "फासी की रस्सी से मेरा विवाह होगा।"

रुक्मिणी को इस कथन मे हसी का कोई तत्व नही मालूम हुआ। उसके कल्पना-नेत्रो के सामने एक बार यह बात आ गई कि कुणाल पर कम से कम एक हत्या का मुकदमा है और फासी का फदा आक्षरिक रूप से उनके सिर पर झूल रहा है। क्षुब्ध होकर बोली, "यह क्या अजीब बात है कि तुम लोग जीवन के संदेशवाहक हो, पर हमेशा मृत्यु की बात करते रहते हो और सो भी ऐसे करते हो जैसे कोई बच्चो का खेल हो।"

महेन्द्र की मानसिक और शारीरिक थकावट दूर हो चुकी थी, यद्यपि उसके मन में थोडी-सी यह शका बनी हुई थी कि रिवाल्वर के सम्बन्ध मे वह क्या

जवाब देगा। पर क्रान्तिकारी दल का हथियार दल के ही पास रहा, इसके अलावा उसे कुछ छिपाना तो है नही, इसलिए वह आशा करता था कि किसी न किसी तरह कुणाल जी मान जाएगे। उसने जोश मे आते हुए कहा, "मैने भी इस बात पर बहुत सोचा है। मैंने एम० ए० मे दर्शनशास्त्र लिया था, सोचने का मर्ज था। पर मै जितना ही इस बात पर सोचता हू उतना ही क्रान्तिकारियो के महत्व को हृदयगम करता हू। हमारे यहा सभी कुछ था। बडी-बडी बातो की यहां कोई कमी नही थी। शरीर को नश्वर बतलाया जाता था और यह कहा जाता था कि मृत्यु ऐसे ही है जैसे कोई पुराने कपडे को उतारकर नए कपडे पहन ले, फिर भी हमारे यहा मरने से लोग इतना घबडाते थे कि वे अपने देश को, सिद्धातो को, धर्म को बेच लेते थे। कुणाल जी कहते है कि क्रान्तिकारी वे भगीरथ हैं जिन्होने बातचीत के स्वर्ग से इन उदात्त भावनाओ को लाकर व्यावहारिक जगत मे प्रवाहित किया और उसे एक ठोस आधार दिया। मृत्यु के द्वारा ही हम जीवन का जयगान गाने लगे। जब मृत्यु-भय नही रहा, तो फिर किसी बात का भय नही रहा।"

रुक्मिणी को इन बातो के अन्दर कुणाल का ही कण्ठ-स्वर सुनाई दे रहा था। बाते कितनी सत्य थी, पर साथ ही कितनी निर्मम। रुक्मिणी की आखे न जाने क्यो सजल हो गई, उसने मुश्किल से उद्गत अश्रुधारा को सम्भाला।

इसी प्रकार दोनो देर तक बातचीत करते रहे। रुक्मिणी को पहली बार यह भी महसूस हुआ कि (कितना अजीब था) देवर क्यो प्यारा होता है। वह पति का ही लघु रूप होता है। उसके अन्दर से बहुत-सी बाते प्रतिफलित होकर सामने आती है। उससे बात करते-करते रुक्मिणी को और भी एक बात महसूस हुई, वह यह कि जब ऐसे-ऐसे युवक इसी प्रकार तैयार हैं तो देश का भविष्य बहुत उज्ज्वल है।

अभी रुक्मिणी कुछ कह नही पाई थी कि श्यामा के घर का एक नौकर घबडाकर भीतर आ गया और उसने भयभीत स्वर मे कहा, "श्यामा बेटी गिरफ्तार हो गई है···"

रुक्मिणी और महेन्द्र ने एक दूसरे का मुह देखा और दोनो एक साथ खड़े

हो गए। उस नौकर ने और भी कहा, "उनके पास रिवाल्वर और कारतूस निकले है।"

रुक्मिणी ने फौरन महेन्द्र से कहा, "तुम तो अभी निकल जाओ। यहा भी पुलिस आ रही होगी।"

महेन्द्र समझ गया कि बात तो ठीक है, पर वह हिचकिचाने लगा, बोला, "वह मेरे लिए गिरफ्तार हो गई, और मै भाग आऊ ?"

रुक्मिणी ने इसके उत्तर मे कहा, "खडे-खडे गिरफ्तार होने मे कोई लाभ नही है। तुम इस नौकर के साथ पीछे के दरवाजे से निकल जाओ।" कहकर रुक्मिणी ने नौकर को इशारा कर दिया।

महेन्द्र रुक्मिणी के चरण छूकर करीब-करीब रुआसा होकर निकल गया। अब रुक्मिणी सोचने लगी कि वह क्या करे। यह तो साफ था कि श्यामा किसी तरह छूट नही सकती थी। जब वह रगे हाथो पकडी गई है तो फिर कैसे क्या हो सकता है ?

वह फौरन रायबहादुर तथा रमादेवी से मिली। रायबहादुर बोले, "यह तो होना ही था। इसमे आश्चर्य की क्या बात है।"

मोटर तैयार की। रायबहादुर, रमादेवी और रुक्मिणी उसमे सवार होकर कोतवाली पहुचे, पर उन्हे श्यामा से मिलने नही दिया गया। तब वे मिस्टर टेगर्ट के पास पहुचे।

टेगर्ट बोला, "आप तो रायबहादुर है, आप ही बताइए कि हम इसमे क्या कर सकते है ? मुझे तो मिस्टर बनर्जी ने यह बताया कि श्यामा के पास जो रिवाल्वर मिला है, यह वही रिवाल्वर है जिससे उस पार्कवाले गोलीकाड में एक सिपाही की हत्या की गई है। मिस्टर बनर्जी का तो यहा तक कहना है कि उस अवसर पर जो दो व्यक्ति थे, उनमे से एक तो कुणाल था और दूसरा पुरुष के वेश मे श्यामा ही रही होगी।"

रुक्मिणी जानती थी कि यह बात बिल्कुल गलत है, पर उसने देखा कि घटनाएं ऐसा ही रूप ग्रहण कर चुकी है। इससे कही अच्छा होता कि वह युवक पकड़ा जाता। पर नही, श्यामा से वह युवक कही ज्यादा काम कर सकता है।

तीनो व्यक्ति निराश हो गए फिर भी रायबहादुर ने कहा, "मिस्टर बनर्जी ने यह कैसे जाना कि यह वही रिवाल्वर है ?"

"गोली की नाप से जाना।"

"पर एक नाप के कई रिवाल्वर होते है।"

टेगर्ट बोला, "यह तो अदालत मे बहस करने वाली बात हुई। सीधी-सादी बात यह है कि क्रान्तिकारी एक हत्या करते है, जो व्यक्ति मर जाता है, उसके शरीर से एक विशेप नाप की गोली निकलती है। उसी नाप का रिवाल्वर छ-सात दिन बाद क्रान्तिकारी दल की एक सदस्या के पास निकलता है। मैं इस सम्बन्ध मे कुछ नही कर सकता। कानून के रास्ते मे हम दखल नही देगे। माफ कीजिएगा।"

वहा से रुक्मिणी आनन्दकुमार के पास गई। उन्होने सारी बात सुनकर कहा, "बहन, इस मामले मे मै तुम्हारी मानसिक स्थिति की बात अच्छी तरह समझता हू, पर अब जबकि यह बात हो चुकी है, तो इसपर अफसोस करना व्यर्थ है। भारतवर्प एक बडा भारी जेलखाना है, यदि कोई इस बडे जेलखाने से छोटे जेलखाने मे पहुच जाता है, तो इसमे कोई ज्यादा सोच-विचार की जरूरत नही है।"

रुक्मिणी को आज आनन्दकुमार की बातो से भी कोई सात्वना नही मिली क्योकि वह किसी भी तरह इस बात को नही भूल सकती थी कि यदि वह श्यामा को रिवाल्वर देकर न भेजती तो वह इस प्रकार से रगे हाथो गिरफ्तार न होती। इसलिए वह अपने को प्रत्यक्ष रूप से श्यामा की गिरफ्तारी के लिए जिम्मेदार समझ रही थी। हा, दूसरे लोग इस बात को नही जानते थे, पर इससे कुछ आता-जाता नही था। इसके अलावा एक और बात बहुत ही परोक्ष रूप से काटे की तरह चुभ रही थी। वह यह थी कि यह निश्चित था कि श्यामा पर कमसे कम वे ही अत्याचार होगे, जो उसपर हुए थे।

कही श्यामा ने (आखिर वह एक नवयुवती ही थी) इन अत्याचारो के सामने घुटने टेक दिए, तो ? एक क्षण के अन्दर इस घटना की सम्भावनाओ के सरगम के सप्तक पर उसके मन की अंगुलिया जैसे फिर गईं। वह अविनाश आदि के बारे मे बता ही सकती थी, वह त्रिलोचन की आत्महत्या वाली बात बता सकती थी। अवश्य उसमे किसीके विरुद्ध कोई मुकद्दमा नही बनता था, पर बहुत-सी बाते तो सामने आ ही जाती थी। यदि वह त्रिलोचन वाली बात बता दे तो वह निश्चय ही यह भी बताएगी कि इसमे उसने (रुक्मिणी ने)

क्या हिस्सा अदा किया था। खैर, इस बात की कोई परवाह नही। परवाह तो उसे इस बात की है कि कही वह कुणाल कहा है, इस सम्बन्ध मे कुछ न उगल दे। अवश्य इस विषय मे उसे कुछ पता नही, पर कितने स्टेशनो के अन्दर उनका गुप्तस्थान है, यह तो कुछ-कुछ बता ही सकती है। खैरियत यह है कि उसने श्यामा से स्टेशनो का नाम नही बताया। अवश्य उसने पूछा भी नही।

कभी तो रुक्मिणी इस तरह से सोचती और कभी उसे अपने ऊपर लज्जा आती कि वह श्यामा के विषय मे इस तरह से सोच रही है।

ज्यो-ज्यो दिन समाप्त होता जाता था त्यो-त्यो रुक्मिणी व्याकुल होती जाती थी, जैसे बर्फ की सिल्लिया उसीके लिए तैयार हो रही हो। वह अपने ऊपर किए गए अत्याचारो को एक-एक करके सोचती और तडफडाने लगती। मजे की बात यह है कि जब वे अत्याचार उसपर किए गए थे, तब वह इस प्रकार बेचैन नही हुई थी। उसे बल्कि कुछ आनन्द ही हुआ था कि यह सब कष्ट वह कुणाल के निमित्त झेल रही है। कही श्यामा भी उसी तरह झेल पाए तो ? पर जिस तरह कुणाल उसके हृदय मे बसा हुआ है, अफसोस तो यह है कि उस तरह श्यामा के हृदय मे कोई बसा हुआ नही है।"

रुक्मिणी ने आनन्दकुमार से इस सम्बन्ध मे कुछ नही कहा। क्योकि जो विचार उसके मन मे एक के बाद एक आ रहे थे वे किसीको बताने लायक नही थे। आनन्दकुमार को वह कैसे बताती कि श्यामा के सम्बन्ध मे वह यह सोच रही है कि वह मुखबिर भी हो सकती है। कोई प्रेमिक न होने वाली बात भी तो नही बता सकती थी।

इस समय एकाएक उसके मन मे यह बात आई कि क्या राजेन्द्र को इस संबध मे कुछ कहा जा सकता है ? श्यामा के प्रेमिक यहा तक कि भूतपूर्व एक प्रेमिक के नाते नही जनता के एक छोटे-मोटे नेता के नाते ही क्या वह कुछ कर सकता है ? और क्या पता उसके हृदय मे कही पर प्रेम की एक चिनगारी पडी हो, जो इस समय चलने वाली तेज़ हवा से सुलग ही उठे। पर नही, रुक्मिणी को याद आया कि कल उसका चुनाव है, वह उसीके सिलसिले मे व्यस्त होगा।

रुक्मिणी ने सोचकर देखा कि वह स्वयं तो कुछ कर नही सकती थी। इस लिए वह लौटकर अपने उसी कमरे मे पहुची जहा सवेरे वह युवक आया था और श्यामा रिवाल्वर लेकर गई थी।

उसके मामने एक समस्या यह भी थी कि अब वह रहे कहा ? यो तो राय बहादुर तथा रमादेवी उसे बडे सम्मान की दृष्टि से देखते थे, पर श्यामा की गिरफ्तारी से एक खाई तो पैदा हो ही सकती थी। वह इसीपर सोचते-सोचते कुर्सी पर बैठ गई। अभी वह बैठी ही थी कि दरवाजा खोलकर मिस्टर बनर्जी प्रकट हुए।

वे बहुत थके हुए मालूम हो रहे थे और सचमुच हाफ रहे थे। यद्यपि किसीने उनका स्वागत नही किया, पर वे एक कुर्सी खीचकर बैठ गए। बोले, "हम लोगो को कोई नही चाहता, फिर भी हमे एक अवाछित अतिथि की तरह आना ही पडता है। मैं इसलिए आया हू कि मै रायबहादुर साहब का पुराना दोस्त हू, और जहा तक हो सके श्यामा की मदद करना चाहता हू।"

अब तक कई बार पुलिस वालो से साबका पडने के कारण रुक्मिणी इन लोगो के ढंग-ढर्रो से परिचित हो गई थी। उसे यह मालूम हो चुका था कि इन लोगो की भाषा मे मदद करने का अर्थ यह था कि जिसकी मदद करने की बात कही जा रही है, वह स्वजन द्रोह और इस क्षेत्र के देशद्रोह करके सामने आए, तब यह उसकी मदद करेगे।

रुक्मिणी ने मु ह ऐसे बना लिया जैसे कोई कडवी दवा खाई हो, बोली, "रायबहादुर उधर के कमरे मे रहते है·· "

मिस्टर बनर्जी ने कान लगाकर कोई आवाज़ सुनी। बोले, "आपके यहां काफी चूहे मालूम देते है, पुरानी हवेली है, होने ही चाहिए।"

रुक्मिणी ने इसका कोई उत्तर नही दिया।

मिस्टर बनर्जी ने घडी की ओर देखते हुए कहा, "पाच बज रहे हैं, इतना काम पडा है, कल चुनाव भी है, कैसे क्या करू कुछ समझ मे नही आता।"

रुक्मिणी बोली, "बस एक ही तरीका है, नौकरी से स्तीफा दे दीजिए, फिर कोई झझट नही रहेगा।"

मिस्टर बनर्जी हंसे। बोले, "अभी मायामोह मे फंसा हू। पेंशन भी दो-चार साल मे हो ही जाएगी, उसीके बाद वानप्रस्थ अपनाऊगा।"

रुक्मिणी बोली, "शुभस्य शीघ्रम्, क्या पता कल क्या हो ?"

उधर चूहो की आवाज़ हुई, मिस्टर बनर्जी ने उधर देखा। फिर बोले, "अच्छा अब काम की बात की जाए। आखिर श्यामा को यह रिवाल्वर कहां से

मिला। यह तो वही रिवाल्वर है, जिससे एक सिपाही की हत्या एक हफ्ते पहले की गई थी।"

रुक्मिणी बोली, "यह बात तो मिस्टर टेगर्ट भी बता चुके है, कोई नई बात हो तो बताइए।"

"नई बात तो आप ही बता सकती है। मैं जानता हू कि श्यामा आपकी शिष्या है। इसलिए आप उसे जैसी सलाह देगी वह वैसा करेगी।"

रुक्मिणी को इस बात पर बडा क्रोध आया, पर वह ओठ चबाकर बोली, "यह आपकी गलत धारणा है।"

मिस्टर बनर्जी के चेहरे पर थकावट के चिह्न और अधिक प्रकट हुए। वे हैट उठाकर उठ खडे हुए। कमरे से जाते हुए बोले, "मै तो इसलिए आया था कि श्यामा को अनावश्यक पूछताछ की विपत्ति से बचाऊ, पर जब आपकी इच्छा नहीं है, तो मजबूरी है।"

मिस्टर बनर्जी का यह कथन स्पष्ट धमकी के रूप मे था, जिसे सुनकर रुक्मिणी की ऐसी हालत हुई जैसे किसीने उसके चेहरे पर मुगदर से प्रहार किया हो। वह तिलमिला गई पर न तो कुछ कह सकी न कर सकी।

वह कुछ सम्भली थी कि इतने मे आलमारी के पीछे से जिधर से चूहे की आवाज मालूम हो रही थी एक मुस्लिम युवक के वेश मे महेन्द्र प्रकट हुआ। पहले तो रुक्मिणी घबडा गई, पर जब महेन्द्र ने झुककर रुक्मिणी के चरण छुए और एक छुरा निकालकर दिखाते हुए बोला, "मा, तुम चिन्ता मत करो।" तो वह समझ गई।

वह कुछ कह भी नही पाई थी कि महेन्द्र तीर की तरह कमरे से निकल गया।

रुक्मिणी को खुशी हुई। क्या अजीब बात है कि अभी दो घण्टे हुए उसने इसी युवक को इस काम से विरत किया था यहा तक कि उसका रिवाल्वर छीन लिया था, पर अब वह उसी काम के लिए जा रहा था तो उसे खुशी हुई। सवेरे उसके हाथो मे भरा हुआ रिवाल्वर था और इस समय केवल छुरा था, फिर भी रुक्मिणी को कोई शका नही मालूम हुई।

श्यामा को बनर्जी के अत्याचारो से बचाना उसे इतना जरूरी मालूम हो रहा था कि जैसे भी यह काम हो, उसे अच्छा ही लग रहा था। फिर बनर्जी ने

भी तो हद कर दी थी कि वह यहा आकर उसे धमकी दे गया। ऐसे आदमी को कुत्ते की मौत ही मिलनी चाहिए। कुत्ता है, तो कुत्ते की मौत क्यों न हो ? भारतीय होकर वह भारतीय देशभक्तो का गला काट रहा था।

पहली प्रतिक्रिया ऐसी होने पर भी रुक्मिणी को उस सरल नवयुवक के विषय मे भी चिन्ता होने लगी। छुरे से किसीको मारना विशेषकर बनर्जी को, जो कि हर समय चार-छः सिपाहियो से घिरा रहता है, कोई हंसी-खेल थोडे ही है। फिर यदि मार भी लिया तो पकडा जाना तो सुनिश्चित है। यो तो अभी जब बनर्जी यहा आया था तो महेन्द्र उसपर हमला कर सकता था और शायद मारकर बच भी निकलता पर उसने ऐसा केवल इस कारण नही किया कि इससे यहा के लोगो पर विशेषकर रुक्मिणी पर मुसीबत आएगी। यह बात सोचते ही रुक्मिणी का मन उस युवक के विषय मे और भी स्नेहार्द्र हो गया। पर उस हालत मे वह भी एक बात कर ही सकती थी। वह यह कि अदालत के सामने वह यह कह देती कि उसीने बनर्जी की हत्या की है। और क्या ? इस जीवन मे और धरा ही क्या है ? उनको तो किसी दिन पुलिस की गोलियो से मरना या फासी का फदा गले मे डालना ही है। आखिर वे इस शत्रुपुरी मे कब तक बचेंगे।

वह उत्तेजना मे उठकर टहलने लगी। वह कल्पना मे कुणाल के इतने समीप हो गई कि वह हवा को जल्दी-जल्दी सू घने लगी। अरे, यह क्या बात है ? क्या उसकी घ्राणशक्ति उसे धोखा दे रही है ? ऐसा कैसे हो सकता है कि वे इस समय यहा हो। उसने हवा को फिर से सू घा तो मालूम हो गया कि कल्पना की तीव्रता के कारण ही वह गन्ध मालूम हुई थी। कमरे मे तो उस दुष्ट बनर्जी की गन्ध ही हिलोरे ले रही थी। हा, साथ-साथ और भी गन्धे थी।

जाने रुक्मिणी के दिमाग मे क्या आया, उसने उठकर कमरे के सारे जगले खोल दिए, और उत्तेजित होकर टहलने लगी। अब महेन्द्र लौटने वाला नही था। यह सोचते ही उसका गला रुध आया। वह तो अपना ही रोना रोया करती है, पर इन युवको और युवतियो को देखो कि ये लोग सर पर कफन बाधे हुए क्रान्ति का अलख जगा रहे है। श्यामा ! महेन्द्र ! पता नही महेन्द्र का असली नाम क्या है ? यह लोग किसीको अपना असली नाम तो बताते नही। कुणाल, वह हसी। अमिताभ, महेन्द्र। अजीब बात है कि इन लोगो ने सब बौद्ध नाम

क्यो ग्रहण किए है। क्या इसलिए बौद्ध नाम अपनाए गए कि ये लोग 'अहिंसा परमो धर्मः' के विपरीत मार्ग पर चल रहे है या इनमे और बौद्धो मे कुछ अन्तर्निहित एकता है।

रुक्मिणी ने एक पुस्तक उठाई, यह पुस्तक श्यामा की थी। रुक्मिणी ने आवाज के साथ पुस्तक बन्द कर दी और उसे जहा का तहा रख दिया, फिर उसने कमरे मे टगे हुए श्यामा के फोटो को देखा। वह जीवन के रस से किस तरह लबरेज हो रही है, जैसे पूरा तैयार अगूर हो। अगूर और बर्फ की सिल्ली, नगा किया जाना और फिर बर्फ की सिल्ली पर बैठाया जाना। उस हालत मे ऐसा मालूम होता है जैसे मनुष्य बिल्कुल मौत के मुह मे पहुच गया हो। जीवन उत्ताप का नाम है, इसीलिए शायद बर्फ की सिल्ली ही निर्यातन के लिए चुनी गई है।

श्यामा को बर्फ की सिल्ली से बचाना जरूरी है। पर क्या उसके लिए इतना दाम देना उचित होगा जितना कि महेन्द्र देने गया है। महेन्द्र यदि अपने काम मे सफल भी रहा तो पकडे जाने की बहुत भारी सम्भावना है, अन्ततोगत्वा उसे फासी तो होगी ही, पर उसपर निर्यातन तो होगा ही और उसे कम से कम बर्फ की सिल्ली पर तो बैठाया ही जाएगा। महेन्द्र ने तो कमाल ही कर दिया कि वह यहा अलमारी के पीछे छिपा हुआ था, फिर तर्क का कोई मौका न देकर एकदम से फैसला-सा सुनाते हुए कह गया कि मै ऐसा करने जा रहा हू। कुछ रुक्मिणी का दृष्टिकोण भी तो समझ लेता, पर नही, समय कहा था? उसे तो बनर्जी का पीछा करना था। तो क्या जिस समय वह आलमारी के पीछे छिपा हुआ था, उसे यह मालूम था कि बनर्जी यहा आएगा? या वह उससे इस कार्य के लिए आशीर्वाद लेने आया था और जब बनर्जी को आते देखा तो अलमारी के पीछे छिप गया? बनर्जी तो उसे चूहा समझ रहा था। अजीब बात है, चूहा! ब्रिटिश सिंह के लिए सचमुच चूहा है। मुगल भी तो शिवाजी को पहाडी चूहा कहते थे। अभी तो यही परिस्थिति है, अन्त तक कौन सिंह रहता है, और कौन चूहा बनता है, यह तो इतिहास की बात है।

रुक्मिणी ने नौकर से बुलाकर पूछा कि घर मे रायबहादुर या रमादेवी कोई हैं, तो पता लगा कि दोनो बाहर गए हैं। वह समझ गई कि किसलिए बाहर गए हैं। उसी उद्देश्य से बाहर गए होगे। पर होना क्या है? ब्रिटिश सिंह

से यह आशा करना कि वह पजे के अन्दर फसे हुए शिकार को छोड देगा, एक पागलपन है। फिर भी मा-बाप का मन तो नही मानता। इस समय अविनाश कहा है ?

अविनाश भी क्या कर सकता है ? वह तो बल्कि आश्चर्य कर रहा होगा कि श्यामा को अस्त्र कहा से मिला था क्योकि स्थानीय दल ने तो उससे कभी-कभी काम लेने पर भी इस समय तो उसे कोई अस्त्र नही दिया हुआ था।

ऐसा सोचते-सोचते बिल्कुल अधेरा हो गया। वह अब इस नतीजे पर पहुची कि थोडी देर मे आनन्दकुमार के घर पर चलना चाहिए और वहा से मालूम करना चाहिए कि बनर्जी पर हमला हुआ या नही और हुआ तो उसका क्या नतीजा रहा।

उसके मन की परिस्थिति अजीब-सी हो रही थी। वह चाहती थी कि श्यामा उस भयकर निर्यातन से बचे, वह समझती थी कि इसका एकमात्र उपाय यही है कि बनर्जी किसी तरह न रहे, पर उसके लिए वह महेन्द्र को बलिवेदी पर चढाने को तैयार नही थी। महेन्द्र भी तो एक युवक है। बिल्कुल लडका मालूम होता है—उसकी उम्र पच्चीस के लगभग हो सकती है।

रुक्मिणी अब बाहर निकलने की तैयारी कर ही रही थी कि महेन्द्र बडी तेजी से उसके कमरे मे घुसा और एकदम उसके पैरो पर गिर पडा। उठकर बोला, "तुम्हारे चरणो की कृपा से सब काम सफलतापूर्वक हो गया।"

रुक्मिणी ने दरवाजा बन्द करते हुए कहा "क्या हो गया ?"

महेन्द्र बोला, "मै यहा से उसका पीछा करता हुआ गया। मैंने देखा कि दो तगडे सफेदपोश सिपाही उसके आगे-पीछे चल रहे है। मैं मौका तलाशता रहा, लेकिन कही मौका नही मिला। बनर्जी यहां से घर गया फिर थोडी देर मे निकला और घोडागाडी पर सवार होकर कोतवाली की तरफ चला। मै भी एक इक्के पर सवार होकर उसके पीछे-पीछे चला। मै समझ गया कि यह उधर ही जा रहा है। यद्यपि मेरे निश्चय मे कोई कमी नही थी, फिर भी मैं भीतर ही भीतर निराश हो चुका था। मैंने मन मे सोचा कि यह तो घोडागाड़ी से उतरकर कोतवाली मे घुस जाएगा और मै रह जाऊगा।

"मैंने इक्के वाले से कहा कि वह तेज चले ताकि मैं घोडागाडी से पहले पहुच

जाऊ। खैरियत यह हुई कि घोडागाडी का घोडा सुस्त था और इक्का उसके आगे निकल गया।

"कोतवाली के सामने हर समय थोडी-बहुत भीड रहती है, उस समय भी शायद कोई चोर लाया गया था इसलिए कुछ थोडे-से लोग सन्तरी के पास खडे थे। वे जानना चाहते होगे कि आगे चोर का क्या होता है। पुलिस भीड को तितर-बितर करने मे लगी हुई थी, पर कोई सख्ती करने की बजाय मामूली डाट-फटकार से काम ले रही थी। इतने मे मैं इक्के से उतरा।

"मेरा हृदय बैठा जा रहा था क्योकि जिस काम को करने का इरादा लेकर मैं वहा गया था, उसे करना बिल्कुल असम्भव मालूम हो रहा था। घोडागाडी तो जरूर ही कोतवाली के फाटक पर खडी होगी और पाच सेकेण्ड के भीतर बनर्जी भीतर चला जाएगा। इन्ही पाच सेकेडो मे मुझे सारा काम करना था। पकडा तो जाना ही था, उसके लिए मै तैयार भी था। पर पकडा भी गया और काम भी नही हुआ, एकाध खरोच लग गई और वह जीता बच गया तो इससे बढकर शर्म की बात कोई नही हो सकती थी।

"मै खडे-खडे इन्ही बातो पर विचार कर रहा था। इतने मे कोई मामूली-सा अपराधी बंधकर के आया और उसके पीछे-पीछे एक भीड आई। मै सोच ही रहा था कि यह अच्छा हुआ या बुरा हुआ, पर सोचते हुए भी मैं सहजातबुद्धि से उस अपराधी के जुलूस के साथ जाकर कोतवाली के फाटक के पास पहुच गया, इतने मे घोडागाडी भी आ गई। बनर्जी कुछ थका हुआ मालूम हो रहा था।

"मैने जेब के अदर छुरे की मूठ कसकर पकड ली। एकदम उसके सीने मे भोकना था क्योंकि उस जगह पर एक बार से अधिक छुरा चलाने का मौका मिलना असम्भव था। मेरी सारी इच्छा-शक्ति साथ ही शारीरिक शक्ति उस छुरे की मूठ मे एकत्रित थी। मैं बिल्कुल तैयार था। बनर्जी के साथ के सिपाही पहले उतरे, फिर बनर्जी उतरा। कैसे कहू उतरा क्योकि जब उसका एक कदम अभी गाडी पर ही था तभी दो बार ठाय-ठाय की आवाज हुई और साथ ही बनर्जी लुढककर गिर पडा। दोनो गोलिया बिल्कुल उसके सिर मे लगी थी। भगदड मच गई।

"सारी कोतवाली दौड पडी। भीड भी एक मुहूर्त मे तितर-बितर हो गई

और उसके साथ ही साथ छुरा फेककर मैं भी भाग खडा हुआ। अब तो मुझे कुछ करना ही नही था।"

सारी बात सुनकर रुक्मिणी का चेहरा गंभीर हो गया, बोली, "तुमने देखा किसने गोलिया चलाईं ?"

"नही, मैंने नही देखा, पर मै एक ही आदमी को ऐसा जानता हू जो इस तरह गोली चला सकता है।"

रुक्मिणी की भवे कुछ तन गईं, बोली, "वह कौन है ?"

महेन्द्र चारो तरफ देखकर बोला, "दीवार के कान होते है इसलिए मै कुछ नही कहूगा, पर मां तुम समझ गई होगी।"

रुक्मिणी ने मृदु डाट के साथ कहा, "क्या सारे क्रातिकारी दल मे केवल एक ही निशानेबाज है ?"

महेन्द्र बोला, "नही, यह बात तो नही, पर मेरी आत्मा कहती है, ये वही होगे।"

अजीब बात तो यह है कि रुक्मिणी की आत्मा भी यही कहती थी, पर उसने इस बात पर पर्दा डालने के लिए कहा, "दल मे ही अमिताभ आदि बहुत से लोग है, इसके अलावा कोई ऐसा नौजवान भी तो हो सकता है, जिसने तुम्हारी तरह केवल व्यक्ति के रूप मे यह कार्य किया हो।"

"हो क्यो नही सकता, पर इतना सही समय से काम करना, एक मिनट भी पहले से नही, एक मिनट भी बाद को नही, फिर इतना अच्छा निशाना! भीड की मौजूदगी के कारण बनर्जी को गोली मारने के लिए उसका कुछ ऊचे पर होना जरूरी था, नही तो भीड़ मे किसीको लगने का डर था। ये सारी बाते एक उन्हीमे मैने देखी है...।"

"पर तुम तो सवेरे कहने थे कि वे बनर्जी की हत्या के विरोधी है। उन्होने तुमसे यह कार्य करने को मना किया था न ? फिर इतनी जल्दी वे अपनी राय कैसे बदल देते ? फिर तुम तो उन्हे सवेरे कही और छोड आए थे, इतनी जल्दी वे कहा से आ गए, सारी खबर लगाई और फिर यह काम किया।"

"सवेरे से घटनाए भी तो बहुत जल्दी-जल्दी हो रही है। परिस्थिति बदलने पर नीति बदलना बिल्कुल उचित जान पडता है। वे पहले इसके विरोधी इसलिए थे कि आप पर अत्याचार हुआ था और वे अब तक यह समझ रहे थे कि केवल

इसके लिए बनर्जी को सजा देना सम्भव है एक हद तक वैयक्तिक बदला चुकाना हो, पर अब श्यामा की गिरफ्तारी के बाद वैयक्तिक बदले का कोई प्रश्न नही था।"

महेन्द्र ने जो बाते कही, उनमे से प्रत्येक शब्द ऐसा था, जिससे रुक्मिणी सहमत थी, बोली, "अच्छा तुम जाओ। अब यहा न आना।"

महेन्द्र जाने को तैयार हो गया, बोला, "जाता हू, पर परिस्थिति आने पर फिर आऊगा।"

कहकर उसने चरण छूकर विदाई ली। वह कमरे से निकला ही था कि रुक्मिणी स्वयं कोतवाली जाने को तैयार हुई। कोई अदृश्य शक्ति उसे खीच रही थी। उसने बाहर निकलकर हवा को सूघा, फिर वह रवाना होगई।"

इतने मे पीछे से आकर रायबहादुर के नौकर ने बहुत खुशी-खुशी कहा, "सुना आपने ? बनर्जी जो आपको धमकिया देकर गया था, वह मारा गया। उसके माथे पर दो गोलिया लगी।"

रुक्मिणी ठिठककर खडी हो गई, बोली, "मारनेवाला पकडा गया ?"

"नही, वह पकडा नही गया; हा उसका छुरा पुलिस को कोतवाली के सामने पडा मिला है।"

"पर तुमने तो कहा गोलिया लगी है ?"

"हा, पर मारने वाले के पास छुरा भी रहा होगा।"

रुक्मिणी ने पूछा, "लोगो का क्या कहना है कि मारनेवाला कैसे भागा ?"

नौकर ने जहा तक सुना था, वहा तक बता चुका था। पर इससे आगे जब प्रश्न पूछा गया तो वह नही दिखाना चाहता था कि उसे नही मालूम, इसलिए कल्पना से काम लेते हुए बोला, "अरे वह कोई मामूली आदमी होते है। हवा मे उड गया होगा।"

इतने दुःख मे भी रुक्मिणी को हसी आगई, बोली, "जब उन लोगो को उड़ना आता है तो तुम्हारी मिसी बाबा (श्यामा) पकड कैसे गई ?"

नौकर इससे बिल्कुल विचलित न होकर बोला, "यह तो सब लीला है। वह पकडी न जाती तो बनर्जी मारा कैसे जाता ' "

इसके बाद उसने सीता के वन-गमन के सम्बन्ध मे कुछ कहा, पर रुक्मिणी आगे बढ गई। वह वहा से सीधे कोतवाली पहुची। रात कोई ऐसी अधिक नहीं

हुई थी, पर आसपास बिल्कुल सन्नाटा छाया हुआ था। उसने जल्दी-जल्दी सास ली तो उसकी घ्राण शक्ति ने आत्मा की बात का समर्थन किया, वह थर-थर कापने लगी। उसे सब गधो मे एक गध स्पष्ट मालूम पड रही थी। एक बार तीव्र इच्छा हुई कि वह उस गंध का अनुसरण करे, पर उसे स्मरण आया कि वह तो प्रतिज्ञाबद्ध हो चुकी थी कि ऐसा न करेगी। इसलिए वह उसी समय जो भी घोडागाडी मिली उसीमे बैठ गई।

घोडागाडी वाले को पैसे देते समय रुक्मिणी ने कहा, "पैसे गिन लो।"

पर घोडागाडी वाला अप्रत्याशित रूप से बोला, "आज तो पैसे न भी दे तो कोई बात नही, आज इतनी बडी खुशी है कि शहर मे रेवाडिया बट रही है।"

रुक्मिणी ने आवाज नीची करके पूछा, "क्या चुनाव मे काग्रेस की जीत हुई है ? पर चुनाव तो कल है।"

घोडागाडी वाला बोला, "वह खुशी तो कल होगी ही, पर आज वह मर-दुआ मारा गया है। मै तो सिर्फ और खबर जानने के लिए कोतवाली के पास गाडी लेकर खडा था, नही तो इस खुशी मे घोडा खोल देता।"

रुक्मिणी ने पूछा, "मारने वाला पकडा गया।"

"उसे पकडने वाला अभी पैदा नही हुआ है।"

रुक्मिणी का कलेजा बल्लियो उछल पडा, आखो मे लगभग आनन्दाश्रु आ गए। बोली, "और कोई खबर मिली ?"

"वह लडकी जो सवेरे पकडी गई थी जेल भेज दी गई और उसके लिए जो बर्फ की सिल्लिया मगाई गई थी, उन्ही पर बनर्जी की लाश को रखा गया है।"

"तो क्या उसके जीने की कोई आशा है ?"

"नही, वह तो मरकर भूत हो चुका, पर उसके सिर से गोलिया निकाली जाएगी, उनका नम्बर देखा जाएगा, यही सब हो रहा है। मैं फिर अब वही जा रहा हू।"

रुक्मिणी सारी बातो को सुनकर अजीब हर्ष-विषाद मे पड गई। कभी वह एक बात सोचकर खुश होती, तो दूसरी बात सोचकर दुखी होती। उसे गर्व हो रहा था कि उसकी गलती के कारण श्यामा पकडी गई जरूर, पर उसीके पति ने उस गलती को वहां तक सुधारा जहा तक कि उसे सुधारना मनुष्य के वश में था। श्यामा ने अवश्य ही बनर्जी की हत्या की बात सुनी होगी। बहुत अच्छा

हुआ कि वह जेल भेज दी गई और पुलिस वालो के बर्बर निर्यातन से कम से कम इस समय तो बच गई ।

२९

दो दिन बाद अखबारो मे स्वराज्य दल के प्रमुख-प्रमुख उम्मीदवारो की कहानी छपी, साथ ही बनर्जी की हत्या के बारे मे एक समाचारपत्र मे और खबरे छपी थी । विशेष सम्वाददाता ने यह लिखा था कि लगभग एक पक्ष पहले पार्क के दरवाजे पर जो हत्या हुई थी, उसके साथ बनर्जी की हत्या का बहुत प्रत्यक्ष सम्बन्ध स्थापित हुआ है । पार्क मे कुणाल और एक व्यक्ति और था जो असल मे पुरुष के वेश मे श्यामा थी । श्यामा काशी के एक मुहल्ले मे कई दिन बाद उसी रिवाल्वर और छः फालतू कारतूसो के साथ गिरफ्तार हुई थी । इस गिरफ्तारी मे मिस्टर बनर्जी का हाथ था । कुणाल ने इसका बदला लेते हुए बनर्जी की हत्या कर डाली ।

रुक्मिणी ने जब सम्वाददाता लिखित यह खबर पढी, तो उसे बहुत क्रोध आया । ये लोग एक राजनीतिक घटना को कैसे एक मालूमी निजी से रोमांस की घटना मे परिवर्तित कर देते है और इसीको पत्रकारिता का नाम देते है । रुक्मिणी ने उठकर आइने के सामने खड़ी होकर अपना चेहरा देखा और फिर पहले से अधिक नाराज होकर आनन्दकुमार के पास पहुची ।

आनन्दकुमार ने सारी खबरे सुनी और पढी थी, और वे बहुत चिन्तित थे। बनर्जी की हत्या से जनता मे जो खुशी की लहर दौड गई थी, उससे भी वे परिचित थे । जब उन्होने रुक्मिणी को देखा तो उनकी समझ मे नही आया कि कहा से बात शुरू की जाए । यद्यपि किसी ने बनर्जी के घातक को नही देखा था, पर आमतौर से जनता मे लोग यह कहते थे कि यह कुणाल का ही कार्य है ।

आनन्दकुमार जानते थे कि कुणाल की इस प्रकार की ख्याति अच्छी नही है और वे यह भी जानते थे कि इससे रुक्मिणी की चिन्ता और बढी होगी । उन्होने जानबूझकर रुक्मिणी को बनर्जी की हत्या या क्रान्तिकारियो के विषय

मे कोई बात छेडने नही दी ।

जो चुनाव हुआ था, उससे दो प्रान्तो मे यानी मध्यप्रान्त और बगाल मे स्वराज्य दल अपने यहा की व्यवस्थापिका सभाओ मे इतनी अधिक सख्या मे पहुच चुका था कि उसके सदस्यो की बहुसख्या हो गई थी। आनन्दकुमार ने इसीका विश्लेषण करते हुए कहा, "केवल दो प्रान्तो मे हमारा बहुमत स्थापित हो चुका है । ऐसी हालत मे हम कहा तक कौसिलो को खतम कर सकेंगे या सुधार सकेंगे, इसमे सन्देह है । जिन प्रान्तो मे हमारी बहुसख्या स्थापित नही हो सकी, उनमे तो हम हल्ला-गुल्ला चाहे जितना कर ले, पर असरदार तरीके से हम कुछ नही कर सकते । बाकी जिन दो प्रान्तो मे हमारी बहुसख्या हो गई है, उनके नेताओ मे भी मतभेद मालूम होता है । बगाल वाले तो इस बात पर तुले हे कि वे किसी भी हालत मे मन्त्रिमडल नही बनाएगे और हर बात मे अड़गे-बाजी करेगे । पर मध्यप्रान्त वाले चाहते है कि मन्त्रिमडल बनाए और सरकार के अन्दर पहुचकर वहा से अडंगा लगाएं ।"

रुक्मिणी को ये सारी बातें मालूम थी क्योकि वह सवेरे के अखबार मे सारी बाते पढ चुकी थी । वह तो कुछ ऐसी बाते सुनना चाहती थी, जिससे उसके मन को शान्ति मिले । बोली, "तो इसके माने यह हुए कि क्रान्तिकारी तरीका ही एकमात्र तरीका है···"

आनन्दकुमार ने उसके चेहरे की ओर देखा, फिर नरमी के साथ बोले, "हा एक उपसहार तो यह निकलता है, पर दूसरा भी एक तगडा उपसंहार निकलता है । वह यह कि काग्रेस को फिर से असहयोग की नीति यानी जेल जाने वाले कार्यक्रम को उठाना पडेगा । यदि हम सब प्रान्तो की कौसिलो मे अपनी बहुसख्या स्थापित कर सकते, तो बात और होती, पर इस परिस्थिति मे हम बहुत ज्यादा नही कर सकते, हमारे पास मोतीलाल ऐसे धुरधर और प्रतिभा-शाली लोग है, पर बकझक से कभी राज्य छीना नही जा सकता, हा कुछ छोटी-मोटी रियायतें प्राप्त की जा सकती है । वे तो उस जमाने मे भी प्राप्त की जाती थी, जब कि काग्रेस केवल बड़े दिन के अवसर पर इकट्ठा होकर नौकरी मागने वालो की एक सस्था थी ।"

रुक्मिणी ने अप्रत्याशित रूप से कहा, "कही महात्मा जी बनर्जी की हत्या की निन्दा करते हुए कोई वक्तव्य तो नही निकालेगे ?"

आनन्दकुमार ने इस विषय पर भी सोचा था। गत दो दिनो से अखबार मे विशेषकर जनता मे जो महत्व इस घटना को दिया जा रहा था, उससे इस ओर महात्मा जी की दृष्टि आकर्षित होना स्वाभाविक था। बोले, "मै नही समझता कि वे अपने से कोई बयान देगे, पर किसीने पूछ लिया तो अवश्य ही इसकी निन्दा करेगे। जब उन्होने चौरीचौरा की निन्दा की, यहा तक कि आन्दोलन रोक दिया, तब तो इसकी निन्दा और भी जोरो से करेगे, क्योकि यह तो पहले से सोचकर किया हुआ कार्य है।"

"क्या इस प्रकार से निन्दा करने से परोक्ष रूप से क्रान्तिकारियो के विरुद्ध की गई सख्तियो का समर्थन नही होता ?"

"ऐसे देखो तो चौरीचौरा काण्ड की निन्दा सारी जनता की निन्दा कही जा सकती थी, पर उसे इस रूप मे किसीने नही लिया, फिर जो लोग फासी के फदे की परवाह किए बिना काम करते है उन्हे निन्दास्तुति से क्या मतलब ?"

रुक्मिणी इस उत्तर से खुश नही हुई। वह कुछ कहने ही जा रही थी कि इतने मे आनन्दकुमार को एक बात याद आई, बोले, "एक अजीब खबर मिली है, जिससे पुलिस वालो मे बडी खलबली मच गई है, बनर्जी की हत्या से इतनी खलबली नही मची। मिस्टर टेगर्ट और स्मिथ इसपर पागल हो गए हैं। उनका कहना है कि अगर ऐसी बाते होती रही तो ब्रिटिश साम्राज्य की खैरियत नही है। बनर्जी की हत्या तो बाहरी लोगो ने की, पर यह घटना सूचित करती है कि सरकारी नौकरो मे भी लोग क्रान्तिकारियो से सहानुभूति रखते है।"

रुक्मिणी ने पूछा, "साधारण लोग क्रान्तिकारियो से बहुत अधिक सहानुभूति रखते हैं।" कहकर उसने उस तागे वाले की बात सक्षेप मे सुनाई, फिर बोली, "आपने वह घटना तो बताई नही।"

तब आनन्दकुमार ने बताया, "श्यामा के पास से जो रिवाल्वर और कारतूस बरामद हुए थे, वे पुलिस के मालखाने से गायब हो गए। इसपर बडे सरकारी अफसर बहुत घबराए हुए है। सुना है टेगर्ट ने यह कहा कि जब माल गायब हो गया, तब आदमी गायब होने मे कितनी देर लगती है ? श्यामा पर पहरा बढा दिया गया है।"

रुक्मिणी के मन मे एक ही मुहूर्त के अन्दर बहुत-सी बाते बिजली की तरह कौंध गईं। मालखाने से रिवाल्वर गायब करना, यह कुणाल का काम

नही हो सकता, तो क्या महेन्द्र ने·· ? या और किसीने यह काम किया ?

आनन्दकुमार बोले, "टेगर्ट महाबेवकूफ है, इसलिए उसने पहरा बढवा दिया, जब माल गायब हो गया तो श्यामा को जेल के भीतर रख कौन सकता है ? जिसने माल गायब किया, उसने यही सोचकर किया होगा कि श्यामा के विरुद्ध कोई मुकदमा ही न बने और उसने ठीक ही सोचा, अब सरकार श्यामा को किसी भी हालत मे भीतर नही रख सकती, हा नजरबन्द कर सकती है, जैसे कि बगाल आर्डीनेन्स मे किया है, पर एक स्त्री को नजरबन्द करने के पहले सरकार कई दफा सोचेगी ।"

"क्या आपका ख्याल है कि यह काम किसी मास्टर माइड का किया हुआ है ?"

आनन्दकुमार ने हसकर कहा, "मास्टर माइड कई दफे स्वय काम नही करता, वह अपना काम किसी और से करवाता है । इसके अलावा मेरे दिमाग मे और एक बात आती है ।"

"वह क्या ?"

"अनुमान ही है, इसलिए हिचकिचा रहा हू । मेरा ख्याल है कि बनर्जी वाली घटना के बाद वह नौजवान कुणाल से मिला होगा और अपनी भूलो के लिए पछतावा जाहिर किया होगा । पर जहा तक मै समझ सकता हू, कुणाल ऐसे व्यक्तियो के निकट भूलो की क्षमा नही है, हा प्रायश्चित है, इसलिए उन्होने उससे कहा होगा कि तुम्हारी वजह से दल के हाथ से वह हथियार गया, अब तुम्हारा कर्तव्य है कि किसी तरह उस हथियार को वापस कराओ । बस, वह प्राणो की बाजी लगाकर इस काम मे कूद पडा होगा । यह मेरी कल्पना कह लो, अनुमान कह लो, है ।"

"आपने अनुमान बहुत अच्छा लगाया, सम्भव है सारी बाते ऐसे ही हुई हो जैसे आपने बताया, पर आपकी कल्पना मे हृदय वाले उपादान का कोई स्थान नही दिखाई पडता ।"

आनन्दकुमार एक क्षण तक चुप रहे, फिर बोले, "हा, किसीकी वजह से कोई स्त्री फस जाए तो उसको अनुताप होना स्वाभाविक है, विशेषकर ऐसे उच्च आदर्श वाले युवको के लिए ।"

रुक्मिणी यह खबर रायबहादुर को देना चाहती थी, क्योकि अपने ढग से

वह भी अपने को दोषी समझती थी। अवश्य रायबहादुर को यह नही मालूम था कि उसकी आज्ञा से ही श्यामा रिवाल्वर लेकर गई थी, फिर भी वह यह खबर उन्हे पहले देना चाहती थी। शायद उसमे कुछ यह भी बात हो कि वह उस घर मे रहती थी। बोली, "आपने रायबहादुर को यह खबर दी ?"

"मै देना तो चाहता था, पर यह खबर टेलीफोन से देने लायक नही थी क्योकि फिर यह सवाल उठ सकता था कि मुझे यह खबर कैसे मिली ? अब तुम्ही इस खबर को दे देना। खबर पक्की है।"

"क्या मैं यह कहू कि आपने यह खबर बताई है ?"

"कोई ज़रूरत नही, मैने इसकी कापीराइट नही करवाई है, फिर जैसा तुम समझो।"

रुक्मिणी फौरन ही उठकर रायबहादुर के घर की तरफ चल पडी। पर वहा तो सारे मकान को पुलिस ने घेर रखा था और उसने भीतर जाना चाहा तो उसे रोक दिया गया। उसने कहा कि मैं इसी घर में रहती हू, तब बडी मुश्किल से तलाशी लेकर उसे भीतर जाने दिया गया।

रायबहादुर इस तलाशी से बहुत दुखी थे। उन्होने अब तक सारी बाते धैर्य के साथ सही थी, पर यह घटना उन्हे वैयक्तिक अपमान-सी मालूम हुई। रुक्मिणी को देखकर वे खुश नही हुए, फिर भी उनकी स्वभाव-सिद्ध भद्रता मे कोई फर्क नही आया।

रायबहादुर ने कहा, "पता नही क्यो यह तलाशी हो रही है, शायद ये समझते हो कि हमारे यहा रिवाल्वर और कारतूस बनाने का कोई कारखाना है।"

रुक्मिणी बोली, "नही यह बात नही।"

"फिर क्या बात है ?"

रुक्मिणी ने कोई उत्तर नही दिया। उस समय सामने एक पुलिस का छोटा अफसर खडा था, पर जब वह हट गया तो वह बोली, "श्यामा के पास से जो हथियार बरामद हुआ था, वह मालखाने से गायब हो चुका है, इसलिए ये लोग यह देखने आए है कि कही वह चीज यहा तो नही आ गई।"

रायबहादुर इस खबर की सारी सम्भावनाओं को फौरन समझ गए और खुश होते हुए बोले, "बेटी, तुम बड़ी बुद्धिमती हो, बड़ा अच्छा हुआ।"

इतने मे पुलिस का वह अफसर इधर आ गया। रुक्मिणी ने व्यंग से कहा, "कहिए दारोगा साहब ! आप जो चीज ढूंढ रहे है, वह मिली ?"

दारोगा बोला, "यहा नही मिली तो कही और मिल जाएगी। आपको मालूम है कि ब्रिटिश साम्राज्य मे सूर्यास्त नही होता।"

रुक्मिणी बोली, "हा, पर जल्दी ही अस्त होने वाला है।"

थोडी देर और तलाशी लेकर पुलिस वाले निराश होकर खाली हाथ चले गए।

३०

घटनाए बहुत तीव्र गति से घटित हो रही थी। आनन्दकुमार ने जो बात कही थी, वही सब चिन्तक भी सोच रहे थे कि यह कौसिल-प्रवेश का कार्यक्रम एक हद तक ही चल सकेगा। इससे सरकार के लिए कोई समस्या पैदा नही होगी। गाधी जी भी इस बात को समझते थे, इसलिए उन्होने स्वराज्य दल को सब प्रकार से सहायता दी और यद्यपि सब काग्रेसी इस दल के पक्ष मे नही थे और वे खुल्लम-खुल्ला यह कहते थे कि उनके इस कार्यक्रम मे माडरेटो की ही विजय दिखलाई देती है, फिर भी स्वराज्य दल का सारा काम काग्रेस के ही नाम से हो रहा था। कौसिल-प्रवेश के मामले मे स्वराज्य दल माडरेटो की तरह होने पर भी उसका दृष्टिकोण बिल्कुल ही भिन्न था। इस तथ्य को कथित अपरिवर्तनवादी लोग नही समझते।

बगाल मे बाद को चलकर खुला, स्वराज्य दल और क्रान्तिकारी दल बहुत कुछ एक साथ काम कर रहे थे। उनके इस सहयोग का सूत्रपात दीनाजपुर के बगाल प्रान्तीय सम्मेलन से ही वल्कि उसके पहले से ही हुआ था, जिसमे स्वराज्य दल के महान् नेता चित्तरजनदास ने शहीद गोपीमोहन साहा के साहस की तारीफ करते हुए एक प्रस्ताव पास किया था। गोपीमोहन साहा उस युवक का नाम था जिसने सर चार्ल्स टेगर्ट नामक गुप्तचर पुलिस के प्रधान

पर हमला किया था, पर उसने गलती से अर्नेस्टडे नामक एक अंग्रेज की हत्या कर डाली।

इस प्रस्ताव पर बाद को बहुत तर्क-वितर्क हुआ था और महात्मा जी ने इस प्रस्ताव की निन्दा भी की थी। इन बातो के बावजूद बगाल मे स्वराज्य दल और क्रान्तिकारी दल बहुत कुछ मिलकर काम कर रहे थे।

दूसरे प्रान्तो मे भी दोनो दलो मे कोई विरोध नही था। इस सहयोग के बहुत-से कारण बताए गए है। एक कारण यह था कि क्रान्तिकारियो की प्रशसा करने से स्वराज्य दल की जनप्रियता बढती थी। क्रान्तिकारी दल को स्वराज्य दल मे यह दिलचस्पी थी कि उनके जरिए से जेल मे गए हुए साथियो आदि के बारे मे कौसिल मे प्रश्न आदि पूछे जा सकते थे। भविष्य मे इतिहासकार इन बातो को देखे तो वह मानने के लिए विवश होगा कि महात्मा गाधी जिस प्रकार से राजनीतिक कार्यकर्ताओ को हिसावादी और अहिसावादी दो भागो मे बाटना चाहते थे, वह बटवारा केवल उनकी कल्पना मे ही था।

आनन्दकुमार और रुक्मिणी इन गूढ राजनीतिक गुत्थियो को सुलझा रहे थे कि राजेन्द्र ने आकर पहले तो यह बताया कि वह चुनाव मे विजयी हुआ है। फिर उसने यह बताया कि श्यामा छोड दी गई है।

पहली खबर तो ऐसी थी कि उसमे श्रोताओ को विशेष दिलचस्पी नही थी क्योकि इस खबर मे खबरत्व कुछ नही था। वोट पडने के दिन ही पता लग गया था कि राजेन्द्र अत्यधिक बहुसख्या से जीतेगा फिर भी दोनो ने औपचारिक रूप से उसको बधाई दी और रुक्मिणी श्यामा से मिलने के लिए चल पडी।

पर अपने कमरे के दरवाजे पर पहुचकर उसने जो दृश्य देखा, उससे वह यह नही समझ पाई कि उसका भीतर प्रवेश करना उचित है या नही। पर लौटने का भी कोई रास्ता नही था।

श्यामा और महेन्द्र बड़े मजे में बाते कर रहे थे, ऐसे बाते कर रहे थे जैसे अभी पिकनिक पर से लौटे हो। दोनो के चेहरे खुशी से जगमगा रहे थे और उनके स्वर मे विजयोल्लास था। रुक्मिणी को देखकर दोनो दौड पडे, महेन्द्र ने हमेशा की तरह पैर छुआ और श्यामा उससे लिपट गई।

यह पता नही चलता था कि इस बीच मे इतनी बडी घटना हो गई और इन घटनाओ से दोनो का बड़ा घनिष्ठ सम्बन्ध था। रुक्मिणी भी खुशी की

लहर मे बह गई क्योंकि वह यह अनुभव कर रही थी कि न सही कुणाल, पर वह कुणाल ही का परिवार तो है। परिवार का प्रधान व्यक्ति परोक्ष मे रहता है, इसका यह अर्थ नही है कि वह न हो। वह सब कुछ देख रहा है, सब कुछ सुन रहा है, सब कुछ अनुभव कर रहा है, पर ऊपरी व्यवहार ऐसा रखता है मानो वह विक्टोरिया पार्क के पत्थर की मूरत जैसा हो। कभी-कभी उसके चिन्तन की धारा बहुत ही तेजी के साथ प्रवाहित होती है। बनर्जी की हत्या के दिन कितनी जल्दी सारा काम हुआ कि महेन्द्र की मुट्ठी मे छुरा रह ही गया और फिर मालखाने से रिवाल्वर गायब करना, यह कितनी बडी सूझ और साथ ही कितनी प्रकाण्ड सगठनशक्ति की सूचना देता है।

पुलिस वालो को भी धन्यवाद देना चाहिए कि उन्होने इस मामले मे इतनी जल्दी काम किया और जो अनिवार्य है उसे मान लिया।

पहले श्यामा ही बोली, "मुझे उन लोगो ने छोड तो दिया, पर पीछे-पीछे खुफिया भी लगा दिया। अब क्रान्तिकारी दल की दृष्टि मे मै बिल्कुल बेकार हो गई।"

महेन्द्र हसकर बोला, "हमारे दल का अजीव ही हिसाब-किताव है, जो नामी हो गया वह बेकार हो गया क्योकि न तो वह अस्त्र-शस्त्र ले जा सकता है, न घर मे कुछ रख सकता है और जिससे वह मिले, वही दागी हो जाए।"

रुक्मिणी बोली, "तुमने मानो उस पुरानी कहावत को दूसरे शब्दो मे रख दिया 'नामी साव कमाय खाय, नामी चोर मारा जाय।'"

महेन्द्र बोला, "हा वर्तमान शासन मे हम लोग चोर से अधिक हैसियत नही रखते क्योकि इसमे तो 'मकाँ के मालिक मकाँ के बाहर पडे हुए हैं।'"

श्यामा बोली, "मेरा ख्याल है कि पेच मे पडकर पुलिस ने मुझे छोड तो जरूर दिया, पर अभी वे किसी बात की प्रतीक्षा कर रहे है।"

महेन्द्र बोला, "प्रतीक्षा वे इस बात की कर रहे है कि रिवाल्वर मिले, तो फिर से मुकदमा चलाया जाए और अबकी बडे भारी षड्यन्त्र के रूप मे मुकदमा चले।"

रुक्मिणी बोली, "कोई कारण नही कि उनकी इच्छा पूर्ण हो, अभी तक तो उन्हे मात पर मात खानी पड़ी है, आगे कुछ और होगा ऐसा समझने का कोई कारण नही है।"

रायबहादुर और रमादेवी भी वहा आ गए। इन दोनो ने महेन्द्र को पहली बार देखा था, इसलिए रुक्मिणी ने परिचय कराते हुए कहा, "यह मेरे भाई लगते है।"

रायबहादुर बोले, "जैसा कि आनन्दकुमार ने कहा था आदम और हौवा के नाते सब लोग भाई और बहन है।"

रायबहादुर कभी इस कमरे मे नही आते थे, इसलिए उनके आने का कोई विशेष कारण है, यह सब लोग समझ गए और उसी बात के कहे जाने की प्रतीक्षा करने लगे। पर वे तो यो ही आए थे, बोले, "मैं काफी बुड्ढा हो गया हू इसलिए सभी बातो के समझने का दावा नही करता, पर मै इतना जानता हू कि जब दूसरा पक्ष बहुत बुद्धिमान है, तब हमे भी फूंक-फूंककर कदम रखना चाहिए। बहादुरी अच्छी चीज है, पर बहादुरी का भी पूरा उपयोग होना चाहिए।"

रुक्मिणी बोली, "सिद्धान्त के तौर पर आपकी बात बिल्कुल सही है, पर कुछ ऐसी अजीब बात है कि शक्ति का एक हिस्सा ही अभीष्ट कार्य मे लग पाता है, बाकी हिस्सा बेकार जाता है।"

रायबहादुर ने कहा, "ठीक है। अच्छा एक बात है जिसके लिए मैं आया, वह यह है कि मैं अब रायबहादुरी की उपाधि का त्याग कर रहा हूं। तुम लोगो की क्या राय है ?"

सब लोग इसपर इतने खुश हुए कि उछल पडे और श्यामा तो जाकर अपने पिता से बिल्कुल लिपट गई। रुक्मिणी प्रथम उच्छ्वास के बाद एकाएक शान्त होती हुई बोली, "इससे पता चलता है कि हवा किधर को बह रही है। अब मुझे पूरा विश्वास हो गया कि इस अभागे देश का कुछ न कुछ होकर रहेगा।"

श्यामा बोली, "इसके उपलक्ष्य मे जबर्दस्त दावत होनी चाहिए।"

रायबहादुर ने कहा, "और एक बात। राजेन्द्र के पिता राजकिशोर बाबू ने फिर से शादी का प्रस्ताव रखा है।"

श्यामा ने पूछा, "किसकी शादी ?"

रुक्मिणी तो समझ गई, क्या बात है, पर महेन्द्र नही समझा, फिर भी उसका चेहरा एक अज्ञात आशका से म्लान पड गया।

रमादेवी बोली, "तेरी शादी।"

श्यामा एकाएक गम्भीर होकर बोली, "मुझे इस शादी मे कोई दिलचस्पी नही है और मैं हमेशा के लिए राजेन्द्र बाबू से सम्बन्ध तोड चुकी हू। इस सम्बन्ध मे और बातचीत न हो, तो अच्छा है।"

रायबहादुर थोडी देर तक बैठकर चले गए, पर उनके आने से जो गाम्भीर्य आ गया था, वह कायम रहा। महेन्द्र ने कहा, "अब मै चलता हू।"

रुक्मिणी बोली, "अबकी बार तो तुम मेरे अतिथि नही बल्कि श्यामा के अतिथि बनकर आए हो, इसलिए कुछ खाकर ही जाओ।"

श्यामा ने भी कहा, "मैं इनको जाने कब दूगी। इनकी वजह से मैं एक बार जेल हो आई, यदि ये मेरी वजह से एक बार जेल हो आए, तभी बदला चुकेगा। इतना तो हक मुझे हो ही गया।"

महेन्द्र बोला, "मैं आपके इस हक को मानता हू, पर आपको छुडाने के लिए जो बाते हुई, मुझे छुडाने के लिए वे बाते शायद सम्भव न हो।"

"तो क्या आपको कुछ अफसोस है ?"

"मैंने तो कुछ किया ही नही। इसलिए मेरे अफसोस की कोई बात नही उठती।" —कहकर उसने आखो-आखो मे रुक्मिणी से अनुमति लेकर वह सारी बात कह सुनाई कि किस प्रकार उसने छुरा लेकर बनर्जी का पीछा किया था और ऐन मौके पर कोई और शिकार ले गया।

श्यामा ने छूटते ही पूछा (यद्यपि उसे ऐसा पूछना नही चाहिए था,) "आपका शिकार छीनने वाला कौन था ?"

रुक्मिणी ने जोर से महेन्द्र को आखे तरेर दी, बोला, "कोई भी हो सकता है, सम्भव है कोई मामूली अपराधी हो, क्योकि बनर्जी ने बहुत दिनो तक क्रिमिनल-ब्राच मे भी काम किया है और सम्भव है कि किसीने बदला निकाला हो।"

श्यामा समझ गई कि महेन्द्र दल के नियमानुसार पूरी बात नही बता रहा है, वह कुछ हद तक क्षुब्ध भी हुई, पर जल्दी ही प्रफुल्ल होकर बोली, "तो उस दिन छुरा लेकर आपको जिस हीनता का बोध हुआ, शायद उसे दूर करने के लिए आप ही ने मालखाने से अपनी चीज ले ली।"

महेन्द्र बोला, "यदि मै ऐसा कर सकता तो मुझे बहुत खुशी होती पर

अफसोस है कि मुझे यह बात सूझी तक नही।"

खाने की चीजे आ चुकी थी। श्यामा ने कहा, "क्रान्तिकारियो के लिए सत्यभाषण कोई जरूरी गुण नही है, अब मै आपसे सत्य का और अपलाप नही कराऊगी। अब आप निश्चिन्त होकर भोजन कीजिए।"

थोडी देर मे महेन्द्र खा-पीकर चला गया और जाते समय कह गया, "अब शायद जल्दी भेट न हो क्योकि मुझे कोई कठिन ड्यूटी दी जाने वाली है।"

दोनो महिलाओ ने उसे बहुत भावुकता के साथ विदाई दी। रुक्मिणी बोली, "तुम लोग एक-एक करके चले जाते हो और जीवन मे केवल अधेरा छूट जाता है।"

रुक्मिणी क्या कह रही थी, इसे महेन्द्र समझ गया। बोला, "दुर्भाग्य से आलोक का नियम ही यह है कि वह अपने बाद अधेरा छोड जाता है, पर मै तो एक जुगनू हू, फिर आपके पास श्यामा जी तो रह ही जाएगी, जो एक विख्यात क्रान्तिकारिणी बन चुकी है।"

महेन्द्र तो चला गया, पर अक्सर दोनो महिलाओ मे महेन्द्र पर बातचीत होती। दोनो अपने-अपने मन मे बिल्कुल निश्चित थी कि मालखाने से माल गायब करने वाला महेन्द्र ही हे। पर वे एक दूसरे से परस्पर इस सम्बन्ध मे कोई चर्चा नही करती थी। ऐसा न करने का कारण दोनो क्षेत्रो मे भिन्न था।

अब श्यामा ने एक दिन वह बात कह ही डाली जिसका रुक्मिणी को बहुत भय था। रुक्मिणी जानती थी कि वह बात आ रही है, इसलिए जब भी दोनो इकट्ठा बैठती थी, तो रुक्मिणी एक के बाद एक बात छेडती जाती थी ताकि श्यामा को कोई बात छेडने का मौका ही न मिले। फिर भी वह मौका श्यामा को मिल ही गया।

एक दिन रुक्मिणी कह रही थी, "चुनाव हुए तो काफी दिन हो गए, पर कुछ होता-जाता नही दीखता है, ऐसा दीखता है, जैसे ब्रिटिश सरकार ने एक खिलौना देकर नेताओ को बहला दिया ··।"

"मैंने यही बात आनन्दकुमार से कही थी तिसपर वे बोले, यह बात ठीक है कि मा-बाप बच्चो को खिलौना देकर बहलाते है, पर बच्चा उन्ही खिलौनो के जरिए से अपने हाथो-पैरो मे ताकत पैदा करता है और जीवन-सग्राम के लिए तैयार होता है।"

रुक्मिणी बोली, "ठीक है, पर इसके माने यह हुआ कि खिलौना केवल एक सोपान है, उसके बाद दूसरी चीजे आती है।"

"हा, यह तो है ही। आनन्दकुमार जी भी यह आशा करते है कि स्वराज्य दल के नेता कुछ दिनो के बाद व्यवस्थापिका सभाओ के रूप मे दिए हुए खिलौनो से ऊब जाएगे, इसीलिए गाधी जी ने स्वराज्य दल को काग्रेस के साथ रखा है।"

थोडी देर तक कोई कुछ नही बोला, फिर श्यामा बोली, "दीदी, तुम पूरी सदस्या क्यो नही बन जाती ?"

रुक्मिणी समझ तो गई कि वह क्या कह रही है, पर समय पाने के लिए उसने कहा, "काहे की सदस्या ?"

श्यामा ने उत्तर नही दिया, केवल अर्थपूर्ण दृष्टि से रुक्मिणी को देखा।

रुक्मिणी बोली, "अच्छा ! मै तो तुमसे पहले ही बता चुकी हू कि मुझे क्रान्तिकारी दल के प्रति उतनी आस्था नही है जितनी उस दल की सदस्या बनने के लिए जरूरी है। तुम तो जानती हो कि मै व्यक्ति की उपासिका हू न कि दल की। मैं तुम लोगो मे इसलिए हिलमिल गई हू कि तुम लोग उनके परिवार के मालूम होते हो। बस और कुछ नही।"

"तो क्या तुम उनके परिवार से अलग हो ?"

"बिल्कुल नही। उनके असली परिवार मे तो केवल मै ही हू और कोई नही। तुम लोग उनके मानस परिवार के हो पर मै तो दूसरे ही परिवार की हू वास्तविक परिवार की "

"दल को तुम्हारी बुद्धि और कर्म-शक्ति की बडी आवश्यकता है। दीदी, तुम तो जानती ही हो कि मैं अब दल के लिए करीब-करीब बेकार हो चुकी हू।"

रुक्मिणी बोली, "सो तो मेरे पीछे भी पुलिस रहती है और मैं शायद ही कोई काम कर सकू। इसके अलावा तुम यह नही देखती कि अब तक जो-जो काम मैने किए है, उनसे उलझने ही पैदा हुईं, कोई लाभ नही हुआ। त्रिलोचन के मामले मे मैं गलत काम करने वाली मानी गई, और उसके बाद जब मैने तुम्हारे हाथ से रिवाल्वर भेजा था, तो उसका भी नतीजा खराब हुआ।"

"क्यो, खराब क्यो हुआ ? तुम अगर बीच मे न पडती तो महेन्द्र जी अब

तक फासीघर के इर्द-गिर्द होते, पर इस समय वे एक मुक्त नागरिक है ।"

रुक्मिणी समझ गई कि वह सिर्फ महेन्द्र की बात देख रही है, पर महेन्द्र की जगह बनर्जी को गोली मारकर एक आदमी ने अपने गले मे फासी का फदा डाल लिया, इस बात को वह नही देख पा रही है। पर वह खुलकर यह बात नही कह सकी, बोली, "हू ।"

श्यामा के बहुत समझाने-बुझाने पर भी रुक्मिणी सदस्या बनने के लिए तैयार नही हुई । अन्त मे उसने अपने दिल को बिल्कुल खोलते हुए कहा, "मैं दो नावो की सवारी नही कर सकती । क्रातिकारी दल के प्रति मेरे मन मे जो सद्भावना है, उसीके कारण मै सदस्या नही बनूगी, जब मै बिल्कुल एकनिष्ठ होकर क्रातिकारी दल की सेवा कर सकूगी, तभी मै दल की सदस्या बन सकूगी ।"

३१

गावो मे कई डकैतिया करने के बाद दल इस नतीजे पर पहुचा कि यह कार्य इस रूप मे उचित नही है । यह तय हुआ कि दल का खर्च चलाने के लिए डाके तो डालने ही पडेगे, पर अब ब्रिटिश सरकार के विभिन्न खज़ानो पर ही डाका डाला जाए । दल इस प्रकार एक ही ढेले से दो चिडियो का शिकार करने मे समर्थ होगा ।

अवश्य कुछ लोग इसके विरोधी भी थे । वे कहते थे कि अभी दल कमज़ोर है, उसे सीधे-सीधे सरकार से टक्कर नही लेनी चाहिए । इमसे शक्ति की हानि होगी और शत्रुपक्ष चिढकर पूरे जोर से हमला करेगा ।

पर अत तक ऐसा कहने वाले लोगो की बात मानी नही गई और दल ने खज़ाना लूटने का कार्यक्रम स्वीकार कर लिया । रुपयो की बडी सख्त ज़रूरत थी । भारत के एक प्रसिद्ध बदरगाह मे अस्त्र-शस्त्र बिकाऊ थे, पर दल के पास इतने रुपए नही थे कि उन्हे मोल ले । गावो की डकैतियो से बहुत कम रुपए आते थे । कई बार तो लोग गलत खबर देकर अपने दुश्मनो के यहा डाके डलवाने

का निमत्रण देते थे और जब क्रातिकारी वहा पहुचते थे तो देखते थे कि उसके घर मे कुछ भी नही है।

अमिताभ को इस सम्बध मे अभी हाल ही मे बहुत कडवा तजरबा हुआ था। जब वह अपनी टुकडी लेकर एक गाव मे पहुचे, तो मुखबिर की सहायता से वह घर जल्दी ही मिल गया, जिसमे डाका डालना था।

कार्यक्रम के अनुसार रस्सी की सीढी लगाकर कई लोग घर के आगन मे कूद गए और उन्होने दरवाज़ा खोल दिया। मशाल जलाते ही मालूम हो गया कि यद्यपि घर बडा है, पर है गरीबो का घर। कही सोने की कोई चीज नही मिली, हाँ, स्त्रियो के शरीर पर कुछ चादी के ज़ेवर थे। उन्हे उतारा जा रहा था कि अमिताभ ने हुक्म दिया, "रहने दो, जो कुछ मिला है सब छोड दो।" कहकर उन्होने आवाज चढाकर काशन-सा देते हुए कहा, "वापस लौटो", फिर लबी सीटी बजा दी।

टुकडी समझ गई कि नेता नाराज़ हो गए है।

जब यह टुकडी खतरे की परिस्थिति से निकल गई, तब अमिताभ ने उस युवक को बुलाया जिसकी खबर पर यह डाका डाला गया था। पर उस समय उन्होने उससे कुछ नही कहा, केवल साथ रहने के लिए कहा। थोडी देर मे सब लोग पूर्वनिर्दिष्ट योजना के अनुसार तितर-बितर हो गए और जिसे जहा जाना था, वह वहा चला गया।

अमिताभ ने अकेले मे उस युवक से कहा, "आज हम लोग क्रान्तिकारी से डाकू हो गए।"

वह युवक समझ गया कि नेता क्या कह रहे है, बोला, "बहुत भारी गलती हुई।"

अमिताभ बोले, "तुम्हे यह खबर कैसे मिली थी ?"

"मुझे यह खबर गाव के एक विश्वासपात्र व्यक्ति से मिली थी, पर ऐसा मालूम होता है कि उसने धोखा दिया। उसे मै बहुत सही आदमी समझता था।"

दोनो साथ-साथ चलते गए। अमिताभ कुछ नही बोले। थोडी देर चुपचाप चलने के बाद अमिताभ ने कहा, "आज हम लोगो ने जो कुछ किया किसी भी नीति से उसका समर्थन नही किया जा सकता। हम जिसके घर मे गए थे, वह एक मामूली खाता-पीता किसान था। हमने जाकर ख्वाह-म-ख्वाह उसे डराया-

धमकाया, उसकी नीद खराब की, उसके चीज-बस्तर फेके, खैरियत यह है कि वक्त से सम्भल गए। तुम्हारे उस विश्वासपात्र आदमी ने क्या कहा था ?"

"यह कहा था कि यह लेन-देन का कारोबार करता है, लोगो को बहुत सताता है, उसकी चक्की के नीचे पचास हजार के जेवर और नकद गडे हुए है।"

"पर वहा तो फूटी कौडी भी नही निकली।"

युवक ने कहा, "मै सारा दोष अपने ऊपर लेता हू, जो प्रायश्चित्त हो सो बताइए···।"

अमिताभ ने कहा, "मै तुम्हारी परिस्थिति समझता हू, पर कई ऐसी गलतिया होती है जिनका कोई प्रायश्चित्त नही होता। कुछ लोगो के काम ऐसे है कि उन्हे सौ क्या हजार मे एक बार भी गलती करने का अधिकार नही है। मामूली तौर पर परीक्षाओ मे सौ मे तैंतीस नम्बर आ जाए तो पास समझा जाता है, पर जो व्यक्ति रेलगाडी को सिगनल देता है, उसे लाख मे लाख नम्बर लाना पडता है। वह एक नम्बर भी कम नही ला सकता।"

अमिताभ ने इसी तरह और कई उदाहरण दिए, बोले, "आदर्श राज्य तो तभी होगा, जब प्रत्येक व्यक्ति अपने काम को उतनी ही जिम्मेदारी के साथ करे जितना कि हवाई जहाज का चलाने वाला, ट्रेन का ड्राइवर आदि अपना काम करते है। यदि आज हम लोग पकडे जाते या घिर जाते या गोलिया चलती तो कितना भारी नुकसान होता। हम लोग सब के सब बरबाद भी तो हो सकते थे।"

अभी अच्छी तरह सवेरा नही हुआ था, रास्ता सुनसान था। उस युवक ने कहा, "आपके बिना कहे ही मैं अपनी भयानक गलती समझ गया हू। यहा कोई नही है। अभी रात भी बाकी है, आप मुझे सर्वोच्च सजा दीजिए, किसी को मालूम भी नही होगा कि किसने मुझे मारा"—कहकर वह वही पर खडा हो गया।

पर अमिताभ,ने उसके कन्धे पर हाथ रखते हुए कहा, "भाई केशव, तुम जो बात कह रहे हो, उससे तो दल को और भी हानि पहुचेगी। हम एक ईमानदार और विश्वस्त कार्यकर्ता खोएगे। इसलिए चलो। मुझे ऐसा मालूम होता है कि गावो मे डकैती करने का तरीका ही गलत है। इससे हम पुलिस के हाथो से जरूर बचे रहते हैं और कुछ थोडा-बहुत रुपया भी मिल जाता है, पर हम ऐसा काम करते है जो यदि हमे गिराता नही है, तो ऊपर भी नही उठता। दो-

चार बन्दूके लेकर यदि हम किसी भले आदमी के घर पर चढ गए, तो इसमे कोई बहादुरी नही है। जो लाभ होता है, उससे सारी बातो की क्षति पूर्ति नही होती।

इस डकैती की अभिज्ञता से दल पर बहुत प्रभाव पडा और दल ने यह नीति बना ली कि आगे से गावो मे डकैतिया नही करनी है। तदनुसार कार्य-क्रम बनने लगे और यह तय हुआ कि रेल पर प्रतिदिन जो खजाना जाता है उसे लूट लिया जाए।

क्रान्तिकारी अब कच्चा काम नही करने वाले थे। इसलिए उन्होने पता लगाया कि प्रतिदिन विभिन्न स्टेशनो से टिकटो की बिक्री से मिले हुए रुपए एक निर्दिष्ट गाडी मे लखनऊ पहुचाए जाते है। अमिताभ ने कहा, "जब ऐसी ही बात है, तो हम लखनऊ मे ही सारा खजाना लूट क्यो न ले ?"

इस पर कुणाल ने कहा, "जब ऐसा ही करना है तो हम जाकर दिल्ली मे वायसराय-भवन पर ही क्यो न हमला कर दे ?

अमिताभ का चेहरा तमतमा गया, बोले, "हम ऐसा भी कर सकते है। हमारे पास इतनी ताकत है।"

कुणाल ने बहुत ही आहिस्तगी से कहा, "पर हमारा उद्देश्य केवल वायसराय भवन पर हमला करके उसपर स्वतन्त्र भारत का झडा लहरा देना नही है, हमारा उद्देश्य तो यहा से ब्रिटिश शासन को ही खदेड देना है। अभी हम ऐसे क्षेत्रो मे ही हाथ डालेगे, जिनसे हम पूरी तरह बचकर सही-सलामत निकल आएं···।"

"फिर तो हमे गाव मे ही डकैतिया करनी चाहिए। हमने इतने दिनो तक पेशेदार डाकुओ की आड लेकर यह काम किया और पुलिस वालो को कानो-कान खबर नही होने दी।"

कुणाल ने कहा, "नही, उस तजरबे के बाद अब हम उधर कदम नही रख सकते। पर सरकारी खजानो को लूटने की नीति अपनाते हुए भी हम ऐसे कार्यों को ही करेगे, जिनसे हमे कम से कम खतरा पहुचे।"

फिर खबर मगाई गई और फिर नया प्रोग्राम बना। पता लगाया गया कि रात के समय सब तरफ के स्टेशनो से लखनऊ मे रुपया आता है। इसके बाद यह पता लगाया गया कि किधर से सबसे ज्यादा धनराशि आती है। यह पता

लगा कि पश्चिम के स्टेशनो से सबसे अधिक धन आता है। इसीको लेकर कार्य-क्रम बनने लगा।

यह तो तय ही हो चुका था कि खजाना लखनऊ मे नही लूटना है। अब यह विचार होने लगा कि फिर कहा लूटना है। अविनाश ने कहा, "क्यो न ऐसा किया जाए कि जब यह गाडी किसी छोटे स्टेशन पर खडी हो तो हम उसे वहा पर लूट ले।"

इसमे कई बाते करनी पडती थी। एक तो स्टेशन पर पहले से कब्जा करना था या गाडी जब आए तो उस वक्त स्टेशन पर साथ ही साथ ट्रेन पर कब्जा करना था। हर स्टेशन मे एकाध पुलिस का आदमी होता है, इसके अलावा टेलीफोन भी होता है। उस पुलिस वाले पर हमला करना पडता, टेलीफोन काट देना पडता, इसके अलावा, और कई बाते करनी पडती, जिनके लिए बहुत आदमियो की जरूरत पडती, साथ ही जोखिम भी बहुत था।

इन सब बातो को सोचकर यह कार्यक्रम भी रद्द कर दिया गया। अब प्रश्न यह आया कि किया क्या जाए ? अमिताभ ने खुद ही कहा, "फिर तो एक ही कार्यक्रम रह जाता है, वह यह कि ट्रेन को जगल मे खडा किया जाए, उससे खजाना उतार लिया जाए और फिर चल दिया जाए।"

कुणाल ने कहा, "यह एक तरह से गाव की डकैती की तरह होगा क्योकि जिस समय जगल मे कोई ट्रेन खडी हो जाती है तो वह एक गाव की तरह हो जाती है।"

अब प्रश्न यह आया कि ट्रेन खडी कैसे की जाए ? क्या उसे लाल झडा या लाल बत्ती दिखाकर खडा किया जाए या और किसी उपाय से खडा किया जाए। यदि लाल झडा या लाल बत्ती दिखाई गई और किसी तरह ड्राइवर को यह शक हो गया कि यह लाल बत्ती बदमाशो के द्वारा दिखाई हुई है और उसने गाडी नही रोकी तब सारा काम ही वरिबड हो जाएगा। सरकार सचेत हो जाएगी और क्रान्तिकारियो के हाथ कुछ नही लगेगा। वह सुझाव रखा गया कि लाइन पर कुछ रख दिया जाए, जैसे किसी पेड को काटकर उसी समय गिरा दिया जाए तो गाड़ी खुद ही रुकेगी, पर विचार करने पर यह पता लगा कि इसमे भी कई गडबडिया हो सकती है। जंगल मे गाड़ी रोकने के लिए खड़े लोगो को यह कैसे पता लगेगा कि वही गाडी आ रही है, दूसरी गाड़ी नही।

केवल घडी देखकर टाइम से चलना तो गलत होगा। सम्भव है कि उस दिन गाडी लेट हो और दूसरी किसी गाडी को पिछले स्टेशनो से छोड दिया जाए, तो क्या होगा ? पेड काट दिया जाए, अगर गलत गाडी रुक गई, तो महज फजीहत ही रहेगी। इसलिए यह भी योजना खतम हुई।

सारी बातो को सोच-सोचाकर अन्त तक यह निश्चय हुआ कि जिस गाडी के खजाने को लूटना हो, उसीपर लोग दो-चार स्टेशन पहले से सवार हो जाए और जब निर्दिष्ट जगल मे गाडी पहुचे तो जजीर खीचकर गाडी को रोक दिया जाए। ज्योही गाडी रुके त्योही सब लोग (सिवा उनके जो पहरे पर रहेगे) खजाने वाली गाड़ी पर टूट पड़ें और खजाने पर कब्जा कर ले।

यह तय हुआ कि एक युवक पहले उसी गाडी पर सफर करे और परिस्थिति देखे कि योजना इस रूप मे कार्यान्वित हो सकती है या नही। इसके लिए अविनाश चुना गया। उसने आकर खबर दी कि तीसरे दर्जे का यात्री बनकर जजीर खीचना खतरे से खाली नही है। पहली बात तो यह है कि तीसरे दर्जे मे बहुत भीड होती है और सम्भव है कि जजीर खीचने वाला जजीर तक ही पहुच न पाए और यदि पहुच भी गया और उसने जजीर भी खीच ली, तो जनता जर्नादन का कोई भरोसा नही, सम्भव है कि डब्बे के लोग उसे पागल या बदमाश समझकर पकड ले।

जब इस रिपोर्ट पर विचार हुआ, तो यह आपत्ति सही मानी गई। कोई बिल्कुल जान पर खेल ही जाए तो वह हर हालत मे जंजीर तक पहुच तो सकता ही था, पर जनता द्वारा उसे पकडे जाने की पूरी सम्भावना थी। कुणाल ने कहा, "यदि ऐसे मामले मे जनता उस व्यक्ति को पकड़ ले, तो वह दोषी नही कही जा सकती। उसको क्या मालूम कि किसलिए ऐसा किया गया है। गोपीमोहन साहा तथा अन्य क्रान्तिकारियों को जनता ने ही पकडा, इससे जनता की वीरता की प्रशसा ही करनी चाहिए। जब जनता यह जानती नही है कि दौडकर भागने वाला व्यक्ति कौन है तो उसके लिए अपराधी समझकर दौडने वाले को पकड़ना उचित ही है।

अमिताभ बोले, "केवल यही बात नही, मैंने इस सम्बन्ध मे एक खास बात यह भी देखी है कि पढ़े-लिखे लोग इस तरह जोखिम उठाकर अपराधियों को कम पकड़ते हैं और पढे-लिखे वर्ग मे भी कोई अपराधियों को पकड़ेगा, तो यह

समझना चाहिए कि वह या तो कम उम्र है या अपेक्षाकृत कम पढा-लिखा है

जो कुछ भी हो अन्तिम निर्णय यह हुआ कि जजीर खीचने के लिए निर्दिष्ट आदमी दूसरे दर्जे मे सवार हो, और वही से वे जजीर खीचने का काम करेगे। बाकी लोग तीसरे दर्जे के डिब्बो मे सवार हो और जब जंजीर खीचने के फल-स्वरूप निर्दिष्ट स्थान पर गाडी खडी हो, तो वे 'क्या हुआ' यह जानने के बहाने डिब्बो से उतर पडे और खजाने वाली गाडी की तरफ दौडे या अन्य जो ड्यूटी दी गई हो, उसे अदा करे।"

इसी ढग पर सारी तैयारिया होने लगी। कुणाल और अमिताभ ने एक तारीख भी निश्चित कर ली जो किसीको नही बताई गई। पर एन मौके पर अच्छी तरह जाच करने के बाद यह पता लगा कि खजाना एक बहुत बडे लोहे के सन्दूक मे बन्द होता है, हर स्टेशन पर वहा की दिनभर की आमदनी चमडे की थैली मे बन्द करके एक छेद से डाल दी जाती है। वह छेद ऐसा है कि भीतर चीज ले लेता है पर बाहर निकलने नही देता और सन्दूक की चाभी लखनऊ के प्रधान कार्यालय मे रहती है। यह तो ऐसी बडी बाधा थी, जिसका किसीको अनुमान नही था। पता लगाया गया कि लोहे की सन्दूक की चादर कितनी मोटी होती है और वह किस प्रकार की छेनी और घन से कट सकती है। इस सम्बन्ध मे सूचना मिलने मे कठिनाई नही हुई, फिर भी एक अनिश्चय यह तो रह ही गया कि दल के नवयुवक उस प्रकाण्ड घन को चला पाएगे या नही।

जिस दिन रेल का खजाना कब्जे मे करना था, उस दिन सारी घटनाए घडी के काटे की तरह घटित हुई। यद्यपि कुणाल स्वय डकैतियो मे कम भाग लेते थे, पर इस बार उन्होने कहा, "मैं इसमे जरूर चलूंगा।"

अमिताभ इसपर बहुत ही खुश हुए, बोले, "आपके रहने से सबको बहुत भरोसा रहेगा।"

कुणाल ने कहा, "मैं तो इसलिए शामिल हो रहा हू कि इसे सफल बनाना ही है। किसी भी हालत मे इसके बाद सरकार हमपर टूट पड़ेगी इसलिए कुछ फर्क नही पडता।"

केवल दस युवक इस कार्य के लिए चुने गए थे, जिनमे से अमिताभ के साथ दो युवक दूसरे दर्जे के डिब्बे मे बैठे। बाकी सात युवक तीसरे दर्जे के डिब्बो में बंटकर बैठे।

यथासमय रेलगाड़ी निर्दिष्ट स्थान पर पहुची और अमिताभ ने एक तरफ से और महेन्द्र ने दूसरी तरफ से एक साथ जजीर खीच दी। इन तीनो के अलावा उस डिब्बे मे एक साधारण यात्री भी था। उन लोगो का जजीर खीचना देखकर वह घबडाकर उठ खडा हुआ और उसने अपनी रक्षा के लिए होल्डाल से भरी हुई पिस्तौल निकाल ली। अमिताभ ने उसे विश्वास दिलाया कि न मालूम कैसी गलती से उसका तथा उसके साथियो का सारा सामान स्टेशन पर छूट गया। उस यात्री ने भी देखा कि हा इन लोगो के पास कोई सामान नही है। उसने पिस्तौल पर सेफ्टी चढा दी। इतने मे गाडी ठहरी और अमिताभ ने दोनो साथियो को इशारा किया कि वे उतर जाए। वे स्वय भी उतरने लगे, पर उतरते समय जाने कौन-सा पेच मारा कि वह यात्री डिब्बे मे गिर पडा और उसके हाथ की पिस्तौल अमिताभ के हाथ मे हो गई। उनके दोनो साथियो को भी पता नही लगा कि अमिताभ ने यह काम कर डाला।

अमिताभ, कुणाल तथा दो अन्य साथी पहरे पर डट गए और चिल्ला-चिल्लाकर यात्रियो को बताने लगे कि हम क्रान्तिकारी है, हम किसी यात्री को नही लूटेगे, हमे तो सरकारी खजाना लूटना है।

कहकर, कही हुई बात को बल पहुचाने के लिए हवा मे गोलियां चलाई जाने लगी। उधर जिसकी खजाने पर ड्यूटी बाधी गई थी, उन लोगो ने उस भारी सन्दूक को ढकेल-ढकालकर डिब्बे से उतारकर लाइन के किनारे डाल दिया। फिर छेनी और घन से उसे काटना शुरू हुआ।

उस सुनसान स्थान मे घन की चोट से सारा दिगन्त गूज उठा। घन चल रहा था और साथ ही साथ तीखी आवाज मे यात्रियो को चेतावनी दी जा रही थी, बीच-बीच मे गोलिया चल रही थी। इतना सब कुछ होने पर भी हर आदमी को अपने हृदय की धडकन सुनाई पड रही थी।

अमिताभ जाकर खजाने के सन्दूक के पास खडे हो गए। बीच मे वे अपनी कलाई मे बधी हुई घड़ी को देखते जा रहे थे और धीरे-धीरे उनके तेवर पर बल आ रहे थे। यद्यपि घन बडी तेजी से चल रहा था, पर सन्दूक का मन उससे पसीज नही रहा था। तो क्या सारा किया-कराया यो ही धरा रह जाएगा। किसी भी हालत मे सन्दूक तो ले जाया नही जा सकता, न उसके लिए साधन था और न यह बुद्धिमानी की बात थी।

और भी पाच मिनट तक घन वाले को मौका दिया गया, पर वहा तो खरोचो के सिवा सन्दूक पर कोई असर नही हुआ था। तब अमिताभ ने उस युवक के हाथ से घन ले लिया और अपने अस्त्र उसे देते हुए बोले, "लाओ "

पर अमिताभ की भी चोटो से कुछ होता जाता नही दिखाई पडा। चिन्तित होकर कुणाल भी वहा आ गए। वे कुछ बोले नही, पीछे खडे होकर शब्द सुनते रहे क्योकि अब काफी अधेरा हो चुका था और कुछ दिखाई नही दे रहा था; हा, दियासलाई जलाकर परिस्थिति देखी जा सकती थी, पर इसकी उन्होने जरूरत नही समझी। अमिताभ पर उनका पूरा विश्वास था। यह विश्वास था कि यदि अमिताभ इस काम को नही कर पाएगे, तो कोई भी इसे नही कर पाएगा।

थोडी देर मे वाछित आवाज हुई। कुणाल को मालूम हो गया कि एक जगह से कटना शुरू हुआ है। इसके बाद तो घन की नपी-तुली मार और भी तेज हो गई, जैसे वह कह रही हो, "अब या कभी नही।"

अब सफलता सामने खड़ी मुस्करा रही थी। यात्रियो ने किसी प्रकार की कोई बाधा नही दी थी। चारो तरफ सन्नाटा था। शुरू मे झीगुर का इकरस गीत सुनाई पड़ रहा था, पर गोलियो और घन की आवाज से शायद वे भी शकित हो गए थे इसलिए जो कुछ आवाज होती थी, वह घन और गोलियो की थी। इतने मे दूर से भूचाल की-सी कोई आवाज सुनाई पडने लगी। नही, यह भूचाल नही था, कोई रेलगाडी थी। हा, उसकी रोशनी भी तो दिखाई दे रही थी। तो क्या इतने थोडे समय मे पुलिस को खबर मिल गई और वह आ रही है?

जो जहा खडा था अपनी जगह पर मुस्तैद खडा हो गया। सब लोग कुणाल की ओर देख रहे थे, पर अमिताभ बिना किसी प्रकार के विश्राम के घन चलाते जा रहे थे। खन, खन्न आवाज से पता लग रहा था कि उन्हे सफलता भी मिल रही थी।

अब तो वह गाडी बिल्कुल पास आ गई थी। वह एक आख वाले एक विशाल दैन्य की तरह वेग से आगे बढती आ रही थी।

वह गाड़ी इतने वेग से क्यो आ रही है? अब तो उसे अपनी गति धीमी कर देनी चाहिए, नही तो यहा तक पहुचकर वह रुक कैसे पाएगी?

कुणाल ने धीरे से अमिताभ की पीठ पर हाथ रखा। परिचित स्पर्श था। अमिताभ ठहर गए। दिगन्त मे अब दो आवाज की बजाए एक ही आवाज, उस ट्रेन की द्रुतगति से आने की आवाज सुनाई पड रही थी।

कुणाल ने अमिताभ से कहा, "घन को रोक दीजिए," कहकर दूसरे साथियो से कहा, "अपने-अपने हथियार नीचा करके घटनाओ की प्रतीक्षा करो।"

आने वाली गाडी की रोशनी मे दिखाई पड गया कि यहा पर एक लाइन की बजाए डबल लाइन है। तो ?

वह गाडी अब बिल्कुल नजदीक आ पहुची और वहा ठहरने की बजाए दूसरी लाइन पर होकर चली भी गई।

आई और चली गई। यह स्पष्ट ही था कि उस ट्रेन का इस घटना से कोई सम्बन्ध नही था। वह कोई मामूली डाकगाड़ी थी, पुलिस की स्पेशल ट्रेन नही थी।

कुणाल ने फिर सबको अपने-अपने काम पर जुट जाने के लिए कहा और घन फिर नियमित रूप से चलने लगा। जिस समय वह डाकगाडी आ रही थी, उस समय यात्रियो मे कुछ सुरसुराहट हुई थी, शायद वे भी आशा कर रहे थे कि कुछ होगा, पर अब डाकगाडी को इस प्रकार निकल जाते देखकर वे भी चुप हो गए थे, अब तो केवल घन की ही आवाज सुनाई पड रही थी।

दस-बीस चोट पडते ही सन्दूक का भेजा खुल गया और दिखाई पडा कि काफी बडा छेद हो गया है, जिसमे से हर स्टेशन पर भीतर डाले हुए थैले आसानी से निकाले जा सकते है। अमिताभ ने काम रोक दिया और फौरन थैले बाहर निकाल लिए गए।

इतना समय नही था कि थैले खोले जाते, इसलिए थैले लेकर ही टुकडी रवाना हो गई। वह ऍडे-बैडे रास्ते से लखनऊ को रवाना हो गई। रास्ते मे बरसाती पानी से भरा हुआ गड्ढा देखकर वहा पडाव डाला गया और वही पर सारे थैले खोलकर नोट और रुपए निकाल लिए गए। थैले उसी गड्ढे मे डाल दिए गए।

इसके बाद यह टुकडी कई हिस्सों मे बटकर चौक की तरफ से लखनऊ मे दाखिल हो गई और उस महानगरी मे पता नही कहा-कहा समा गई। कुणाल को किसीने बरसाती पानी से भरे हुए उस गड्ढे के बाद नही देखा। जब

उन्हे नही देखा तो लोग यह कैसे देखते कि महेन्द्र भी उन्हीके साथ रवाना हो गया था ।

३२

स्वराज्य दल को जो सफलताए चुनाव के समय मिली थी, उनके बाद फिर कोई ऐसी बात नही हुई, जिससे कुछ आशा बघे। आनन्दकुमार को तो पहले से ही यह विश्वास था कि इस प्रकार कौसिल-प्रवेश से कुछ विशेष लाभ नही होगा। हा, यदि सब प्रान्तो की व्यवस्थापिका सभाओ मे स्वराज्य दल को बहुमत प्राप्त होता तो बात और थी।

फिर भी चितरजनदास और मोतीलाल नेहरू के नेतृत्व मे यह दल अपनी सीमित शक्ति के अन्दर ही काफी दाव-पेच और जहा भी बना उठा-पटक करता रहा। दल के अन्दर जो नरमपथी थे, वे जब-तब सरकारी प्रतिनिधि की छोटी से छोटी बात पर आशान्वित हो जाते थे। लार्ड रीडिंग ने १९२६ की २० जनवरी को केन्द्रीय असेम्बली का उद्घाटन करते हुए लार्ड बर्केनहेड द्वारा ७ जुलाई, १९२५ को दिए हुए एक व्याख्यान मे से ये शब्द उद्धृत किए, "हम चाहते है और यह अनुरोध करते है कि लोग हमारी तरफ शुभेच्छा का प्रदर्शन करे और यदि हमारे प्रति उदार मित्रता का प्रदर्शन किया गया, जो बहुत प्रिय है, तो हम कंजूस सौदेबाज नही साबित होगे।"

इसपर बहुत-से लोगो की तरह राजेन्द्र बडा जोश मे आ गया और आनन्दकुमार से आकर बोला, "मैं समझता हू कि इसपर हमारे नेताओ को उदारता के साथ मित्रता का हाथ बढा देना चाहिए ..."

आनन्दकुमार कई दिनो से इसी तरह की बाते सुन रहे थे, जिनका मतलब यह था मानो उनकी तरफ से बराबर उदारता रही है, यदि उदारता मे कोई कमी है तो हमारी तरफ से है, बोले, "यह बहुत अजीब बात है कि लोग हममे उदारता की कमी पाते है। हम तो कहते है कि स्वराज्य दे दो और चले जाओ, इससे बढकर उदारता और क्या है। न्याय तो यह है कि हम अग्रेजो से कहते

कि भई, तुम लोगो ने हम पर डेढ-दो सौ वर्ष राज्य किया, चलो हम इंगलिस्तान पर उतने ही साल राज्य करेगे। बस हमारा हिसाब साफ हो जाएगा। पर हमारे उदारतावादी बन्धु तो हमसे यह कहलवाना चाहते है कि अग्रेजो, तुम लोगो ने हमारे गले मे इतने सालो तक गुलामी का तौक पहनाए रखा, इसे हम भूल जाते हैं, तुम लोग बस तौक निकाल दो और फिर हम पर राज्य करो।"

राजेन्द्र आनन्दकुमार से इतनी ऊष्मा की अपेक्षा नही करता था। उसने मन ही मन इन सारी बातो को क्रान्तिकारियों से मिलने-जुलने का परिणाम समझ लिया, पर मुह से बोला, "आपके विचार दिन-ब-दिन उग्र होते जा रहे है।"

आनन्दकुमार उग्र शब्द पर हसकर बोले, "मै अपने को इस शब्द के उपयुक्त नही मानता। मैंने बताया कि न्याय क्या होता है। उग्रता तो तब मानूं जब कि कोई कहे कि अग्रेजो ने हमपर दो सौ वर्ष राज्य किया और हमे लूटा, इसलिए हम उनपर दो हजार वर्ष तक राज्य करेंगे और उन्हे लूटते रहेगे।"

राजेन्द्र बोला, "दिल्ली मे ६ मार्च को अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी की जो बैठक हो रही है उसमे आप जा रहे है या नही ?"

"यो तो मैं नही जाता, मुझे यह सब अच्छा नही लगता, पर वातावरण मे जो गन्दगी आई है, उसे देखते हुए मुझे जाना पडेगा और उसमे लोगो को यह याद दिलाना पडेगा कि हम कौसिलो के अन्दर बधने के लिए नही गए थे बल्कि सरकार का और उसके शासन सुधारों का पर्दाफाश करने गए थे। सरकार या तो अपने शासन सुधारो को वास्तविक बनाए, या तो जनता के सामने उसकी कलई खुल जाए और कलई के नीचे से उसका खूनी पंजा दिखाई पड जाए। दो बातो मे से एक बात करनी है।"

"पर यदि सरकार शासन सुधारो को वास्तविक बनाना चाहे, तो फिर क्या होगा ? लार्ड रीडिंग ने लार्ड बर्केनहेड के जिन वाक्यो को उद्धृत किया है, उससे यह साफ जाहिर होता है कि ब्रिटिश सरकार झुकना चाहती है। हमे उसे मौका देना चाहिए।"

आनन्दकुमार ने कहा, "बाते बहुत हो चुकी, अब ब्रिटिश सरकार को कुछ करके दिखाना चाहिए। जबानी जमा-खर्च से अब हम रीझने वाले नही हैं। दो-चार बडी नौकरिया दे दी, व्यवस्थापिका सभाए बना दी, इससे कुछ नही होता।"

राजेन्द्र असल मे यह उद्देश्य लेकर आया था कि यदि आनन्दकुमार दिल्ली वाली बैठक मे न जाए, तो वही चला जाए, लोगो से परिचय भी होगा और अच्छी तफरीह रहेगी। एक निजी कारण यह भी था कि वह अपनी मा के शादी सम्बन्धी अगणित प्रस्तावो से बचना चाहता था।

पर आनन्दकुमार ने हर बात का जो नकारात्मक जवाब दे दिया, उससे उसके मन मे कोई आशा नही रह गई। यो तो बनते है कि राजनीति से हमे कोई सम्बन्ध नही, दिनभर अफलातून, अरस्तू, कपिल, कणाद, कैन्ट, हेगेल की हाका करते हैं, (विशेषकर लडकियो के सामने), पर कोई भी ऐसा मौका नही छोडते जिससे कि ताकत हाथ मे आती हो। क्रान्तिकारियो से मेलजोल बढाना भी उनके कार्यक्रम मे है, जिसका उद्देश्य नौजवानो मे प्रिय बने रहना है। एक नम्बर के ढोगी है। कैसे उस बेवकूफ लडकी श्यामा को अपने वश मे करके ऐसी परिस्थिति पैदा कर दी कि बेचारे रायबहादुर को न चाहते हुए भी नाम वापस लेना पडा। दुनिया मे ख्याति हुई कि उनकी जनप्रियता के कारण रायबहादुर ने नाम वापस ले लिया। वे मोतीलाल नेहरू से अधिक विख्यात थोडे ही हैं या उनसे जनप्रिय थोडे ही है, पर लोग तो उनके खिलाफ भी खडे होते है। सब ढोग है। नाम कमाने के लिए कह दिया कि मैं तो तभी व्यवस्थापिका सभा मे जाऊगा, जब कोई मेरे विरुद्ध खडा न हो।

राजेन्द्र समझ गया कि यहा दाल नही गलेगी, फिर भी उसने अन्तिम बार थाह-सी लेते हुए कहा, "मैं इसलिए आया था कि दिल्ली मे आपको शायद रहने की कोई असुविधा हो तो मै कुछ व्यवस्था कर दू।"

आनन्दकुमार बोले, "दिल्ली मेरे लिए अपरिचित थोडे ही है, फिर स्वागत-समिति कुछ न कुछ व्यवस्था तो करेगी ही।"

वह जैसी व्यवस्था होती है, वह तो आप जानते ही है। आपकी तरह एकांतप्रिय अध्ययनशील व्यक्ति को वह भड़भड़ पसन्द नही आएगी।"

आनन्दकुमार हसे, बोले, "जेल से तो अच्छा रहेगा।"

राजेन्द्र यही सोच रहा था कि अब यहां समय नही नष्ट करना चाहिए कि इतने मे एक लगभग गतयौवना बंगाली महिला एक सोलह-सत्रह साल की लडकी के साथ (जो उसकी लडकी लगती थी) आई और आनन्दकुमार को देखकर बोली, "आपका ही नाम अध्यापक आनन्दकुमार है न ? मैं बडी विपत्ति

मे पडकर आपके पास आई हू ।"

आनन्दकुमार उठ खडे हुए और उस महिला को तथा उसकी कन्या को बैठने के लिए कहकर स्वय भी बैठ गए। राजेन्द्र उठने ही वाला था और उसके लिए उठने का यह अच्छा मौका था, पर इन महिलाओ को देखकर उसे ऐसा मालूम हुआ कि यह किसी रहस्य से आवृत है, इसलिए वह जमकर बैठ गया। अध्यापक शब्द से वह और भी चौक पडा। तो यह हजरत कुछ लोगों मे अध्यापक करके भी मशहूर हैं!

वह महिला चारो तरफ देखकर दुबारा बोली, "आप ही अध्यापक आनन्दकुमार है न ?"

आनन्दकुमार ने मानो अध्यापक शब्द की सफाई देते हुए कहा, "कैसी मुसीबत है कि मजिस्ट्रेट की नौकरी के पहले मै कुछ दिन एक कालेज मे पढाता था, सो अभी तक कुछ लोग मुझे अध्यापक कहते है।"

राजेन्द्र बिना झेपे इसकी व्याख्या करते हुए बोला "आपका जीवन ही अध्यापन का है। केवल कालेज मे पढाने से ही कोई अध्यापक होता हो, ऐसी बात नही।"

आनन्दकुमार बोले, "अध्यापक तो कालेज मे ऐसी बात सिखाते है, जिससे कुछ अर्थलाभ हो, पर यहा तो ऐसी बाते सिखाता हू, जिससे अनर्थ हो!" कहकर उन्होने महिला से कहा, "आप बताइए मै आपकी क्या सहायता कर सकता हू ?"

अभी महिला उत्तर नही दे पाई थी कि उधर से रुक्मिणी भी आ गई। वह कुछ सहमने लगी कि कही बेमौके तो नही आई है, उधर उस महिला ने भी उसे ध्यान से देखा। पर आनन्दकुमार ने कहा, "यह मेरी बहन है, आप निश्चित होकर सारी बात कहिए।"

वह महिला बोली, "मै कहां से शुरू करू कुछ समझ मे नही आता" कहकर वह बिल्कुल अप्रत्याशित रूप से फफक-फफककर रोने लगी।

आनन्दकुमार रोने से, विशेषकर स्त्रियों के रोने से, बहुत घबडाते थे, फिर यह तो सम्पूर्ण रूप से अपरिचित स्त्री थी। वे बारी-बारी से सबका मुंह देखने लगे।

तब उस महिला की लडकी ने मा को रोने से मना करते हुए आनन्दकुमार

से कहा, "अभी-अभी थोडे दिन हुए जो पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट रतन बनर्जी मारे गए है, मै उनकी लडकी हू, मेरा एक छोटा भाई भी है ।"

आनन्दकुमार से लेकर सभी लोग इस परिचय से चौक पडे। वह महिला और भी जोर-जोर से रोने लगी। कोई कुछ समझ नही पाया कि बात क्या है। अखबारो मे तो यह खबर आई थी कि बनर्जी के परिवार के लिए सरकार की ओर से बहुत अच्छा प्रबन्ध हुआ है। उन्हे एक मकान, नकद बीस हजार रुपए, इसके अलावा लडको को पढने का और लडकियो की शादी की व्यवस्था कर दी गई हे। फिर यह क्या बात है।

आनन्दकुमार ने कहा, "आप रोइए नही, असली बात क्या है बताइए। जो होना था सो तो हो चुका, अब आप क्या चाहती है ?"

वह महिला तो कुछ भी नही बोल सकी, पर वह लडकी बोली, "बारह साल से पिताजी ने हम लोगो को अलग कर दिया था और वे एक दूसरी महिला के साथ सरकारी क्वार्टर मे रहते थे, जिनसे कई बच्चे भी है। पिताजी हम लोगो से कोई सम्बन्ध नही रखते थे, पर हर महीने सौ रुपए भेज दिया करते थे। जबसे उनका देहान्त हो गया तबसे यह खर्च तो मिलता ही नही और अब सरकार की ओर से जो कुछ सहायता आदि मिल रही है उसपर भी उस महिला ने कब्जा कर लिया है। हम लोग उसके लिए मिस्टर टेगर्ट से मिले थे, पर उन्होने कहा कि हम तो उसीको कानूनी बीवी करके जानते है।"

अब उस महिला ने कहा, "उस चुडैल ने उनके जीते जी तो हमे सताया ही अब उनके मरने के बाद भी वह हमे अपने कानूनी हक से वचित करना चाहती है। आप इस सम्बन्ध मे कुछ करिए। मै तो दौड़कर हार गई।"

आनन्दकुमार इस प्रकार के झगडे मे पडने के लिए तैयार नही थे, फिर भी उन्होने यह अनुभव किया कि इस सम्बन्ध मे कुछ करना चाहिए। आनन्दकुमार बोले, "देखिए, यह मामला बहुत पेचीदा है। कानून के साथ-साथ इसमे नीति के प्रश्न भी उठते हैं। उस महिला से जो बच्चे है वे भी स्वर्गीय मिस्टर बनर्जी के उसी प्रकार के बच्चे है जैसे आपके बच्चे है। फिर पता नही उन्होने उस महिला से शादी ही कर ली हो। हिन्दू कानून के अनुसार पुरुष को एक से अधिक शादी करने पर रोक नही है। आप उस महिला से कुछ समझौता क्यो नही कर लेती ?"

उस लडकी ने कहा, "मैने भी मा से यही कहा था, पर यह किसी तरह राजी नही होती।"

वह महिला एकाएक बीच मे बोल बडी, "मै उस चुडैल को एक कानी कौडी भी नही दूगी। वह तो वेश्या है, उसको उनकी सम्पत्ति पर कोई अधिकार नही है।"

"रुक्मिणी ने बहुत भद्र ढग से कहा, "वह वेश्या कैसे है ? जब वह मिस्टर बनर्जी के अलावा और किमीको जानती ही नही।"

पर वह महिला एकदम उबलकर बोली, "यदि मै असली सती हू तो मै उसे और उसके लडको को दालमडी मे ही भेजवाकर मानूंगी। बारह साल प्रतीक्षा करने के बाद अब मेरा मौका आया है।"

वह लडकी बोली, "पर मा, मौका कहा आया है, सब अफसर तो उसीको मिसेज़ बनर्जी मानते है। वही उनके साथ हर एक पार्टी मे जाती थी और वकील ने बतलाया कि स्कूलो मे उसके लडको के नाम पिता जी के बच्चो के रूप मे लिखाए गए है।"

"पर शादी तो नही हुई।"

आनन्दकुमार ने कहा, "समझौता करने मे फायदा यह है कि मिस्टर बनर्जी बदनाम नही होंगे और आपको अपना वाजिब हिस्सा मिल जाएगा। क्या आपको मिस्टर बनर्जी को बदनाम करके कुछ मिल जाएगा ? यो अखबार वाले तो इस खबर को बडे चाव से ले उडेगे।"

वह महिला टस से मस न होकर बोली, "जो जैसा करता है, वह वैसा पाता है। यदि उन्होने बदनामी के काम किए, तो मै इससे उन्हे कैसे बचा लूगी ? मै बारह बरस से चुपचाप इस लीला को देखती रही, पर हमेशा तो मुह बन्द नही रख सकती।"

आनन्दकुमार ने असहाय ढग से राजेन्द्र की ओर दखते हुए कहा, "इस सम्बन्ध मे क्या किया जाए ?"

राजेन्द्र खुद ही भौचक्का हो गया था, बोला, "मामला बडा जटिल है। एक बात मेरी समझ मे आती है कि मिस्टर बनर्जी को ,यदि बदनामी मिलती है, तो उससे क्रातिकारियो को फायदा ही है। मैं तो खैर राजनीतिक हत्या के बिल्कुल विरुद्ध हू," कहकर उसने रुक्मिणी की तरफ देखते हुए कहा, "पर बहुत-

से लोग इसके पक्ष मे है। उनको तो इस मौके से लाभ उठाना चाहिए। यदि जनता मे लोग जान जाएगे कि एक बडा सरकारी अफसर इस प्रकार खुले आम रखेल के साथ रहता था, तो उस हत्या का परोक्ष समर्थन ही होगा।"

आनन्दकुमार कुछ कहने ही जा रहे थे, पर इसके पहले ही रुक्मिणी ने कहा, "मैं राजेन्द्र जी के मत से बिल्कुल सहमत नही हू। यदि क्रान्तिकारियों ने मिस्टर बनर्जी को मारा है तो उसका कारण यही होगा कि वे राजनीति मुकदमो मे फसे हुए लोगो के साथ बहुत निष्ठुरता करते थे, उनके बीवी-बच्चो का तमाशा बनाकर क्रान्तिकारी दल आगे नही बढ सकता। मैं भी समझौते के पक्ष मे हूं।"

राजेन्द्र आनन्दकुमार की बातो को मजबूरी से सहता था, पर वह किसी और की बात सहने के लिए तैयार नही था, बोला, "इस तरह गाय मारकर जूते की जोडी दान मे दे देने वाली उदारता मेरी समझ मे नही आती। मेरी दृष्टि से तो मिस्टर बनर्जी की हत्या करना ही बहुत गलत था, यदि उनकी हत्या न हुई होती तो इनकी यह हालत न होती, कहकर उसने उस नवयुवती तथा उसकी मा की तरफ देखा।"

आनन्दकुमार समझ गए कि अब इस तर्क को यदि आगे बढने दिया जाए, तो वह तर्क न रहकर वितण्डा हो जाएगा, जल्दी से बीच मे पडते हुए बोले, "राजेन्द्र, तुम इस प्रश्न को जितना सरल समझ रहे हो, वह शायद उतना सरल नही है। सारी बात तो यह है कि तुम सजा के सिद्धान्त को मानते हो या नही। यदि मानते हो तो इससे कुछ फर्क नही आता कि बाकायदा कचहरी लगाकर फैसला सुनाते हुए गले मे रस्सी बाधकर झुला देना सही है या बिना मुकदमा चलाए गोली मार देना सही है। रहा वह प्रश्न जिसे तुमने उठाया है कि सजा मिलने के कारण ये लोग अनाथ हो गए, सो तो अदालती तौर पर फासी होने पर भी होता। अदालत व्यक्ति को सजा देती है, पर उस व्यक्ति के साथ बहुत-से और व्यक्ति बधे हुए हैं और उस सजा के कारण उन व्यक्तियो के जीवन मे भी भयकर परिवर्तन हो सकते हैं, इस बात को अदालत नही देखती। किसी देश की अदालत नही देखती, पर वे परिवर्तन कई बार इतने भयंकर होते हैं कि समाज के लिए उनका असर बहुत खराब होता है। यह दिखाया जा सकता है कि कई बार वह असर इतना खराब होता है कि यदि यह माना भी जाए

कि फासी से अच्छा असर हुआ, तो फासी पाने वाला तो नष्ट हो ही जाता है और नए शोशे पैदा हो जाते है ।"

राजेन्द्र बोला, "आप तो बहुत गहराई मे चले गए। मैं तो एक साधारण बात कह रहा था।"

आनन्दकुमार ने कहा, "कोई भी बात बिल्कुल विच्छिन्न नही है, जैसा कि हेगेल ने दिखलाया है कि सारी बाते एक दूसरे से सम्बद्ध है। चलो इस बात को छोडो। अब यह बताओ कि इसमे क्या होना चाहिए ?"

"मैंने तो बताया कि इसमे सबसे पहला दबाव तो दूसरे पक्ष पर डालना चाहिए कि हम सामाजिक रूप से उनकी हेठी कराएगे।"

आनन्दकुमार बोले, "इसीसे तो बचना है। हम मिस्टर बनर्जी की दूसरी स्त्री से उत्पन्न सतानो से किसी भी कारण बदला लेना नही चाहेगे, और यदि बदला लेने की भावना से कोई बात की गई तो हम उसमे सहयोग भी नही दे सकते। हम तो समझते है कि चाहे मिस्टर बनर्जी ने उस महिला से शादी की हो या न की हो, उसका उनकी सम्पत्ति पर उतना ही अधिकार है जितना इनका···"

आनन्दकुमार अभी बात समाप्त नही कर पाए थे कि वह महिला एकदम उठ खडी हुई और बोली, "मैने तो आपकी बडी तारीफ सुनी थी, पर आप तो मुझे और उस वेश्या को एक श्रेणी मे रखने पर तुले हैं। मै समझ गई कि आप मुझे कोई सहायता नही देगे।"

वह लडकी कुछ कहना चाहती थी, पर उस महिला ने उस लडकी का हाथ पकडकर घसीटा और दोनो जिस प्रकार अप्रत्याशित ढग से आई थी उसी अप्रत्याशित ढग से वहा से चली गई। फौरन ही राजेन्द्र भी वहा से चला गया।

जब दो-तीन दिन बाद सवेरे उठते ही आनन्दकुमार ने स्थानीय दैनिक पत्र मे श्रीमती बनर्जी और उनकी दोनो सतानो के फोटो के साथ श्रीमती बनर्जी का बयान और सम्वाददाता की सरस टिप्पणिया देखी, तो उन्हे बडा धक्का-सा लगा। वे समझ गए कि इसमे राजेन्द्र का हाथ है क्योकि साथ ही राजेन्द्र का भी वक्तव्य छपा हुआ था, जिसमे यह लिखा था कि मिसेज बनर्जी व्यवस्थापिका सभा के स्थानीय सदस्य श्री राजेन्द्र के घर गईं, और सारी बाते सुनकर श्री राजेन्द्र ने उन्हे आश्वासन दिया कि न्याय से जो बात सही है, उसकी विजय कराने की चेष्टा की जाएगी।

आनन्दकुमार दिल्ली के लिए तैयारी कर रहे थे, इसलिए उन्होने उसपर कोई ध्यान नही दिया, पर उनके मन ने यह कहा कि इस प्रकार दो महिलाओ के दुर्भाग्य को राजनीतिक बारूद बनाना उचित नही है। एक बार तो उनके मन मे इच्छा हुई कि वे एक बयान दे डाले, जिसमे इस तरीके का प्रतिवाद किया जाए, पर उन्होने सोचकर देखा तो ऐसा करना तो उसी धारा मे बहना होगा। इसलिए वे चुप रहे। जब श्यामा और रुक्मिणी ने उनका ध्यान इस तरफ दिलाया, तब भी वे कुछ नही बोले। मुश्किल से केवल इतना कहा, "हमारे यहा राजनीति बडी गदी बनती जा रही है, यदि इसे यही पर रोका नही गया तो बहुत भारी अनर्थ होगा।"

श्यामा बोली, "उन दो महिलाओ के सामने असली प्रश्न तो यह है कि उनके भविष्य के सम्बन्ध मे कुछ निर्णय हो। पर यहा तो कुछ और ही गुल खिलते हुए नज़र आ रहे हैं।"

रुक्मिणी ने कहा, "आज सवेरे महेन्द्र आया था। वह मुझे मिसेज़ बनर्जी की मदद के लिए एक हज़ार रुपए दे गया है। मैं उन रुपयो को आपको सौंपती हू।"

"कुछ और कहा ?"

"नही।"

"तो इसके माने क्या हुए ? अभी तो यही तय नही हुआ कि इन दोनो मे से कौन मिसेज़ बनर्जी हैं। तुम इन रुपयों को लौटा देना। निश्चित रूप से कल

के अखबारो मे दूसरी मिसेज बनर्जी का बयान आएगा, जिसमे यह कहा जाएगा कि वह जो महिला मेरे घर पर आई थी, वह बनर्जी की कोई नही लगती।"

रुक्मिणी बोली, "यह कैसे हो सकता है ?"

आनन्दकुमार ने कहा, "अदालत के सामने तो दावे और प्रतिदावे होगे, वहा सत्य की कौन परवाह करता है ? यदि वह महिला जो यहा आई थी, यह साबित न कर पाई कि उसके साथ मिस्टर बनर्जी की शादी हुई थी, तो फिर सारी बात खतम है", कहकर वह एकाएक हसकर रुक्मिणी से बोले, "क्या तुम साबित कर सकती हो कि तुम कुणाल की पत्नी हो ?"

"क्यो ? इसे तो पुलिस भी मानती है।"

"मान लो पुलिस न माने, यहा तक कि कुणाल भी न माने, तब की बात है।"

श्यामा बोली, "उस हालत मे दीदी शायद यह प्रमाणित करना ज़रूरी न समझे कि वह उनकी पत्नी है।"

आनन्दकुमार ने कहा, "यह तो तुम इसपर लादकर अपनी बात कह रही हो। जाने दो, मै इसका उत्तर नही मागता, पर कुछ लोग एकलव्य की तरह साधना मे विश्वास करते हैं। शरविद्या के अलावा अन्य क्षेत्रो मे भी इस तरह की साधना हो सकती है।"

जो कुछ हो सारी बातो का नतीजा यह हुआ कि वह प्रश्न वही लटक गया और भेजे हुए एक हज़ार रुपए रुक्मिणी के पास ही रह गए।

आनन्दकुमार तो उसी दिन रवाना हो गए। कानपुर काग्रेस मे जो निर्णय किए गए थे दिल्ली मे उन्हीका समर्थन किया गया और यह कहा गया कि स्वराज्य के मार्ग मे, जाति की प्रगति के रास्ते मे जो भी सरकारी या दूसरे प्रकार के रोड़े है उनका डटकर विरोध किया जाए। विशेषकर व्यवस्थापिका सभाओ के सदस्यो से यह कहा गया कि वे तब तक सरकार के दिए हुए किसी पद को ग्रहण न करे जब तक काग्रेस की राय मे सरकार द्वारा संतोषजनक प्रत्युत्तर न मिले।

अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी का सभाभवन ठसाठस भरा हुआ था और लोगो ने बहुसख्या के इस फैसले का बहुत प्रेम से स्वागत किया। आनन्दकुमार को यह देखकर खुशी हुई कि इस प्रकार से काग्रेस ने नरम दल का कौंसिल-

प्रवेश का कार्यक्रम अपनाते हुए भी अपने को नरम दल मे परिणत नही किया और वह अपने पूर्व निश्चय के अनुसार सघर्ष की नीति को अपनाए रही ।

जब वे लौटे तो जोश से भरे हुए थे । दिल्ली अधिवेशन मे हिन्दुस्तानी सेवा दल के लिए दो हजार का अनुदान स्वीकृत हुआ था, इसे आनन्दकुमार ने विशेष महत्व दिया । सारी बातो को एकत्र कर उन्होने स्टेशन मे आए हुए लोगो से यही कहा कि अब कुछ देर की बात है, काग्रेस फिर युद्ध के लिए तैयार हो रही है ।

रूपवती ने उनके चेहरे पर वही जोश पाया जो उसने १९२१ मे उस दिन देखा था, जब वे महाराजाओ और महामहोपाध्यायो के द्वारा बुलाई गई अमन-सभा मे सभा के उद्योक्ताओ को परास्त करके लौटे थे ।

राजेन्द्र ने सारी बात सुनकर कहा, "सग्राम तो होना ही चाहिए, पर जनता तैयार नही है ।"

आनन्दकुमार बोले, "जनता तो हर समय तैयार है, नेता ही तैयार नही है । जनता तो उस दिन भी तैयार थी, जब गाधी जी ने चौरीचौरा के कारण जन-आन्दोलन बन्द कर दिया था ।"

राजेन्द्र ने इस विषय पर आगे कुछ कहना उचित नही समझा ।

जब आनन्दकुमार स्वागत करने वाली मंडली से छुट्टी पाकर रूपवती, रुक्मिणी और श्यामा के साथ मोटर पर सवार हुए तो उन्हे मालूम हुआ कि इस बीच मे बहुत-सी घटनाए हो चुकी है । मिस्टर बनर्जी का कौन उत्तराधिकारी बने, इस सम्बन्ध मे झगडा उसी दिशा मे बढा था जिस दिशा का संकेत आनन्द-कुमार कर गए थे । दोनो महिलाए यह दावा कर रही थी कि वे ही एकमात्र विवाहिता स्त्री है और दूसरी स्त्री झूठी दावेदार अधिक से अधिक रखेल है । श्यामा ने यह भी बताया कि मिस्टर टेगर्ट तथा मिस्टर स्मिथ इस झगडे पर इतने दुःखी हुए थे कि उन्होने कहा था कि साधारण लोगो की आखो मे मिस्टर बनर्जी की कायरतापूर्ण हत्या से ब्रिटिश सरकार का पलडा भारी पड़ गया था, पर इस झगडेबाजी ने न केवल पासा पलट दिया बल्कि सारे सरकारी कर्मचारी हस्यास्पद बन गए है।

इससे भी बड़ी खबर थी, वह यह कि सरकार ने इस बीच मे प्रान्तभर मे छापा मारकर क्रान्तिकारियो को गिरफ्तार किया था । कुणाल गिरफ्तार नही

किए जा सके, पर अमिताभ एक तीसरे दर्जे के होटल मे गिरफ्तार कर लिए गए। गिरफ्तारी के बाद कुछ पता नही कि क्या हो रहा है, पर ऐसी खबरे अखबारो मे निकलती है कि गिरफ्तार लोगो को हर तरीके से सताया जा रहा है, जिससे कि वे मुखबिर बन जाए।

सारी खबरे सुनकर आनन्दकुमार ने कहा, "इसके माने यह हुए कि सरकार ने दमन करने की ठान ली है। अच्छी बात है, सघर्ष तो होना ही है। पडित मोतीलाल नेहरू भी जल्दी ही असेम्बली से अलग होने वाले है। सरकार यह नही चाहती कि देश मे किसी भी तरह का आन्दोलन चले। वह शायद यह सोच रही है कि अब राष्ट्रीय आन्दोलन का सिर कुचल दिया गया है, वह किसी भी तरह सिर उठा नही सकता।"

आनन्दकुमार तथा अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी की बैठक से लौटे हुए नेताओ का स्वागत करने के लिए ज्ञानवापी मे एक विराट सभा हुई जिसमे आनेवाली आधी की सूचना जनता तक पहुचा दी गई। स्वागत-भाषण करने वाले कुछ नौजवान काग्रेसियो ने तो यहा तक कह डाला कि काग्रेस कौसिलो से निकल आए और सरकार के विरुद्ध सग्राम छेड दे। आनन्दकुमार ने बीच का मार्ग लिया। उन्होने यह कहा कि सघर्ष की बात को सामने रखते हुए सारी बाते की जाए और लोग नेता के आदेश का पालन करे। उन्होने इस बात पर अफसोस जाहिर किया कि देशबन्धु चित्तरजनदास ऐसे नेता का अगले सग्राम मे साथ न हो सकेगा क्योकि उनका स्वर्गवास हो गया, पर उन्होने कहा, "जब तक महात्मा गाधी मौजूद है, तब तक हमे कोई चिन्ता करने की जरूरत नही है।"

सबसे मजे कि बात यह है कि राजेन्द्र ने भी बहुत गरम भाषण दिया। वह समझ गया था कि अब गाडी आगे को ही जाएगी, इसलिए उसने जनता को खुश करने के लिए शुरू से लेकर अन्त तक सग्राममूलक भाषण दिया। खूब तालियां पिटी।

यो तो श्यामा और रुक्मिणी से आनन्दकुमार ने यही कहा, "जो लोग गिरफ्तार हुए हैं, उनके विषय मे कोई विशेष चिन्ता करने की जरूरत नही है। जब उन्होने यह मार्ग अपनाया है, तो सोच-समझकर ही अपनाया होगा। यदि कोई व्यक्ति कमजोर है, तो वह फूट जाएगा। उस हालत मे उसके फूटने की कोई गमी नही हो सकती। यह तो बहुत अच्छी प्रक्रिया है कि दूध का दूध और

पानी का पानी हो जाएगा। काग्रेसियो के लिए भी कोई ऐसी पछोरने की प्रक्रिया होनी चाहिए थी, जिससे कि घुनहे और हल्के काग्रेसी उड जाते पर अफसोस है कि काग्रेस आन्दोलन मे उस प्रकार से फासी का भय नही है जैसे क्रान्तिकारी आन्दोलन मे है। इसमे हद से हद दो साल की सजा होती है, यह भय कोई ऐसा भय नही है, जिसमे साधारण साहस का आदमी टूट गए।"

श्यामा बोली, "मैने तो सुना है कि असहयोग आन्दोलन मे भी कुछ लोग माफी माग रहे थे।"

"हा, इस सम्बन्ध मे कई सनसनी खेज घटनाए हुई थी, जो मुझे याद है।"

श्यामा याद दिलाती हुई बोली, "त्रिलोचन तो जेल भी काट आया था।"

"उसका मामला बडा जटिल था। जेल मे वह बिल्कुल स्वस्थ था और अविनाश से पत्र-व्यवहार करके बहुत सुलझे हुए विचारो का हो गया था। उसकी बाते बडी अच्छी होती थी।"

"हा, तोते की तरह..."

"अब हम ऐसा कह सकते है, पर उस समय ऐसा नही मालूम होता था। उसका मनोविज्ञान कुछ अजीब ही निकला।"

इस सम्बन्ध मे फिर किसीने कुछ नही कहा। आनन्दकुमार ने उसी दिन जाकर जो अभियुक्त स्थानीय जेल मे बन्द थे, उनके लिए वकालत नामा दाखिल कर दिया। उनके साथ श्यामा और रुक्मिणी भी जेल के फाटक तक गई। अमिताभ को केन्द्रीय जेल मे रखा गया था, इसलिए आनन्दकुमार को जिला जेल का काम खतम कर केन्द्रीय जेल भी जाना पडा।

आनन्दकुमार ने कहा, "वकालत तो मैं क्या करूगा पर इस बहाने सबसे मिलना हो जाएगा। ऐसे वक्त मे मिलना बहुत जरूरी होता है। जेल का वातावरण कुछ ऐसा होता है कि उसके अन्दर पैर रखते ही बडो-बडो की सिट्टी-पिट्टी गुम हो जाती है। मालूम होता है जैसे वर्तमान ही एकमात्र वास्तविकता है, आगे कुछ है ऐसा नही दिखाई पडता। भविष्य पर जिसकी दृष्टि जितनी ही तगडी और सजीव होगी, वह उतनी ही आसानी से जेलखाना झेल सकेगा।"

"आपने इन लोगो को कैसा पाया?"

आनन्दकुमार का चेहरा चमक उठा, बोले, "इन्हे तो मैंने दूसरे ही छोर पर पाया। इन्हे देखकर ऐसा मालूम होता था कि वे अपने वर्तमान से बिल्कुल

बेखबर है। मैने मुकद्दमे की बातचीत की तो वे पुस्तको की बात करने लगे।"

रुक्मिणी और श्यामा दोनो इस रिपोर्ट से बहुत खुश हुईं। श्यामा बोली, "चाचाजी आप वकील भी है, यह तो आज मालूम हुआ।"

"मैंने दर्शनशास्त्र मे डिग्री ली तो लोगो ने कहा, कि यह तो बिल्कुल बेकार विषय है, इसलिए मैने वकालत भी पास कर ली। इसके बाद वकील बनकर लेक्चरार बन गया। फिर मजिस्ट्रेट लग गया। वातावरण पसन्द नही आया, इसलिए घर बैठ गया।"

रुक्मिणी ने पूछा, "अमिताभ जी ने क्या कहा ?"

"वहा कह क्या सकते थे ? सिर पर एक पुलिस अफसर बैठा था। नियम तो यह है कि वकील के साथ जेल के अन्दर अभियुक्त की जो मिलाई हो, वह अधिकारियो की आख के सामने हो, पर उनकी सुनाई के अन्दर न हो, पर वहां कौन इस कानून को मानकर चलने वाला था ? हा अमिताभ का चेहरा मुझे सबसे उज्ज्वल दिखाई पडा। वे मुझसे बोले, बहुत दिनो बाद दिनचर्या ठीक हुई है और फिर हसकर बोले, जेल का भोजन हमारे राम भरोसे हिन्दू होटल से कुछ विशेष खराब नही है।"

आनन्दकुमार ने और आगे कहा, "ऐसे लोगो को लेकर सरकार क्या करेगी, उसकी परेशानी कुछ बढी ही है।"

"आपने बताया कि उनका चेहरा सबसे उज्ज्वल था, इसके माने कुछ लोग दुखी भी थे।"

"सारी बाते तुलनात्मक हैं। हा, मै यह बताना तो भूल ही गया कि मुझे दो युवको से मिलने नही दिया गया। कहते है कि उन लोगो ने मेरे भेजे हुए वकालत नामो पर दस्तखत करने से इन्कार कर दिया।"

"इसके माने ?"

"कमजोर कडी, जानती हो न कि एक जजीर की ताकत उतनी ही होती है जितनी कि उसकी सबसे कमजोर कड़ी की ताकत होती है।"

"मतलब क्या है ?" श्यामा ने पूछा।

"मतलब यह है कि यही पर क्रान्तिकारी दल कमजोर पडता है। एक अमिताभ या एक कुणाल को लेकर दल तो बन नही सकता, उसमे कई कमजोर कड़िया आ जाती है। क्रान्तिकारी दल की ताकत अमिताभ की ताकत नही

बल्कि उस कमजोर कडी की जितनी ताकत है, उतनी है। इस तरह के कमजोर लोग दल का सत्यानाश कर सकते है और दो-चार अमिताभ और कुणाल होते हुए भी दल तहस-नहस हो सकता है। इसके विपरीत काग्रेस की तरह खुले आन्दोलनो को इस प्रकार का कोई भय नही होता। इसी कारण क्रान्तिकारी दल जनता के बहुत करीब होते हुए भी कभी जनता का दल नही हो सकता, जब कि काग्रेस के मार्ग मे ऐसी कोई बाधा नही है।"

रुक्मिणी ने कहा, "पर यह भी तो देखिए कि काग्रेस मे जनता को उल्लू बनाकर नेताओ द्वारा अपना उल्लू सीधा करने की कही अधिक गुंजाइश है।"

आनन्दकुमार यह सुनकर चुप रहे, फिर कुछ सोचकर झरोखे से दूर अतरिक्ष की ओर देखते हुए मानो भविष्य पढते हुए बोले, "नही, अभी जब तक सघर्ष जारी है, तब तक काग्रेस को इस प्रकार का कोई खतरा नही है क्योकि केवल सूखी ख्याति से कुछ नही मिलता और उससे ज्यादा भ्रष्ट होने की सम्भावना भी नही है, पर जब काग्रेस के हाथ मे सत्ता आएगी तब उसके लिए जो खतरा तुम बता रही हो, वह पैदा हो जाएगा।"

इसके बाद दोनो युवको पर बातचीत चली। रुक्मिणी को तो कुछ पता ही नही था, पर श्यामा ने बताया कि वे कोई विशेष महत्व के लोग नही है और यदि वे मुखबिर हो जाएगे तो वे कोई खास बात बता नही सकेंगे।

श्यामा ने तो यहा तक कहा कि वे बिल्कुल नए है और अभी-अभी भरती किए गए है।

उस समय बातचीत वही तक चली क्योकि आगे कुछ करने को नही था। अभी तो केवल यह देखना था कि घटनाए किस ओर सरकती है।

उसी रोज रात को जब रुक्मिणी अपने कमरे मे सो रही थी तो किसीने उसके दरवाजे पर धीरे से दस्तक दी। वह पहले तो समझ नही पाई कि इतनी रात मे भला कौन आ सकता है, फिर उसने सोचा महेन्द्र हो सकता है, शायद उनका कोई सन्देश या उनकी कोई खबर लाया हो, इसलिए उसने दौड़कर दरवाजा खोल दिया। पर अरे! यह तो कोई पुलिस वाला मालूम होता है। वह व्यक्ति वर्दी मे नही था फिर भी वह पहचान मे आ जाता था। यह चेहरा छिप थोडे ही सकता है? तो क्या वह गिरफ्तार हो रही है?

अभी वह कुछ समझ नही पाई थी कि क्या करे कि इतने मे उस आदमी

ने माथे का पसीना पोछते हुए कहा, "बडी मुश्किल से यह घर मिला। आपका नाम क्या भला-सा है मैं भूल रहा हू।"

रुक्मिणी ने रुखाई के साथ कहा, "तुम किसे खोज रहे हो ? इतनी रात को बिना पूछे-जाचे भले आदमी के घर मे घुस आए।"

इसपर वह आदमी जरा भी लज्जित नही हुआ। बोला, "यह रायबहादुर वशीधर का घर है न ? और आप उनकी लडकी है न ?"

रुक्मिणी ने फिर भी रुखाई के साथ कहा, "मान लो मैं उनकी लडकी हूं तो क्या ? तुम कहा से आए हो ?"

इसपर उस व्यक्ति ने जेब से कोई कागज निकाला और उसे बडे प्रयास से पढते हुए कहा, "आपका नाम श्यामा है न ? मैं सेण्ट्रल जेल से आया हूं।"

रुक्मिणी ने फौरन सारी परिस्थिति समझ ली। उसने कहा, "आप बैठिए मैं श्यामा को बुलाती हूं।"

पर श्यामा को इतनी रात मे बुलाना कोई मामूली बात नही थी, इसलिए उसे कुछ बहाना बनाना पडा, तब श्यामा को अपने कमरे मे ला सकी। जब श्यामा आ गई तो उस व्यक्ति ने श्यामा के हाथ मे वह पत्र दिया। पत्र अमिताभ का लिखा हुआ था और चोरी से भेजा गया था। उसमे यह हिदायत थी कि फौरन उस व्यक्ति के हाथ सौ रुपए भेजे जाए और अगली रात को फिर वह उसी समय जब आए तो उसे लोहा काटने की दो अच्छी तरह परीक्षित छोटी आरिया और कोई नीद लाने वाली दवा जैसे क्लोरल तथा दो सौ रुपए दिए जाएं।

श्यामा और रुक्मिणी दोनो समझ गई कि किसलिए ये सारी चीजे मागी गई है, पर उस समय उतनी रात गए सौ रुपए कहा से आते ? उस समय तो कोई छोटा-मोटा गहना बेचकर भी रुपया नही मिल सकता था, फिर वह आदमी जल्दी कर रहा था। वह कह रहा था कि उसे फौरन लौटना है क्योकि सवेरे पाच बजे से उसकी ड्यूटी शुरू होती है।

अमिताभ के जेल से भाग निकलने पर दल को बडा फायदा होगा और साथ ही ब्रिटिश सरकार के मुह पर कसकर तमाचा पडेगा, इसलिए किसी भी हालत मे यह काम तो होना ही चाहिए पर रुपए कहा से आए ? और सो भी इसी वक्त, इतनी रात गए।

एकाएक रुक्मिणी को एक बात याद आई। वह श्यामा से कुछ अलग से बोली, "अरे मेरे पास तो वे हजार रुपए रखे हुए है, है तो वे अमानत के पर ऐसे मामले मे खयानत बिल्कुल जायज है।" कहकर उसने उस आदमी को रुपए निकालकर दिए और कहा, "कल आपको सारी चीजे मिल जाएगी।"

वह आदमी उठ खडा हुआ। न तो उसने धन्यवाद कहा और न उसने और कुछ कहा। वह कमरे से निकलकर मार्च करता हुआ चला गया।

३४

मिस्टर बनर्जी के मारे जाने से पुलिस विभाग मे यो ही कुछ शिथिलता आई थी। सारा काम ऊपर से पूर्ववत चल रहा था, यहा तक कि इस बीच मे बड़े पैमाने पर क्रातिकारियो की गिरफ्तारिया भी हुई थी, पर कोई भारतीय अफसर अब पहले की तरह जान जोखिम मे डालकर अपनी तरफ से कुछ करने के लिए तैयार नही था। मिस्टर टेगर्ट तक ने यह बात देखी, मिस्टर स्मिथ और जानसन तो उस बात का पहले से ही अनुभव कर रहे थे। जो दो गिरफ्तार किए हुए युवक प्रकाश और बनवारी कमजोरी दिखा रहे थे, उनका ठीक तरह से फायदा उठाने वाला कोई दिखाई नही पडता था। नतीजा यह हुआ कि प्रकाश और बनवारी कमजोरी दिखाते हुए भी मुखबिर बनने को तैयार नही हुए।

इस्तगासे की ओर से विशेष रूप से नियुक्त सुप्रसिद्ध वकील बाबू रामनारायण ने जानसन से कहा, "इस मुकदमे मे कई दरारे है। कोई भी बात निश्चित रूप से प्रमाणित नही होती।"

जानसन बोला, "फिर क्या होगा ? षड्यन्त्र तो साफ है। ये लोग डकैतिया भी करते रहे है, ट्रेन डकैती भी इन्ही लोगो ने की, कई जगह इनका सरदार गोली चलाकर भाग गया, और अब इन लोगो ने मिस्टर बनर्जी की हत्या करके ब्रिटिश सरकार को खुली चुनौती दी है।"

रामानारायण बाबू ने कागजात की तरफ देखते हुए कहा, "आप तो कहते थे कि दो युवक सरकारी गवाह बन रहे है, उनका क्या हुआ ?"

"मिस्टर बनर्जी जिन्दा होते तो अब तक यह दोनो गवाह बन चुके होते, पर इस समय उनके स्थान की पूर्ति करने वाला कोई नही है।"

"आप तो हैं।"

"हा मै हू, पर सभी काम मै करू तभी हो, यह बहुत ही दयनीय स्थिति है।"

रामनारायण बाबू घड़ी की तरफ देखते हुए बोले, "अब देखा जाए कि सनाख्त की कार्रवाई का क्या नतीजा होता है। यदि उसका भी परिणाम मामूली रहा, तब तो खुदा ही खैर करे।"

जानसन ने यह समझने की चेष्टा की कि रामनारायण बाबू कही यह तो नही कह रहे है कि येन केन प्रकारेण अभियुक्तो की सनाख्त मे सफलता होनी चाहिए। पर रामनारायण बाबू का व्यक्तित्व भारी भरकम था, यदि उन्होने इस मुकदमे को ग्रहण किया था तो वह सरकार के साथ एहसान ही था, इसलिए उन्होने अपने वक्तव्य का कुछ स्पष्टीकरण नही किया और उठ खड़े हुए। उनका क्या बिगडता था। यह मुकदमा न सही सैकडो और मुकदमे थे, उनका जूनियर तो मुवक्किलो को शाब्दिक रूप से बगले से निकाल देता था।

जानसन स्वय भी जानता था कि मुकदमे की परिस्थिति कोई अच्छी नही है, इसलिए उसने निश्चय किया कि उन दो युवको का कुछ वारा-न्यारा करना ही है, पर शाम को कही पर बहुत बडी पार्टी थी, जिसमे जाना जरूरी था। न मालूम कितने बजे पार्टी खतम हो इसलिए उस रात तो कुछ नही हो सकता था। अगली रात के लिए कार्यक्रम तैयार किया गया। उसके लिए सारी जरूरी चीज़ें तैयार रखने को कहा गया। ऐसे अवसरो पर मिस्टर बनर्जी जिन सिपाहियो को विशेष रूप से काम मे लाते थे, उन्हीकी ड्यूटी लगाई गई। मिस्टर बनर्जी तो चाय पीते रहते थे और निर्यातन का कार्यक्रम जारी रखते थे, पर मिस्टर जानसन ने अपने लिए एक ह्विस्की की बोतल और एक दर्जन सोडे की भी व्यवस्था कराई।

पार्टी मे बहुत रात हो गई, इसलिए मिस्टर जानसन अगले दिन सुबह नौ बजे तक उठ नही पाए थे।

अभी वे उठे नही थे कि उन्हे जगाकर यह खबर दी गई कि अमिताभ सेन्ट्रल जेल की कोठरी का जगला काटकर, दीवार फादकर बाहर निकल गया।

मिस्टर जानसन ने जैसे-तैसे हडबडाहट मे कपडे पहने। कपडे पहनते-पहनते चाय के प्याले की दो-एक चुस्किया ली और मोटर पर बैठकर सेन्ट्रल जेल पहुच गए। वहा पहले ही जिला मजिस्ट्रेट मिस्टर टेगर्ट तथा स्पेशल पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट तसद्दुक अहमद आदि पहुचे हुए थे।

सारे हाते की तलाशी हुई। जहा भी शक हुआ, जमीन खोद डाली गई, पर कोई नई बात नही मालूम हुई। यह तो पहले ही पता लग चुका था कि आरी से जगले की दो छड़े काटी गई है। यह भी पता लग चुका था कि किस जगह से दीवार फादी गई, पर और कुछ पता नही लगा। हा, यह सब लोग अनुमान कर रहे थे कि इसमे भीतर के कुछ लोग और बाहर के कुछ लोग जरूर शामिल थे।

जिस वार्डर की ड्यूटी मे अमिताभ कोठरी से निकल गए थे, वह मुअत्तल ही नही गिरफ्तार भी हो चुका था। पूछे जाने पर वह यही कहता रहा, "मुझे तो बराबर सब ठीक मिलता रहा।"

जब उससे पूछा गया कि जब सब कुछ ठीक रहा तो फिर अभियुक्त भाग कैसे गया, तो वह बगले झाकने लगा और कुछ सन्तोषजनक उत्तर नही दे सका। उसकी सर्विस बुक देखी गई तो मालूम हुआ कि वह बाईस साल का पुराना नौकर है, और उसके विरुद्ध कोई विशेष रिपोर्ट नही है। सारी सर्विस मे उसकी केवल एक पेशी हुई थी, वह इस बात पर कि उसने जाडे के दिनो मे एक सरकारी पेड को बुरी तरह काट डाला था। उसके घर की तलाशी ली गई तो तोला भर अफीम मिली। पूछा गया तो उसने बताया कि वह कभी-कभी दात का दर्द उठने पर अफीम का सेवन करता है। उसका अस्पताली रिकार्ड देखा गया तो उसमे पता लगा कि बुखार मे वह दो-दो दिनो तक कई दफे अस्पताल रह चुका है, पर दात के दर्द का कोई पता नही। डाक्टर से पूछा गया तो उसने कहा, "हा, यह कभी-कभी दात की दवा जरूर लेता है।"

पूछा गया, "जब तुम डाक्टर से दवा लेते हो, तो फिर अफीम क्यो रखते हो?"

इसपर उसने बयान बदलते हुए कहा, "अफीम खाने पर औरत के पास ज्यादा देर रुक सकते हैं।"

जानसन ने जब यह सब देखा और सुना तो उसे अपने निम्नतर कर्म-

चारियो पर बडा क्रोध आया। भला ऐसे विषयों को बेकार मे तूल क्यों दे रहे हैं जिसका भागने से कोई सम्बन्ध नही ? यदि यह साबित होता कि कोठरियो पर जिस जमादार का पहरा था, उसे अफीम खिलाकर सुला दिया गया तब तो इस दिशा मे तहकीकात करना कोई अर्थ रखता।

जानसन ने तसद्दुक अहमद से कहा, "आप अफीम की बात को इतना तूल क्यो दे रहे हैं ? अफीम से और इस वारदात से कोई ताल्लुक तो नही मालूम होता। क्या कोई ऐसा सुराग मिला है, जिससे आप इस दिशा मे ज्यादा ध्यान दे रहे हैं ?"

तसद्दुक अहमद ने इसपर कहा, "कुछ भी सुराग नही मिला है, इसलिए जो भी सुराग मिला है, उसीपर चल रहे है। शायद कही से कोई रोशनी निकल आए।"

जानसन ने देखा कि यह लोग महज अटकल-पच्चू पर चल रहे हैं और सच तो यह है कि उसे इस प्रश्न पर अधिक दिलचस्पी भी नही थी कि अमिताभ कैसे भागा, उसे यदि किसी बात मे दिलचस्पी थी तो यह थी कि किस प्रकार अमिताभ को गिरफ्तार किया जाए। बोला, "अमिताभ भागकर कहा गया। किसी दारोगा को यहा छानबीन करने दीजिए और आप इस बात पर लग जाइए कि अमिताभ फिर से पकड मे आए।"

तसद्दुक बोला, "हुजूर, इस बारे मे सारी कार्रवाई की जा चुकी है, और जिन घरो पर खास शक है, उनपर खुफिया तैनात किए गए है।"

जानसन बोला, "मेरी आत्मा कहती है कि इसमे उन लडकियो का हाथ जरूर है।"

तसद्दुक समझ गया कि जानसन का मतलब रुक्मिणी और श्यामा से है। बोला, "उनका कुछ हाथ भले ही हो, पर उसमे कुणाल का दिमाग काम कर रहा है।"

जानसन ने याद करते हुए कहा, "कहीं जिला जेल मे भी तो यही तमाशा नही होने जा रहा है ?"

तसद्दुक ने कहा, "दोनो जेलो के सुपरिन्टेन्डेन्ट एक ही साहब कर्नल सिम्पसन है। आप उनसे कह दे।"

जानसन ने तसद्दुक के सामने सिम्पसन की बुराई करना उचित नही

समझा । फिर भी इतना तो बोल ही गया, "पता नही क्यो ब्रिटिश सरकार डाक्टरो को जेलो के सुपरिन्टेन्डेन्ट बनाती है । डाक्टरो को भला जेल चलाने की क्या तमीज हो सकती है ?"

तसद्दुक ने जानसन के आदेश के अनुसार एक इन्सपेक्टर को यहा की जाच-पडताल के लिए छोड दिया और स्वय जानसन के साथ डिस्ट्रिक्ट जेल की ओर चला । वहा जानसन सीधा सिम्पसन के बगले पर पहुचा और जितनी भी अभद्र भाषा वह एक पदस्थ अग्रेज से प्रयोग कर सकता था, करते हुए बोला, "जिला जेल मे कही वही तमाशा हुआ जो सेन्ट्रल जेल मे हुआ तो सारी सरकार के लिए खतरा पैदा हो जाएगा ।"

सिम्पसन इस पर जरा भी न झेंपते हुए बोला, "ये जेले राजनीनिक कैदियो के लिए नही बनाई गई । हम भयकर से भयकर अपराधी को जेल के अन्दर बन्द रखते है, शायद ही कभी कोई कैदी भाग पाता हो, पर राजनीतिक कैदियो के साथ सब भारतीयो की सहानुभूति रहती है, इसलिए उन्हे चहारदीवारी के अन्दर बन्द रखना टेढी खीर है ।"

"क्या जेल विभाग के भारतीय कर्मचारियो मे भी राजनीतिक बन्दियो के लिए सहानुभूति पाई जाती है ? यदि पाई जाती है, तो मै ऐसे सब लोगो के नामो की सूची चाहूगा जो इस तरह नमकहरामी कर रहे है ।"

कर्नल सिम्पसन का चेहरा लाल हो गया, बोला, "मैं समझना था कि इस तरह की सूची देना गुप्तचर विभाग का काम है ।"

'पर प्रत्येक राजभक्त कर्मचारी का यह कर्तव्य है कि जहा राज्य का स्वार्थ खतरे मे हो, वह गुप्तचर विभाग को उचित सहायता दे ।"

कर्नल सिम्पसन ने कहा, "यदि आपको जेल विभाग पर विश्वास नही है, तो आप शौक से अपने कैदियो को जहा चाहे, रख सकते है ।"

इसी प्रकार भद्र गरमागरमी होती रही । कर्नल सिम्पसन ने जब देखा कि बात अधिक तूल पकड रही है और जानसन अमिताभ के भाग जाने का सारा दोष जेल विभाग पर डालने को उद्यत है, तो उसने कहा, "देखिए मिस्टर जानसन, मै मानता हू कि इस मामले मे कही न कही जेल कर्मचारियो ने कर्तव्य की अवहेलना की, पर इतना बडा मामला जेल के अन्दर ही पका हो ऐसी बात नहीं । बाहर से आरी आई, रुपए जरूर आए होगे, इस तरह सारा कार्यक्रम

बाहर से बना। आपका विभाग अपना काम ठीक-ठीक करता, तो यह घटना हो ही नही पाती।"

३५

उस दिन सध्या तक तसद्दुक को अमिताभ का कुछ भी पता नही लगा। गुप्तचरो ने यही कहा कि कोई सन्देहजनक बात नही दिखाई पडी। जानसन बहुत दुखी हुआ, पर वह जिस हद तक दुखी हुआ, उतनी ही दृढता के साथ अपने रात वाले कार्यक्रम के लिए तैयार हुआ। कोतवाली मे जाने के पहले ही उसने आधी बोतल ह्विस्की चढा ली।

प्रकाश और बनवारी यथासमय लाए गए। वे इतने गुप्त रूप से लाए गए कि किसीको यहा तक कि कोतवाली इञ्चार्ज के अलावा किसी को पता नही लगा।

जानसन ने पहले प्रकाश को बुलाया। प्रकाश कालेज मे पढता था और रोमाटिक स्वभाव का युवक था। वह पढने-लिखने के साथ ही खेल-कूद मे औसत था। एक लडकी से उसने प्रेम करने की चेष्टा की थी, पर उस लडकी ने उसे यह कहकर ठुकरा दिया था—तुम अभी बच्चे हो, तुम्हारे मु ह से दूध की बू आती है।

इससे उसके दिल पर बडी चोट लगी थी। उसे यह सूझ नही पाया कि कैसे वह प्रमाणित करे कि वह दुधमु हा बच्चा नही है। वह लडकी उससे कुछ बडी थी, पर इससे क्या। पहले तो प्रकाश ने आत्महत्या की बात सोची, इसी मानसिक अवस्था मे उसे अविनाश मिल गया और वह क्रान्तिकारी दल में भरती हो गया।

जानसन ने छूटते ही प्रकाश से कहा, "आज तुम सारी बाते खोलकर अभी कह दो, नही तो तुम्हारी खैरियत नही है।" कहकर उसने कोई इशारा किया जिसके करते ही अब तक जो दीवार मालूम पड रही थी, वह रगमच के पर्दे की तरह खिसक गई। अब सामने ही चार यमदूत-से सिपाही हाथ मे कोडे

लिए हुए दिखाई दिए, साथ ही एक स्ट्रेचर पडा हुआ था और बर्फ की एक विराट सिल्ली कोने मे सीमेट पर रखी हुई थी, जिसमे से पानी चू-चू कर उधर की जमीन गीली हो गई थी। इधर-उधर और भी कई तरह के अज्ञात यन्त्र आदि रखे हुए थे। जिनके सम्बन्ध मे प्रकाश को यह स्पष्ट धारणा नही थी कि वे क्या है ?

जानसन ने फिर कहा, "उधर मत देखो, उधर तो साक्षात् नरक है, यदि तुम उससे बचना चाहते हो, तो फौरन सारी बाते बता दो और कुणाल को पकडवा दो।"

अजीब बात है कि प्रकाश इसपर जरा भी नही दहला और बोला, "कुणाल को आप पकडकर क्या करेगे ? आप उन्हे रख तो सकते नही।"

जानसन हक्का-बक्का हो गया, उसने सोचा कि क्या इसे अमिताभ के भागने की बात मालूम हो गई, बोला, "क्या मतलब ?"

"मतलब यह कि अभी तक वह जेल नही बनी जिसमे कुणाल रखे जा सकते हैं।"

जानसन बोला, "तुम्हे उनपर इतना विश्वास है ? कल तक तो तुम यह कह रहे थे कि तुम हिसा के वातावरण से ऊब गए हो और जेल मे एकान्त मे चिन्तन करते-करते तुम इस नतीजे पर पहुचे हो कि हिंसात्मक आन्दोलन मे देश की भलाई नही है।"

"मेरा विचार अब भी ऐसा ही है, पर मैं इस नतीजे पर चिन्तन के द्वारा पहुंचा था न कि जेल के भय से। पर अब जो मैंने आपका यह रूप देखा तो मुझे अपने ऊपर यह शका हो रही है कि शायद भय के कारण ही मैं इस नतीजे पर पहुंचा हू, इसलिए मै जेल से छूटकर ही सोचूगा कि मुझे क्या करना चाहिए ?"

जानसन को बडी निराशा हुई, यद्यपि उसके अन्दर पडी हुई ह्विस्की ने उसे यही कहा कि बात छोटी-सी है, मार के आगे भूत भागते हैं। उसे ऐसा मालूम हुआ कि उसे प्रकाश के बारे मे गलत सूचना दी गई है। फिर भी उसने अपने को डूबता हुआ देखकर प्रकाश की अन्तिम बात के तिनके का सहारा लेते हुए बोला, "छूटना तो तुम्हारे हाथ मे है।"

प्रकाश ने कहा, "मैं अब तक आप लोगो को और अपने को गलत समझ रहा था। आप सत्य मे दिलचस्पी नही रखते बल्कि आपकी दिलचस्पी तो किसी

तरह मुकदमा साबित करने मे है"—कहकर वह बिल्कुल अप्रत्याशित रूप से उस तरफ बढ गया जिधर वह स्ट्रेचर रखा था और स्ट्रेचर के बगल मे खडे होकर बोला, "कहिए तो बर्फ की सिल्ली पर बैठू या आप जो जी चाहे कर सकते है।"

इसपर जानसन ही नही वे चार सिपाही भी जो निश्चल रूप से मारपीट मे विश्वास करते थे और उसे सब अभियुक्तो को मुखबिर बनाने के लिए रामबाण समझते थे, हक्का-बक्का रह गए। शायद जानसन ने भी यह बात देखी।

पर जानसन के अन्दर की ह्विस्की ने इतनी जल्दी पराजय स्वीकार करने से इन्कार कर दिया। जाने किसने किसको इशारा किया, देखा गया कि वे चार आदमी एकाएक प्रकाश पर पिल पडे और जब वह पिटते-पिटते अधमरा हो गया और उसके मुह-नाक आदि से खून आने लगा तो उसे उन चार आदमियो ने उठाकर नगा करते हुए बर्फ की सिल्ली पर डाल दिया। कुछ देर तक तो प्रकाश के दिमाग ने काम ही नही किया, फिर वह समझा कि वह कैसे जल्लादो के हाथ मे है।

जानसन ने कहा, "अभी तो कुछ भी नही हुआ, तुम्हे इसी तरह रातभर मारा जाएगा, जब बेहोश हो जाओगे तो डाक्टर मौजूद है"—कहते ही पर्दा हटाकर डाक्टर मेहरोत्रा सामने आ गया। जानसन बोलता गया, "होश मे आने पर फिर पिटाई होगी। या तो यहा से तुम्हारी लाश निकलेगी या तुम सारी बातें बता दोगे।"

बर्फ से टपकता हुआ पानी अब कही-कही से लाल हो चुका था और प्रकाश बर्फ से उसी प्रकार से उतरने की चेष्टा कर रहा था जैसे किसी का दम घोट देने पर वह सास लेने की चेष्टा करता है। उसके चेहरे पर वे ही भाव भी थे। ऐसा मालूम हो रहा था कि प्राण शरीर से निकलने की बुरी तरह कोशिश कर रहा है और शरीर उसे निकलने नही दे रहा है। सिपाहियो ने उसे बर्फ पर पकड़ रखा और जब वह डूबते हुए की तरह बड़े जोर से छूटने का प्रयास करने लगा, तो सिपाहियो ने उसे पकडकर जोर से पटक दिया। एक अन्तिम प्रयास के बाद प्रकाश का शरीर लु ज-पु ज होकर निढाल हो गया, तब डाक्टर ने इशारा किया और उसे उन यमदूतो ने स्ट्रेचर पर सुला दिया। .

डाक्टर ने फौरन ही उपचार शुरू किया और थोड़ी देर मे प्रकाश की सास

बहुत कुछ स्वाभाविक हो गई। जानसन ने मेज पर रखी हुई ह्विस्की से एक पेग की चुस्की ली और डाक्टर से बोला, "कोई खतरा तो नही है ?"

डाक्टर ने आख बिना हिलाए कहा, "नही।"

सब लोग प्रकाश के होश मे आने की प्रतीक्षा करने लगे। सिपाही जहा के तहा खडे रहे। जब डाक्टर का उपचार खतम हो गया और उसने रूई से सारा खून पोछ दिया, तो जानसन ने उसे इशारा किया और वह आकर उसी मेज के किनारे रखी हुई एक कुर्सी पर बैठ गया। जानसन ने कहा, "बनर्जी इस काम का विशेषज्ञ था, मैंने तो यह काम कभी नही किया, जो कुछ भी हो यह बहुत गन्दा काम है।"—कहकर उसने एक चुस्की और ली, फिर बोला, "लडाई मेरी समझ मे आती है, पर इस काम को मैं समझ नही पाता। फिर भी गन्दे आदमियो के साथ गन्दगी जरूरी है।"

डाक्टर इतने बडे अफसर के सामने यो ही सहमा हुआ बैठा था, उसने कहा, "मैं आपकी राय से बिल्कुल सहमत हू।"

"बनर्जी इस काम को कैसे करता था ? क्या वह ह्विस्की लेता था ?"

"नही, यो तो वे रोज ह्विस्की पीते थे, पर इस काम को करते समय वे बिल्कुल शुद्ध भाव से आते थे।"

जानसन ने आश्चर्य के साथ पूछा, "शुद्ध और अशुद्ध भाव क्या ?"

डाक्टर ने कहा, "वे इसे धार्मिक कृत्य के रूप मे करते थे। जैसे कालीजी के सामने चढाए जाने वाले बकरे को पुजारी तथा अन्य लोग धार्मिक भावना से मारते हैं, बनर्जी उसी प्रकार इन लोगो के साथ जुटते थे। वे यह समझते थे कि वे एक महान् पुण्यकार्य कर रहे हैं। उनके हाथ मे चण्डी की एक प्रति भी होती थी।"

जानसन बोला या जानसन की ह्विस्की बोली पता नही, पर उसके मुंह से ये शब्द निकले, "डाक्टर ! तुम्हारा हिन्दूधर्म बहुत महान् है। उसमे सब तरह की परिस्थितियों के लिए व्यवस्था है और मालूम होता है बनर्जी उसका अच्छा ज्ञाता था।"

डाक्टर मेहरोत्रा ने जानसन के चेहरे की तरफ देखा, पर कुछ नही कहा। वह चाहता था कि जल्दी उस झगडे से छुट्टी मिले, बोला, "सर, दूसरे आदमी पर भी काम शुरू किया जाए, यह तो बिल्कुल होपलेस (निराशाजनक) जंचता है।"

जानसन ने होपलेस शब्द को नापसन्द किया क्योकि वह स्वय यही सोच रहा था। बनर्जी कैसे करता था, पता नही, पर यहा तो कोई आशा की किरण दिखाई नही पडती। यह आदमी बहुत ही दृढ सकल्प मालूम होता है। यह अपने दल और उसके कारनामो से ऊब चुका है, पर किसी भी हालत मे मुखबिर नही बनेगा। बोला, "डाक्टर, हमारे कोश मे होपलेस शब्द नही है।"

डाक्टर ने कुछ नहीं कहा। वह प्रकाश के पास पहुच गया और उसे ध्यान से देखने लगा।

जानसन ने पेग मे पडी हुई ह्विस्की एक घूंट मे पीकर खडे होते हुए कुछ इशारा किया। अगले ही क्षण बनवारी लाया गया। उस कमरे के अन्दर ह्विस्की, पसीना, दवाइया और रक्त मिलकर एक अजीब महक व्याप्त थी, जिससे बनवारी का सिर घूम गया। एक क्षण मे ही वह सारी परिस्थिति समझ गया। उसने खुद ही कहा, "मै सारी बाते बता दूगा।"

जानसन के चेहरे पर पैशाचिक विजय की हसी दौड गई, बोला, "अभी उस कमरे मे चले जाओ और आधे घटे के अन्दर सारी बाते लिख डालो। यदि कोई ऐसी जगह मालूम है, जहा कोई छिपा हुआ हो, या अस्त्र-शस्त्र रखा हो तो उसका पता अभी अलग से मुझे बता दो, जिससे कि फौरन कार्रवाई हो सके।"

अभी बनवारी कुछ कह नही पाया था कि प्रकाश शायद बेहोशी की हालत मे बोला, "यही जीवन है, इसीके लिए लोग इतनी बुरी बाते करते है।"

ये बाते अजीब चबा-चबाकर कही गई थी, उस परिस्थिति मे उन बातो से सन्नाटा छा गया। स्वय जानसन का नशा हिरन हो गया, डाक्टर ठिठककर रह गया और बनवारी को काठ मार गया। सबसे पहले जानसन सम्हला, बोला, "डाक्टर, यह क्या बदतमीजी है?"

फिर उसने इशारा करते हुए कहा, "इसे बर्फ की सिल्ली पर बिठाओ। बनवारी, तुम जाओ, अभी देखोगे कि प्रकाश भी तुम्हारे बगल मे बैठकर सारी बाते लिखता है।"

बनवारी एक क्षण भौचक्का रहा। फिर काफी तेजी के साथ बोला, "मैं लिखने जाता हू, पर सब लोग मेरी तरह नही होते।"

"यानी?" आखे लाल करते हुए जानसन बोला।

"यानी यह कि मै कमजोर हू, पर मै यह समझता हूं कि मैं बुरा काम कर रहा हू।"

जानसन ने क्रोधावेश मे दौडकर उसे एक लात जमाई। बनवारी गिर पडा, फिर वह उठा, उसने एक बार प्रकाश की तरफ देखा और सिपाही के साथ दूसरे कमरे मे चला गया।

यद्यपि जानसन ने प्रकाश को फिर बर्फ पर बैठाने के लिए कहा था, पर डाक्टर मेहरोत्रा ने भीतर ही भीतर कोई इशारा कर दिया था और प्रकाश जहा का तहा पडा हुआ था। उसका मु ह अधखुला था। नाक से नीचे का हिस्सा जीवित मालूम होता था, पर माथे पर मृत्यु का साम्राज्य फैल चुका था।

जानसन फिर बैठते हुए पेग भरने लगा। एक चुस्की लगाकर बोला, "डाक्टर, तुम्हारा चिकित्सा-विज्ञान बहुत अपूर्ण है। इसने इतनी खराब बात कही, खराब इस माने मे कि उसका बनवारी पर जरूर बुरा प्रभाव पडा होगा, पर हम कुछ कर नही सकते।"

डाक्टर बोला, "सभी विज्ञान अपूर्ण होते है। यदि विज्ञान के लिए आगे बढने का कोई रास्ता न रह जाए, तो वह दम घुटकर मर जाए। केवल नीम-विज्ञान और पोगापन्थ पूर्ण होते है। वे झूठे दावे और गलत विश्वास की दुनिया मे ही जी सकते है।"

जानसन बोला, "डाक्टर, तुम तो बडे चिन्तक मालूम होते हो। क्या तुम भी बनर्जी की तरह काली जी के भक्त हो?"

डाक्टर बोला, "मैं भी एक हिन्दूदेवी का भक्त हूं, उनका नाम काली नही है बल्कि लक्ष्मी है। उन्हीके कारण मैं सब तरह की परिस्थितिया झेल लेता हू।"

जानसन इस कथन के सूक्ष्म व्यंग्य को नही समझ पाया, बोला, "तुम्हारे यहा बहुत-सी देविया है। हिन्दूधर्म सचमुच महान् है"—कहकर उसने और एक पेग उडेला और बोला, "मैं कई बार सोचा करता हू कि जीवन की रोजमर्रे वाली परिस्थितियो का सामना करने के लिए तुम्हारा धर्म बहुत उपयुक्त है। ईसाई धर्म मे तो बस एक मेडोना है, सो भी केवल कैथलिको के लिए।.."

पता नही वह क्या-क्या कहता, पर इतने मे प्रकाश ने आखें खोल दी और सारी परिस्थिति समझकर फिर आखें मू द ली। जानसन और डाक्टर दोनो एक साथ उसके पास पहुच गए। जानसन ने आखो ही आखो मे डाक्टर से

पूछा कि क्या करना चाहिए ? इसपर डाक्टर ने कुछ नही कहा और प्रकाश की नाडी देखने लगा।

नाडी देखकर उसने कहा, "लगभग नार्मल है।"

जानसन समझ गया कि वह कोई जिम्मेदारी लेना नही चाहता। उसने सिपाहियो को इशारे से कहा कि इसे बैठाओ। सिपाहियो ने ऐसा ही किया, फिर भी प्रकाश ने आख नही खोली और छोड़ने के साथ ही वह फिर पीठ के बल गिर पडा। इसपर जानसन को बडा क्रोध आया और उसने झटके के साथ प्रकाश को एकदम खडा कर दिया। फिर उसका कन्धा पकड़ते हुए बोला, "बहानेबाजी मत करो, तुम चाहो तो अभी तुम्हारी छुट्टी हो सकती है और मेरी भी, नही तो आज मै तुम्हे जिन्दा नही छोडूगा।"

कही से बहुत कमजोर आवाज आई, "मैं जीना नही चाहता।"

जानसन ने अब तक अनुभव कर लिया था कि सचमुच प्रकाश बहुत कमजोर है, उसने उसे सहारा देकर डाक्टर वाली कुर्सी पर बैठाया और फिर डाक्टर से बोला, "इसे ब्रान्डी दो।"

पर डाक्टर कुछ कर पाए उससे पहले ही प्रकाश ने कहा, "मैं ब्रान्डी नही पीना चाहता। ऐसी ताकत लेकर मैं क्या करूंगा, जो कमजोरी से बदतर है।"

जानसन कुछ सोच नही पाया कि क्या करे। उसे एक तरकीब सूझी। वह किसीसे कुछ न कहकर बाहर चला गया और थोड़ी देर मे कागज का एक फुलस्केप तख्ता लेकर आया, बोला, "इसे पढो। बन्वारी ने यह पते दिए हैं। इन पतो पर पुलिस भेज दी गई है और अभी कुछ और अराजकतावादी गिरफ्तार होकर आएगे।"

उन पतो को बिना देखे ही प्रकाश ने कहा, "इन पतो पर कोई नही मिलेगा।"

जानसन को भी यही विश्वास था। वह जानता था कि क्रान्तिकारियों मे एक नियम यह है कि किसी आदमी के गिरफ्तार होते ही, उसे जो-जो अड्डे मालूम होते है, वे सब बदल दिए जाते है। फिर भी प्रकाश ने जिस गुस्ताखी के लहजे मे सारी बात कही, वह जानसन को नापसन्द आया, पर गुस्सा दबाकर वह बोला, "तो तुम्ही कुछ ऐसे पते बताओ, जिनसे कुछ लाभ हो।"

प्रकाश दुःखभरी हंसी हसते हुए बोला, "आप लाभ कह रहे हैं, पर किसको लाभ ?"

जानसन बडी देर से सयम से काम ले रहा था पर अब उसका संयम टूट गया। वह एकदम से उठा, साथ ही साथ उसने कोई इशारा किया जिसके फलस्वरूप प्रकाश को गिरा दिया गया और एक सिपाही एक अजीब-सा चिमटा लाकर प्रकाश के नाखून नोचने लगा। एक अगुली बिल्कुल खून से भर गई और एक नाखून खिच आया। प्रकाश का चेहरा नीला पड गया और वह बेहोश हो गया। डाक्टर ने इशारा किया और उसे फिर स्ट्रेचर पर लेटा दिया गया। इजेक्शन दिए गए और अगुली पर बैंडेज बाधा गया।

जानसन समझ गया था कि अब कुछ होना-जाना नही है, पर वह चाहता था कि यह बात डाक्टर की तरफ से आए यानी डाक्टर यह कहे कि अब इसका निर्यातन करना खतरे से खाली नही है। पर डाक्टर ऐसी बात कहने के लिए तैयार नही था। एक बार बनर्जी के जमाने मे उसने यह कहा था कि अब इस आदमी का और निर्यातन न किया जाए, इसपर बनर्जी ने कहा था, "तुम कुछ नही जानते। जब तक गला काटकर दो टुकडे न कर दिए जाए, तब तक आदमी को कोई खतरा नही होता।"

यह कहकर बनर्जी उस अभियुक्त पर फिर जुट गया था और अपराध कबुलवाकर ही निवृत्त हुआ था, अवश्य वह एक मामूली डकैत था, पर इससे क्या ? बनर्जी ने इसके बाद डाक्टर को एक घन्टे तक लेक्चर पिलाया था। उसी दिन से डाक्टर ने यह तय कर लिया था कि मारना इनका काम है और इलाज करना उसका काम है।

वह दत्तचित्त होकर प्रकाश की नाडी देखने लगा।

जानसन ने डाक्टर से कहा, "तो इसकी आशा छोड़ दी जाए ? नाडी क्या कह रही है ?"

डाक्टर नाडी देखता रहा, फिर बोला, "साधारण आदमी के लिए तो इतना ही कष्ट बहुत काफी होता है, पर ऐसे लोग असाधारण होते है।"

जानसन बोला, "मैं भी तो असाधारण हू।"

डाक्टर ने बिना अधिक आस्था के बहुत शुष्क ढंग से कहा, "इसमे क्या शक है ?"

जानसन बोला, "तुम तो बनर्जी के साथ बहुत रह चुके हो, ऐसी परिस्थिति में बनर्जी क्या करता ?"

डाक्टर को इसका उत्तर खोजने मे कोई उलझन नही हुई, बोला, "वे तो हर मामले मे धार्मिक ढग से चलते थे और जो भी बात करते थे अन्तरात्मा से पूछकर करते थे।"

जानसन ने अधैर्य के साथ घडी देखी, फिर बोला, "यह जो उन्होने दो बीविया रखी थी, यह भी अन्तरात्मा से पूछकर रखी थी ?"

डाक्टर की जबान पर ये बाते आई, "इस सम्बन्ध मे उनसे मेरी कोई बातचीत नही हुई।" पर उसने प्रकट रूप से कहा, "हिन्दू-धर्म मे चाहे जितनी बीविया कर सकते हैं।"

जानसन की आखे चमक उठी, बोला, "हिन्दू-धर्म महान् है, क्या इसमें रखैलियो के लिए भी कोई व्यवस्था है ?"

डाक्टर नाडी छोडते हुए बोला, "तन्त्र मे सभी कुछ जायज है।"

जानसन ने तन्त्रवाद के सम्बन्ध मे कुछ सुन रखा था, फिर से बोला, "हिन्दू-धर्म महान् है।"

डाक्टर यह समझ नही सका कि वह अबकी बार सचमुच प्रशंसा कर रहा है या इसमे कुछ व्यग्य का पुट भी है। बोला, "धर्म को मनुष्य ने बनाया है, इसलिए वह उसे चाहे जो रूप दे सकता है। महात्मा ईसा अहिंसा के पुजारी थे, पर उनके चेले हिंसा के प्रतीक है। विगत महायुद्ध मे जो कुछ हुआ, उसे देखते हुए कुबलाई और चगेज को तपस्वी कहना पडेगा।"

जानसन फिर जाकर मेज पर बैठ गया। ह्विस्की उडेलते हुए बोला, "डाक्टर तुम ठीक कहते हो, पर तुम्हारे विचारो मे मैं क्रान्ति का पुट बहुत पाता हू।"

डाक्टर भी जाकर कुर्सी पर बैठ गया। वह यह समझ नही पाया कि इस मन्तव्य मे कोई धमकी छिपी हुई है या नही। बोला, "मैं तो इन मामलो मे मिस्टर बनर्जी को अपना गुरु मानता हू।"

जानसन एक लम्बी चुस्की लेते हुए बोला, "तो बनर्जी क्रान्तिकारियो के साथ रहते-रहते स्वय क्रान्तिकारी बन गया था ?"

डाक्टर ने इसका कोई उत्तर देने की जरूरत नही समझी। वह उठकर फिर प्रकाश की ओर चला गया।

जानसन जब पेग चढा चुका तो उसने निर्णयात्मक ढंग से कहा, "डाक्टर,

तुम तकदीर मे विश्वास करते हो ?"

डाक्टर एकाएक यह नही समझ सका कि इसका क्या अर्थ है। बोला, "मिस्टर बनर्जी तो तकदीर मे विश्वास करते थे। वे समझते थे कि जो कुछ वे कर रहे है, वह ईश्वर के द्वारा प्रेरित होकर कर रहे है।"

जानसन बोला, "जाने दो, आओ इधर बैठो, अब इस मामले मे कोई निर्णय करना पडेगा। तुम्हारे पास कोई रुपया है ?"

"है" कहकर डाक्टर ने एक रुपया निकाला।

जानसन ने वह रुपया लेते हुए उसे एक बार देखा फिर उसे ऊपर उछालते हुए बोला, "राजा का चेहरा ऊपर रहा तो हम चलते है..."

रुपया गिरा तो राजा का चेहरा ऊपर की तरफ था। जानसन फौरन खडा हो गया और बोतल मे बाकी बची हुई ह्विस्की मुंह लगाकर गट-गट पी गया, फिर बोला, "मैं जाता हू।"

सिपाहियो ने सलामी दी। डाक्टर को तो अभी कुछ देर और रहना था। उसने प्रकाश को एक इजेक्शन दिया फिर कुछ हिदायत देकर चला गया।

३६

बनवारी के सरकारी गवाह बन जाने से मुकदमा कुछ तगड़ा पड गया, पर उसने जो अड्डे बताए थे, उनसे कुछ भी बरामद नही हुआ और न कोई आदमी ही पकडा जा सका। पुलिस वालो को यह भी सन्देह था कि बनवारी ने (अव्वल तो वह जानता ही कम था) सारी बात नही बताई। इसलिए उसकी अजीब परिस्थिति रही। अदालत मे उसे अभियुक्तो से अलग बैठाया जाता था। वह कभी अभियुक्तो की ओर आख उठाकर नही देखता था। और उसके व्यवहार से यह स्पष्ट प्रकट हो जाता था कि वह अपने कार्य से बहुत लज्जित है, फिर भी कमजोरी के कारण अपना बयान वापस नही ले सका था।

प्रकाश अभी तक अस्पताल मे पडा हुआ था। यद्यपि उस रात के बाद लगभग डेढ महीने हो चुके थे। अब तो उसने आनन्दकुमार के वकालतनामे

पर दस्तखत कर दिया था और आनन्दकुमार उससे कई बार मिल भी चुके थे। अखबारो मे उसपर किए हुए अत्याचारो के ब्योरे काफी अतिरजित होकर छपे थे, यद्यपि उसे अतिरजित करने की कोई जरूरत नही थी। एक डिफेंस कमेटी बनी थी, जिसमे आनन्दकुमार के अतिरिक्त प्रान्त के बहुत-से गण्यमान्य नेता भी थे।

पुलिस ने अमिताभ के भागने का बहाना बनाकर अदालत से यह निवेदन किया था कि वह जिला जेल के अन्दर ही मुकदमो की सुनवाई करे, पर स्पेशल मजिस्ट्रेट ने (जो पुलिस की हर बात मानते थे) इस बात को मानने से इन्कार किया था। बात यह है कि मजिस्ट्रेट साहब निष्पक्षता की बाघ की खाल ओढे रहना चाहते थे। इसके अलावा शायद पुलिस की इस बात को न मानने मे उनका एक और उद्देश्य था, वह यह कि इस प्रकार उन्हे अधिक ख्याति मिलने की सम्भावना थी। यद्यपि पहले ही दिन वे यह फैसला दे चुके थे कि यह मुकदमा राजनीतिक नही है, एक साधारण मुकदमा मात्र है, फिर भी वे जानते थे कि यह मुकदमा राजनीतिक है और पत्रो मे उसका एक-एक शब्द छपेगा। यदि जेल मे मुकदमा होता तो पत्रकारो के लिए असुविधा होती, जिससे प्रकाशन कम होता।

रुक्मिणी को कोई काम तो था नही, इसलिए वह रोज आनन्दकुमार के साथ अदालत मे आती थी और बडे ध्यान से सारी कार्रवाई देखती-सुनती थी।

आज भी रुक्मिणी आनन्दकुमार के यहा जाने को तैयार हो रही थी कि एकाएक महेन्द्र और श्यामा आए और महेन्द्र ने रुक्मिणी से कहा, "माजी, आज तुम घर ही पर रहो।..."

यह वाक्य महेन्द्र ने कहा था, पर रुक्मिणी ने देखा कि दोनो मे आखो-आखो मे कुछ बात हो गई। उसे ताज्जुब हो रहा था कि इन दोनो मे इतनी घनिष्ठता कैसे हुई, पर उसने सोचा दोनो दल के सदस्य हैं, इसलिए सब बाते उसीके जरिए हो, ऐसी कोई बात नही है। यह बातें एक क्षण के अन्दर ही उसके दिमाग मे कौंध गईं। बोली, "क्यो-क्यो, कोई बुरी खबर तो नही है?"

महेन्द्र बोला, "नही-नही, निश्चिन्त रहो।"

कहकर वह सहसा रुक गया, फिर श्यामा से आंखो-आखो मे कोई बात हुई, बोला, "माजी, आज तुम अदालत मे न जाओ।"

रुक्मिणी बोली, "यह कैसे हो सकता है ? आनन्दकुमार जी मेरे लिए इन्तज़ार करते होगे। जिस दिन से मुकदमा शुरू हुआ मै बराबर उनके साथ रहती आई हू। मुझे न आते देखकर सम्भव है कि वे स्वय ही आ जाए और उन्हे परेशानी उठानी पडे।"

श्यामा ने महेन्द्र से आखो-आखो मे फिर कोई बात की, बोली, "मै अभी टेलीफोन किए देती हू। यदि कहू कि दीदी तुम्हारी तबियत ठीक नही है तो वे शायद दौडकर आए इसलिए यह कहती हू कि तुम्हे कोई और काम पड गया। इसलिए तुम नही जा रही हो।"

कहकर वह जाने लगी, पर महेन्द्र ने उसे रोक लिया, बोला "टेलीफोन करने की इतनी जल्दी क्या है ? अभी तो रोज का समय भी नही हुआ।"

श्यामा रुक गई, पर न तो उसने कुछ कहा, न महेन्द्र ने। रुक्मिणी बोली, "बात क्या है ?"

महेन्द्र ने कहा, "जो बात मै कहने जा रहा हू, वह आपको बहुत आश्चर्य-जनक और शायद अद्भुत लगे। पर अब कहना ही पडेगा..."

कहकर उसने एक बार कनखी से श्यामा की ओर देखा, फिर एकाएक बोला, "हम दोनो ने विवाह करने का निश्चय कर लिया है।"

यदि महेन्द्र कहता, "हम दोनो ने सयुक्त रूप से आत्महत्या करने का निश्चय कर लिया" तो रुक्मिणी को शायद इतना आश्चर्य नही होता। वह एकदम से चौक पडी। कहा तो लोग फासी पर चढने और सरकारी गोलियो का शिकार होने की बात सोच रहे हैं, बचे-खुचे दल को फिर से सभालकर सगठित करने की आप्राण चेष्टा हो रही है, यहा तक कि स्वराज्य दल भी कौसिलो से अलग हो रहा है, और यहा शादी की बात हो रही है। और कोई जाने या न जाने रुक्मिणी तो जानती थी कि पार्क के सामने जो सिपाही मारा गया था वह कुणाल की गोली से नही बल्कि महेन्द्र की गोली से मारा गया था, बनवारी ने भी उसके विरुद्ध कई बाते कही हैं जिनसे उसे फासी तो नही होगी, पर उसके विरुद्ध षड्यत्र का मुकदमा तो साबित होता ही है, जिसका अर्थ था कम से कम सात साल जेल। और श्यामा ? उसके विरुद्ध भी तो बहुत-सी बाते है। बनवारी उन बातो मे से कई को जानता था, पर बयान मे उसने पता नही क्यो उन बातो को कहा ही नही।

रुक्मिणी बोली, "तुम लोगो की जोडी तो अच्छी है।"

महेन्द्र बोला, "हम लोग आपका आशीर्वाद लेने आए हैं। यू तो कुणाल जी का आशीर्वाद हमे लेना चाहिए था, पर मैं जानता हू कि वे कभी इसका समर्थन नही करेंगे।"

रुक्मिणी अजीब ढग से हसी जो दूर से हिचकी की तरह सुनाई पड़ी, फिर बोली, "जब तुम्हे निश्चय है कि कुणाल जी इसका समर्थन नही करेंगे, तो तुम मुझसे आशीर्वाद क्यो चाहते हो ?"

श्यामा ने बीच मे बोलते हुए कहा, "मैंने भी तो इनसे यही बात कही थी।"

महेन्द्र बोला, "आप और है और वे और। वे तो विशुद्ध क्रान्तितत्व है, और आपमे मानवीय तत्व की प्रधानता है।"

श्यामा बोली, "दूसरे शब्दो मे तुम दीदी से यह कहलवाना चाहते हो कि एक आदर्श क्रान्तिकारी मे मानवीय तत्व कम होता है ?"

महेन्द्र बोला, "जब महामानवीय तत्व अधिक होता है तो स्वाभाविक रूप से मानवीय तत्व कम होगा। कुणाल जी के सामने केवल एक ही लक्ष्य है, बाकी सारी बाते उनके लिए गौण ही नही अस्तित्व ही नही रखती, यहा तक कि उनके लिए आपका भी अस्तित्व नही है। हम लोग सब इस आदर्श तक कहा पहुच सकते है ?"

रुक्मिणी के अन्दर एक अजीब द्वन्द्व मचा हुआ था। उसका गला भर आया था, बोली, "मैं इतना विश्लेषण नही कर सकती कि इस अवसर पर क्या सही है और क्या गलत। पर मै इतना अनुभव करती हू कि जब दो हृदय एक होना चाहते है और वे हृदय तुम्हारे ऐसे उच्च आदर्शयुक्त युवको के हृदय हैं, तो उनमे कोई बुराई नही हो सकती। तुम कहते हो कि कुणाल जी इसका विरोध करेंगे, पर क्यो ? वह शायद इसलिए कि वे समझते है कि इस प्रकार की घटनाओ से क्रान्ति के प्रति तुम्हारे जोश मे भाटा आएगा। यदि तुम दोनो अपने जीवन से यह साबित कर दो कि नही तुम उसी प्रकार से बल्कि और भी उग्रता के साथ क्रान्ति के पथ पर अग्रसर होगे, तो किसीको भी इसमे कोई आपत्ति नही हो सकती।"

श्यामा बोली, "तो दीदी, तुम्हारी सम्मति है ?" कहकर वह रुक्मिणी से एकदम लिपट गई। बोली, "मैने तो इन्हे साफ कह दिया था कि यदि कुणाल जी

या तुम इस बन्धन का समथन नही करोगी तो मैं इसमे बधने के लिए तैयार नही हू।" कहकर उसे ख्याल आया कि शायद शब्द कुछ अधिक कडे हो गए, बोली, "मैंने कहा था कि फिर मै प्रतीक्षा करूगी।"

रुक्मिणी ने जबर्दस्ती हसते हुए (क्योकि न जाने क्यो उसका हृदय रो रहा था) कहा, "इसका अर्थ यह हुआ कि तुम बहुत चतुर हो। जब तुम यह जानती थी कि या तो उनकी सम्मति मिलेगी या मेरी, तो फिर इसमे अनिश्चयता क्या रही ?"

महेन्द्र ने भी रुक्मिणी के पैर छुए। रुक्मिणी बोली, "जीवन बडा विचित्र है। एक तरफ जहा युद्ध की दुन्दुभी बज रही है और सहार-लीला चल रही है, दूसरी तरफ मिलन की शहनाई भी बज रही है। कुणाल जी माने या न माने मैं तुम लोगो के मिलन मे कोई ऐसी बात नही पाती, जिससे क्रान्ति का ताल कट जाता हो। सच तो यह है कि इससे उसमे पूर्णता आती है। क्रान्ति को जीवन से पृथक् करके कैसे देखा जा सकता है। उसकी सार्थकता तो सडे गले जीवन का विनाश कर नव जीवन फूकने मे ही है "

रुक्मिणी इसी ढग से कितनी ही बाते कह गई, इसमे कितना समय गया, किसीको पता नही लगा। अभी वे बातचीत कर ही रहे थे कि आनन्दकुमार वहां पहुच गए, बोले, "क्या बात है ? आज यहा कौन-सी गम्भीर आलोचना हो रही है कि अदालत जाने की बात भुला दी गई ? यो मेरा जाना न जाना दोनों बराबर है क्योकि अब तो अच्छे-अच्छे वकील हैं, मैं तो वहा कुछ करता भी नही, पर जीवन की वह चहल-पहल मुझे अच्छी लगती है। मैं शायद तुम्हारे शब्दो की ही पुनरावृत्ति कर रहा हू।"

श्यामा और महेन्द्र यह समझ नही पाए कि आनन्दकुमार से विवाह वाली बात कहनी चाहिए या नही। वे रुक्मिणी के चेहरे की तरफ देखने लगे कि रुक्मिणी ने कहा, "आज यहा जीवन की चहल-पहल ज्यादा है।…"

आनन्दकुमार ने सबके चेहरो की तरफ देखा, अनुमान लगाने की चेष्टा की, बोले, "वहां शृखलित यौवन है और यहा अभी तो यौवन मुक्त है, यद्यपि उसके विरुद्ध वारन्ट बहुत दिनो से है… "

रुक्मिणी बोली, "नही यहा भी यौवन शृंखलित हो चुका है…"

आनन्दकुमार ने जब इसका मतलब पूछा तो उन्हें सारी बात बताते हुए

रुक्मिणी बोली, "यह लोग यह जानते हुए भी कि कुणाल जी इसका समर्थन नही करेंगे, मेरा आशीर्वाद लेने आए है।"

आनन्दकुमार बोले, "और तुमने आशीर्वाद दे भी दिया होगा क्योंकि इस मामले मे तुम्हारे विचार भिन्न हैं।"

रुक्मिणी बोली, "मैने आशीर्वाद या शुभेच्छा जो भी कहिए दे दी है। पर साथ ही मैंने यह भी चेतावनी दी है कि यदि कुणाल जी को सचमुच गलत साबित करना है तो इन्हे उसी जोश से दल का काम करना पडेगा। उन्हे विवाह आदि पर आपत्ति इसीलिए है न ! कि इन बातों से आदमी का जोश ठण्डा पड जाता है।"

आनन्दकुमार ने कहा, "आदर्श हमेशा ऐसा होना चाहिए जो कभी प्राप्त न हो सके, ऐसा कुछ लोगो का विचार है। यह एक हद तक ठीक भी है क्योंकि उनकी सुई को देखकर लोग अपनी घडी मिला सकते है। कुणाल ऐसे ही लोगो मे है। सब कुणाल नही हो सकते, सच तो यह है कि कुणाल ऐसे कुछ आदमी न हो तो इस ढग का हलचल भी नही हो सकता है। मेरी तो बराबर क्रातिकारी दल के विरुद्ध यही आपत्ति रही है कि यह दल कुछ चुने हुए लोगो के लिए है, जनता के लिए नही ·"

श्यामा ने बीच मे बोलते हुए कहा, "तो आपका भी आशीर्वाद हमारे साथ है न ?"

आनन्दकुमार ने जोश के साथ श्यामा के माथे का आलिंगन करते हुए कहा, "मेरा आशीर्वाद जीवन के साथ हमेशा है और तुम हो जीवन का प्रतीक। आशा करता हू कि जिस प्रकार तुम मेरे जीवन मे एक गति और आलोक ला सकी हो, उसी तरह महेन्द्र के जीवन मे भी ला सकोगी।" कहकर उन्होने श्यामा को छोडते हुए रुक्मिणी के सिर पर हाथ रखते हुए कहा, "अब तो मेरे लिए रुक्मिणी ही रह गई।"

श्यामा कुछ कहने जा रही थी कि महेन्द्र ने एकाएक बडी गम्भीरता के साथ कहा, "यहा आप सब लोग है, अगर इजाजत हो तो मैं अपने सम्बन्ध मे एक बात कहू"—उसकी आवाज बहुत ही गम्भीर थी, इतनी गम्भीर कि जो बातचीत चल रही थी, उससे मेल नही खाती थी। सब लोग सन्नाटे मे आ गए।

महेन्द्र बोला, "मेरा महेन्द्र नाम कुणाल जी का रखा हुआ है। वह मेरा पूर्व इतिहास जानते है..."

श्यामा ने व्यग्र होकर बीच मे बोलते हुए कहा, "महेन्द्र, तुम कोई ऐसी बात तो नही कहने जा रहे हो जिससे तुम्हे पछतावा हो। मैने तुम्हे ग्रहण किया है और मैं कोई ऐसी बात सुनना न चाहूगी, जिससे मेरे मन मे कोई सशय उत्पन्न हो।"

महेन्द्र बोला, "तुम समझती हो कि तुम मेरे विषय मे सब कुछ जानती हो, पर तुम मेरे पूर्व जीवन के सम्बन्ध मे कुछ भी नही जानती हो।"

श्यामा ने बात काटकर कहा, "अभी तुमने बताया कि कुणाल जी तुम्हारा पूर्व इतिहास जानते है, यही मेरे लिए बहुत काफी है। केवल वे तुम्हे जानते ही नही है, बल्कि उन्होने तुम्हे अपनी पत्नी का भार सौपा था।"

आनन्दकुमार ने कहा, "मै इससे भी ज्यादा जानता हू, वह यह कि जब कुणाल ने तुम्हारा नाम महेन्द्र रखा तभी उसमे सारा परिचय आ गया। कुणाल ने तुम्हे महेन्द्र मान लिया, इससे बडा परिचय क्या हो सकता है?"

महेन्द्र बोला, "यह सब ठीक है, पर जो असली बात है, वह सबको मालूम होनी चाहिए। मेरा असली नाम युसुफ है। मेरे घर वाले अपने को बहुत ऊचा पठान मानते है यानी दूसरे पठानो को अपने से बहुत छोटा समझते हैं। मेरे पिता, उनका नाम बताने की जरूरत नही है, एक छोटे-मोटे ताल्लुकेदार है और कुणाल जी कई बार हमारे यहा ठहर चुके है.."

यद्यपि श्यामा, आनन्दकुमार और रुक्मिणी कोई बहुत नई बात सुनने के लिए तैयार थे, फिर भी उनमे से कोई भी इतनी आश्चर्यजनक बात के लिए तैयार नही था, पर सभी लोग सम्भल गए। सबसे पहले आनन्दकुमार ने कहा, "इससे कुछ नही आता-जाता। तुम किस कुल मे पैदा हुए हो और तुम्हारे घर के लोग किस धर्म को मानते है, यह कुछ महत्वपूर्ण जरूर है, पर बहुत नहीं। जो लोग तुम्हारे ऐसे होते है, वे किसी कुल या खानदान से सीमित नही होते। ऐसे लोगो का खानदान ही स्वतन्त्र होता है।"

महेन्द्र उर्फ युसुफ कनखी से श्यामा की ओर देख रहा था कि उसपर क्या प्रतिक्रिया हुई। श्यामा यह बात समझ गई। बोली, "मैं यह अस्वीकार नही कर सकती कि यह खबर मुझे बहुत आश्चर्यजनक लगी। यह भी मैं अस्वीकार

नही करती कि यदि पहले से मुझे यह बात मालूम होती तो मै शायद उस तरीके से तुम्हारे पास नही आ सकती, जैसे कि अब आई, पर साथ ही मै कुणाल जी की प्रशसा करूगी कि उन्होने हमे तुमसे पहले मिलने का मौका दिया और फिर यह मालूम हुआ कि तुम मुसलमान हो।"—कहकर उसने युसुफ की तरफ हाथ बढा दिया, जिसे युसुफ ने बहुत तपाक से पकड लिया।

आनन्दकुमार ने रुक्मिणी से कहा, "अब तो हम लोग इतर जन मे हो गए और हम लोगो का बस इतना स्वार्थ रह गया कि कुछ मिष्टान्न मिले। श्यामा बेटी ने यह ठीक ही कहा कि हम लोगो का पालन-पोषण इस तरह से होता है कि भिन्न धर्म के लोगो मे बेगानगी बल्कि एक तरह की दबी हुई दुश्मनी पैदा होती है। मैं अभी-अभी क्रान्तिकारी दल की बुराई कर रहा था, पर इस मामले मे क्रान्तिकारी दल ने आदर्श स्थापित किया है और अब तो इस आदर्श को कार्यरूप मे परिणत होते देख रहा हू।"

बातो-बातो मे सब लोग अपनी-अपनी परिस्थिति भूल गए थे। युसुफ एक फरार था, श्यामा को अभी अपने माता-पिता की सम्मति लेनी थी, आनन्दकुमार को कचहरी मे हाजिरी देनी थी और रुक्मिणी को कई तरह के कर्तव्य करने थे।

३७

यद्यपि स्वराज्य दल के कारण देश के अन्दर जन आन्दोलन की लौ कुछ न कुछ कायम रही और जब-तब १६२१ के महान आन्दोलन की प्रतिध्वनि सुनाई पड जाती थी, फिर भी साम्राज्यवाद ने जिन काली शक्तियो को प्रोत्साहन दिया था, वे अपना असर दिखा रही थीं। साम्प्रदायिकता जोरो पर थी, यहा तक कि स्वराज्य दल के अन्दर भी साम्प्रदायिकता की लहरे हिलोरे ले रही थी। बगाल मे स्वराज्य पार्टी का सबसे अधिक जोर था, पर वहा भी उसमे साम्प्रदायिकता के आधार पर चार गुट बने हुए थे—हिन्दू स्वराजी,

स्वराजी हिन्दू, मुस्लिम स्वराजी, स्वराजी मुसलमान* ।

अब स्वराज्य दल के उच्च नेतृत्व मे भी यानी लाला लाजपतराय और पडित मोतीलाल नेहरू मे भी असेम्बली के कार्य के सम्बन्ध मे गहरा मतभेद दिखाई पड रहा था। यद्यपि लाला जी एक तपे हुए देश-सेवक थे, फिर भी वे यह कह रहे थे कि स्वराज्य दल की बार-बार असेम्बली से वाक-आउट करने की नीति हिन्दुओ के हित के लिए अहितकर है। नवम्बर १९२६ मे आम चुनाव होने वाला था। ऐसे समय मे इस प्रकार का मतभेद बहुत हानिकर था।

गौहाटी काग्रेस के लिए श्रीनिवास आयगर अध्यक्ष चुने गए थे। सब लोगो की आखे उसीकी तरफ लगी हुई थी। नवम्बर के चुनाव मे काग्रेस को अच्छी सख्या मे व्यवस्थापिका सभाओ के आसन मिल चुके थे।

आनन्दकुमार रुक्मिरणी को साथ लेकर गौहाटी पहुचे। जो मुकदमा चल रहा था, वह बहुत पहले ही सेशन जज के सिपुर्द हो चुका था और वहा भी सैकडो गवाह गुजर चुके थे। अब दो-तीन महीने के अन्दर फैसला भी होने वाला था। पुलिस फरारो मे से किसीको गिरफ्तार नही कर सकी थी। आनन्दकुमार एक वकील तथा भूतपूर्व मैजिस्ट्रेट के नाते अच्छी तरह जान रहे थे कि ऊट किस करवट बैठने वाला है। वे मु ह से कुछ नही कहते थे, पर उनका मन भाराक्रान्त रहता था।

अभी आनन्दकुमार गौहाटी पहुचे ही थे कि उनको यह खबर मिली कि दिल्ली मे स्वामी श्रद्धानन्द एक धर्मान्ध मुस्लिम के हाथो मारे गए हैं। बात यह है कि मुसलमानो का कट्टर तबका स्वामी श्रद्धानन्द से इस कारण नाराज़ था कि वे मलकानो मे शुद्धि का आन्दोलन चला रहे थे। उस दिन प्राग्ज्योतिषपुर मे काग्रेस के सभापति का हाथियो पर जुलूस निकलने वाला था, पर स्वामी श्रद्धानन्द की हत्या की खबर से हाथियो के जुलूस का कार्यक्रम रद्द कर दिया गया। आनन्दकुमार स्वामी श्रद्धानन्द की हत्या पर बहुत ही परेशान है, यह देखकर रुक्मिरणी ने उनसे कहा, "इस सम्बन्ध मे वह कहावत पूरी तरह लागू होती है कि दोनो हाथो से ताली बजती है।"

आनन्दकुमार ने कहा, "मै भी यही सोच रहा था। ऐसे मौके पर इस तरह

---

*सीतारमैया लिखित कांग्रेस का इतिहास।

के धार्मिक झगडो का उठ खडा होना बहुत ही दुखकर है। जहा तक शुद्धि का सम्बन्ध है वहा तक स्वामी श्रद्धानन्द उस हद तक ठीक थे, जिस हद तक तबलीग व तनजीम वाले ठीक है यानी यदि मुल्लाओ को शान्तिपूर्वक हिन्दुओ को मुसलमान बनाने का हक है तो हिन्दुओ को भी मुसलमानो को हिन्दू बनाने का हक है। यहा तक तो सब ठीक है। पर इस हक के लिए क्या अजीब समय चुना गया और फिर इस सम्बन्ध मे नाराज होकर धोखे से हत्या करना तो और भी गर्हित है, यह ऐसे ही रहा जैसे बाप आपरेशन की मेज़ पर पडा हो और लडके यह कहे कि अभी हमारा बटवारा कर दो। मेरी राय मे तो एक धर्म से दूसरे धर्म मे ले जाने की सारी कार्रवाई ही गलत है।"

रुक्मिणी बोली, "फिर भी एक बात यह बहुत ही अजीब है कि इस तरह की हत्याए बराबर धर्मान्ध मुसलमानो के द्वारा ही की गई हैं।"

आनन्दकुमार ने कहा, "बाप के लिए यह कोई विशेष चिन्ता का विषय नही है कि दो लडको मे होने वाले सारे झगडो मे एक ही लड़का बराबर आक्रमणकारी रहता है, उसके लिए तो बस शान्ति ही चाहिए।"

"कुणाल जी का तो यह समाधान है कि धर्मों का ही लोप कर दिया जाए।"

"मैं मानता हू कि यह एक बहुत अच्छा समाधान है क्योकि धर्मों मे जितनी भी भलाई है, वह सब धर्मो मे है यहा तक कि नास्तिकवाद मे भी है। बाकी हिस्सो मे तो केवल बखेडे ही फैलते हैं। मै अब धीरे-धीरे इस निश्चय पर पहुच रहा हू कि यद्यपि धर्मो ने सभ्यता के भडार में बहुत कुछ रत्न दिए है, पर उन्होने जीवन को हलाहलमय भी बना दिया। धर्मो के नाम पर जितना रक्तपात हुआ है, जितना वैमनस्य हुआ है, जितना झूठ बोला गया है, और जितनी लड़ाइयाँ हुई हैं, उतनी शायद किसी और कारण से नही हुई। एक धर्मवाला आदर्श मुझे बहुत अपील करता है, पर यह होने का नही है, इसलिए मेरे मन मे कुछ-कुछ यह विश्वास हो रहा है कि कुणाल वाला आदर्श ही शायद ठीक है।..."

आनन्दकुमार इसी तरह बहुत-सी बाते कह गए। रुक्मिणी को आश्चर्य हुआ कि प्राचीन काव्य साहित्य शास्त्र के परम प्रतिपादन को इतनी चोट लगी है कि उनके सारे विचार अस्त-व्यस्त हो गए है और वे ऐसी बात कहने लगे जो

एक तरह से उनके सारे विचारो के विरुद्ध पड़ती थी।

आनन्दकुमार ने शायद रुक्मिणी का चेहरा देखकर यह अनुमान कर लिया कि वह चकित हो गई है, बोले, "सर्व धर्म समन्वय और सर्व धर्म विरोध अन्ततोगत्वा एक ही हैं, सर्व धर्म समन्वय मे धर्म की वह कोर कट जाती है, जिसके कारण वह दलबन्दी मे आनन्द लेने वाले मन को भाता है। सर्व धर्म विरोध मे भी यही बात आती है। दोनो मे मानव को मानव के रूप मे देखा जाता है, न कि किसी एक सकीर्ण गिरोह के सदस्य के रूप मे। दूसरे शब्दो मे दोनो मतवादो मे मनुष्य को मनुष्य की मर्यादा प्राप्त होती है। सर्व-धर्म समन्वय या थियोजाफी तो इसी कारण सफल नही होगी कि इसमे एक चोरी के लिए गुंजाइश है, वह यह कि मनुष्य ऊपर से तो सर्व धर्म समन्वय का नारा लगाता रहे और अपने अन्तर्मनस मे अपने धर्म यानी जिस धर्म मे आदमी पैदा हुआ, उसीको कुछ मामूली सशोधनो के साथ सबके लिए उपादेय धर्म समझता रहे। इसके अलावा भी बडी चीज है रोजमर्रे का व्यवहार। थियाजाफी रोजमर्रे के व्यवहार मे दखल नही देती और इस प्रकार आत्मवचना के मार्ग को और भी प्रशस्त कर देती है..."

रुक्मिणी को इन बातो मे बहुत रस आ रहा था, इतना रस आ रहा था, जितना कि आसाम की सुन्दर प्रकृति मे भी नही आ रहा था।

दोनो दिन भर घूमते रहे। जब सन्ध्या समय वे अपने डेरे पर पहुचे तो एक लम्बा तार उनकी प्रतीक्षा कर रहा था।

श्यामा ने तार भेजा था, "महेन्द्र बडी अजीब परिस्थितियो में मेरे घर पर गिरफ्तार कर लिए गए। मुझे कुछ नही सूझता आप और दीदी फौरन आए।"

तार पढते ही दोनो बिस्तर बाधकर अगली गाडी से रवाना हो गए। यो आनन्दकुमार पूरी काग्रेस देखते और उसमे भाग लेते, पर श्यामा ने जो लिखा था, 'अजीब परिस्थितियो मे' उससे उनको कुछ खटका लगा और वे फौरन तैयार हो गए।

काशी पहुचकर रुक्मिणी सीधे श्यामा के यहा जाना चाहती थी, पर आनन्दकुमार ने उसे रोका, बोले, "पहले हमारे यहा चलो, फिर वहा से साथ चलेंगे।"

रूपवती से पूछा गया तो उसे कुछ पता ही नही था। उसे यह भी नही

मालूम था कि श्यामा के यहा कोई गिरफ्तार हुआ है। जलपान करके आनन्द-कुमार और रुक्मिणी श्यामा के घर की तरफ रवाना होने ही वाले थे कि श्यामा स्वय ही आ गई।

उसका चेहरा उतरा हुआ था, मालूम होता था कि इधर वह बहुत रोई है। आनन्दकुमार ने उसको आदर के साथ बैठाया और फिर सारी घटना पूछी।

श्यामा ने रुक-रुककर जो बाते कही, उनका साराश इस प्रकार था। महेन्द्र उन दिनो रात को अक्सर उसीके कमरे मे रहता था। दिन मे वह कभी रहता था, कभी नही रहता था। बहुत सावधानी करने पर भी वह इस बात को घर के लोगो से छिपा नही सकी और ऐसा मालूम होता है कि उसकी भाभिया उधर उसपर पूरी निगरानी रखने लगी थी।

भाभियो ने भाइयो से कहा। तब भाइयो के कान खडे हुए। एक दिन बडे भाई श्रीकान्त ने आधी रात के समय दरवाजे पर दस्तक दी।

"पहले तो मैंने बहाना किया कि मैं सो रही हू कि मुझे कुछ सुनाई नही दे रहा है, फिर भी जब दस्तक जारी रही और मेरा नाम लेकर जोर-जोर से बडे भाई ने यह कहा कि तुम्हारे कमरे मे कोई है, मुझे उससे मतलब है। तब मैंने दरवाजा खोल दिया।

"महेन्द्र ने उपस्थित बुद्धि से काम लिया और जब मेरे भाई ने पूछा कि आप यहा पर क्यो हैं? तो उन्होने साफ-साफ कह दिया कि पहला कारण तो यह है कि मैं फरार हू और दूसरा कारण यह है कि मैं श्यामा का पति हू।

"सुनकर उस समय तो सब लोग चले गए पर अगले दिन मुझे यह आदेश दिया गया कि या तो मै वहा से चली जाऊ और या महेन्द्र वहा कभी न आएं। वे महेन्द्र के राजकुमार ऐसे चेहरे से प्रभावित हुए थे, पर उनको मालूम नही था कि वे मुसलमान हैं। पता नही क्या हुआ शायद पुराने अखबार मे या पुलिस बुलेटिन मे कही महेन्द्र का फोटो छपा था, जिसमे लिखा था महेन्द्र उर्फ युसुफ उर्फ याकूब उर्फ रामप्रसाद। उन्हे इससे यह भी मालूम हो गया कि महेन्द्र पर कई हजार का इनाम है।

"उसी दिन शाम को महेन्द्र कही से बहुत थके हुए आए। आए तो वह चोरी से थे, पर किसी तरह हमारे भाइयो को खबर हो गई। फिर क्या हुआ, पता नही, पुलिस आ गई और महेन्द्र गिरफ्तार कर लिए गए। जब महेन्द्र गिरफ्तार

हुए तो उनकी आखो मे अजीब आश्चर्य और उदासीनता थी। मुझे इसमे शक नही है कि भाइयो ने उन्हे गिरफ्तार कराया है।"

आनन्दकुमार ने कहा, "तुम्हारे पास इसका कोई प्रमाण है या यह केवल अटकलमात्र है ?"

श्यामा ने कहा, "प्रमाण मेरी आत्मा है।"

"मान लो कि उन लोगो ने उसे गिरफ्तार कराया है, तो क्या तुम समझती हो कि उन लोगो ने इनाम के लोभ से गिरफ्तार कराया है ?"

"यह तो कहना मुश्किल है, पर इनाम का लोभ भी रह सकता है।"

आनन्दकुमार ने आश्वस्त होकर कहा, "और तो कोई बात नही ?"

"शायद मुझे सबक सिखाना चाहते है।"

"और कुछ ?"

श्यामा ने कहा, "सम्भव है डर हो कि इतना मशहूर फरार कही उनके घर पर गिरफ्तार हो गया तो आफत रहेगी।"

"क्या तुम्हारे पिताजी का भी इसमे कोई हाथ हो सकता है ?"

"पिताजी तो माताजी को लेकर कई महीने से दक्षिण के तीर्थो की यात्रा करने गए है।"

आनन्दकुमार कुछ देर चुप रहे, फिर सोचकर बोले, "क्या महेन्द्र का मुसलमान होना उनको मालूम था ?"

"शायद वे लोग उनकी बातचीत से समझ गए हो। आप तो जानते हैं कि वे कितने शरीफ है।"

"कही महेन्द्र उर्फ युसुफ यह तो नही समझता कि तुम्हारे भाइयो ने उसे मुसलमान होने के कारण ही विशेष कर गिरफ्तार कराया है ?"

"यही चिन्ता तो मुझे खाए जा रही है। चेष्टा करने पर भी मुझे उनसे जेल मे मिलने नही दिया गया।"

आनन्दकुमार ने कहा, "ऐसे मामलो मे रिश्तेदारो द्वारा विश्वासघात कोई बड़ी बात नही है। ज्यो ही इसका प्रमाण मिल जाए तुम उन लोगो से अलग हो जाओ। पर तुम दोनो मे कोई सन्देह या मनमुटाव नही होना चाहिए।"

श्यामा कुछ कहने जा रही थी, पर कह नही पा रही थी। वह एकाएक

बोली, "एक बात और है, जिससे मैं बहुत चिन्तित हू।"—कहकर उसका चेहरा कुछ लाल पड गया।

आनन्दकुमार ने कहा, "मैं समझ गया, तुम मा बनने वाली हो, पर उसकी कोई चिन्ता नही है। रुक्मिणी बहन के साथ तुम भी तीर्थ यात्रा को चली जाओ और बेटा हुआ या बेटी हुई, वह मेरे घर पर तो रह ही सकता है। तुम्हे बताने की जरूरत नही है कि तुम मा बनी हो, यानी तुम यदि चाहो तो।"

रुक्मिणी बोली, "मै ही पाल लूगी।"

आनन्दकुमार ने कहा, "अन्त तक शायद तुम्हीको पालना पडे, क्योकि मुझे डर है कि श्यामा को भी उसी घर मे देर-सवेर मे स्थान मिलेगा, जहा महेन्द्र को मिला है।"

इन सारी बातो से आनन्दकुमार का मन भाराक्रान्त हो गया। गुत्थियो के अन्दर से गुत्थिया निकलती चली जा रही थी और किसीका समाधान आसान नही मालूम होता। महेन्द्र जिन परिस्थितियो मे गिरफ्तार हुआ, उससे यह स्पष्ट था कि श्यामा के लिए अब पितृगृह मे रहना सम्भव नही था। महेन्द्र को यह विश्वास दिलाने के लिए कि भाइयो के साथ (जिन्होने शायद उसे गिरफ्तार कराया है) उसका कोई सम्बन्ध नही है, घर से अलग हो जाना जरूरी नही था। केवल श्यामा के रहने की ही समस्या नही थी, उसके गर्भ रह जाने से समस्या और विकट हो गई थी। एक तो मुसलमान से विवाह, और विवाह भी कहा, समाज की दृष्टि मे तो कोई विवाह हुआ ही नही था। अवश्य श्यामा बहुत साहसी स्त्री है, पर···

इसके अलावा आनन्दकुमार के मन मे यह भी सन्देह था कि रूपवती कहां तक इन परिस्थितियो मे श्यामा को घर मे रखना पसन्द करेगी। उसने तो कभी श्यामा को पसन्द नही किया, अब इस बहाने से शायद वह नापसन्दगी विकट रूप धारण करे। अवश्य रुक्मिणी का नैतिक समर्थन और सब तरह की सहायता मिलेगी, पर उसे भी तो आश्रय देने का प्रश्न है। रूपवती उसके प्रति भी कोई विशेष प्रेम तो नही दिखलाती।

खैरियत यह थी कि उधर से अच्छी खबरें आई थी। गोहाटी काग्रेस मे स्वामी श्रद्धानन्द की हत्या पर एक प्रस्ताव हुआ, जिसे गांधी जी ने पेश किया और मुहम्मदअली ने समर्थन किया। गाधी जी ने श्रद्धानन्द के हत्यारे अब्दुल

रशीद को अपना भाई कहा और यह कहा, "मैं तो उसे स्वामी जी की हत्या का अपराधी भी नही समझता। दोषी तो वे लोग है जिन लोगो ने परस्पर के प्रति घृणा की भावना को उभारा।"

कौसिल-कार्य के सम्बन्ध मे भी काग्रेस ने यह स्पष्ट कर दिया कि जब तक उधर से सहयोग का हाथ नही बढाया जाता, तब तक सरकार से किसी तरह का मन्त्रित्व या दूसरे पद न लिए जाए, ऐसे सारे प्रस्तावो का विरोध किया जाए, जिनसे ब्रिटिश सरकार अपनी शक्ति को दृढ करना चाहती है। इत्यादि-इत्यादि। गौहाटी काग्रेस मे स्वतन्त्रता का एक प्रस्ताव भी पेश था, पर गाधी जी ने इस प्रस्ताव को अपनी वाग्मिता से समाप्त कर दिया।

३८

श्यामा को इस बात का कोई भी प्रमाण नही मिला कि महेन्द्र की गिरफ्तारी उसके भाइयो के द्वारा कराई गई है, फिर भी उसके मन मे यह सन्देह बना रहा, इस कारण वह उसी दिन आनन्दकुमार के घर पर चली आई। दो-तीन दिन वहा रहने पर उसे मालूम हुआ कि रूपवती इस बात को पसन्द नही कर रही है और केवल पति के दबाव के कारण चुप है, तो उसने आनन्दकुमार से यह प्रस्ताव किया कि वह बीच मे जैसे सबसे अलग रहती थी, वैसे अलग रहेगी। आनन्दकुमार मन से इस प्रस्ताव के पूर्ण विरोधी थे, पर वे सब कुछ देख रहे थे, इसलिए उन्होने कहा, "ठीक है, रुक्मिणी भी तुम्हारे साथ रहे।"

श्यामा और रुक्मिणी इस प्रकार अलग घर लेकर रहने लगी यद्यपि श्यामा या रुक्मिणी अब किसी प्रकार किसी राजनीतिक कार्य मे भाग नही लेती थी, पर उनपर पुलिस की निगरानी बराबर बनी रहती थी। श्यामा तो घर से भी कम निकलती थी यानी इस बीच मे वह कही गई थी तो जेल के फाटक तक गई थी। उसे महेन्द्र से मिलने नही दिया गया था यद्यपि उसने दरख्वास्त मे अपने को उसकी पत्नी करके लिखाया था। उसे मालूम हुआ कि महेन्द्र के रिश्ते-दारो को भी उससे नही मिलने दिया जा रहा है। इससे उसके मन मे बड़ी

अशान्ति रहती था। रुक्मिणी जब-तब पहले की तरह स्वच्छन्द घूमा करती थी और इधर-उधर से खबरे लाया करती थी।

एक दिन रुक्मिणी सध्या समय घर से निकली ही थी कि श्यामा ने लेटे-लेटे देखा कि छोटे-से मकान के अन्दर किसीकी छाया पडी है। वह चौंककर उठ बैठी। एक दफे ऐसा मालूम हुआ कि महेन्द्र आ गया, क्योकि महेन्द्र जब आता था तो ऐसे ही आता था, पर महेन्द्र कहां आ सकता है। वह तो जेल की चहारदीवारी मे बन्द है और शायद उसपर अत्याचार हो रहा है। रुक्मिणी बहुत कोशिश करने पर भी उसके सम्बन्ध मे कोई खबर नही ला सकी थी, न कोतवाली से न जेल से।

वह कहा आ सकता है ? यह भ्रम है। वह फिर लेट गई और उसने आखें मूंद ली।

"श्यामा !"—आवाज़ आई।

श्यामा चौककर बैठ गई। यह आवाज महेन्द्र की नही थी, पर परिचित लगती थी। उसने सामने देखा तो एकदम खडी हो गई। अरे ! यह तो स्वयं कुणाल थे।

श्यामा ने कहा, "आप जल्दी से जाइए, मुझपर तो निगरानी रहती है।"

"मालूम है। मुझे तो दो निगरानियो से बचकर आना था। एक तो पुलिस की और दूसरी तुम्हारी सहेली की। मेरे पास समय सक्षिप्त है, इसलिए सुनो। तुमने युसुफ से विवाह करके दल का नियम भग किया। तुम केवल स्वय ही बेकार नही हो गई बल्कि उसे भी एक हद तक बेकार कर दिया।"

"आप इसकी उचित सजा दे सकते हैं।"

"सजा देनी होगी तो अमिताभ देंगे। पर तुमने मोहवश अजीब स्थिति पैदा कर दी। युसुफ के मन मे यह सन्देह हो गया कि तुम्हारे भाइयो ने उसे केवल मुसलमान होने के कारण गिरफ्तार करा दिया। इस कारण जब वह गिरफ्तार होकर जेल गया तो उसके मन मे अजीब सन्देह पैदा हो गए। वह सोचने लगा कि जब इतने पढे-लिखे हिन्दू इस बात को बर्दाश्त नही कर सकते कि हिन्दू और मुसलमान मे शादी हो और जान-बूझकर देश-द्रोह पर उतर सकते हैं, तो फिर इस देश के सामने क्या आशा है ? पुलिस वाले भी इस बात को समझ गए और तसद्दुक अहमद ने इसी बात पर सारी किलेबन्दी की। पर खैरियत

यह है कि तसद्दुक ने ही ताव मे आकर गलती से यह बता दिया कि तुम घर छोडकर आनन्दकुमार के यहा पहुंच गई । इस बात पर वह सम्भल गया । फिर तो हम लोगो ने भी सम्बन्ध स्थापित कर लिया ।"

कुणाल ने आगे सोचकर कहा, "अब तुम समझ रही हो कि तुमने कितनी बडी गलती की। मान लो तसद्दुक वह गलती न करता, हम लोग तो सम्पर्क स्थापित कर ही नही पाए थे, तो कितना भयकर काण्ड हो सकता था।"

श्यामा ने विश्वास के साथ कहा, "महेन्द्र कभी गलती नही कर सकते थे। रहा यह कि सन्देह की बात सो मुझे अब भी अपने भाइयो पर सन्देह है।"

कुणाल बोले, "इन बातो को रहने दो। कभी-कभी झूठा सन्देह भी बहुत भयंकर रूप ले सकता है। युसुफ को यह सन्देह है कि मुसलमान होने के नाते उसे पकडाया गया, सम्भव है कि इस सन्देह मे कुछ वजन हो। जब द्वेष जोर पकडता है तो वह प्रेम के समान तरह-तरह के बहाने ढूढकर अपने को दृढतर बनाता है। सच तो है यदि किसी देशभक्त के मन मे यह सन्देह आ जाए कि मुसलमान अलग रहेगे और हिन्दू अलग तो उसका निराश होना स्वाभाविक है। ऐसी निराशा मे आदर्श की रीढ टूट जाना कोई कठिन बात नही है। अवश्य तुम यह कह सकती हो कि तुम्हे पहले यह मालूम नही था कि युसुफ मुसलमान है।"

"हाँ, यह बात सही है।"

"जब तुम्हे मालूम हुआ तो क्या तुम पछताई ?"

"नही, पर एक अजीब भावना जरूर आई, जिस पर काबू केवल प्रेम ही से पा सकी।"

कुणाल के रूखे चेहरे पर कोमलता की एक लहर दौड़ गई और वह वही जमकर बैठी रही। वे मुस्कुराकर बोले, "जब तुम्हारी जैसी प्रगतिशील विचारों वाली लडकी का यह हाल है तो साधारण जनता की भावना का आसानी से अनुमान किया जा सकता है। मुझे इन्ही बातो से कभी-कभी सन्देह होता है कि धर्मान्धता के बने रहते हुए देश कहा तक एक रह सकेगा।"

"पर महेन्द्र तो आपके ही विचारो के है, फिर उनको चोट क्यो लगी ?"

कुणाल ने कहा, "चोट क्यो लगी, इसका अनुमान भी सहज ही मे किया जा सकता है। मान लो मैं ही हूं, धर्म नही मानता हू, धर्म को एक बहुत

आदिम साथ ही खतरनाक शक्ति मानता हू, पर मै देखू कि हिन्दू-मुस्लिम झगडो के मौको पर मुझे मुसलमान इस कारण मारते है कि मैं हिन्दू हूं और हिन्दू मेरी रक्षा इस कारण करते है कि मै हिन्दू हूं, तो मेरे ऊपर इसका कुछ न कुछ प्रभाव अवश्य पडेगा। यानी उस हालत मे पडेगा, यदि मैं सावधान न रहूं।"

कुणाल चुप हो गए, फिर उन्होंने घडी की तरफ देखा और जेब से एक पत्र निकालकर श्यामा को दिया, बोले, "यह युसुफ का पत्र है। तुमने बार-बार अभी युसुफ को महेन्द्र कहा, यह उचित नही है। इस प्रकार कहने मे भी तुम्हारे अन्दर किसी सस्कार के होने का पता लगता है। तुम्हे बहुत जागरूक रहकर इस सस्कार से लोहा लेना है।"

कुणाल ने एक कदम दरवाजे की ओर बढाकर कहा, "यद्यपि तुमने नासमझी मे गलत कार्य किया है, ऐसा काम किया है जो एक क्रातिकारी को नहीं करना चाहिए, फिर भी तुम सजा के विषय मे चिन्ता न करना। यह तो तुम जानती ही हो कि जब तक कोई स्त्री गर्भवती होती है, तब तक वह सजा के काबिल नही समझी जाती", कहकर जल्दी से वेश बदलते हुए बाहर की ओर जाते हुए बोले, "और किसी भी हालत मे एक शहीद की पत्नी क्रातिकारी दल के लिए पूजनीया ही रहेगी।"

जब तक श्यामा इस वाक्य के पूरे अर्थ को समझ पाए, तब तक कुणाल सन्ध्या के अन्धकार मे लुप्त हो चुके थे। जब रुक्मिणी घूम-घामकर थोड़ी देर बाद आई तो उसने देखा कि श्यामा बेहोश-सी पडी है, उसके हाथ मे एक चिट्ठी है और सारा कमरा उसी महक से गमक रहा है, जिसके पीछे रुक्मिणी पागल रहती थी।

वह समझ गई कि कुणाल आए थे और यह पत्र वही दे गए हैं। उसने नि:संकोच पत्र लिया और उसे पढा, फिर श्यामा की आंखों मे पानी का छींटा मारकर उसे पूर्ण चेतन किया।

उसने पूछा, "वे आए थे?"

"हा और यह पत्र दे गए।"

रुक्मिणी बोली, "पर पत्र मे ऐसी कोई बात नही है, जिसके कारण तुम्हारी ऐसी हालत हो। उसमे तो आर्थिक और गृहस्थी की बातें हैं।"

रुक्मिणी के इस प्रश्न पर भी श्यामा ने कुछ देर तक कोई उत्तर नही दिया। फिर बोली, "दीदी, तुम ठीक कहती हो। पर उन्होने जाते समय मुझे शहीद की पत्नी कहा। क्या इसके माने यह नही है कि उन्हे फांसी होगी?" कहकर उसने जैसे-जैसे सारी बातचीत हुई थी सब बता दी।

सब कुछ सुनकर रुक्मिणी गम्भीर हो गई, बोली, "पराधीन भारत मे हर देशभक्त की पत्नी शहीद की पत्नी है। उन्होने ऐसा केवल इस कारण कहा होगा कि सब सम्भावनाओ के लिए तैयार रहना चाहिए। यह उचित ही था।"

रुक्मिणी ने किसी तरह श्यामा की तसल्ली की। फिर पत्र मे लिखी हुई बातो पर विचार होने लगा। युसुफ ने यह लिखा था कि उसने सब बंदोबस्त कर दिया है, यदि श्यामा चाहे, तो वह उसके पिता के आश्रय मे जा सकती है, नही तो उन्हे सूचना दे दे तो मासिक खर्च मिल सकता है।

श्यामा ने कहा, "मैं तो इनमे से कोई भी बात नही करने जा रही हू।"

रुक्मिणी बोली, "पहली बात न करना तो समझ मे आता है, क्योकि युसुफ के विचार चाहे कितने ऊचे हो, उसके घर वाले तुम्हारे या किसीके भी घर-वालो से अच्छे नही हो सकते। वे इन विचारो मे न तो पले है और न उनकी कदर कर सकते हैं। किसी न किसी समय उनके मुंह से ऐसी बात निकल सकती है, जिससे तुम्हे दुःख ही नही निराशा हो सकती है। आश्चर्य है कि कुणाल जी इसपर तुम्हे कुछ सलाह क्यो नही दे गए।"

श्यामा बोली, "वे जानते थे कि बाकी सलाह उनकी प्रतिनिधि से मिल जाएगी।"

रुक्मिणी ने लम्बी सास लेते हुए कहा, "वे तो मेरे अस्तित्व को केवल नकारात्मक रूप से ही स्वीकार करते है। जाने दो। रही दूसरी बात सो उसे तुम्हे स्वीकार करना चाहिए।"

"मैंने यह सम्बन्ध प्रेम के लिए स्वीकार किया है न कि और किसी कारण से।"

"ठीक है। तुम्हे भले ही धन की आवश्यकता न हो, पर युसुफ के वास्त विक प्रतिनिधि को धन की जरूरत पडेगी। उनके भूमिष्ठ होने के लिए ही जाने कितने रुपए चाहिए।"

इस प्रकार बातचीत होती रही, पर श्यामा किसी नतीजे पर नहीं पहुच सकी।

३९

महेन्द्र उर्फ युसुफ को मुख्य मुकदमे मे शामिल नही किया गया। इस्तगासे के वकील ने यह कहा कि यदि युसुफ को मुख्य मुकदमे मे शामिल किया जाए तो कम से कम उन सारे गवाहो की गवाही फिर से करानी पडेगी, जिनका किसी भी तरह युसुफ के मुकदमे से सम्बन्ध निकलता था। इसका अर्थ यह होता कि बहुत समय नष्ट होता और बहुत पैसे खर्च होते। जानसन और तसद्दुक अहमद ने भी इसका समर्थन किया। तसद्दुक को कुछ आशा थी कि शायद अकेलेपन से ऊबकर युसुफ घुटने टेक दे। इसके अलावा उसने युसुफ को बराबर कट्टरतापूर्ण धार्मिक साहित्य पहुचाने की व्यवस्था की।

अक्सर शाम के समय तसद्दुक युसुफ के पास पहुचता और इस बात को समझाने की कोशिश करता कि स्वराज्य माने हिन्दू राज्य। वह कहता था, "हिन्दुओ की तादाद ज्यादा है गो कि तहजीबोतमद्दुन मे वे हमारे मुकाबले मे बहुत पिछडे हुए हैं। महज तादाद से वे हमपर अपनी तहजीब और जबान लादेंगे। हमे तो स्वराज्य से नुकसान ही है।"

युसुफ इन बातो को सुना करता और उसके मन मे जो सदेह था, जो उसकी गिरफ्तारी के ढग से पुष्ट हुआ था, वह कभी-कभी महज ऊब के कारण सिर उठाता था। वह तसद्दुक की बेतुकी बातो को इसलिए सहन करता था कि वह अकेलेपन से ऊबा हुआ रहता था। और जैसा भी हो तसद्दुक आकर बोलता-बतलाता तो था। पर एक दिन तसद्दुक अति कर गया और उसने क्रान्तिकारियो के विरुद्ध कहा, "आपके यह क्रान्तिकारी भी, माफ कीजिएगा, पूरे हिन्दू महासभाई हैं। इन लोगो ने अपने नाम कैसे-कैसे रखे हैं। कुणाल, अमिताभ और आपका नाम रखा है महेन्द्र। आप तो जानते ही होगे कि ये सब हिन्दू नाम है।"

युसुफ ने उसे सुधारते हुए कहा, "हिन्दू नही बौद्ध और बौद्ध लोग हिन्दुओ के खिलाफ खडे हुए थे।"

तसद्दुक ने हसकर कहा, "दोनों एक थैले के चट्टे-बट्टे है। आपको तो याद होगा कि खुदीराम गीता लेकर फासी पर चढ गया था। आपके साथियो मे भी कई जेल मे नित्य गीतापाठ करते है।"

युसुफ ने कहा, "सो तो मैं भी कभी-कभी ऊब की वजह से कुरानशरीफ पढ़ता हू।"

तसद्दुक ने इसपर कुछ कहना जरूरी नही समझा, पर बोला, "ये लोग डेमोक्रेसी या जम्हूरियत चाहते है और जम्हूरियत क्या है अक्सरियत का राज —माने हिन्दू राज।"

तसद्दुक बार-बार ऐसी बाते कह चुका था और युसुफ इन बातो को सुन चुका था। इससे तसद्दुक ने यह निष्कर्ष निकाला कि शायद वह कुछ-कुछ सहमत है, इसीलिए प्रोत्साहन पाकर बोला, "इसलिए एक मुसलमान के नाते आपका यह फर्ज है कि इस हिन्दू साजिश को खतम कर दे।"

इतना कहना था कि युसुफ एकाएक बिगड खडा हुआ और बोला, "आपको शर्म नही आती कि आप सबको अपनी तरह दीनोमिल्लत का बागी बनाना चाहते है। क्या इस्लाम अब इसीमे रह गया है कि हम अग्रेजों के गुर्गे बनें? मेरी तो साफ बात है कि ब्रिटिश राज्य के बनिस्बत मैं हिन्दू राज्य सौ बार पसंद करूंगा। जाइए मेरे सामने से चले जाइए और फिर कभी न आइएगा।"

तसद्दुक उठ खडा हुआ, पर जाते समय गुस्से मे बोला, "आप बडे भारी इनकलाबी बनते हैं! पर सुन लीजिए, आपकी श्यामा को इनकलाबियो ने कही गायब कर दिया, उसके साथ-साथ कुणाल की बीवी भी गई है, कोई ताज्जुब नही जो वे श्यामा को जान से मार डाले।"

युसुफ को ये सारी बाते मालूम थी, मन ही मन वह तसद्दुक की मूर्खता पर हंसा, बोला, "आपकी तरह अंगरेजों का गुर्गा बनने की बनिस्बत मैं तो कहता हू कि मर जाना अच्छा है। मैं तो फासी पर चढने वाला हू, मैं अब किसीकी फिक्र नही करता। आप जाइए", कहकर उसने एक ऐसा इशारा किया, जिसके कारण तसद्दुक फौरन वहा से चला गया।

दोनो मुकदमे अलग-अलग अदालतो मे चलते रहे और लगभग एक ही साथ

दोनो के फैसले सुना दिए गए। मुख्य मुकदमे मे दो क्रान्तिकारियो, केशव और प्रकाश, को फासी की सजा सुनाई गई और बाकी लोगो को विभिन्न सजाए हुई। युसुफ को फ़ासी की सजा सुनाई गई।

बडे जोर-शोर से भारत भर मे इन फासियो के विरुद्ध आन्दोलन होने लगा और जगह-जगह यह प्रस्ताव पास हुआ कि फासी की सजा रद्द कर दी जाए। साथ ही उच्च अदालत मे भी बडी तैयारी से अपील की गई और देश के अच्छे-अच्छे वकील और बैरिस्टर उसके लिए नियुक्त हुए।

यथासमय अपील की सुनवाई हुई। दोनो पक्ष के वकीलो मे बार-बार झपटे हुई, जजो के सामने कानून की किताबो के ढेर लग गए और प्रिवी कौसिल से लेकर दूसरे प्रान्तो की उच्च अदालतो के सैकडो हवाले पेश किए गए, पर इस-से कुछ नही हुआ। जजो का आदि से अन्त तक यही रुख रहा कि यही गनीमत है कि इस्तगासे की माग के अनुसार अभियुक्तो की सजा नही बढाई जा रही है। अन्त तक काफी न्याय का दिखावा करने के बाद अपील खारिज कर दी गई।

४०

जब अभियुक्तों को सेशन से सजा सुनाई गई थी तभी बल्कि उसी दिन उन-को विभिन्न जेलो मे भेज दिया गया था। ऐसा करने मे सरकार के कई उद्देश्य थे। एक उद्देश्य तो यह था कि अलग-अलग रहने से इनका बल घटा रहेगा और ये जेलो मे किसी तरह का 'उपद्रव' नही मचा सकेगे। दूसरा उद्देश्य उन्हे कमज़ोर बनाना था। साम्राज्यवाद अपने शत्रुओ को सजा दिलाकर ही दम लेने वाला नही था। वह उन्हे अपमानित और ज़लील करना चाहता था।

अपील चल रही थी। अमिताभ और कुणाल बहुत दिन बाद जरूरी वार्ता के लिए एक साथ मिले थे। क्रान्तिकारी दल के नियमानुसार ऐसे दो अत्यन्त महत्वपूर्ण व्यक्तियो को जहा तक हो सके एक साथ नही किया जाता था ताकि कोई विपत्ति आए तो एक बचा रहे, पर आज बहुत जरूरी निर्णय करना था।

अमिताभ ने कहा, "यदि इस समय इन तीनो को फासी हो गई तो सम्भव

है इसका जनता के मन पर कोई बुरा प्रभाव पडे।"

"इसके विपरीत मै यह समझता हू कि इसका हमारे देश के युवको पर बहुत अनुप्रेरणादायक प्रभाव पडेगा। इस समय इसीकी जरूरत है। कांग्रेस तथा अन्य दलो मे जो प्रतिक्रियावादी प्रवृत्तिया पुष्ट होकर पनप रही है, उनका प्रतिकार इन्ही फासियो से होगा। मैं तो कहता हूं और भी त्याग होना चाहिए।"

अमिताभ के माथे पर बल आ गए। बोले, "तो क्या आपको मेरा सदेश नही मिला ? क्या आप नही चाहते कि फासीघर मे बन्द भाइयो को जेल से भगाया जाए ?"

कुणाल के चेहरे पर चिन्ता की शिकन दिखाई पडी। बोले, "मैं यही तो समझ नही पा रहा हू कि क्या होना चाहिए। फिर परिस्थिति यह भी तो है कि हमारे पास इतनी ताकत नही है कि हम तीन जेलों से तीन फासी वाले भाइयो का एक साथ उद्धार करे। आपने यह बताया है कि यो तो सारी शक्ति लगा दे तो हम यह भी कर सकते है, पर इसमे सारी शक्ति लगाना उचित न होगा। आप जो केवल एक को भगाने की सलाह दे रहे है, फिर प्रश्न यह उठता है कि किसको भगाया जाए।"

अमिताभ बोले, "मेरा मतलब एक को भगाने से केवल इतना है कि सरकार के मु ह पर कसकर एक थप्पड जमाया जाए। असली काम तो थप्पड़ जमाना नही है, इस बात को हम भूल नही सकते ··।"

कुणाल ने कहा, "प्रश्न फिर इतना ही है कि किसे भगाया जाए ?"

"क्यो ? किसीको भी भगाया जा सकता है।"

"पर उनमे से एक मुसलमान है, यह न भूलिए यदि हमने किसी हिन्दू भाई को निकाल लिया तो तसद्दुक की मनोवृत्ति वाले जो लोग मुस्लिम राजनीति मे नेता बने हुए हैं, वे इसका दुरुपयोग कर सकते है कि हमने एक मुसलमान को फासी पर चढने दिया और हिन्दू को छुडा लिया।"

अमिताभ ने कहा, "तब फिर युसुफ को ही भगाया जाए। मैं अभी थोडे दिन हुए श्यामा से मिलने गया था तो उसके बच्चे को देखकर बडी दया आई। यदि हम युसुफ को बचा ले तो उस मासूम बच्चे को कितनी खुशी होगी।"

कुणाल ने कहा, "क्रान्तिकारी दल के सामने यह कोई विचारणीय बात नही

हो सकती। आप शायद यह भूल गए कि युसुफ ने यह शादी दल के नियम के विरुद्ध की थी।"

"तो आपने उसे अभी तक क्षमा नही दी ?"

"अब यह प्रश्न अप्रासंगिक है। हमारे सामने प्रश्न यह है कि यदि एक साथी को जेल से निकालना है तो किसे निकाला जाए ? मैं भी समझता हूं कि एक साथी को निकाला जाए तो युसुफ को ही निकालना चाहिए, पर साथ ही मैं यह भी समझता हू कि आज हमारे मुसलमान भाइयो को सबसे पहले जगाने की जरूरत है। मुसलमान भाई कट्टर होते है। उनके धर्म मे ही कोई ऐसी बात है कि स्वतन्त्र चिन्तन को प्रोत्साहन नही मिलता। आज सैकडो ही नहीं हजारो हिन्दू ऐसे हैं जो वेदो और अवतारो का खुले आम तिरस्कार करते हैं, पर मुसलमानो मे ऐसे स्वतन्त्र चिन्तक है ही नही, कहा जाए तो कोई अत्युक्ति नही होगी। इसलिए युसुफ ऐसे भाई की कुर्बानी शायद उनमे और कुछ नही तो देशभक्ति की भावना को पुष्ट कर सके। फिर भी दूसरी तरफ युसुफ हमारे लिए सबसे महत्वपूर्ण इसलिए है कि उसीके जरिए से हम मुसलमान नौजवानो को क्रान्तिकारी दल मे खीच सकते है।"

इसी प्रकार अमिताभ और कुणाल मे इस विषय पर बातचीत होती रही। सारा देश इस समय फासीघर मे बन्द इन तीन देशभक्तो को छुडाने के लिए बावला हो रहा था और पत्रो मे कितने ही ओजस्वी लेख लिखे जा रहे थे। मचो से जोशिले व्याख्यान दिए जा रहे थे, पर इनके ये दो साथी इस विषय पर ऐसे ही बातचीत कर रहे थे जैसे बकरकशा बकरे को खरीदने के पहले उसमे कितना मास बैठेगा आदि विषयो पर बातचीत करते है।

यद्यपि दोनो ने यह माना कि इस समय किसी मुसलमान के फासी पर चढने से देश को अधिक लाभ हो सकता है, फिर भी अन्ततोगत्वा यही फैसला हुआ कि युसुफ को ही जेल से निकालने का प्रयत्न किया जाए। सरकार को या तो इसकी भनक लग गई थी कि क्रातिकारी ऐसा कुछ करने वाले है या वह योंही सहज बुद्धि से समझ रही थी कि क्रान्तिकारी ऐसा कर सकते हैं, तीनो फासी वालो पर बहुत कडी निगरानी रखी जा रही थी।

युसुफ प्रान्त के दूसरे सिरे पर एक जिला जेल मे रखा गया था। वहा फासीघर मे एक कतार मे चार कालकोठरिया थी। चारो कोठरिया इस समय

फासी वालो से भरी हुई थी। युसुफ को नम्बर २ कोठरी मे रखा गया था। बाकी तीन कोठरियो मे मामूली अपराधो मे फासी की सजा पाए हुए लोग थे।

नम्बर एक कोठरी मे रामधारी नाम से एक फासी वाला था, जो यह कहता था कि वह सम्पूर्ण रूप से निर्दोष है और जिस हत्या के लिए उसे फासी की सज़ा दी जाने वाली है, उसके सम्बन्ध मे उसे कुछ मालूम नही था। जो भी अफसर फासीघर का मुआयना करने आता था, रामधारी उससे जरूर अपने निर्दोष होने की बात बताता था। वह जब-तब अजीब तरीके से रो पडता था। ऐसा मालूम होता था जैसे उसे मिरगी आई है। वह दिन मे सोता था और रात को गाया करता था। दूसरे फासी वाले उससे नाराज थे क्योकि उसके कारण रात को किसीकी आंख मुश्किल से लग पाती थी। यो तो दूसरे फासी वाले भी कम सोते थे, पर वे चाहते थे कि जब तक जो एकाध झपकी लग जाती है, उससे वे उसके गानो से जगाए न जाए। रामधारी की अपील अभी बाकी थी।

नम्बर तीन कोठरी मे हरकू नाम का एक प्रसिद्ध डाकू बन्द था। वह अपनी कोठरी से ही अपने साथियो को डाको और बलात्कारो आदि का किस्सा सुनाया करता था। उसे कतई कोई अफसोस नही था, बस अफसोस था तो यह था कि वह धोखे मे एक रडी के यहा पकडा गया। अब उसके मन मे केवल एक ही तमन्ना थी। वह कहता था, "हमने खूब मजे कर लिए, कोई राजा या नवाब भी इतने मजे नही कर सकता।" कहकर वह ब्रिटिश सम्राट् की मा-बहन को गालियां देते हुए कहता था, "उसने भी इतने मजे नही किए होगे। अफसोस है तो यही है कि उसके (यहा फिर गाली) घर पर मैं गिरफ्तार हो गया। अब अगर मुझे घटा भर के लिए छोड दे, तो मै जाकर उसके (फिर गाली) एक हजार टुकडे कर डालू और वे टुकडे मछलियों को खिलाऊ।"

हरकू की अपील समाप्त हो चुकी थी और अब फासी होना बाकी था। उससे कोई मिलने नही आता था।

नम्बर चार कोठरी मे एक पढा-लिखा आदमी रामविनोद बन्द था जो अपने साथियो से बात कम करता था, पर जब दो फासी वालो मे बात चलती थी, तो वह बहुत ध्यान से सुना करता था। उसपर दो हत्याएं प्रमाणित हो चुकी थी। वह यह बताता तो नही था कि उसपर क्या जुर्म था, पर जमादारों की बदौलत सभी फासी वालो को यह मालूम था कि वह अपनी पत्नी और साली

को मारकर आया था। बात यो थी कि उसकी साली सैर-सपाटे के लिए उसके घर मे आई हुई थी। पहले मामूली मजाक होता था, फिर मजाक होते-होते दोनो मे गुप्त सम्बन्ध हो गया। इसकी कुछ भनक पत्नी को लग गई और उसने अपनी बहन को भेज देना चाहा, पर रामविनोद ने साली को भेजने से इन्कार किया और लगभग खुल्लम-खुल्ला बहनोई और साली का सम्बन्ध चलता रहा। एक दिन पत्नी ने इसपर हल्ला मचाना चाहा तो उसने लकडी काटने वाली कुल्हाडी से पत्नी का काम तमाम कर दिया। इसपर उसकी साली जो अब तक अपने बहनोई को अपनी बहन के खिलाफ भडका रही थी, घबडा गई। उसे घबड़ाया हुआ देखकर रामविनोद को जाने क्या हुआ वह कुल्हाड़ी लेकर साली पर भी दौड़ा और उसका भी सफाया कर दिया।

वह वहा से सीधे थाने पहुचा कि सारी बाते बता दे, पर रास्ते मे जाने क्या सूझा, उसने जाकर यह रपट लिखाई कि पत्नी और साली एक दूसरे से लड़ मरी। अपने कपडो पर जो खून के धब्बे थे, उनकी व्याख्या करते हुए उसने कहा कि बीच-बचाव करते समय उसपर खून की छीटे पड गई।

तहकीकात मे असली बात खुल गई। बाद को यह भी पता चला कि कुमारी साली गर्भवती थी। अखबार वालो ने इस मुकदमे को बडी-बडी सुर्खिया देकर छापा था। रामविनोद की अपील अभी बाकी थी, पर कुछ होने की आशा कम थी।

जब युसुफ इन लोगो मे पहुचा और सबको जान गया (चेहरो से कम और बातो से ज्यादा) तो उसे एक बार तो बडी आत्मग्लानि हुई कि ऐसे समाज-विरोधियो के साथ उसे रखा गया है। पर जब उसने सोचा कि यही हाल सारे साथियो का है और सरकार भले ही इसे कुछ भी समझे, देश उसकी असलियत जानता है, तो उसे बल्कि एक तरह तृप्ति हुई।

जब युसुफ फासी घर मे आया था, तो दूसरे फांसी वालो ने उसका बडा स्वागत-सा किया, जो कहा तक सम्मान था, इसमे सन्देह था। शायद इसमे यही भावना प्रबल थी कि एक से दो भले। स्वयम् युसुफ को भी पहले धक्के के बाद इन फासी वालो की मौजूदगी से कुछ बल ही मिला था।

सबने पहले उसका मुकदमा पूछा, तो उसने संक्षेप मे सारी बात बता दी। रामधारी ने ज्यादा प्रश्न नही पूछा और थोडी ही देर मे उसके प्रति उदासीन

हो गया और उसका दिन मे सोने और रात मे गाने तथा बीच-बीच मे रो पडने का कार्यक्रम पूर्ववत् चलता रहा। हां, उसने भी मौका पाते ही युसुफ से बता दिया कि वह निर्दोष है। इसपर हरकू बडे जोर से बिगड खड़ा हुआ। बोला, "साले, इनको क्या पट्टी पढाता है? तू समझता है इस तरह तू अपील मे छूट जाएगा?"

इसपर रामधारी एकदम सन्नाटा खीच गया और चूंकि कोठरिया एक कतार मे थी, इसलिए किसीको पता नही चला कि रामधारी क्या कर रहा है। जब सब लोग बातचीत कर-कराके चुप हो गए तो रामधारी एकाएक बहुत ज़ोर से रो पडा। युसुफ को पहली बार इस प्रकार रोने से साबका पडा था, इसलिए वह यह समझा कि कोई उसे मारपीट रहा है। कुछ सोचकर युसुफ ने एकाएक नारा लगाया, "भारत माता की जय!"

इसपर हरकू ने उसे सारी बात बता दी, तब,युसुफ को बड़ी शर्म-सी आई। उसे ऐसा मालूम हुआ कि यद्यपि वह कई महीने जेल मे रह चुका है, फिर भी उसे फासीघर के सम्बन्ध मे कुछ भी नही मालूम।

सचमुच फासीघर का जीवन हवालात की कोठरी के जीवन से बिल्कुल भिन्न था। फासीघर की कोठरी के अन्दर कोई भी सामान नही था। युसुफ ने देखा था कि मामूली कैदियो को लोहे की तसला-कटोरी दी जाती है, पर यहा तो खाने के बर्तन मिट्टी के थे। उसे एक विशेष प्रकार का कुर्ता और जाधिया दिया गया था, जिसपर कुछ ऐसे चिह्न बने हुए थे, जिनसे पता लग जाता था कि वह फासीघर का निवासी है। मामूली कैदियो को मूंज का एक फट्टा और कम्बल दिया जाता था, पर यहा मूंज का फट्टा नही था।

हरकू ने बताया कि यह सब सावधानी इसलिए है कि कही फासीघर का कैदी फट्टे की रस्सी से फासी न लगा ले या तसला सिर पर मारकर मर न जाए। हरकू ने यह बताया, "उनको यही फिक्र रहती है कि कहीं दामाद फदा गले मे डाले बगैर ही मर न जाए। अभी मैं बीमार पडू तो सिविल सर्जन तक दौड़ा हुआ आएगा और मेरा इलाज करेगा। मेरी तो अपील खारिज हो चुकी है, शायद दो-तीन दिन मे उनकी मा को (यहा एक गाली देकर) मैं चला जाऊ, पर मेरी भी बडी देख-भाल रखते है, और खा साहब, तुम तो इनके पक्के दामाद हो।"

इतने दिनो तक जेल मे रहने के कारण युसुफ बहुत कुछ कैदियों के द्वारा दिए जाने वाले गालीगुफ्तो का अभ्यस्त हो चुका था, इसलिए वह गालियों पर ध्यान नही देता था। हरकू को देखने का मौका नही लगा था, पर ऐसा मालूम हुआ कि वह बहुत जीवटदार आदमी है। जब कोई बोलने-बतलाने को नही रहता है, तो आदमी अपने से बहुत निम्न कोटि के व्यक्ति से भी बडी अन्तरंग बाते करने लगता है। यही हाल युसुफ का भी हुआ। यद्यपि हरकू अपने बयान के अनुसार ही बड़े लोमहर्षक चरित्र का व्यक्ति था और शायद ही कोई अपराध उससे बचा हो, फिर भी युसुफ को ऐसा प्रतीत होने लगा कि हरकू मे जीवन का आनन्द अब भी भरपूर है। फासी पर झूलने के प्रति उसकी अवज्ञा बहुत अनु-प्रेरणा दायक थी।

हरकू ने तीसरे दिन कहा, "मरने मे क्या धरा है, हमे तो इससे कोई डर नही लगता। रही यह बात कि कुछ तमन्नाएं पूरी नही हुई सो दो हजार साल भी जीते रहते तो यही हालत होती ··"

कितना सरल जीवन-दर्शन था। युसुफ ने पूछा, "क्यो भाई हरकू, तुम्हे कभी परलोक का डर नही लगता ?"

इसपर हरकू बोला, "हिम्मत सब जगह काम देती है। अगर नरक मे पहुच गए तो वहा भी हिम्मत से काम लेगे।"

युसुफ ने पूछा, "तुम ईश्वर को मानते हो ?"

हरकू ने इसपर अपनी सारी कथा कह सुनाई। जरूर वह कभी ईश्वर को मानता था और दूसरे आदमियो की तरह बहुत ही सीधा-सादा गृहस्थ था। बस उसमे खराबी थी तो एक थी कि उसकी बीवी बहुत खूबसूरत थी। छोटी जाति का होने के कारण वह सबसे दबकर रहता था और एक हल की खेती करके गुजर-बसर करता था। उसकी बहू उसे पूरी मदद देती थी। सब काम ठीक-ठाक चल रहा था, इतने मे नौजवान जमीदार की आख उसकी बीवी पर पड़ी। बस उसी समय से उसपर सनीचर का कोप हो गया। कई तरह की मुसीबतें आई, पर उसने घुटना नही टेका। सबसे अचरज की बात यह थी कि उसकी जाति के लोगो ने तो उसे अपनी बीवी को ठाकुर साहब की भेंट कर देने के लिए कहा ही, पर इससे भी अचरज की बात यह थी कि काशी से लौटे हुए शास्त्री जी ने भी यही सलाह दी। बोले, "यह तो तेरा भाग है कि ठाकुर

साहब का मन उसपर आ गया है। उसका तो उद्धार हो जाएगा और साथ मे तेरा भी।"

इसपर हरकू ने कहा था, "उसका क्या उद्धार होगा, दो दिन बाद छोड दी जाएगी जैसे और बहुत-सी स्त्रिया छोड दी गई है।"

शास्त्री जी बोले, "अरे तो इसपर तुझे क्या सोचना है? तू फिर रख लेना, नही तो कुछ पूजा-पाठ कर देगे।"

हरकू ने पडित जी की बात तो मानी ही नही और जब पडित जी ने अपनी सलाह दुहराई तो उसने उसे गालिया देकर वापस कर दिया। बस, उसी रात को हरकू की बीवी जबर्दस्ती भगा ली गई। हरकू ने पुलिस मे रिपोर्ट लिखाई तो पुलिस वालो ने कहा, "पता नही चलता।" हरकू ने कहा, "मेरे साथ चलो," तो उन लोगो ने उसे बुरा-भला कहकर थाने से निकाल दिया। बाद को मालूम हुआ कि थानेदार साहब तो जमीदार की सारी रंगरेलियो मे हिस्सा लेते थे।"

तब हरकू निराश होकर जिधर आख गई, उधर निकल गया। अपने मामा के यहा पहुचां तो उसने कहा, "दुष्ट से दुष्टता करनी चाहिए। उसने बेईमानी से तेरी औरत भगाई है तू चोरी से उसे निकाल ला। बात हरकू की समझ मे आ गई और वह किसी तरह अपनी बीवी के पास पहुचा और बोला, "चल भाग चले!"

पर बीवी ही भागने पर राजी नही हुई। उसने कहा, "मुझसे तुझे क्या मिला? तू और करले। यहा रात भर रगरेली होती रही है, शराबे चलती हैं...।"

हरकू से न रहा गया। वह अपनी बीवी पर टूट पडा। कारिन्दे आदि दौड आए और हरकू को मारते-मारते बेदम करके मरा जानकर गाव के बाहर छोड़ आए। तब से कहानी बहुत मामूली है। इसके बाद वह मैकू के गिरोह मे शामिल हो गया। कह-कहाकर एक डाका जमीदार के घर पर डाला। और लोग तो लूट मे लग गए, पर हरकू ने ढूढकर जमीदार को मारा, फिर उसकी इन्द्रिय काटकर उसके मुह मे रखा, इसके बाद वह अपनी बीवी को ढूढने लगा, पर उसका कही पता नही चला। तब तक सीटी हो गई। तब से वह डाकू है, वेश्यागामी है, पराई स्त्री मिल जाए तो छोडता नही है, न उसे ईश्वर से मतलब न धर्म से।

युसुफ ने इस कहानी मे जमीदारी प्रथा की वीभत्सता देखी और देखा कि किस प्रकार एक साधारण गृहस्थ अत्याचारो के कारण विवेकहीन अपराधी बन जाता है। युसुफ की क्रान्तिकारी चेतना और दृढ हुई और उसके मन में तृप्ति हुई कि वह जिस उद्देश्य को लेकर लड रहा है, वह बहुत उच्च है। पहले विदेशियो का शासन दूर होगा, फिर जमीदारो और पूजिपतियों का बेडा गर्क किया जाएगा। युसुफ ने सरल भाषा मे हरकू को यह बात समझाने की कोशिश की।

इसपर हरकू ने कोई विशेष जोश नही दिखाया, चुप रहा। थोडी देर मे बोला, "देखो खा साहब ! हमे तो किसी अग्रेज ने कभी सताया नही। हमे सताने वाले तो ये ही अपने लोग है। जब आप लोग कह रहे हो तो अच्छा ही होगा, पर हम तो उसे देखने के लिए आएगे नही। हम तो बस इनकी मा को (गाली देकर) यहा से चले जाएगे।"

युसुफ की न तो रामविनोद से घनिष्ठता हुई और न रामधारी से। जब युसुफ आया तब से हरकू ने भी रामविनोद से बाते करना बन्द कर दिया। रामविनोद इससे कोई बहुत दुखी हुआ, ऐसा नही मालूम पडा।

फासीघर की कोठरियो के अन्दर रात भर बडी तेज रोशनी जलती रहती थी, इससे उसके अन्दर रहने वालो को बडी असुविधा होती थी, पर उनकी कौन सुनता है। जेल पद्धति का तो एकमात्र उद्देश्य इस क्षेत्र मे इतना ही था कि फासी वाला भाग न जाए।

युसुफ से उसके सभी रिश्तेदार मिलने आते थे, पर जिनसे वह सबसे अधिक मिलना चाहता था वे—यानी श्यामा और उसका बच्चा—उससे मिलने नही आते थे। श्यामा तो इसलिए नही आ सकती थी कि उसके विरुद्ध गिरफ्तारी का वारन्ट था। वह बच्चा इसलिए नही आ सकता था कि अभी वह केवल श्यामा और रुक्मिणी से ही हिला हुआ था।

४१

अभी-अभी सन्ध्या समय की बत्तिया जलाई गई थी, पर फासीघर वाले हाते का वातावरण बहुत घुटनयुक्त हो रहा था। न तो रामधारी गा या रो रहा था और न हरकू की ऊची आवाज ही सुनाई पडती थी। चारो जमादार लगभग अटेन्शन पर थे। किसी भयकर घटना की पूर्व सूचना हवा मे व्याप्त थी। युसुफ अपनी कोठरी के अन्दर चहलकदमी कर रहा था यानी तीन-चार कदम आगे जाता था फिर घूमकर तीन-चार कदक पीछे को लौट पडता था। उसने पुराने राजनीतिक कैदियो से स्वास्थ्य ठीक रखने का साथ ही समय काटने का यह तरीका सीखा था। मालूम होता था जैसे कठघरे मे शेर घूम रहा हो।

थोडी देर मे ही नायब साहब के आने की रिपोर्ट लगी और चारो जमादार अपनी-अपनी कोठरियो के सामने तनकर खडे हो गए। थोड़ी देर मे कैदियों और जमादारो के सुपरिचित निजामी साहब आए और उसने हाते मे कदम रखकर जैसे कुछ सोचा फिर तीन नम्बर कोठरी के सामने खडा हो गया। बोला, "हरकू सलाम।"

जो हरकू हमेशा बिल्कुल चेतन रहता था, आज बिल्कुल सुस्ती के साथ पडा था, लेटे ही लेटे बोला, "मुझे मालूम है। तुम यही बताने आए हो न कि कल सवेरे मुझे फासी लगेगी।"

निजामी को इसपर कोई आश्चर्य नही हुआ। क्योकि फासीघर के पीछे ही फासी देने की जगह थी। वहा आज दिन के चार बजे फन्दे का परीक्षण आदि हुआ था। जिस व्यक्ति को फासी होना होता है, उससे दुगुने वजन के पत्थर को फन्दे से एकाएक झुला दिया जाता है, जिससे यदि रस्सी मे कोई कमजोरी हो या उसके सरकने मे कुछ कसर हो तो पता लग जाए। यद्यपि नाम के लिए यह सारी कार्रवाई गुप्तरूप से होती थी, पर बहुत-से लोग इस काम में लगते थे। वे शोर मचाते थे और फासी वालो को सारी बात मालूम हो जाती थी। स्वाभाविक रूप से जिसकी अपील खारिज हुई होती है, वह जान जाता है कि उसीको फासी लगने वाली है।

निजामी माफी-सी मांगते हुए बोला, "मैं तो हुक्म का ताबेदार हू..."

निजामी आगे कह भी नही पाया था कि हरकू बोला, "नही तो तुम हमे

छोड देते क्यो ?" कहकर वह लपककर उठा और जंगले के पास आ गया।

निजामी कुछ पीछे हटा, पर अधिक नही। यद्यपि उसकी उम्र अभी चालीस साल थी, पर वह लगभग दो सौ आदमियो को फासी पर चढते देख चुका था। बोला, "मैं तो यह पूछने आया हू कि किसीको चिट्ठी लिखनी हो या कोई चीज खानी-पीनी हो तो बता दो। अभी एक पडित आएगा, मरना तो सबको ही पडता है, तैयार हो जाओ।"

इसपर हरकू बोला, "मैं जो चीज चाहता हू, वह मुझे मिल नही सकती।"

निजामी ने डरते-डरते कहा, "कोई इतर चाहो या फूल या और कोई चीज, रामायण, हनुमान चालीसा, गीता जो चाहो सो मिल सकती है।"

हरकू पर जो जमादार लगा हुआ था, वह बोला, "रामायण तो इसके पास है।"

हरकू कमरे के भीतर की ओर गया और सामने ही पडी रामायण उठाकर बाहर फेंकते हुए बोला, "मुझे कुछ नही चाहिए।"

निजामी समझ गया था कि खानापूरी तो हो चुकी, वह अपना कथित कर्तव्य कर चुका, पीछे हटते हुए बोला, "तो तुम्हे कुछ नही चाहिए।"

हरकू ने एक बार जगले की छडो को झिझोडते हुए समझ लिया कि वह असहाय है। वह चुपचाप गया और जहा पर लेटा था, वही लेट गया। लेटे-लेटे उसने कहा, "बत्ती बुझा दो।" फिर बोला, "नही-नही, तब तो बहुत अंधेरा हो जाएगा। नही-नही।"

नायब ने घड़ी की तरफ देखा। आठ बज चुके थे। मुश्किल से अब नौ घंटे इसे जीना था। वह दो नम्बर कोठरी के सामने एक क्षण रुका। युसुफ उसी तरह टहल रहा था। फिर वह एक नम्बर के सामने रुका और धीरे-धीरे वहा से चला गया।

जब उसके जूतो की आवाज रात के सूनेपन मे खो गई, तब युसुफ ने हरकू को आवाज दी, "हरकू, भाई हरकू!"

हरकू को इस पुकार मे ऐसी आत्मीयता मालूम हुई कि हरकू खड़ा होकर जगले के सामने आ गया।

युसुफ ने समझ लिया कि वह जगले के सामने आ गया है। बोला, "भाई हरकू, तुम जहा जा रहे हो, दस या बीस दिन मे मुझे भी वही जाना है और

एक बात सुनो—वह यह कि तुम भी जुल्म के खिलाफ लडे, हम भी लडे। तुम्हारा तरीका निजी था और उसका कोई असर जालिम पर नही हुआ। यानी एक जालिम को तुमने मारा जरूर, पर बाकी दुनिया जैसी की तैसी बनी रही। हम भी हार गए, पर हमारे बाद जो लोग आएगे, वे एक नई दुनिया बसा सकेगे, जिसमे सब बेखौफ होकर अपनी मेहनत का मुआवजा पा सकेगे और अमन-चैन से रहेगे ··"

कहते-कहते युसुफ को यह ख्याल हुआ कि वह कुछ ज्यादा कह गया। वह रुक गया। हरकू बोला, "भाई मेरे, तुम क्या यह समझ रहे हो कि मुझे कोई अफसोस है? अफसोस है तो यही कि मै इस वक्त कुछ नही कर सकता। अगर मुझे छोड देते और मेरे हाथ मे एक दुनाली होती तो मै देख लेता कि कैसे मुझे फासी पर चढाते है।"

युसुफ इसके उत्तर मे कुछ नही कह सका। उसके भी मन मे वही बात थी कि हाथ मे माउजर पिस्तौल होती तो मैं भी देख लेता। उसके मन ने एक बार कहा कि तू किस मुजरिम के साथ अपने को एक करके देख रहा है, पर दूसरे ही क्षण उसे उत्तर मिला कि अगर इस आदमी को चैन से रहने को मिलता और कोई इसकी गृहस्थी को छेडता नही तो यह बदमाश थोडे ही बनता। बाद को यह अलबत्ता बहक गया, पर यह दूसरी बात है।

युसुफ और हरकू इसी तरह बात करते रहे कि नौ का घंटा बज गया। थोडी देर मे एक पडित आया। यद्यपि वह पडित इसलिए भेजा गया था कि वह मृत्यु-भय से हरकू की रक्षा करे और उसे अन्त समय मे सही रास्ते पर लाए (हाय, यह कितना सुन्दर तरीका है) पर वह स्वय ही ऐसे पैर दबा-दबा कर आ रहा था जैसे उसीके तसल्ली और सान्त्वना की जरूरत हो। वह धन के लोभ से आया था। धन का लोभ आदमी को कितना बहादुर बना सकता है, वह इसका एक नमूना था।

उसने आकर हरकू से कहा, "मै शास्त्री हू, तुम्हारी आत्मा के कल्याण के लिए आया हू।"

संध्या समय हरकू थोडा निस्तेज जरूर हो गया था, पर इस समय वह बिल्कुल आत्मस्थ हो चुका था। बोला, "तुम आए हो या भेजे गए हो?"

शास्त्री ने कहा, "एक ही बात है। सरकार ने मुझे भेजा है।"

"यानी तुम इसके लिए रुपए पाओगे ?"

शास्त्री ने डरते-डरते कहा, "हा ।"

"तो जितने लोग फासी पर चढेगे, तुम उतना ही ज्यादा रुपया पाओगे । है न ? तुम तो श्रीनाथसिंह के भाई हो ।"

श्रीनाथसिंह उस जमीदार का नाम था, जिसने हरकू का जीवन नष्ट किया था । शास्त्री बोला, "मैं किसी सिंह का भाई नही, मैं तो ब्राह्मण हू ।"

हरकू हसा क्योकि वह जानता था कि सभी लोग उसीकी बात सुन रहे हैं । बोला, "पहले भी मुझे एक पडित मिला था । उसने मुझसे कहा था कि मैं अपनी बीवी को श्रीनाथसिंह के पास भेज दू । हा हा हा'''अब तुम मिले हो। क्या बात है कि तुम सब लोगो की सूरत एक-सी होती है । तुम श्रीनाथसिंह के नही तो उस पडित के भाई जरूर लगते हो ।"

इसपर पडित ने समझा कि हरकू से बातचीत करना व्यर्थ है । इसलिए वह हरकू के जगले मे कुछ दूर हटकर आसन बिछाकर बैठ गया और एक पुस्तक निकालकर उसमे से कुछ मन्त्र जोर-जोर से पढने लगा ।

जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च ।
तस्मादपरिहार्येऽर्थे न त्वं शोचितुमर्हसि ।।
अव्यक्तादीनि भूतानि व्यक्तमध्यानि भारत ।
अव्यक्तनिधनान्येव तत्र का परिवेदना ।।
आश्चर्यवत्पश्यति कश्चिदेन—
माश्चर्यवद्वदति तथैव चान्यः ।
आश्चर्यं वच्चैनमन्य शृणोति
श्रुत्वाप्येन वेद न चैव कश्चित ।।

हरकू कुछ देर तक सुनता रहा, फिर बोला, "बन्द करो यह सब'''"

उधर से रामधारी अप्रत्याशित रूप से बोल उठा, "पढ़ने दो, पढ़ने दो, तुम तो फासी पर चढने वाले हो, तुम्हारा क्या भला होगा, पर मैं बेगुनाह हूं, मेरा कुछ भला हो सकता है । पंडित जी, आप पढिए, बडा अच्छा लगता है ।"

पहले होता तो हरकू रामधारी को डाट देता, पर आज वह जाने क्या सोचकर चुप हो गया और जगले मे हटकर पहले वाली जगह पर लेट गया । शास्त्री घटे भर की जगह पैंतालीस मिनट पढ-पढाकर हरकू को आशीर्वाद

देकर चला गया। तब हरकू ने लेटे ही लेटे युसुफ से पूछा, "खा साहब, आप जग रहे हैं ?"

युसुफ ने कहा, "हा।"

हरकू बोला, "अजीब बात है, आज कोई सत्रह साल बाद मुझे अपनी बहू की याद आ रही है। सच मानो इतने सालो तक कभी उसकी याद नही आई। मैं तो चला, मैंने सुख भी देखा, दुख भी देखा, पर उसकी जाने क्या हालत होगी। कही चकले मे होगी या भीख माग रही होगी। है न खा साहब !"

युसुफ के मन मे भी श्यामा और उसके बच्चे की बात बिजली की तरह कौंध गई। बोला, "भाई मेरे ! अजीबोगरीब है यह दुनिया। हम लोग सब मुसाफिरी मे मिलते है, फिर बिछुड जाते है। तुम इसके लिए अफसोस न करो।"

हरकू जगले के पास आ गया, बोला, "मुझे आज मालूम हो रहा है कि मैंने उसे बहुत गलत समझा। उसने मेरे साथ भागने से इन्कार किया, मैंने उस वक्त यही समझा था कि वह शान-शौकत देखकर चकाचौध हो गई है और मुझ गरीब के पास आना नही चाहती, पर खा साहब, असली बात क्या थी वह आज मुझे मालूम हो रही है। असली बात यह थी कि वह उन लोगो के जुल्मो से इतनी डर गई थी कि वह समझती थी कि उससे भागना मुमकिन नही है। और एक बात होगी, वह चाहती होगी कि वह तो गई, सो गई, मैं न उनके चगुल मे फस जाऊ। जब मैं वही पकडा गया और कारिन्दे मुझे मारने लगे तो मुझे याद है कि उसकी आखो मे क्या बात थी। वह मुझे अपनी जान देकर भी बचा सकती तो बचा लेती···"

उधर से चार नम्बर कोठरी से रामविनोद ने कहा, "हरकू, तुम इस वक्त क्या अनाप-सनाप कह रहे हो ? औरत कभी वफादार हो सकती है ? वह मर्द को चाहती नही है, वह तो अपना आराम देखती है। मेरी बीवी मुझसे बिल्कुल प्यार नही करती थी, पर जब मैंने सम्ली से इश्क किया तो वह मुझपर नाराज हो गई। इसलिए नही कि उसे मेरे प्रेम से कोई सरोकार था, बल्कि इसलिए कि वह डरती थी कि कही मैं उसे निकाल न दू। उसे मेरे इश्क से कुछ लेना-देना नही था, उसे मेरे पैसे चाहिए थे।"

हरकू ने उसकी बात बिल्कुल सुनी ही नही। वह अपने आवेश मे ही बोलता

रहा, "खा साहब, मर्द भी सब तरह के होते है और औरते भी सब तरह की होती हैं…।"

इसी तरह हरकू घटो बाते करता रहा। युसुफ तथा अन्य फासीवाले जगला पकडकर बैठ गए। रामधारी तो आज अपने स्वभाव के विरुद्ध सो भी गया यानी झपकिया लेता रहा और बीच-बीच मे हरकू की बाते सुनता रहा। रात तीन बजे के लगभग युसुफ भी जगले से पीठ लगाकर बैठे-बैठे सो गया। वह एक मधुर स्वप्न देख रहा था। श्यामा की गोद मे छोटा-सा बच्चा है, जिसका नाम कबीर रखा गया था। युसुफ जेल से भागकर उनमे पहुचा है। उनके साथ रुक्मिणी भी है। रुक्मिणी हसकर नाश्ता-चाय बनाने के लिए चली गई। अब युसुफ श्यामा की तरफ झपटकर उसको अपनी बाहो मे बाधने ही वाला था कि उधर से चर्र-मर्र करती हुई एक टोली आई, जिसमे निजामी के अलावा कई जेल कर्मचारी और जमादार थे। फासी की जगह पर रोशनी हो रही थी और आदमियो की दबी हुई चहल-पहल सुनाई पड रही थी।

युसुफ जग गया, सभी जग गए। निजामी जाकर हरकू की कोठरी के सामने खड़ा हो गया और बोला, "पडित जी, आप मन्त्र पढिए। हरकू, तुम गुसल कर लो।"—कहकर उसने साथ के जमादारो को इशारा किया, जो कतार बाधकर कोठरी के सामने डडे सम्हाल कर खडे हो गए और फिर चाभी खोलकर हरकू को कोठरी से निकाला गया।

हरकू न बोला, न चाला, मिट्टी के लोदे की तरह बाहर निकल आया। उसने एक बार आकाक्षा भरी दृष्टि से आकाश की ओर देखा, फिर उसे याद आया कि आज का सूर्य उसे नही देखना है। सामने ही पानी की बाल्टी तैयार थी। निजामी ने कहा, "हरकू, गुसल कर लो। अब तुम खुदा के घर जाओगे। पाक साफ हो लो।"

पडित जी फिर से श्लोक पढ रहे थे :

> या निशा सर्वभुतानां तस्यां जार्गात संयमी।
> यस्यां जार्गात भूतानि सा निशापश्यतो मुने॥
> आपूर्यमाणमचल प्रतिष्ठं
> समुद्रमापः प्रविशन्ति यद्वत्।

तद्वत्कामा यं प्रविशन्ति सर्वे
सशान्तिमाप्नोति न कामकामी ॥

हरकू ने कहा, "मुझे नही गुसल करना है।" —कहकर उसने चिल्लाकर कहा, "रामविनोद, रामधारी ! राम, राम, और खा साहब, सलाम ! मैं अब जाता हू।" कहकर वह खडा हो गया कि उसे जहां लोग ले जाना चाहे ले जाए।

युसुफ अब हरकू को अच्छी तरह देख सकता था। उसके चेहरे के सम्बन्ध में युसुफ ने अपने मन मे जो धुधली-सी धारणा बनाई थी, वास्तविक हरकू उससे बिल्कुल अलग निकला। वह तो बिल्कुल ही मामूली देहाती था। जिन्दगी की थपेड़ों के कारण उसे तरह-तरह के तजरबे हुए थे, पर वह आन्तरिक रूप से कथित छोटी जाति का एक देहाती ही था। पर उसे क्या-क्या झेलना पडा ! चलो अब सब दुखो का अन्त होने जा रहा है।

यद्यपि हरकू फासी पर जा रहा था, पर बाकी फासी वालो की हालत भी एक बकरे को बकरकसे की छुरी के सामने देखकर दूसरे बकरो की जो हालत होती है, वही हो रही थी। कहा युसुफ कैसा मधुर स्वप्न देख रहा था और कहा यह हालत।

थोड़ी देर मे हरकू हाते के बाहर चला गया, जीवन के बाहर। कुछ खास सुनाई नही पडता था, पर युसुफ को जैसे सभी कुछ सुनाई पड रहा था। जमादारो से वह पहले ही सुन चुका था कि किस तरह से फासी दी जाती है।

हरकू के जाने के बाद हाते के अन्दर पूरा सन्नाटा छाया रहा। सब फासी वाले अपने-अपने जंगले से कान लगाकर सुनने की कोशिश कर रहे थे। युसुफ भी अपने जगले से कान लगाकर बैठा हुआ था और उसके सामने अब हरकू न रहकर वह स्वय ही था। उससे निजामी ने कहा, "खां साहब, अब खुदा के घर जाने का वक्त आ गया, आप गुसल कर लीजिए।"

हरकू ने तो गुसल नही किया था, पर उसने गुसल किया और बहादुरी के साथ मार्च करता हुआ फासीवाली जगह की ओर चल पडा।

उधर से जैसे मालूम हुआ कोई खटाक से शब्द हुआ। मालूम होता है फासी हो गई और अब हरकू का शरीर अन्तिम तडपनो से गुजर रहा होगा। युसुफ पर जो जमादार तैनात था, उसने आकाश की ओर देखते हुए कहा, "राम-राम।"

उसके साथ ही और जमादारो ने भी कुछ कहा। अब तक वातावरण मे जो खिचाव था, वह दूर हो गया। युसुफ को बहुत नीद आ रही थी, उसने जमादार से पूछा, "मानसिंह, हो गया?"

"हा खा साहब। प्राण के निकलने मे बहुत थोडी देर लगती है।"

४२

युसुफ तथा अन्य फासी वाले सूर्योदय के बाद सो गए। मानो वे इस सूर्य की ही प्रतीक्षा कर रहे थे, जिसे उन लोगो ने देखा, पर हरकू ने नहीं देखा। आज की सूर्य-किरणे कितनी प्यारी मालूम हो रही थी और सामने जो नीम का पेड है वह जीवन के रस से कितना भरपूर मालूम हो रहा था।

डाक्टर रोज की तरह फासी वालों को देखने के लिए आया, पर उसने किसीको जगाया नही। वह जानता था कि आज लोग सोते हुए मिलेंगे। जब खाना बाटने वाले आए, तब भी वे सो रहे थे, पर जमादारो ने आवाज लगाई और फासीवाले एकदम से उठ गए। नहलवाने के लिए उन्हे निकाला जाता था, पर कोठरी से निकालने के पहले बाहर से ही हथकडिया डाल दी जाती थी। कायदा यह था कि एक-एक बार मे एक फासी वाले को ही बाहर निकाला जाता था, पर आज तीनों को एक साथ निकाला गया तो सबने एक दूसरे की शकल देखी।

तीन फासी वाले थे और जमादार थे। मालूम हुआ कि किसी कारण से चौथे जमादार का पहरा कायम रहा। युसुफ ने सोचा शायद यह उसीके कारण हो, पर उसने तो स्वप्न मे ही जेल से भागने की बात सोची थी और यहा पहरा दुगुना हो गया।

हरकू वाली कोठरी को अच्छी तरह साफ किया गया और दो बजे दिन तक उसमे एक नया फासी वाला आ गया। तब युसुफ को पता चला कि उस पर पहरा दुगुना नही हुआ था, बल्कि जेल वालो को नए फासी वाले के आने की खबर लग गई थी। इस बात के पता लगने से उसे कुछ खुशी नही हुई, पर

साथ ही इस बात से खुशी हुई कि कोठरी खाली नही रहेगी। हरकू की कोठरी खाली रहती तो शायद कुछ बुरा ही लगता, इस बुरा लगने को डर तो नही कह सकते, पर सूनेपन से कुछ बेचैनी तो होती ही है। न सही हरकू, पर उसका कोई प्रतिनिधि तो आ गया। कैसा प्रतिनिधि !

नया फासी वाला काफी पढा-लिखा मालूम होता था। अभी वह आया है, कुछ संभल ले फिर बातचीत होगी। बातचीत की तो उसे भी जरूरत होगी, और यहा के पुराने रहने वालो को भी।

सध्या होते ही बातचीत छिड गई। रामविनोद ने ही नए फासी वाले से प्रश्न पूछना शुरू किया। हरकू के चले जाने के बाद रामविनोद ने अपना मौनी स्वभाव बदल दिया। चहल-पहल पूर्ववत् बनी रही, फिर भी सबके मन पर एक बोझ तो बना ही रहा। किसीने नए आदमी से यह नही कहा कि उस कोठरी मे जो हरकू था, उसे आज ही फासी हुई है। न फासी वालो ने कहा और न जमादारो ने।

नया आदमी डाक्टर तेजराम का मामला कुछ अजीब था। उसने बस इतना ही कहा कि उसे ३०२ मे सजा हुई है। वह अपनी बात जानने की बजाय युसुफ से उसके मुकदमे के विषय मे पूछताछ करता रहा। उसने इतनी पूछताछ की कि युसुफ को बडा आश्चर्य हुआ। उसके मन ने कहा कि इसमे कोई रहस्य जरूर है। क्या यह पुलिस का आदमी है? नही, ऐसा कैसे हो सकता है? उसके चेहरे पर असली फासी वाले की छाप है। यदि युसुफ से पूछा जाता कि उसकी इस छाप का स्वरूप क्या है तो वह कुछ नही बता सकता, पर इतने दिनो मे उसने सहजात बुद्धि से इस छाप को कुछ-कुछ समझना (यद्यपि परिभाषा करना नही) सीख लिया था।

और बाते करते-करते तेजराम रामविनोद और रामधारी से पूछ बैठा, "तुम लोग फारसी जानते हो?"

युसुफ के कान खडे हो गए क्योकि यह बहुत ही अजीब प्रश्न था। दोनो ने कहा कि वे फारसी बिल्कुल नही जानते। उसने जमादारो से भी पूछा तो उन लोगो ने भी कह दिया कि वे फारसी नही जानते। युसुफ ने कहा, "मैंने फारसी पढी है। मुझे यह जबान बहुत पसद है।"

तेजराम बोला, "मुझे भी पसद है। हम लोग कभी-कभी फारसी साहित्य

की आलोचना किया करेगे।" कहकर उसने शेख सादी के कुछ कलाम सुनाए और फिर उनका मतलब सबको समझाया, "बुजुर्गी उम्र से नही बल्कि इल्म से होती है। कोई अनपढ आदमी साठ साल का हो जाए और कहे कि मैं बुजुर्ग हू मेरी इज्जत करो, तो यह बात गलत है।"

इसी तरह दो-चार सुभाषित और सुनाने के बाद उसने एकाएक फारसी मे युसुफ से कहा, "तुम्हारे कुणाल नाम के दोस्त मुझे रेल पर मिले थे", फिर उसने इसकी व्याख्या करते हुए हिन्दी मे और लोगो से कहा, "जिसे इल्म नही है वह अधे की तरह है, बल्कि अधा उससे अच्छा है।"

तेजराम ने इसी उपाय से युसुफ से यह बताया कि कुणाल चाहते है कि किसी तरह युसुफ को जेल से बचाया जाए, पर इसके लिए कोई तरकीब नहीं लड पा रही है।

तेजराम और बोला, "मैंने उनसे बताया कि मैं कुछ न कुछ बन्दोबस्त करूगा, पर शर्त यह है कि मुझे भी छुडाया जाए। पहले तो आपके कुणाल जी सोचते रहे, पर अन्त मे निर्णयात्मक ढग से बोले, युसुफ की जान के लिए क्रान्तिकारी दल कोई भी दाम दे सकता है।"

युसुफ ने पूछा, "उन्होने और कुछ कहा ?"

"हा, उन्होने कहा कि कबीर साहब और उनकी मा मजे मे है, यह भी बोले कि कबीर साहब आपसे मिलने के लिए आएगे।"

युसुफ को इस बात पर बहुत आश्चर्य हुआ क्योकि उसे मालूम हो चुका था कि श्यामा के विरुद्ध वारन्ट है। श्यामा उससे मिलकर गिरफ्तार हो जाने के लिए तैयार थी क्योकि जेल के नियमानुसार बच्चा उसे जेल मे भी मिल जाता, पर उससे मिलने आने मे डर यह था कि मिलाई भी न हो पाए और वह गिरफ्तार हो जाए। युसुफ ने पूछा, "कबीर साहब कैसे आएगे। यह कुछ बताया ?"

"नही, मुझे तो वह आदमी बहुत अक्लमन्द मालूम हुआ। वह कुछ न कुछ कर सकेगा। मैंने तो अपने घर का और अपने दोस्तो का पूरा पता दे दिया।"

बातो-बातो मे दो-तीन दिनो मे युसुफ को पता लग गया कि तेजराम अपने शहर का अच्छा मशहूर डाक्टर है। उसपर जुर्म यह है कि एक धनी रोगी के लड़के से पैसे लेकर उसने रोगी को गलत इंजेक्शन दे दिया और रोगी मर

गया। इसके लिए उसने पचास हजार रुपए लिए थे। तेजराम ने बताया कि मुकदमा बिल्कुल झूठा है, दुश्मनो ने अदालत से उसपर यह मुकदमा बाध दिया, पर युसुफ को विश्वास हो गया कि इसने यह काम जरूर किया होगा क्योकि उसने जब भागने का प्रबन्ध करना शुरू किया तो उसके सारे पत्र उसी व्यक्ति के पास जाते थे, जिसके पिता को उसने मारकर ताल्लुकेदारी पर कब्जा कराया था।

अजीब बात है कि उस ताल्लुकेदार पर मुकदमा नही चला था और डाक्टर को सजा हो गई थी। युसुफ को यह बुरा मालूम हुआ कि ऐसे आदमी के साथ मिलकर उसे सारा प्रबन्ध करना पड रहा है, पर कुणाल जी का हुक्म था, इसके अलावा वह बाहर जाकर फिर एक बार खुलकर खेलना चाहता था। वह कुणाल जी के इस कथन को गलत साबित करना चाहता था कि शादी के झमेले मे फसने के बाद सदस्य दल के लिए बहुत कुछ बेकार हो जाता है।

यह प्रबन्ध होने लगा कि किसी तरकीब से पहरे पर लगे हुए जमादारो को बेहोश करना पडेगा। इसके पहले ही दो नम्बर और तीन नम्बर कोठरियो के जगले कटे होगे। दोनो निकलकर रस्सी की सीढी के सहारे दीवार फाद जाएगे। बाहर सवारी आदि का प्रबन्ध होगा। यह कोई मामूली बात नही थी, पर तेजराम सभी कार्य बिल्कुल घडी के काटे की तरह कर रहा था, जैसे आपरेशन मे किया जाता है।

अब इतना प्रबन्ध हो चुका था कि बराबर चिट्ठी-पत्री आ-जा रही थी। तेजराम के ताल्लुकेदार ने यह कह दिया था कि रुपया मुझसे चाहे कोई कितना भी ले जाए, पर मैं और कुछ भी नही कर सकता। बाकी काम कुछ अत्यन्त विश्वस्त तरुण क्रान्तिकारी कर रहे थे। सर्वोपरि कुणाल का मस्तिष्क काम कर रहा था।

तेजराम ने फांसीघर मे ड्यूटी देने वाले सोलह जमादारों मे से (हर जमादार छः घंटे ड्यूटी देता था) एक जमादार मगतराम को रुपए की लालच दिखाकर अपने साथ कर लिया था। उसे जितनी तनख्वाह मिलती थी, उस हिसाब से कई सालो का वेतन लगभग ढाई हजार रुपए उसे पेशगी दे दिए गए थे। उससे कहा गया था कि सफल होने पर पाच हजार और दिए जाएगे। इसके

अलावा वह जेल की नौकरी छोड दे तो उसे ताल्लुकेदार के यहा नौकरी दे दी जाएगी।

सब तैयारी हो गई और बाहर से आई हुई आरियो को फासीघर के हाते मे कही मिट्टी मे गाडकर रख दिया गया। यह तय हुआ कि जिस दिन भी उस जमादार की रात के पिछले हिस्से मे नौकरी पडे, उसी दिन पहले तो आरियां पहुचाई जाए और जब घटे दो घटे मे जगले कट जाएं (क्योकि आख बचाकर और बिना आवाज़ के काटना था) त्योही युसुफ और तेजराम बाहर निकलकर रस्सी की सीढी के सहारे दीवार फाद जाए। यह भी तय हुआ कि वह जमादार बाकी जमादारो को कुछ खिला या पिला देगा, जिससे कि वे ऐन मौके पर बेहोश हो जाए। दोनो फासीवालो को निकालकर वह जमादार भी स्वयं वही दवा खाकर बेहोश होने वाला था, जिससे कि पता न चले कि कैसे सारा काम हुआ।

जिस किसी दिन उस जमादार की नौकरी पिछली रात को पड सकती थी। पर ज्यो-ज्यो दिन बीतने लगे त्यो-त्यो मगतराम घबडाने लगा। वह बेचारा सीधा-सादा देहाती था, केवल डाक्टर तेजराम की चिकनी-चुपडी बातो मे आकर उसने इस कार्य मे भ.ग लेना स्वीकार किया था। अब वह कहने लगा, "साहब, दो-दो आदमियो के भागने का झमेला छोडिए, एक आप चले जाइए, उस मुसल्ले को फासी लगने दीजिए, वह आपका कौन लगता है।"

तेजराम ने बहुत समझाया, "मुसलमान है तो क्या, वे भी तो अपने भाई है, फिर वह किसी मामूली मुकदमे मे थोडा ही है। उसने इस मुल्क को आजाद करने के आन्दोलन मे सज़ा पाई है, फिर यह भी तो ख्याल करो कि उसका छोटा-सा बच्चा है…"

जमादार के मन में जो भय समाया हुआ था, वह इस समय हिन्दू महासभाई मनोवृत्ति के रूप मे प्रकट हुआ। भय कितने ही अजीब रूप ग्रहण कर सकता है! जमादार बोला, "आप भी पढे-लिखे हो करके ऐसी बात कह रहे हैं। उसने तो एक हिन्दू स्त्री को भ्रष्ट किया है और उसका बच्चा मुसलमान ही कहलाएगा।"

डाक्टर तेजराम समझ गया कि डर ही इससे ये सारी बातें कहलवा रहा है, पर वह बहुत चिंतित हो गया। उसने युसुफ से कोई बात नही बताई।

तेजराम कोई बहुत विवेकशील आदमी नही था, न उसे देशभक्तो से कोई विशेष प्रेम था, न हिन्दू-मुसलमान मे मेल कराने के लिए वह कोई उधार खाए बैठा हुआ था, उसे तो फासी से बचकर देश के बाहर भाग जाना था। फिर भी मुसीबत यह थी कि यदि वह अकेला दीवार फादकर बाहर पहुचा तो बाहर ऐन दीवार के पास युसुफ के दोस्तो से ही साबका पडना था। उनके सामने वह कैसे मुंह दिखाएगा और वे क्या समझेंगे ? नही, युसुफ को तो हर हालत मे साथ लेना ही था।

बाहर से जो चिट्ठिया आ रही थी, उनमे बराबर यही लिखकर आ रहा था कि आप दोनो के लिए सारा इन्तजाम कर दिया गया है। दोनो बाहर आते ही अफगानिस्तान के रास्ते रूस भेज दिए जाएगे।

युसुफ तो इन पत्रो पर बहुत बडे स्वप्न भी बाध चुका था। क्या वह अकेला रूस भेजा जाएगा या उसके साथ श्यामा भी होगी ? और कबीर ? कुणाल जी भी क्यो नही चले चलते ? यद्यपि उनको अदालत मे फासी की सजा नही हुई है, फिर भी यह कौन नही जानता कि उनको पाते ही साम्राज्यवाद रेशम के फंदे* के हवाले करेगा ? यदि कुणाल गए तो उनके साथ रुक्मिणी देवी के जाने मे क्या हर्ज है ? पर कुणाल कभी नही मानेंगे। उन्हे भागना होता तो वे कबके भाग चुके होते। फिर वही क्यो जाएं ? जहा-जहा कुणाल रहेंगे, वहा-वहा वह भी छाया की तरह रहेगा। यदि मरना है तो दोनो साथ मरेंगे।

तेजराम भी अपने कार्यक्रम बना रहा था। उसने अपनी सारी जायदाद बेच दी थी क्योंकि वह जानता था कि फरार होने के बाद पुलिस सबसे पहले जायदाद पर लपकती है और उसे जायदाद से करना ही क्या है ! जब इस देश से बूदोबास उठ ही गया तो फिर जायदाद किस मतलब की ? नकद रकम तो उसके पास पहुच ही जाएगी। खैरियत है कि वह शादीशुदा नही है, बाहर स्त्रियो की कमी थोडे ही है। एल० आर० सी० पी० करते समय वह इगलैण्ड मे सारी परिस्थिति देख आया था। पर अबकी बार इगलैण्ड तो जाना नही है। रूस से उसे न जाने क्यों डर लगता था इसलिए वह इटली या स्पेन मे पड़ा

*यह आम तौर से समझा जाता है कि फांसी वालों के लिए जो रस्सी होती है, वह रेशम की बनी होती है, जिससे वह आसानी से सरके।

रहेगा। ये ही दो देश भारतीयो के रहने लायक भी है। बाकी देशो मे तो बहुत कडाके की सर्दी पडती है।

दोनो अलग-अलग मनसूबे बाधते रहे। युसुफ को कुछ पता नही चला कि भीतर-भीतर जमादार की सिट्टी-पिट्टी गुम हो रही है।

इतने मे एक दिन यह खबर आई कि युसुफ की अपील खारिज हो चुकी है। आनन्दकुमार कबीर को गोद मे लेकर उससे मिल भी गए। इतना बडा विद्वान् और सयतचित्त पुरुष करीब-करीब रो रहा था। यह स्पष्ट था कि उन्हे पुत्रशोक या जामातृशोक से कम शोक नही था। वे बार-बार उस अबोध बच्चे से कह रहे थे, "देख-देख ये तेरे अब्बा है", कहते तो वे बच्चे से थे, पर स्वय ही युसुफ को देख रहे थे, ऐसे देख रहे थे मानो अभी यह सामने बैठा है और फौरन गायब हो जाएगा।

उन्होने युसुफ से बताया कि प्रिवीकौसिल मे अपील की चेष्टा हो रही है। देश मे आन्दोलन चालू तो था ही, पर वे कुछ निर्दिष्ट सान्त्वना नही दे सके। सारी मिलाई ही एक अजीब अभाव की काली छाया मे हुई। वहा तीन थे, पर चौथी यानी श्यामा का अभाव सबको खटक रहा था।

आनन्दकुमार जिस दिन मिलकर गए, उसके दो दिन बाद रात को मगत की नौकरी पडी और पड़ी पिछली ही रात मे जैसा कि सब लोग चाहते थे। एक तरफ तेजराम को सन्ध्या समय ही इसकी खबर हो गई और दूसरी तरफ बाहर से जो लोग मोटर आदि लेकर आने वाले थे उनको भी खबर हो गई। पर तेजराम ने उस समय युसुफ से कुछ नही कहा। वह फारसी मे बात तो करता रहा, पर इस सम्बन्ध मे उसने एक भी बात नही कही। उसने यह सोचा कि पहले वह मगल को समझा लेगा फिर युसुफ से कहेगा। यो तो युसुफ हर समय तैयार ही रहता था। उसे कौन-सा बिस्तरा बाधना या और कोई तैयारी करनी थी। वह तो फौरन तैयार हो सकता है।

रात बारह बजे मगत आया तो वह बहुत घबडाया हुआ था। वह पहले तो बहाने से बचता रहा, पर जब तेजराम ने फारसी कवियो की वाणी सुनाने के बहाने उसे बुलाया तो वह जल्दी-जल्दी बोला, "डाक्टर साहब, आज रहने दीजिए, जब अगले किसी दिन ड्यूटी पडेगी तो देखा जाएगा। अगर आपको डर है तो मैं रुपए लौटाने को तैयार हू।"

तेजराम ने यह बहाना लिया कि युसुफ की अपील खत्म हो चुकी है, प्रिवी-कौंसिल तक यह मामला जाएगा नही क्योकि कोई कानूनी नुक्ता बनता नही है। उसने तो हाईकोर्ट का फैसला पढा है, इसलिए जिस किसी दिन निजामी शाम को शुभ सन्देश सुनाने के लिए पधार सकते है।

मगत फिर भी घबडाता रहा। इसीमे एक घटा निकल गया तब तेजराम ने आरी मंगाई। मगत एक ही आरी लाया। तेजराम ने उसे दूसरी लाकर युसुफ को देने के लिए कहा, पर वह इतना घबडा चुका था कि तेजराम को डर हुआ कि कही यह उल्टे उसीको आरी समेत पकडवा न दे, इसलिए वह चुप-चाप अपना जगला काटता रहा। जब काट चुका तो उसने इशारा कर दिया तब मगत ने अन्य जमादारो को सिगरेट निकालकर पिलाई, जिससे वे दो मिनट मे ही बेहोश होकर सो गए। तेजराम जल्दी से निकला और चार नम्बर की तरफ से होते हुए (ताकि युसुफ आहट न पाए) दीवार फाद गया। जमादार ने अपनी सिगरेट भी पी ली। वह थोडी देर मे बेहोश होकर पड गया।

तेजराम को न जाने क्यो यह ख्याल था कि फासीघर की दीवार के बाद ही मुक्त ससार है, पर आज दीवार फादकर उसने देखा कि एक दीवार और है। एक दफे तो उसकी फूंक सरक गई और एक क्षण के लिए उसके मन मे यह विचार भी आया कि शायद उसने युसुफ से जो बेईमानी की है उसीके कारण उसकी यह हालत हुई। पर वह ऐसी बातो से घबडाने वाला नही था। थोडी देर खडा होकर उसने परिस्थिति देखी। खैरियत यह है कि उसके सामने रस्सियो की वह सीढी अभी पड़ी हुई थी। वह उसे लेकर अन्तिम दीवार की तरफ बढा और उसके सहारे वह मुश्किल से उसे भी फाद गया।

जब तेजराम दीवारो के बाहर निर्दिष्ट स्थान पर पहुचा तो स्वय कुणाल उसे मिले। कुणाल ने पूछा, "युसुफ कहा है?"

तेजराम ने कहा, "मैं सब बात बताता हू। आप जल्दी चलिए।"

सचमुच वहा खडे रहने का कोई मतलब नही था। फासीघर की ओर कुछ रोशनिया लपलपाने, चलने-फिरने लगी थी। मोटर फौरन स्टार्ट की गई और अभी मोटर जेल के हाते से एक मील के अन्दर ही थी कि बड़े जोर से जेल के घटे और सीटिया बज उठी। जब कुणाल तेजराम को लेकर गुप्तस्थल मे पहुचे तो तेजराम ने सारी बात सही-सही बता दी। केवल उसने यह नही बताया

कि शुरू से ही जमादार इस तरह की बात कर रहा था। उसने यह भी नही बताया कि युसुफ को इन सारी बातो के सम्बन्ध मे अधेरे मे रखा गया था। सुनकर कुणाल चुप हो गए। उनके माथे पर कुछ बल और पड़ गए।

४२

डाक्टर तेजराम के भाग जाने के बाद जेल के अन्दर क्या परिस्थिति हुई, इसके ब्योरे से इस कथा का सम्बन्ध नही है। इतना ही कहना यथेष्ट है कि जब सारी बातो की जाच की गई तो पता चला कि युसुफ और तेजराम फारसी में कुछ बातचीत किया करते थे। हाते की जमीन खोदने पर उसमे से एक आरी निकली। चारो जमादार मुअत्तल कर दिए गए और उन्हे यह हुक्म दिया गया कि वे लाइन पर हाजिर रहे। साथ ही खुफिया पुलिस उनपर निगरानी रखने लगी।

युसुफ को अगले दिन दूसरी जेल के फासीघर मे भेज दिया गया और कानोकान इसकी खबर किसीको लगने नही दी गई। युसुफ और उसके दो साथियो यानी राजनीतिक षड्यन्त्र मे फासी की सजा पाए हुए साथियों की फासी की तारीख भी जल्दी मे निर्दिष्ट कर दी गई, पर इसकी खबर अखबारों मे नही जाने पाई। यद्यपि युसुफ भागना चाहता है ऐसा कोई भी प्रमाण अन्त तक नही मिला, फिर भी जेल तथा पुलिस विभाग ने यह निष्कर्ष निकाला था कि युसुफ भागने के षड्यन्त्र मे था, पर किसी कारण वह ऐन मौके पर भाग नही पाया। जानसन ने तो यही कहा, "असली रहस्य का पता तो तेजराम से ही मिल सकता है, पर तेजराम जल्दी हाथ आएगा, ऐसा नही मालूम होता, फिर भी हमे उसीको पकडने मे अपनी सारी कर्मशक्ति लगा देनी चाहिए।"

युसुफ के घरवालों को भी फासी की तारीख का पता नहीं दिया गया। जिस जिले मे उसके घर वाले रहते थे, उस जिले के मजिस्ट्रेट को फासी की तारीख का पता दिया गया और यह कहा गया कि वह इस शर्त पर फासी का स्थान तथा समय बताए कि वे किसी तरह का आन्दोलन नही करेंगे और न

किसी और को खबर देगे, चुपचाप लाश लेकर लौट जाएगे ।

पर इतनी सावधानी बरतने पर भी जिस समय युसुफ तथा उसके दो फासीवाले साथियो को एक ही दिन फासी लगी, उस समय उनकी जेलो के सामने हजारो की भीड जमा थी और बडे जोर से नारे लग रहे थे ।

तीनो शहीदो को मरते समय यह सान्त्वना तो हो ही गई कि हजारो लोग उनके पीछे है और जिस उद्देश्य के लिए वे अपने प्राणो का बलिदान कर रहे है, वह व्यर्थ नही गया और वह साफल्यमण्डित होकर ही रहेगा ।

जिस जेल मे युसुफ को फासी हुई, वहा सबसे अधिक जोश रहा । शहर के सारे हिन्दू और मुसलमान एक दूसरे से गले मिलकर उस बुरी तरह रो रहे थे कि कोई अपने अत्यन्त प्रिय व्यक्ति के वियोग पर भी क्या रोता होगा । इस अपार भीड के अन्दर कुणाल भी मौजूद थे ।

सूर्यास्त के पहले ही फासी हो चुकी थी । यदि उस दिन वहा फौज की एक टुकडी जेल के फाटक पर मौजूद नही होती तो पता नही क्या होता । लोग घडी देखते जाते थे और पागलो की तरह भारतमाता की जय, युसुफखा की जय, प्रकाशकुमार की जय, केशवप्रसाद की जय बोल रहे थे ।

जनता मे यह जोश देखकर अधिकारी वर्ग कुडकुडा रहा था । उस इलाके के कमिश्नर ने क्रोधावेश मे कहा, "लाश न दी जाए··· ।"

पर पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट ने कहा, "उस हालत मे फौज से काम लेना पडेगा और सम्भव है कि एक जलियानवाला और करना पडे ।"

पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट बहुत पुराना और वरिष्ठ अधिकारी था, इसलिए कमिश्नर साहब चुप हो गए । थोडी देर बाद बोले, "तब तो फासी देने का उद्देश्य ही व्यर्थ हो गया ।"

"व्यर्थ तो हो ही गया । फासी तो इसलिए दी जाती है कि लोग डरे, पर यहां तो लोगों में और उत्साह का सचार हो रहा है । यदि पूछा जाए तो युसुफ के बदले अपनी जान देने वाले इस भीड मे सैकडो निकल आएगे । यह तो कहिए कि इनके पास हथियार नही है, नही तो युसुफ को फासी देना टेढी खीर हो जाता ।"

इसी प्रकार आलोचना हो रही थी कि जेल सुपरिन्टेन्डेन्ट निक्सन ने आकर खबर दी कि फासी हो गई । उपस्थित अधिकारियो ने जैसे संतोष की सास

ली । कमिश्नर ने पूछा, "क्या उसने कोई कमजोरी दिखलाई ?'

निक्सन ने रूमाल से माथे का पसीना पोछते हुए कहा, "बिल्कुल नही । वह तो ऐसे व्यवहार कर रहा था मानो वह सैर के लिए जा रहा है। उसने टोपी भी अपने हाथ से डाली और जब उसके गले मे फन्दा डाला गया तो उसने चिल्लाकर कहा, मेरी आखिरी ख्वाहिश यही है कि ब्रिटिश साम्राज्यशाही का नाश हो ··।"

कमिश्नर साहब ने मु ह ऐसे बना लिया जैसे कडवा घू ट पिया हो। बोले, "लाश का क्या होगा ?"

"नियमानुसार हम थोडी देर बाद लाश उतारेगे और फिर जब डाक्टर जाच करके मृत्यु की रिपोर्ट लिख देगा तब समझा जाएगा कि फासी की कारंवाई पूरी हो गई। इसके बाद लाश का क्या करना है या नही करना है, यह आप हुक्म देगे। साधारण फासी वालो के मामले मे हम लाश रिश्तेदारो को दे देते है और यदि कोई नही आता तो नियमानुसार उसकी अन्त्येष्टिक्रिया करते हैं। पर यह राजनीतिक मामला है इसलिए मैं कुछ नही कह सकता।"

कमिश्नर मिस्टर हालराएड एकदम से उठ खडे हुए, बोले, "आप भी इसे राजनीतिक कहते है ?"

इसका उत्तर जनता की तरफ से आया, जिसे अब पता लग चुका था कि फासी हो चुकी और वह अब बडे जोरो से यह नारा लगा रही थी—"ब्रिटिश साम्राज्यशाही का नाश हो ! युसुफ खा जिन्दाबाद !!"

मिस्टर हालराएड ने अविश्वास के साथ चारो तरफ देखा, जैसे वे पूछना चाहते हो कि फासी का फन्दा गले में डालकर दिया हुआ यह नारा इतनी दीवारे पारकर इतनी जल्दी जनता मे कैसे पहुच गया। वह जल्दी से हैट उठाकर चलने लगे, पर जेल के हाते के बाहर उनकी मोटर निकली ही थी कि वह घेर ली गई और लोगो ने उनसे लाश की माग की। मिस्टर हालराएड ने लोगो से कहा, "इसका फैसला तो जिला मजिस्ट्रेट मिस्टर कार्क करेंगे।"

भीड मैं से किसीने आवाज दी, "लाश के बदले लाश !"

साथ ही साथ मोटर पर हमला हो गया। पुलिस वाले आ गए और किसी तरह मोटर फिर हाते के अन्दर दाखिल हुई, फिर भी मोटर की सारी बाडी का इस बीच मे बुरा हाल हो चुका था और कई काच भी टूट चुके थे। जल्दी-

जल्दी अधिकारियो का एक सम्मेलन हुआ और फौरन युसुफखा की लाश लाकर जनता को दे दी गई।

वह जनता जो हिंस्र शेर की तरह हो रही थी, एकदम से शान्त हो गई। अब लोगो मे इस बात की भगदड़ पड गई कि किसी तरह लाश को कन्धा दिया जाए। हिन्दू और मुसलमान का कोई भेद नही रहा। किसीने यह नही पूछा कि नियमानुसार एक मुसलमान की लाश को हिन्दू कन्धा दे सकते है या नही ? लोग तो बस इतना ही जानते थे कि उनका प्यारा युसुफ साम्राज्यवाद का शिकार हुआ है और वह अपनी अन्तिम यात्रा मे अपने घर के जिले मे जा रहा है।

यद्यपि शहीद की अर्थी को कन्धा देने की छीना-झपटी भीतर ही भीतर चलती रही, पर ऊपर से ऐसा मालूम हो रहा था कि सब शान्त है और एक सुव्यवस्थित भीड़ अपने प्यारे शहीद को लेकर श्मशान की तरफ यात्रा कर रही है। उस भीड मे आनन्दकुमार थे, यद्यपि उनकी गोद मे इस समय कबीर नही था। कबीर अपने सगे चाचा की गोद मे था। कुणाल ने मौका लगाकर और बड़ी विपत्ति उठाकर एक बार युसुफ को कन्धा दिया, अपने शिष्य के पैर छुए और फिर वे भीड के अन्दर गायब हो गए।

जनता के इस अप्रत्याशित जोश को देखकर युसुफ को जेल से न भगा पाने की जो ग्लानि उनके मन मे थी, वह जाती रही क्योकि उन्होने यह देखा कि इस त्याग की ज्योति सारे भारत मे फैल रही है और वह एक दिन ब्रिटिश साम्राज्य के अन्धकार को भगाकर ही रहेगी। वे भीड के साथ चलते रहे। लाश रेल पर उस जिले मे जा रही थी, जहा युसुफ का पुश्तैनी घर था। कुणाल को इस सम्बन्ध मे न तो कुछ सोचना था, न करना था। सारा काम युसुफ के भाई आदि कर रहे थे। वे निश्चिन्त होकर चल रहे थे, पर स्टेशन के पास उन्हे मालूम हुआ जैसे आखो की एक जोड़ी उन्हे घूर रही है। अरे, यह तो तेजराम की आखे थी।

तेजराम यहा कहा से आ गया ? थोडा-सा सुर कट गया। भागने की रात मे ही कुणाल ने उसे अलग कर दिया था और उसे आगे किसी प्रकार की मदद देने से इन्कार कर दिया था। उसे तो देश के बाहर होना चाहिए था, कम से कम उसने ऐसा ही कहा था। वह यहा क्यों घूम रहा था ? उसका यहा क्या

काम ? यह तो माना नही जा सकता कि युसुफ के लिए यहां आया था। युसुफ से उसका क्या वास्ता ? उसने तो युसुफ को धोखा दिया था। यदि मगत उस रात को राजी नही हो रहा था, तो वह उस समय भागने का कार्यक्रम स्थगित कर सकता था और फिर अगले किसी दिन उसे चालू करता, पर यह तो सरासर धोखा था। कुणाल को यह स्मरण हो आया कि हाय तेजराम ने कितना धोखा दिया था, इसका कभी किसीको पता नही लगेगा क्योकि जो इसका पता दे सकता था वह तो चल बसा।

कुणाल जल्दी-से भीड से निकल गए। जाते समय उन्होने कमर मे पडी हुई माउजर पिस्तौल देख ली कि वह ठीक है या नही, फिर उन्होने उसकी सेफ्टी हटा दी।

४४

देश मे इसी तरह जगह-जगह क्रान्तिकारी पकड़े जा रहे थे और उनपर मुकदमे चल रहे थे। कुणाल, अमिताभ तथा ऐसे ही अन्य लोग सगठन के तन्तु को मजबूत करते हुए फिर रहे थे। यह एक सम्पूर्ण रूप से असम लडाई थी। एक तरफ तो परम पराक्रमशाली ब्रिटिश साम्राज्य था दूसरी तरफ कुछ थोड़े से नवयुवक थे। पर इनका असर सारे देश पर बहुत अधिक पड़ रहा था।

दूसरी तरफ कौंशिल-प्रवेश का कार्यक्रम सार्वजनिक क्षेत्र के राष्ट्रीय आदोलन की टिमटिमाती लौ को किसी प्रकार कायम रख रहा था। १९२८ की काग्रेस कलकत्ते मे होने वाली थी और उसके अध्यक्ष के रूप मे पंडित मोतीलाल नेहरू का नाम लिया जा रहा था। स्वय गांधी जी यह जानते हुए भी कि पंडित मोतीलाल स्वराज्य दल के नेता हैं, उन्हे कांग्रेस का अध्यक्षपद देना चाहते थे गांधी जी ने एक वक्तव्य मे कहा, "बंगाल को मोतीलाल नेहरू की आवश्यकता है। वे सम्मानजनक समझौता की प्रतिमूर्ति हैं। देश को इस समय इसकी जरूरत भी है और वे इसे प्राप्त करने की मानसिक स्थिति मे भी हैं, इसलिए उन्हीको अध्यक्ष बनाना चाहिए।"

पडित मोतीलाल नेहरू को काग्रेस का अध्यक्ष बनाने का अर्थ यह भी था कि काग्रेस के अन्दर परिवर्तनवादी और अपरिवर्तनवादी जो दो गुट बन गए थे, उन्हे फिर से एक सूत्र में गूथा जाए।

एक तरफ तो समझौते की बातचीत चल रही थी, पर दूसरी तरफ जनता के अन्दर से सग्राम की आवाज आ रही थी और मजे की बात यह है कि यह आवाज उसी बारदोली से आ रही थी, जो गाधी जी के अनुसार सत्याग्रह का अच्छा केन्द्र था। बारदोली मे ही काग्रेस कार्यसमिति का वह प्रस्ताव पास हुआ था, जिसके अनुसार १९२२ की फरवरी मे असहयोग आन्दोलन वापस लिया गया था।

इस समय बारदोली मे फिर से जमीन का बन्दोबस्त होने वाला था और राजस्व लगभग पच्चीस प्रतिशत बढने वाला था। इसीपर झगडा चल रहा था और रय्यतो की तरफ से यह चेतावनी दी गई थी कि यह बन्दोबस्त स्थगित किया जाए नही तो करबन्दी आन्दोलन शुरू होगा।

यह आन्दोलन स्वराज्य के लिए नही बल्कि एक सीमित आर्थिक उद्देश्य के लिए था। शुरू से काग्रेस ने इसमे कोई भाग नही लिया। बाद को बारदोली वालो ने वल्लभभाई पटेल को इस आन्दोलन का नेतृत्व करने के लिए बुलाया और उन्होने नेतृत्व की बागडोर सम्भाल ली। जो लोग करबन्दी कर रहे थे, उनकी जायदादें जब्त की जाने लगी और बाहर से पठान मगाकर कुडकिया होने लगी। हिन्दू और मुसलमान रय्यतो को लडाने की कोशिश भी की गई, पर इसमे सरकार को सफलता नही मिली।

जनता के अन्दर से जगह-जगह ब्रिटिश विरोधी कार्य चालू हो रहे थे। यद्यपि ज्वालामुखी ऊपर से सुप्त मालूम होती थी, पर भीतर ही भीतर तेजी से अग्निकाण्ड तथा धडाके हो रहे थे, जो तगडे होने पर भी इतने तगडे नही थे कि परत फोडकर ऊपर आ जाएं।

१९२८ के २८, २९, ३० अगस्त को एक सर्वदल सम्मेलन हुआ, जिसमे यह सर्वसम्मति से पास हुआ कि यदि भारत को डोमीनियन की मर्यादा दी जाए तो समझौता हो सकता है। अवश्य इस सम्मेलन ने दूसरे लोगो को, जो डोमीनियन के लक्ष्य मे विश्वास नही करते थे, पूर्ण स्वतन्त्रता के लिए कार्य करने की पूरी छूट दी। ब्रिटिश सरकार इस माग को भी मानने के लिए तैयार नहीं

थी। नौजवान तो खुलकर इस सर्वदल सम्मेलन के नेताओ को गालिया दे रहे थे। इन दिनो सारे भारत मे नौजवान सभाओ और युवक सघो का बहुत जोर था और जवाहरलाल तथा सुभाष बोस इनके नेता समझे जाते थे। यद्यपि असलियत कुछ और ही थी, हा यह कहा जा सकता है कि सार्वजनिक मोर्चे पर ये दो नेता नौजवानो के सबसे अधिक विश्वासपात्र थे।

एग्लो इडियन अखबार तथा अन्य प्रतिक्रियावादी सरकारी पिट्ठू और गुर्गे यह नारा दे रहे थे कि समझौते की सारी बातचीत बन्द कर दी जाए और बीस साल के लिए कसकर शासन किया जाए। ब्रिटिश सरकार ने भी केन्द्रीय असेम्बली के अन्दर एक बिल रखा, जिसका नाम था सार्वजनिक सुरक्षा बिल। असल मे यह बिल सार्वजनिक सुरक्षा के लिए नही बल्कि जनता से सरकार की सुरक्षा के लिए था। यद्यपि बताया यह जा रहा था कि इस बिल का उद्देश्य साम्यवादियो का दमन करना है, यह बात सही है कि कानपुर षड्यन्त्र मामले से सरकार को एक नई किस्म के षड्यन्त्र का पता लगा था, जिसके नेता श्री एम० एन० राय थे और जिसके सम्बन्ध मे यह कहा जाता था कि वह मास्को से परिचालित होता है, फिर भी जनता और मजदूर किसानो मे उनका प्रभाव इतना अधिक नही था और स्पष्ट ही सरकार का यह बहाना भी सम्पूर्ण रूप से झूठा था। लाला लाजपतराय ने खुलकर इस बिल का विरोध किया। इसी प्रकार एक और बिल ट्रेड डिस्प्यूट बिल नाम से पेश था, जिसका उद्देश्य उदीयमान मजदूर आन्दोलन को दबाना था। क्रान्तिकारियो ने अपने दो प्रमुख नेताओ सरदार भगतसिंह और बटुकेश्वरदत्त के द्वारा असेम्बली मे बम डलवाकर इन बिलो का प्रतिवाद किया। इन दोनो युवको को कालेपानी की सजा दी गई और सरदार भगतसिंह को एक अन्य मुकदमे मे फांसी की सजा दी गई, पर वह बाद की बात है।

इन्ही परिस्थितिओ मे प० मोतीलाल की अध्यक्षता मे कलकत्ता काग्रेस हुई, जिसमे सुभाष बोस काग्रेस की स्वयं सेवक सेना के नेता के रूप मे दिखाई पड़े। देश मे जो घटनाएं हो रही थी, उनकी प्रवृत्ति इसी ओर थी कि कलकत्ता काग्रेस मे स्वतन्त्रता का प्रस्ताव पास हो जाए। सच तो यह है कि इसके पहले वाली काग्रेस मे यानी मद्रास कांग्रेस मे स्वतन्त्रता का प्रस्ताव पास हो भी चुका था, पर यह ऐसे रूप मे पास हुआ था कि इसपर लोगो का ध्यान नही गया था। जब कलकत्ता काग्रेस की बैठक हो रही थी, उस समय साइमन कमीशन इस

हास्यास्पद शोध के लिए देश का दौरा कर रहा था कि देखा जाए भारत स्वराज्य के लिए तैयार है या नही। कहना न होगा कि देश भर मे इस कमीशन के बायकाट का नारा पहले ही दिया जा चुका था और वह कमीशन जहा भी जाता था उसे बन्द बाजार और दूकाने तथा काली झडिया मिलती थी।

क्रातिकारी दल ने इस कमीशन के विरुद्ध अपने ढग से प्रतिवाद करना चाहा यानी उन लोगो ने कमीशन के सदस्यो की ट्रेन को बम से उडाना चाहा, पर कुछ ऐसा संयोग हो गया कि जो क्रान्तिकारी इसके लिए भेजे गए थे, वे स्वय ही विपत्ति मे पड गए। तीन युवक बम लेकर ट्रेन मे जा रहे थे कि रास्ते मे बम फट गया, कई यात्री और एक क्रान्तिकारी वही ढेर हो गए। एक क्रान्तिकारी बुरी तरह घायल हुआ। इस तरह यह प्रतिवाद सफल न हो सका। फिर भी यह प्रतिवाद तो था ही और देश मे इसका स्वागत हुआ। लोगो को यदि अफसोस था तो इस बात का कि कमीशन के सदस्य जिन्दा रह गए।

कलकत्ता काग्रेस मे यह प्रस्ताव पास हुआ कि सरकार को चेतावनी दी जाती है और एक साल का समय दिया जाता है कि वह इस बीच मे कम से कम सर्व-दल-सम्मेलन की माग स्वीकार कर ले, नही तो पूर्ण स्वराज्य काग्रेस का ध्येय बना दिया जाएगा और उसके लिए सग्राम जारी किया जाएगा। गरमदल वालो ने इस प्रस्ताव को पसन्द नही किया, पर काग्रेस अपने ही ढग से चल सकती थी।

जब आनन्दकुमार काग्रेस से लौटे तो उन्होने अपने नौजवान भक्तो को समझाते हुए कहा, "काग्रेस के इस प्रस्ताव से नाराज होने की कोई बात नही है। प्रत्येक सस्था का अपना जीवन और अपनी गति होती है, वह उसीके अनुसार चल सकती है। मैं समझता हूं कि गांधी जी ने इस प्रकार एक साल तक आन्दोलन रोककर अच्छा ही किया। एक साल जाति के जीवन मे कुछ भी नही होता, पर एक साल की तैयारी से बहुत कुछ हो सकता है। आप लोग तैयारी करिए, अपनी इच्छा के अनुसार खुल-खेलिएगा। गांधी जी तो जेल चले जाएगे फिर आपको कौन रोकता है?"

आनन्दकुमार स्वय बहुत खुश थे, यद्यपि उनकी इस खुशी मे एक बहुत बड़ा नुक्स यह था कि युसुफ की फांसी के बाद उनके मन मे एक गाठ पड़ गई थी जैसे ज्यादा उम्र के बेटे के मरने से बाप के मन मे पड जाती है। उन्होंने

और रूपवती ने एक तरह से श्यामा को अपनी बेटी ही मान लिया था, पर ऐसी अद्भुत परिस्थिति थी कि श्यामा को भी अपने पास रखने की सुविधा नही थी ।

श्यामा इस परिस्थिति से बहुत ऊब गई थी । उसका जी कुछ-कुछ अपने बच्चे से लगा रहता था, पर यह यथेष्ट नही था । एक दिन उसने आनन्दकुमार से मिलकर साफ-साफ कह दिया, "अब मुझसे यह जीवन बिताया नही जाता । आखिर मैं अपने को जेल से क्यो बचा रही हूं । यदि गिरफ्तार हो जाऊ तो जो भी सजा हो, वह कटने लगेगी, पर यहा तो लामियाद कैद है ।"

आनन्दकुमार ने सोचकर इसका उत्तर दिया, "है तो कुछ ऐसी ही बात, पर जल्दी क्या है ? मुझे तो स्पष्ट दिखाई पड रहा है कि लाहौर काग्रेस मे युद्ध का आरम्भ कर दिया जाएगा । उस समय तुम जेल चली जाना । हम सभी जाएगे । तुम्हारे बेटे को पालने के लिए रूपवती है, तुम्हारी माता जी हैं । वह भी तब तक कुछ बडा हो जाएगा।"

पर श्यामा नही मानी । बोली, "मैं इस सम्बन्ध मे निश्चय कर चुकी हूं । क्रान्तिकारी दल मुझसे कुछ काम नही ले रहा है, उसे शायद कबीर की चिन्ता है । रही लाहौर काग्रेस की बात सो उसमे संग्राम की घोषणा हो ही जाएगी, ऐसा मुझे मालूम नही होता । सत्याग्रह आन्दोलन दवाव-मूलक नीति पर आधारित है। उसमे जो कुछ भी सग्रामशीलता है, वह केवल यही है कि दुश्मन के सिर पर खाली पिस्तौल तानकर कुछ न कुछ वसूल किया जाए । तभी तो गाधी जी बराबर समझौते की बात करते हैं। यदि इस बीच मे कुछ थोडी-बहुत रियायतें मिल गईं तो शायद सग्राम या संग्राम का दिखावा करने की नौबत ही न आए ।"

आनन्दकुमार ने कहा, "यह बात सही नही है । तुम यह जो समझती हो कि हमारा आन्दोलन अहिंसामूलक है, इसलिए उसीका सारा दोष है और उसी-के कारण मौके-बेमौके समझौते की बातचीत होती रहती हैं, यह बात गलत है । यदि आन्दोलन हिंसामूलक भी होता और हम तोप-बन्दूक से लडते, पर शत्रु से कमजोर होते तो भी हमारा उद्देश्य किसी न किसी मजिल पर समझौता करना ही होता । सच तो यह है कि हर सग्राम के साथ समझौते की सम्भावना लगी हुई रहती है । हा, यदि हम दुश्मन से इतने अधिक तगडे हों कि हम उसे

पैरो तले रौंद सके, तो केवल उसी हालत मे समझौते की बात नही उठती पर दुश्मन की तरफ से उस हालत मे भी उठेगी।"

श्यामा इन बातो से प्रभावित नही हुई क्योकि वह अपनी ही बात ज्यादा सोच रही थी। लुक-छिपकर रहते हुए काफी समय हो गया था और अब वह जीवन उसे पसद नही आ रहा था। वह बोली, "मैं तो अभी-अभी पुलिस-चौकी जाकर आत्मसमर्पण करना चाहती हू। कबीर का भार रुक्मिणी दीदी और आप लोग ले लीजिए।"

रुक्मिणी ने अब तक बातचीत मे कोई भाग नही लिया था। बोली, "मैं किसीका भार नही ले सकती यहा तक कि कबीर का भी नही जो शायद मुझे अपनी मा से ज्यादा पहचानता है। मैं तो अपना भार भी उठाने के लिए तैयार नही हूं। जब से होश आया है, तब से उस व्यक्ति के पीछे दौड रही हू, जिसने अग्नि साक्षी करके मेरा भार अपने ऊपर ले लिया था।"

आनन्दकुमार ने कनखी से रुक्मिणी के चेहरे को देखा, इन दिनो रुक्मिणी बराबर इसी लहजे मे बात करती थी और ऐसा मालूम होता था जैसे किसी भयकर भावी दुर्घटना की छाया मे वह निरन्तर निवास कर रही है। यह रुख ठीक भी था, क्योकि कुणाल पर उत्तर-भारत मे होने-वाली सारी राजनीतिक हत्याओ और डकैतियो के मुकदमे बनते जा रहे थे। जहा भी सुनो बस लोग अमिताभ और कुणाल का नाम लेते थे, और उसमे भी यह कहते थे कि अमिताभ तो हाथमात्र हैं, दिमाग तो कुणाल का ही है। कुणाल को जिन्दा या मुर्दा पकडने के लिए पैंतीस हजार रुपए से अधिक इनाम की घोषणा हो चुकी थी। वे कई बार बाल-बाल बच गए थे। जब कलकत्ता काग्रेस हुई थी, उस अवसर पर वे कलकत्ते मे थे और वहा पुलिस सुराग लगाकर उस घर मे पहुची थी, जहा वे ठहरे हुए थे। दोनों तरफ से गोलिया चली थी। फिर एकाएक गोली चलनी बन्द हो गई तो पुलिस ने जाकर देखा कि एक युवक अन्तिम सासें गिन रहा है। पुलिस वाले बहुत खुश हुए कि कुणाल हाथ लग गया। उसके मुह मे पानी देकर डाक्टर बुलाया गया तो उसे होश आया। पुलिस ने पूछा, "तुम जगदीश उर्फ कुणाल हो न ?"

उसने कहा, "हा।"

फौरन सब अखबारो मे खबर चली गई कि कुणाल मारे गए। पुलिस के

डाक्टरो ने पकड़े हुए युवक को जिलाने की बहुत कोशिश की, पर उसके सीने के पास से गोली चली गई थी, वह जीवित नही रहा।

बाद को जब लाश सनाख्त कराई गई तो पता लगा कि यह तो कुणाल नही रामरक्षा था जो बिहार प्रान्त का एक मशहूर क्रान्तिकारी था। पुलिस उसकी भी तलाश में थी और उसके नाम से भी पाच हजार का इनाम था। उसने मरते समय अपना नाम कुणाल इसलिए बताया था कि कुणाल को इस बीच मे भाग जाने का मौका मिले।

इस प्रकार कुणाल कई बार बच गए थे। रामरक्षा के साथ कुणाल स्वयं थे, पर जब उन्होने देखा कि साथी के सीने पर गोली लग चुकी है, तब वे छत से कूदकर भाग गए थे। रुक्मिणी जानती थी कि इस प्रकार बहुत बार नही बचा जा सकता। अकेला प्राण और उसके विरुद्ध मृत्यु की इतनी बडी सेना।

इसीलिए रुक्मिणी ने कहा, "जब मैं कलकत्ता काग्रेस मे भैया के साथ गई थी, तो वहा यह खबर फैली कि वे मारे गए है। मैं पागल की तरह वहा से घटनास्थल पर जा ही रही थी कि मुझे इसका अकाट्य प्रमाण मिल गया कि वे मरे नही है।"

श्यामा ऐसा कई बार सुन चुकी थी, फिर भी वह बोली, "फिर क्या हुआ?"

"मैं अभी सडक पर गई ही थी कि मुझे सारे वातावरण मे वही गन्ध मिली। मै समझ गई कि वे आसपास कही हैं और सम्भव है मुझे तसल्ली देने के लिए ही यहा आए हो। मुझे इच्छा तो हुई कि उन्हे खोजू, पर युसुफ के सामने जो प्रतिज्ञा की थी, वह याद आई और मै पीछे लौट पडी, पर इस तरह वे कितने दिन बचेंगे? इसलिए मैं किसीका भार लेने के लिए तैयार नही हूं। किसी भी समय मेरी पुकार आ सकती है। मुझे उसके लिए तैयार रहना चाहिए"—कहकर उसने अपनी अगुली पर की चादी की अगूठी को अन्यमनस्क होकर देख लिया।

आनन्दकुमार ने इस दु:खपूर्ण बातचीत को बदलने के लिए कहा, "कबीर की खास चिन्ता नही है, प्रश्न है श्यामा क्या करे?"

पर श्यामा ने कह दिया कि वह अब किसीकी बात नही सुनेगी।

अन्तिम रूप से मानो सारे तर्कों को जबर्दस्ती समाप्त करते हुए श्यामा बोली, "वे तो फासी पर चढ गए और मैं जेल से डरती फिरू यह ठीक नहीं

है। उसी दिन सन्ध्या समय श्यामा आनन्दकुमार के साथ मिस्टर टेगर्ट के बंगले पर पहुची। सारी बात सुनकर टेगर्ट ने जल्दी से तसद्दुक अहमद को बुलाया, पर तसद्दुक ने कहा, "आपके विरुद्ध कोई वारन्ट नही है।"

असली बात यह थी कि श्यामा के विरुद्ध वारन्ट था। प्रान्तीय सरकार विशेष पुलिस-विभाग के अनुरोध पर श्यामा को नजरबन्द करना स्वीकार कर चुकी थी, पर तीन व्यक्तियो के विशेषकर युसुफ के शहीद हो जाने के बाद देश मे जो विराट आन्दोलन उठ खडा हुआ, उसे देखते हुए, साथ ही यह सोचते हुए कि श्यामा को काफी सजा मिल चुकी है और वह अब सक्रिय रूप से कोई कार्य नही कर पाएगी, प्रान्तीय सरकार ने उसकी नजरबन्दी का वारन्ट रद्द कर दिया था।

आनन्दकुमार ने तसद्दुक से पूछ, "क्या श्यामादेवी के विरुद्ध कभी कोई वारन्ट नही था ? तो हम लोग ख्वाह-म-ख्वाह परेशान होते रहे।"

तसद्दुक ने टेगर्ट के चेहरे की तरफ देखते हुए गुस्ताखी भरे लहजे मे कहा, "हम सिर्फ इतना ही बता सकते है कि इस वक्त वारन्ट नही है, पहले था या आगे होगा या नही, इस बारे मे हम कुछ नही कह सकते।"

मजिस्ट्रेट साहब के बगले से निकलकर आनन्दकुमार ने श्यामा से कहा, "देखो फिर एक बार मैं गलत निकला और तुम सही निकली।"

श्यामा बोली, "आप ही ने मुझे बार-बार बताया है कि किसी बात के औचित्य का निर्णय केवल परिणाम देखकर नही हो सकता।"

जब युवको को यह मालूम हुआ कि श्यामा आई है और वह अब सार्वजनिक जीवन व्यतीत करेगी तो स्थानीय युवक सघ तथा अन्य सस्थाओ के लोग उसके पास आए और जगह-जगह एक शहीद की बीवी और क्रान्तिकारिणी के रूप मे उसके स्वागत की व्यवस्था हुई। पहले श्यामा ने इन समारोहो मे भाग लेने से इन्कार किया, पर आनन्दकुमार ने समझाया, अपने लिए नही पर शहीदो के लक्ष्य को बल पहुचाने के लिए तुमँ इसे स्वीकार करो।

श्यामा बोली, "स्थानीय युवक सघ की यह बडी ज्यादती है कि वह मेरा स्वागत करना चाहता है। उसकी आखों के सामने इतने दिनो से जीवित शहीद कुणाल जी की पत्नी मौजूद हैं, पर उसने इनका कभी स्वागत नही किया। ऐसी हालत मे मैं इसे कैसे स्वीकार कर सकती हू ?"

रुक्मिणी ने समझाया, "तुम्हारा स्वागत वे सहज शहीद की बीवी के रूप मे नही बल्कि बार-बार निर्यातित स्वतन्त्रता सग्राम के सेनानी के रूप मे कर रहे है। मैं तो स्वय एक कुलवधू के सिवा कुछ नही हू और न कुछ होना चाहती हू।"

आनन्दकुमार ने कहा, "श्यामा के लिए अब कुलवधू बनने की गुजाइश नही रह गई है, इसलिए उसे तो कुछ न कुछ करना ही पडेगा। कलकत्ता काग्रेस के बाद विदेशी वस्त्र के बायकाट, मद्यनिषेध, अछूतोद्धार आदि पर जो कमेटिया बनी है, श्यामा उनमे से किसीमे काम कर सकती है।"

श्यामा को ये सुझाव विशेष पसन्द नही आए। इसपर आनन्दकुमार ने कहा, "तुम एक वीरागना बन चुकी हो, अब उसे कायम रखना भी है। तुम्हारा भी दिल लगा रहेगा और काम भी होगा। इसके अलावा मैं यह स्पष्ट देख रहा हू कि आगे चलकर क्रान्तिकारी आन्दोलन और सत्याग्रह आन्दोलन—दोनो एक दूसरे के पूरक बन जाएगे, बल्कि आगे चलकर शायद कोई ऐसा स्वरूप निकले जिसमे गाधी जी का जन आन्दोलन और तोड-फोड़ एक हो जाए।"

श्यामा काग्रेस के तरह-तरह के कार्यों मे विशेषकर उन कार्यों मे जो भविष्य सग्राम के सूचक थे, भाग लेने लगी। आनन्दकुमार तो इन कार्यों मे भाग ले ही रहे थे।

४५

आनन्दकुमार बार-बार यही कहते थे, "अब हमे कौंसिलो को छोड़कर बाहर निकल आना चाहिए। देश मे सभी लोगो का विचार उस तरफ जा रहा था। १९२९ की पन्द्रह जुलाई को दिल्ली मे कार्यसमिति की एक बैठक हुई, जिसमे यह प्रस्ताव पास हुआ कि स्वराज्य आन्दोलन के हक मे अब यही उचित है कि काग्रेसी व्यवस्थापिका सभाओ से इस्तीफा देकर बाहर चले आए। पर यह प्रश्न बहुत महत्वपूर्ण था इसलिए इस विषय पर अन्तिम निर्णय अभी नहीं किया गया।

देश मे दमन चक्र पूरे जोर से चल रहा था क्योकि सरकार यह महसूस कर रही थी कि काग्रेस अब सग्राम करने पर उद्यत है। जहा तक ब्रिटिश सरकार का सम्बन्ध था, गाधी जी ने अवश्य ही चौरीचौरा के कारण पहला आन्दोलन स्थगित कर दिया था, पर सरकार की तरफ से इसके बाद भी बराबर दमन जारी था। हा, इतना कहा जा सकता है कि इस समय दमन का जोर कुछ अधिक बढ गया था।

देश मे सर्वत्र क्रान्तिकारी षड्यन्त्र के छोटे-बडे मुकदमे चल रहे थे। जेलों के अन्दर जाकर भी क्रान्तिकारियो ने अपना संग्राम जारी रखा था और जब-तब अनशन हुआ करते थे। इन अनशनो का उद्देश्य कभी तो छोटी-मोटी स्थानीय शिकायतो को दूर करना होता था और कभी उनका उद्देश्य सब राजनीतिक कैदियो के लिए जेल मे विशेष व्यवहार दिलवाना होता था। इस समय लाहौर मे षड्यन्त्र का जो मुकदमा चल रहा था, उसमे पूर्वोल्लिखित भगतसिंह मुख्य अभियुक्त थे। इसी मुकदमे के श्री यतीन्द्रनाथ दास राजनीतिक कैदियो के लिए विशेष व्यवहार की माग रखकर बासठ दिन के अनशन के बाद शहीद हो गए। इसपर सारे भारत मे भयकर आन्दोलन मचा। गांधी जी ने अपने बयान मे यह कहा कि यतीन्द्रनाथ दास ने तिलतिल करके प्राण दिया, इसलिए यह प्रमाणित है कि वे हिंसावादी नही थे। इस प्रकार हिंसा-अहिंसा का प्रश्न फिर एक बार देश भर मे छिड़ गया और उत्तेजित युवक श्यामा तथा आनन्दकुमार के पास आने लगे। श्यामा ने स्पष्ट ही बता दिया, "जहा तक श्री यतीन्द्रनाथ दास का सम्बन्ध है मैं स्वय अपने ज्ञान से यह कह सकती हू कि वे क्रान्तिकारी दल के सक्रिय सदस्य थे··"

युवक चाहते थे कि आनन्दकुमार भी अब खुलकर क्रान्तिकारियो के साथ हो जाए, पर आनन्दकुमार ने कहा, "क्रान्ति के मार्ग को और अहिंसा के मार्ग को बिल्कुल भिन्न मार्ग समझना कहा तक ठीक है, मैं नही समझ पाया। रही बहादुरी की बात सो दोनो मार्गो मे एक से एक साहसी और बहादुर व्यक्ति हुए हैं। हमारी सस्कृति मे तो कृष्ण, राम, परशुराम सभी धर्मयुद्ध के प्रतिपादक थे। दूसरी तरफ बुद्ध और महावीर किसी और ही बात को लेकर चले···"

लोग आनन्दकुमार से इस प्रकार की बात बहुत दफे सुन चुके थे, वे कुछ और ठोस बात चाहते थे, पर आनन्दकुमार ने उन्हे खुश करने के लिए कोई

बात कहना स्वीकार नही किया। वे उत्तेजित होकर बोले, "भाई मेरे, जब सौ-पचास वर्ष बाद छोटी-छोटी बातें भुला दी जाएगी, और लोग हमारे इतिहास की मोटी-मोटी घटनाओ को देखेंगे तो वे इन सब छोटी बातो पर ध्यान नही देगे। पुराने युग की बात छोडो, इस युग मे भी तिलक ने कुछ और दृष्टिकोण रखा और गाधी ने कुछ और। दोनो ने गीता की अलग-अलग व्याख्याए लिखकर अपने-अपने मत को बल पहुचाना चाहा। यतीन्द्रनाथदास भी हमारे पूजनीय हैं और गाधी भी।"

यद्यपि पढे-लिखे युवक समाज मे इस तरह के तर्कों पर बहुत ध्यान देने की प्रवृत्ति थी, फिर भी जनता का किसी प्रकार बुद्धिभ्रश नही हुआ था। जनता उसी जोश के साथ गाधी जी की जय बोलती जिस तरह यतीन्द्रनाथदास, भगतसिह और अन्य ज्ञात तथा अज्ञात क्रान्तिकारियो की जय बोलती थी।

इसी परिस्थिति मे बहुत दिनो के बाद कुणाल और अमिताभ मिले। कुणाल पहले से अधिक दुबले हो गए थे, पर उनकी आखे ज्यादा चमकदार हो गई थी, मानो भीतर का सारा क्लेद धुल गया हो और रश्मिपुज रह गया हो। आखो से वही रश्मिपुंज बरसता रहता था।

कुणाल ने कहा, "जितना अस्त्र-शस्त्र मिलना चाहिए, उतना नही मिल रहा है"—कहकर सामने रखे हुए भारत के मानचित्र को देखकर बोले, "मुझे तो हिमालय और हिन्दमहासागर पर बडा क्रोध आ रहा है, यदि ये न होते तो हम बाहर से आसानी से अस्त्र-शस्त्र मगा सकते थे।"

अमिताभ मुस्कुराए। क्योकि वे जानते थे कि इस समय कुणाल झुझलाहट मे ऐसी बात कह रहे हैं, नही तो उनसे बढकर हिमालय का प्रशसक कोई नहीं है। जब-जब कुणाल पर कोई दुखदर्द, मानसिक उलझन पड़ी है तब-तब वे उसी प्रकार हिमालय की गोद मे भागते रहे हैं, जैसे शिशु मार खाकर अपनी मा की गोद मे भागता है। यह गोद हमेशा उनके लिए नवीन तेज और ओज प्रदान करने वाली साबित हुई थी और वे लौटकर नए जोश से कर्मक्षेत्र में उतर पडे थे।

अमिताभ ने कहा, "क्रान्तिकारी आन्दोलन तब तक सफल नही हो सकता, जब तक ब्रिटिश साम्राज्य किसी भयकर युद्ध मे फस न जाए और हमे ब्रिटेन के शत्रु से सब तरह की सहायता न मिले।"

कुणाल ने कहा, "हा, १९१४-१८ का मौका निकल गया, उस समय भारत तैयार नही था। हमारा उद्देश्य इस समय यही है कि देश को तैयार किया जाए ताकि कोई मौका आए तो वह हाथ से निकल न जाए और उस समय ऐसा न हो कि हम असहाय की तरह ताकते रह जाए। मै योरुप की परिस्थिति बडे ध्यान से देख रहा हू और मुझे यह आशा होती है कि जल्दी ही ब्रिटेन के विरुद्ध लडाई छिडेगी। पूजीवाद मे कुछ ऐसे तत्व स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रहे है जिनसे यह पता लगता है कि अब उसे आपसी मारकाट का आश्रय लेना पडेगा।'

अमिताभ चुप रहे। सोचकर बोले, "पर हम लोग शायद उसे देखने के लिए मौजूद न रहे।"

कुणाल ने इतना ही कहा, "जो शहीद हो चुके है और इस समय जिनपर मुकदमे चल रहे है उनमे से कई उस जमाने को नही देखेगे, पर इससे क्या ? मुझे आप जाने, क्या कहेगे, पर मै तो यही समझता हू कि शहीद होकर मर जाना अच्छा है, शायद कुछ आसान भी पर जब राष्ट्र की बागडोर हाथ मे आएगी तब पता नही कितने लोग अपना दिमाग ठीक रखकर देश को सही रास्ते पर ले जा सकेगे।"

अमिताभ ने कहा, "अभी हमे आगे की बात सोचने की जरूरत नही है। हमे तो इस बात की खुशी है कि अगली काग्रेस मे स्वतन्त्रता का प्रस्ताव पास होकर ही रहेगा। गाधी जी ने इस प्रस्ताव को बहुत दिनो तक रोक रखा पर अब इसे रोकना उनके वश का नही है।"

कुणाल ने कहा, "स्वतन्त्रता का प्रस्ताव तो आज से डेढ साल पहले मद्रास मे ही पास हुआ था, पर उस प्रस्ताव को कतई कार्यान्वित नही किया गया और इससे कम माग पर समझौते की बात बेधडक जारी रही, इसलिए क्या प्रस्ताव होता है, इससे कुछ ज्यादा आता-जाता नही है, असली बात तो यह है कि क्या होता है।" कहकर कुणाल ने एकाएक लहजा बदलते हुए कहा, "मुझे ऐसा मालूम होता है कि मेरे विरुद्ध पुलिस का जाल घना होता जा रहा है। मेरे विरुद्ध अब एक ऐसा आदमी लगा है जो किसी भी पुलिस अधिकारी से चतुर है।"

अमिताभ जानते थे कि उनका मतलब डाक्टर तेजराम से है। युसुफ की फासी के दिन वह दिखाई पडा था, इसके बाद भी कई बार उसकी आखे दीख गई थी, पर हर बार कुणाल भीड मे होते थे, इसलिए बच निकलते थे।

अमिताभ ने कहा, "मैंने तो आपसे पहले ही कहा था कि उसे खतम कर दे या उसे ऐसी हालत मे पकडवा दे कि पुलिस मजबूर होकर उसे गिरफ्तार करे। उसके विरुद्ध वारन्ट तो है ही और फासी का रस्सा भी लटक ही रहा है, पर आपने मना कर दिया।"

कुणाल ने हसकर कहा, "यो तो उसने युसुफ के साथ जो कुछ किया, उसीके लिए वह प्राणदण्ड का हकदार है, पर मुझे पहली बार एक चतुर विरोधी पाकर मजा आने लगा है और आप उसे छीनने की कार्रवाई करना चाहते हैं, यह मै कैसे मान सकता हू?"

अमिताभ बोले, "उसका यह खेल आपके विरुद्ध नही है, बल्कि सारी पार्टी के विरुद्ध है। आप अपनी जान तो अर्पित कर ही चुके है, अब आपकी जान पार्टी की जान है, जिसकी रक्षा करना पार्टी का कर्तव्य है।"

"यह सब ठीक है, पर अब मै दल के लिए किसी काम का हू भी? इसके अलावा एक बात और है, स्वतन्त्रता ध्येय के रूप मे स्वीकृत हो जाते ही, काग्रेस का रूप कुछ न कुछ बदलेगा और उस हद तक क्रान्तिकारी दल की ज़रूरत भी जाती रहेगी।"

"अभी आपने कहा कि प्रस्ताव पास करने से कुछ नही होता, अमल असली चीज़ है।"

"ठीक है, अमल भी आएगा। आपको याद होगा कि बग-भग के बाद जो लडाई हुई, उसने किस प्रकार क्रान्तिकारी रूप धारण किया, यहा तक कि पहले जो लक्ष्य था बग-भग रद्द कराना, वह तो छूट गया और आन्दोलन का ध्येय स्वतन्त्रता बन गया। ऐसे ही दिन ब दिन काग्रेस का रूप बदल रहा है और गाधी चाहे या न चाहे काग्रेस जब तक जनता की सस्था रहेगी, तब तक वह क्रान्ति की ओर बढती रहेगी। नेता उसकी गति कम कर सकते हैं, पर उसे पूर्ण रूप से कुण्ठित नही कर सकते। देश जब भी स्वतन्त्र होगा, तो वह क्रान्तिकारी ढग से होगा। मैं यह नही कहता कि क्रातिकारी दल ही उसे स्वतत्र करेगा।"

अमिताभ ने कहा, "छोडिए इन बातो को, तब न मैं हूंगा न आप होंगे इसलिए उसकी चिन्ता छोड़िए। आप तेजराम के विषय मे क्या कहते हैं?"

कुणाल ने निश्चयात्मक ढग से कहा, "मैं इस समय किसी प्रकार की हत्या

का पक्षपाती नही हूं। इस समय सारा जुल्म, सारी हत्या सरकार की तरफ से ही होनी चाहिए और खुशी की बात है कि ऐसा ही हो रहा है। यतीन्द्रदास गए, फासिया हुई और होगी। ऐसे समय मे यदि एक कुणाल मारा गया तो कुछ नही आता-जाता। सच तो यह है कि मेरा शहीद होना अब एक आवश्यकता हो गई है। शायद कुछ लोगो के मन मे यह सदेह घर करने लगा है कि मैं नौजवानो को भेजकर फासी पर चढा देता हू और स्वय बचा रहता हू···।"

अमिताभ ने कहा, "पर आप तो हर खतरनाक काम मे स्वय भाग लेते रहे है।" —कहकर उन्होने गिनाना शुरू किया।

पर उन्हे बीच मे रोकते हुए कुणाल ने कहा, "यह सब तो ठीक है, पर देखा जाएगा। आप यह मान क्यो लेते है कि तेजराम मुझपर विजय पा ही लेगा?"

अमिताभ ने उठते हुए कहा, "यहा तेजराम का प्रश्न नही है, तेजराम तो एक चीटी है, पर उसके पीछे सिंह का बल है, मै उसीसे शकित हू।"

कुणाल ने उठते हुए अपनी कमर की पिस्तौल को छूते हुए कहा, "मुझे कोई शका नही है। देश की वर्तमान दशा मे जो सबसे बडी सेवा कर सकता हूं, वह यही है कि सीने पर गोली खाकर स्वतन्त्रता के लिए बलिदान हो जाऊ। इस समय रक्तदान की ही ज़रूरत है, जिससे कि समझौते की सारी लिखत-पढत रक्त से धुल जाए।"

४६

कहने के लिए तेजराम फरार था, पर पुलिसवाले अच्छी तरह जानते थे कि वह कहां है। सच तो यह है कि पुलिसवालो ने ही उसे मिस्टर बनर्जी की दूसरी पत्नी के घर पर ठहराया था और तेजराम अपना परिचय मिसेज बनर्जी के भाई के रूप मे दिया करता था। यद्यपि वह मिसेज बनर्जी के घर पर रहता था (यह घर वही था, जिसे सरकार ने इनाम या क्षतिपूर्ति के रूप मे मिसेज बनर्जी को दिया था) फिर भी वह अलग कमरे मे इस प्रकार से रहता था कि

कई दिनो तक बनर्जी-परिवार से मिलने की नौबत नही आती थी।

तेजराम अपने कमरे मे अधलेटा पडा था। सिरहाने एक चिकित्साशास्त्र विषयक पत्र रखा हुआ था। एकाएक उसने देखा एक व्यक्ति उसके सामने आकर खड़ा हो गया। तेजराम ने शंकित होकर कहा, "तुम कौन हो?"

उस व्यक्ति ने कहा, "तुम मुझे नही पहचानते?"

"नही...।"

उस व्यक्ति ने व्यग्य के साथ कहा, "ध्यान से देखो।"

तेजराम ने खडे होने का रुख करते हुए कहा, "नही।"

उसने फिर कहा, "लेटे रहो, ध्यान से देखो।"

तेजराम ने अबकी बार कहा, "आप कौन है?"

उस व्यक्ति ने चेहरा बनाकर कहा, "तुम मुझे इतनी जल्दी भूल जाओगे, यह उम्मीद नही थी। याद है हम लोग फासीघर मे किस तरह फारसी मे बात किया करते थे? हा "हा" 'हा"'।"

तेजराम के रोगटे खडे हो गए, बोला, "आप युसुफ हैं, नही-नही, आप मजाक कर रहे है'"।"

उसने पिस्तौल निकालते हुए कहा, "नहीं मैं मजाक नही कर रहा हू। मुझे तो तुमसे सचमुच प्रेम है। मैं अकेलेपन का अनुभव करता हूं इसलिए तुम्हे लेने के लिए आया हू। मेरे साथ चलने के लिए तैयार हो जाओ। कितनी गोलियां मारूं?"

तेजराम की घिग्घी बध गई, बोला, "नही, नही, आप मजाक कर रहे हैं। आप कोई क्रान्तिकारी हैं।"

उस व्यक्ति ने कहा, "बेशक मैं क्रान्तिकारी हू। युसुफ से बढकर क्रान्तिकारी कौन हो सकता है? वह कुणाल भी, जिसे पकडवाने के लिए तुम्हें माफी का वचन दिया गया है, मुझसे श्रेष्ठ नही है, यद्यपि वह मेरा गुरु है।"

तेजराम उठने की चेष्टा करने लगा, पर उस व्यक्ति ने पिस्तौल की नली से उसे इशारा कर दिया कि वह जहा जैसा पडा है वैसे ही पडा रहे। तेजराम बोला, "मैं आपको विश्वास दिलाता हूं। आप सम्पूर्ण रूप से भ्रम मे हैं। मैं कुणाल जी को गिरफ्तार कराना नही चाहता। यह बात सही है कि पुलिस वाले मुझपर दबाव डाल रहे हैं और इसी शर्त पर मुझे छोड़े हुए हैं, मैं भी हामी

भरता जा रहा हू क्योकि न भरू तो मै उनके हाथो से बच नही सकता। आप विश्वास रखिए, मैने युसुफ के मामले मे जो गलती की, उसकी पुनरावृत्ति करना नही चाहता।"

वह व्यक्ति हसा, क्योकि वह समझ गया कि बहुत ही चतुर आदमी से पाला पड़ा है, इतना चतुर कि रगे हाथो पकडा जाकर भी यह कह सकता है कि मैं कुछ नही जानता और पकडनेवाले को इसका विश्वास भी दिला सकता है।

उसने पिस्तौल नीची करली और वहा बिखरे हुए कागजात देखने लगा। तेजराम ने कहा, "वह सब क्या देख रहे है, मैं काम की बात बताऊ, आप अगर जानसन को मारना चाहते है तो मै उसका प्रबन्ध कर सकता हू।"

वह व्यक्ति समझ गया कि यह ध्यान बटाने की चेष्टा कर रहा है। वह उन कागजो को और भी ध्यान से देखने लगा और थोडी ही देर मे एक लिफाफे के अदर कुणाल के पहले के फोटो और तेजराम का बनाया हुआ उनका पेसिल-स्केच निकल आया। यह पेसिल-स्केच लिथो किया हुआ था और उसकी छः प्रतिया थी।

उस व्यक्ति ने इन चित्रो को दिखाते हुए कहा, "तुम मुझे ठगना चाहते थे ? मैंने बताया कि मै युसुफ की रूह हू, तुम यह नही जानते कि रूहो को कोई ठग नही सकता। बताओ, देखे तुम कितने चालाक हो, इन चित्रो को तुमने क्यो रखा है ?"

साथ ही उसकी पिस्तौल फिर तन गई, बोला, "जवाब क्यो नही देते ?"

इसके उत्तर मे तेजराम कुछ नही बोल सका। वह घबड़ा गया, बोला, "मैं दोषी हू। मुझे मजबूर किया गया। आप मुझे क्षमा कर दे।"

उस व्यक्ति ने व्यग्य के साथ कहा, "तुमने उच्चतम शिक्षा पाई है। दो-चार बार लदन हो आए हो। शायद एक बार ससार की यात्रा भी कर चुके हो, तुम्हे कोई कमी नही थी, पर एक मुश्त मे बहुत बडी रकम पाने के लोभ मे तुमने अपने पवित्र पेशे को कलुषित किया। इसके बाद सौभाग्य से कुणाल जी से तुम्हारी भेट हो गई। कुणाल जी ने यह कहा कि युसुफ के भागने के कार्य मे मदद देने से तुम न केवल फदे से बच सकोगे बलिक तुम देश के बाहर जाकर अपने जीवन को फिर से शुरू कर सकोगे, पर तुमने युसुफ को धोखा दिया, अब तुम कुणाल के पीछे फिर रहे हो। कायर, नामर्द···हत्यारे !" कहकर

उसने पिस्तौल के घोडे पर हाथ रख दिया ।

उधर से चीख निकली पर गोली नही निकली । व्यक्ति ने घूमकर देखा कि कुणाल ने पीछे से पिस्तौल पकड ली है और खड़े-खडे मुस्करा रहे हैं ।

कुणाल ने कहा, "इस छछू दर को मारकर हाथ गदा क्यो कर रहे है ? यह तो मरा हुआ है । मैं तो प्रत्यक्ष देख रहा हू कि यह मर चुका है ।"

अमिताभ अभी ठडे नही हुए थे, बोले, "आपने नाहक इसकी जान बचाई । यह कुत्ता है । इसे कुत्ते की मौत मरना चाहिए···"

कुणाल ने अमिताभ की पिस्तौल लौटाते हुए कहा, "यदि आपके हाथ से मारा गया तो कुत्ते की मौत कहा होगी ? तब तो बडी अच्छी मौत होगी । सभव है इतिहास मे इसका नाम चला जाए··"

अमिताभ ने कहा, "आप नही जानते यह कितना बडा पापी है । इसने आपका पेसिल-स्केच बनाया है क्योकि पुलिस के पास आपका ताजा फोटो नही है । वह स्केच हूबहू मिलता है, फोटो से भी अच्छा है ।"

"तभी तो उसकी और भी रक्षा होनी चाहिए । यह कलाकार है, कोई न कोई इसकी कला की समुचित कद्र करेगा । हमे इस झगड़े मे पडने की जरूरत नही ।"

कहकर कुणाल ने वहा बिखरे हुए अपने फोटो तथा स्केच ले लिए और कहा, "श्यामा को पहुचा दीजिएगा । वहा इनकी ज़रूरत पडेगी ।"

इसके बाद अमिताभ और कुणाल दोनों उस कमरे से निकल गए । जाते समय उन्होने बाहर से सिटकिनी चढा दी । जब दोनो मिलकर एक घोडा गाड़ी पर बैठ गए, तो कुणाल ने कहा, "अफसोस है कि पढा-लिखा वर्ग पूरे तरीके से राष्ट्रीय आन्दोलन के साथ वफा नही कर रहा है । यह डबल अफसोस का कारण है क्योकि जो अच्छे लोग है वे तो अधिकतर सग्राम मे मर-खप जाएंगे और ये तथा इनकी औलाद स्वराज्य का भोग करेगी···"

इसके बाद मुश्किल से दो महीने गुजरे थे । लाहौर काग्रेम की तैयारिया बडे जोरो से हो रही थी । पडित मोतीलाल के सुपुत्र जवाहरलाल इस अधिवेशन के अध्यक्ष मनोनीत हुए थे । इस कदम के द्वारा गाधी जी ने सारे वामपक्षियो को काग्रेस के साथ रहने के लिए मजबूर किया, साथ ही पडित मोतीलाल को भी पूरे तरीके से अनुगृहीत किया । पडित मोतीलाल की यह बडी इच्छा थी कि वे काग्रेस का अध्यक्ष पद अपने पुत्र को ही सौपे । सुभाष बाबू कुछ अलग पड गए, शायद हमेशा के लिए अलग पड गए । सामने सग्राम का मोहक नारा था। लाहौर काग्रेस की तरफ लोग बडी आशाए लेकर देख रहे थे । क्योकि इससे एक नवयुग के सूत्रपात की रुपहली किरणे दृष्टिगोचर हो रही थी ।

३१ अक्टूबर, १६२६ को उस समय के वायसराय लार्ड इरविन ने एक वक्तव्य दिया जिसमे उन्होने इतना ही कहा कि १६१७ के अगस्त मे भारत के सम्बन्ध मे ब्रिटिश नीति की जो घोषणा की गई थी उसमे डोमीनियन स्टेट्स की प्राप्ति अन्तर्निहित है । इसी पर चौबीस घटे के अन्दर देश के बडे-बडे नेता, काग्रेस की कार्य समिति और कुछ अन्य बडे नेता जैसे मदनमोहन मालवीय, तेजबहादुर सप्रू और डाक्टर एनी बेसेंट मिले । इस सम्मेलन की तरफ से यह घोषणा की गई कि केवल घोषणा से कुछ काम नही चलेगा, सरकार की ओर से कुछ ऐसे कार्य भी होने चाहिए जिनसे वातावरण शान्त हो । उदाहरण-स्वरूप राजनीतिक कैदी छोड दिए जाए और जब तक डोमीनियन स्टेट्स स्थापित नही किया जाता, तब तक सरकार की तरफ से स्पष्ट उदारता की भावना दृष्टिगोचर होनी चाहिए । व्यवस्थापिका सभा और कार्यपालिका मे लक्ष्य के अनुसार सम्पर्क स्थापित होना चाहिए और वैधानिक तरीको पर अधिकतर ध्यान देना चाहिए । दूसरे शब्दो मे इस घोषणापत्र मे यह माग की गई कि ऐसी बातें की जाए जिनसे मालूम हो कि लार्ड इरविन की घोषणा केवल एक और वादा नही है ।

इन बातो का कोई नतीजा नही हुआ, यद्यपि गाधी जी ने बार-बार यह कहा कि वे तो सहयोग करने के लिए मर रहे है। आशा की अन्तिम किरण फिर भी कही परोक्ष मे लडखडाती रही । यह तय हुआ कि १६२६ के २३ दिसम्बर

को गांधी जी आदि नेताओं तथा वायसराय लार्ड इरविन की एक मुलाकात हो और उसमे सारी बाते तय हो। पर इधर क्रान्तिकारी भी चुप नही थे, वे जानते थे कि ब्रिटिश सरकार कुछ करना नही चाहती और केवल गोलमोल बाते करके नेताओ को भरमा रही है और नेता अपनी बारी मे जनता को भरमा रहे हैं। इसलिए क्रातिकारियो ने सम्मेलन के दिन वायसराय की ट्रेन को उडा देने का निश्चय किया। इसके लिए नई दिल्ली से एक मील के अन्दर पुराने किले के पास रेल लाइन के नीचे बम लगा दिया गया और उस बम का सम्बंध फ्यूज के साथ किया गया ताकि जो व्यक्ति उस बम को चालू करे वह दूर से ही यह काम कर सके।

यथासमय बम विस्फोट हुआ, पर वायसराय बाल-बाल बच गए। उनके खाने का कमरा क्षतिग्रस्त हुआ और परिचारको मे से एक को चोट भी आई। लगभग दो-तीन सेकेण्ड की गलती के कारण लार्ड इरविन का प्राण बच गया।

फिर भी वह सम्मेलन हुआ। ४५ मिनट तक तो नेतागण बमकाण्ड पर बातचीत करते रहे, इसके बाद असली बातचीत शुरू हुई। लार्ड इरविन राजनीतिक कैदियो के मामले से शुरू करना चाहते थे क्योकि इसमे बिना कुछ किए कराए शुभेच्छा दिखलाने का मौका था। बात यह है कि राजनीतिक कैदियो मे क्रान्तिकारी कैदियो को गिनने की प्रथा बन्द हो गई थी। इसका सूत्रपात गाधी जी ने किया था और स्वाभाविक रूप से ब्रिटिश सरकार ने इस परम्परा को बहुत तपाक से अपना लिया था। अब राजनीतिक कैदियों की रिहाई से साधारणत: केवल व्याख्यान आदि देकर या पिकेटिंग करके गिरफ्तार लोगो की मुक्ति समझी जाती थी।

इसलिए जब लार्ड इरविन ने राजनीतिक कैदियों के मामले से बातचीत शुरू करनी चाही, तो गाधी जी ने उसे कोई विशेष महत्व नही देना चाहा क्योकि यह तो मानी हुई बात थी कि वे छोड ही दिए जाएगे। गाधी जी ने डोमीनियन स्टेट्स से बातचीत शुरू करनी चाही, पर वायसराय ने स्पष्ट कह दिया कि सरकारी विज्ञप्ति मे इससे पहले जो कुछ कहा गया था, उससे आगे वे कुछ कहने की स्थिति मे नही है। इस तरह यह सम्मेलन उसी प्रकार से धुएं मे पर्यवसित हो गया जैसे वायसराय की ट्रेन पर क्रान्तिकारियों का हमला हुआ था। सारे देश मे धुआ ही धुआ फैल गया। पर यह धुआ केवल धुआं ही

नही था, इसके पर्दे मे धधकती हुई आग भी थी, जो १६२१ की तरह फिर एक बार क्रान्ति की ज्वाला मे भडक सकती थी।

इसी वातावरण मे लाहौर काग्रेस हुई। नौजवानो के दो महान् सार्वजनिक नेताओ यानी सुभाष और जवाहरलाल मे जवाहरलाल काग्रेस के सभापति बने। जवाहरलाल ने अपने अभिभाषण मे यह स्पष्ट कह दिया कि वे एक समाजवादी और प्रजातन्त्रवादी है और राजाओ तथा राजकुमारो मे उनका विश्वास नही है। उनके अभिभाषण मे बहुत-से तत्व ऐसे थे जिनकी क्रान्तिकारी व्याख्या हो सकती थी, साथ ही बहुत-से तत्व ऐसे थे, जिनसे कट्टर अहिंसावादी भी खुश हो सकते थे। उन्होने यह कहा कि कई बार हिंसा के बाद यानी हिसा की असफलता के बाद लोगो के उत्साह मे बट्टा लग जाता है। उन्होने कहा, "सगठित हिंसा के लिए हमारे पास न तो सामग्री है और न प्रशिक्षण और वैयक्तिक तथा जब-तब होने वाली हिंसा तो निराशा की ही स्वीकृति है। मेरा ऐसा ख्याल है कि हममे से अधिकाश लोग किसी भी विषय पर नैतिक नही, बल्कि व्यावहारिक दृष्टि से विचार करते है और यदि हम हिंसा के मार्ग का वर्जन करते है तो यह इसलिए है कि इससे किसी सारवान परिणाम की आशा नही दिखाई देती। आजादी का कोई भी आन्दोलन आवश्यक रूप से जन आदोलन होगा और जन-आदोलन का शातिमय होना जरूरी है। हा, जब संगठित विद्रोह हो तब और बात है।" इसके साथ ही उन्होने यह भी कहा, "अक्सर सफलता उन्हे मिलती है, जो साहसपूर्वक कार्य करते है। यह शायद ही कभी कायरो को मिलती हो, जो हमेशा परिणामो से घबडाते है और यदि हम बडे परिणाम प्राप्त करना चाहते हैं तो यह केवल बहुत भारी खतरो के जरिए से ही प्राप्त हो सकता है।"

जवाहरलाल ने अपने अभिभाषण मे यह भी स्पष्ट कर दिया कि डोमीनियन स्टेट्स से भारत की वास्तविक माग पूरी नही हो सकती, उन्होने कहा कि विदेशी सेना फौरन हटा ली जाए और आर्थिक नियत्रण भारतीयो के हाथ मे दे दिया जाए।

यह सब होते हुए भी काग्रेस मे लार्ड और लेडी इरविन को बमकाण्ड से बाल-बाल बच जाने के लिए बधाई देते हुए एक प्रस्ताव पास हुआ। सबसे मुख्य प्रस्ताव स्वतत्रता सम्बन्धी प्रस्ताव रहा, जिसमे यह स्पष्ट कह दिया गया कि स्वराज्य का अर्थ पूर्ण स्वतत्रता है, इसके साथ ही अखिल भारतीय काग्रेस

कमेटी को यह अधिकार दिया गया कि वह जब भी जरूरी समझे सविनय अवज्ञा आन्दोलन फिर आरभ करे और उसके साथ-साथ करबदी करे।

आनन्दकुमार श्यामा और रुक्मिणी के साथ इस अधिवेशन मे मौजूद थे। आनन्दकुमार ने तो स्वतत्रता वाले प्रस्ताव पर भाषण भी दिया। रुक्मिणी इन दिनो कुछ अस्वस्थ रहने लगी थी, वह लाहौर आना नही चाहती थी, पर अतिम मुहूर्त मे यह सोचकर चल पडी कि कुणाल भी इस काग्रेस मे जरूर आएगे, कुछ नही तो इसलिए कि जनता की नाडी की थाह ले।

काग्रेस मे जो कुछ हुआ था, आनन्दकुमार इसपर मोटे तौर पर खुश ही थे। वे इस बात को एक बडी विजय मान रहे थे कि अन्ततोगत्वा स्वराज्य शब्द का कोई अर्थ तो किया गया। १९२० से कितने ही लोग गाधी जी से बराबर इस बात के लिए अनुरोध करते आ रहे थे कि वे स्वराज्य शब्द की परिभाषा करे, पर उन्होने इसकी स्पष्ट व्याख्या करने से इन्कार किया था। आनन्दकुमार गाधी जी के इस रुख को बिल्कुल सही मानते थे, क्योकि उनका कहना यह था कि एक कार्य को न मालूम लोग कितनी तरह के उद्देश्यो से प्रेरित होकर करते है। इसलिए यदि उद्देश्य की कोई कडी परिभाषा कर दी गई, तो दूसरे लोग जो अन्य कारणो से इसमे भाग लेते हैं उससे अलग हो जाएगे।

लाहौर से लौटते हुए ट्रेन पर आनन्दकुमार ने पूर्ण स्वतत्रता वाले प्रस्ताव की व्याख्या करते हुए कहा, "अब हम जाति के रूप मे इतने बालिग हो चुके हैं कि पूर्ण स्वतत्रता का ध्येय सामने आना ठीक है। बिल्कुल सही समय पर यह प्रस्ताव पास हुआ है। अबकी बार संग्राम भी पहले से भयंकर होगा, संभव है यह अतिम सग्राम हो।"

रुक्मिणी का मन वायसराय बमकाण्ड के निंदा वाले प्रस्ताव से बहुत दुखी था। वह पूर्ण स्वतत्रता के प्रस्ताव को महज एक बनियाई चाल समझ रही थी। जिसके अनुसार ग्राहक से दाम बहुत बढाकर कहा जाता है जिससे कि सौदा पटाते समय कितना भी कम करने पर वह काफी रहे। बोली, "मद्रास मे भी पूर्ण स्वतत्रता वाला प्रस्ताव पास हुआ था, पर इस बीच मे क्या हुआ? केवल समझौते की बातचीत होती रही। गाधी जी ने जो भी पग उठाया उसका उद्देश्य यही था कि किसी तरह समझौता हो जाए।"

आनन्दकुमार ने हमेशा की तरह कहा, "सत्याग्रह मे तो समझौता निहित

है, क्योंकि सत्याग्रही यह चाहता है कि शत्रु का बल्कि विरोधी का हृदय परिवर्तन हो और वह सही रास्ते पर आ जाए।"

"पर इसके लिए लार्ड और लेडी इरविन की खुशामद करते हुए प्रस्ताव पास करने की आवश्यकता क्या थी ?"

आनन्दकुमार ने कहा, "यह महात्माओ का तरीका है कि वे किसी व्यक्ति से विद्वेष नही रखते। काग्रेस के अदर क्रान्तिकारी मामलो मे फासी पाए हुए लोगो के साथ सहानुभूति जताते हुए भी तो इससे पहले प्रस्ताव पास हो चुके है। गाधी जी यह चाहते है कि कोई पक्ष किसीके साथ हिंसा न करे। मै इस प्रस्ताव को काग्रेस की नीति का उतना द्योतक नही मानता, जितना कि गाधी जी के प्रति काग्रेसियो की भक्ति का इसे प्रतीक मानता हू। मेरे नजदीक युसुफ, प्रकाश या केशव के प्राणो का मूल्य लार्ड इरविन के प्राण से कही बढकर है।"

रुक्मिणी ने इसपर अधिक नही कहा, वह फिर दुखी होकर एक किनारे बैठ गई और जगले से लाइन के बगल मे आते हुए गावो, जगलो और टीलो को देखती रही। श्यामा ने उसे प्रफुल्लित करने की कोशिश की, पर वह सफल नही हुई। अन्त मे वह बोली, "दीदी, तुम आजकल जाने किस सोच मे पड़ी रहती हो, तुम यही सोचा करती हो कि जाने कुणाल जी को अब क्या हो जाए। पर तुम मुझसे तो अच्छी हो कि तुम विधवा नही हो।"

रुक्मिणी ने इसे पहले तो हसकर टाल दिया, फिर बोली, "मै जानती हूं कि तुम यही सोचा करती हो, पर तुमने अग्रेज कवि की वह पक्तिया नही सुनी—

'Tis better to have loved and lost
Than never to have loved at all.'

—प्रेम करके खो देना कही अच्छा है, इसकी बनिस्बत कि प्रेम कभी हुआ ही न हो।"

श्यामा फिर भी रुक्मिणी को बहलाने की कोशिश मे रही, पर कुछ नतीजा नही निकला, यहा तक कि जब वे लोग काशी लौट आए और रुक्मिणी ने कबीर को गोद मे लिया, तब भी उसका विषाद कम नही हुआ। आनन्दकुमार चुपचाप यह सब देखते जा रहे थे। अन्त तक उन्हे यह शक हुआ कि शायद रुक्मिणी किसी तरह से बीमार है और वह बीमारी छुपा रही है। इसलिए वह एक दिन

उसे लेकर एक प्रसिद्ध लेडी डाक्टर के यहा पहुचे। परीक्षण के बाद मालूम हुआ कि उसे कोई रोग नही है, फिर भी लेडी डाक्टर ने यह कहा, "ये शायद फिक्र ज्यादा करती है, इन्हे फिक्र से दूर रहना चाहिए और दूसरी बात यह है कि खुराक कुछ बेहतर होनी चाहिए।"

पर पूछताछ करने पर पता चला कि खुराक अच्छी है और वे सब उपादान खुराक के जरिए उसे मिलते है, जो उसके लिए जरूरी हैं। आनन्दकुमार स्वय खाद्य के सम्बन्ध मे बहुत परवाह रखते थे, इसलिए उनके घर पर इसकी विशेष देखरेख रखी जाती थी कि सही खुराक मेज पर आए।

लौटकर रुक्मिणी ने आनन्दकुमार से कहा, "आपने व्यर्थ मे यह कष्ट किया, मै जानती हू कि मुझे कोई रोग नही है, पर यह भी जानती हू कि मेरा कोई इलाज नही है। कम से कम डाक्टर मेरा कुछ नही कर सकते।"

आनन्दकुमार ने कहा, "बहन, यह दुःख की बात है कि तुम अपनी दुनिया से निकल नही पाती। क्या तुम्हे वह गडगडाहट नही सुनाई पड रही है जो आने वाले भूचाल की सूचना दे रही है ? कितने ही घर बिगड जाएंगे तब जाकर देश का कुछ होगा। हजारो श्यामा और कबीर होगे जो अपने पति और पिता खोएगे। फिर कुणाल शहीद होगे ही ऐसी कोई बात नही है। अब तक वे जिस प्रकार सारी विपत्तियो को झेलते आए हैं बल्कि उनसे बचते आए है, आगे भी वे ऐसा न कर सकेंगे, ऐसा क्यो सोचती हो ? सम्भव है कुछ क्रान्तिकारी लेनिन की तरह क्रान्ति के बाद भी जिन्दा रहे। सब क्रान्तिकारी शहीद ही होगे यह धारणा पराजयवादी मनोवृत्ति की सूचक है।"

रुक्मिणी ने कहा, "आप क्या समझते है, मैं इन बातो को नही जानती ? पर मेरा मन मानता ही नही। मुझे ऐसा मालूम होता है जैसे दीये का तेल खत्म हो चुका है और अब वह टिमटिमाकर बुझने ही वाला है।"

"नही, यदि ऐसा हुआ भी तो उसकी ज्योति क्रान्तियज्ञ की विशाल शिखा मे विलीन होने वाली है। इसमे चिन्ता की क्या बात है ? मैं तो कहूगा कि तुम भी उसमे शरीक हो जाओ।"

"जरूर !" रुक्मिणी ने इतना ही कहा और वह उठकर वहां से चली गई। धीरे-धीरे रुक्मिणी की हालत ऐसी होने लगी कि श्यामा तक को यह सन्देह होने लगा कि रुक्मिणी के दिमाग के पुर्जे कुछ ढीले पड गए है। उसने रुक्मिणी

को सावधान किया, चेतावनी दी, डांटा, जितना डाट सकती थी, पर कोई विशेष असर नही हुआ।

इसके कुछ ही दिनो बाद एक रोज़ देखा गया कि रुक्मिणी बहुत रात गए तक नही लौटी। सब लोग चिन्तित हो गए, पर परामर्श करने के बाद पुलिस को खबर न करना ही उचित समझा गया। श्यामा बोली, "यदि पुलिस को खबर दी गई तो पुलिस उन्हे खोजने लगेगी। यह तो साफ है कि रुक्मिणी दीदी कुणाल जी की खोज मे गई है और वे उन्हे खोजकर ही दम लेगी, इसलिए पुलिस को खबर देना बहुत खतरनाक है।"

कई दिन बाद यह खबर मिली कि रुक्मिणी तो शहर के अन्दर ही कही देखी गई है, पर इसके अलावा कुछ पता नही चला। श्यामा ने कहा, "सम्भव है देखने वाले ने ही गलती की हो। मेरा तो ख्याल है कि कुणाल जी का पीछा करना उचित न समझकर उन्होने मानसिक तनाव से छुटकारा पाने के लिए आत्महत्या कर ली।"

पर आनन्दकुमार और रूपवती दोनो ने कहा, "नही, ऐसा नही हो सकता। वह जरूर जीवित है, रहा यह कि उस आदमी ने गलत देखा या सही देखा, यह दूसरी बात है।"

४८

लाहौर से लौटने के बाद एक दिन अमिताभ ने अखबार मे यह सनसनीपूर्ण खबर पढी कि तेजराम को जेल के एक वार्डर ने जान से मार डाला। घटना का सक्षिप्त वर्णन इस प्रकार था—डाक्टर तेजराम ने अपने एक रोगी को गलत इंजेक्शन देकर जान-बूझकर हत्या करने के अपराध मे सजा पाई थी। वह उसी अपराध मे सजा पाकर फासीघर मे बन्द था कि वहां से भाग निकला। उसी जेल के एक वार्डर ने एकाएक उसे एक होटल मे देखा, वार्डर ने उसे पकड़ने की चेष्टा की, इसी मे हाथापाई हो गई और वार्डर ने उसे मार डाला।

यह तो हुई अखबारी रिपोर्ट। असली बात जैसे घटित हुई थी, वह यो है—

तेजराम को भगाने के सन्देह मे मगतराम काफी दिनो तक मुअत्तल रहा। उसके साथ के सभी वार्डर मुअत्तल रहे। जब किसीके खिलाफ कोई सबूत नही मिला तो वे दो-दो दर्जे उतार दिए गए और उनका चालान दूसरी जेलो मे हो गया। मगत वहा से बदलकर मलाका जेल मे आया। एक दिन वह शहर मे घूम रहा था कि उसने रामविनोद को देखा। इस बीच मे रामविनोद अपील से बरी होकर घर चला गया था। मगत को यह बात मालूम थी।

कुशल-प्रश्न के बाद मगत ने रामविनोद से पूछा, "कही आपने तेजराम को तो नही देखा ?"

रामविनोद बोला, "आज ही मैने उसे देखा था। वह नुक्कड वाले होटल मे आकर ठहरा हुआ है, कहता है कि पुलिस वालो ने उसे माफ कर दिया है।"

मंगत के माथे पर बल पड गए और वह वहा से बताए हुए होटल मे पहुंचा पर वहा तेजराम नाम के किसी व्यक्ति का पता नही लगा। वह निराश होकर वापस जा रहा था कि उसे एक बात सूझी। उसने जाकर मैनेजर से पूछा, "आपके यहा कोई डाक्टर साहब ठहरे हुए है ?"

उसने "हा", कहकर कमरा बता दिया। मगत उस कमरे मे पहुचा तो तेजराम मिल गया। उसने जेल के ढग पर कहा, "जैराम जी की डाक्टर साहब।"

तेजराम उसे देखकर चौक पडा, पर चतुर तो था ही उसने मगत को कुर्सी पर बैठाकर चाय-वाय के लिए पूछा।

मगत ने इन बातो मे पडने से इन्कार करके सीधे-सीधे पूछा, "आपने मेरे रुपए क्यो नही दिए ?"

तेजराम जानता था कि किन रुपयो की बातचीत है, फिर भी समय लेने के लिए बोला, "कौन-से रुपए ?"

तब मंगत ने साफ-साफ सारी बात बताई, "जब आप भाग गए तो दस-पाच दिन तो मै नजर कैद रहा। उसके बाद जब जांच कुछ ढीली पडी तब मैं आपके आदमी के पास बाकी रुपयो के लिए गया, तो उसने मुझे पहचाना ही नही और जब मैने पुरानी बाते बताई तो बोला, अभी यहा से निकल जाओ, नही तो तुम्हे गिरफ्तार करा दूंगा कि तुमने एक मुजरिम को भगाया है।

"मुझे बिल्कुल काठ मार गया और मैं वहा से सिर पर पैर रखकर भाग आया। तब से मैं आपकी तलाश मे घूम रहा हू। मैं चाहू तो अभी आपको

गिरफ्तार करा सकता हू, यह समझकर जवाब दीजिए।"

तेजराम ने देखा कि वह एकदम रगे हाथो पकड़ा गया है, बोला, "भई तुम्हारे रुपए कौन मार सकता है, अगर उसने नही दिए तो मैं दू गा।"

पर मगत वादो से टलने वाला न था। उसने उसी समय रुपए लेने चाहे। तेजराम बोला, "मेरे पास इतने रुपए कहा धरे है ? मैं देश के बाहर भागना चाहता था, पर निकल नही पाया। फिर भी तुम फिक्र मत करो, मैं तुम्हारे रुपए देकर रहूगा। हा एक बात बता दू ं कि जो कुछ लेना हो शराफत से लो धमकी मत दो। अब मुझे कोई गिरफ्तार नही कर सकता। मैंने पुलिस वालो से बातचीत कर ली है।"

पर मंगत नही माना और बात का बतगड बन गया। मगत बोला, "डाक्टर, मैं तुम्हारी बहुत इज्जत करता हूं, पर तुम मुझे अब झांसा नही दे सकते। अभी कल तक मैंने देखा कि तुम्हारे नाम गजट मे इनाम है। अगर तुम माफ कर दिए गए हो तो चलो, मेरे साथ थाने चलो।"

पर तेजराम राजी नही हुआ। जब उसने देखा कि यह किसी तरह नही मानेगा तो वह मगत को उस समय जो कुछ मौजूद था यानी दो सौ रुपए देने को तैयार हो गया। पर मगत ने गुस्से मे रुपए लेने से इन्कार किया। वह तेजराम को पकडकर घसीटने लगा। होटल के बेयरे आदि दौड़ पड़े तो मगत ने चिल्ला-चिल्लाकर कहा, "यह फासीघर से भागा हुआ कातिल है।"

कातिल शब्द सुनते ही जाने क्या हुआ, तेजराम ने मगत के गाल पर कसकर एक चाटा लगाया। पर मगत चिल्ला-चिल्लाकर कहता रहा, "यह भागा हुआ कातिल है। यह फासीघर से भागा था।"

अब तेजराम सचमुच भागने लगा। इसपर मगत ने उसे पकड़ने की चेष्टा की। जब वह फिर भी भागने लगा तो मगत ने एक भारी गुलदान तेजराम के सिर पर दे मारा, फिर उसके हाथ मे जो भी चीज आई उसीसे उसे मारने लगा। तेजराम घायल होकर गिर पडा और अस्पताल जाते-जाते मर गया। वह शायद चोट से उतना नही मारा, जितना कि हूक से मरा।

होटल वाले मगत को पकडकर थाने ले गए तो मगत ने बिल्कुल कानूनी ढंग का बयान दिया। बोला, "यह आदमी मेरी ड्यूटी मे फासीघर से भागा था। इसके कारण मुझे बहुत जलील होना पड़ा और मेरा दर्जा तोड दिया गया।

अब मैने इसे देखा तो कहा, पुलिस मे चलो, तो मुझ से हाथापाई करने लगा। मैने भी पागल होकर उसे मारना शुरू किया। अगर वह न भागता तो मैं उसे हर्गिज नही मारता।"

पता लगाने पर मगत की सारी बाते सही पाई गईं, और वह छः घन्टे के अन्दर छोड दिया गया। बाद को चलकर मगत का छीना हुआ दर्जा फिर दे दिया गया और उसे अन्य कई तरह के पुरस्कार और तरक्की मिली।

अमिताभ को ये ब्योरे मालूम नही हुए, पर अखबारो मे जो कुछ निकला था उसीसे उन्होने यह उपसहार निकाला कि उस दिन कुणाल ने जो उसे छुड़ा दिया था, वह अच्छा ही रहा। साथ ही उन्हे यह खटका भी लगा कि तेजराम इलाहाबाद के एक होटल मे क्यो टिका था ? उन दिनो कुणाल इलाहाबाद मे ही थे। खैर अब तो वह मर ही गया।

उसी दिन अमिताभ इलाहाबाद के लिए रवाना हो गए और कुणाल से मिले। बोले, "वह तो मर गया, पर अब आपका देश मे रहना खतरे से खाली नही है, इसलिए आप बाहर निकल जाइए।"

पर कुणाल ने कहा, "अब तो वह मारा गया, फिर मेरे भागने की क्या जरूरत ?"

"कोई नई विपत्ति पैदा हो जाएगी।"

"क्या किया जाए, जीवन की सृष्टि हमेशा विपत्तिजनक होती है।"

अमिताभ ने कई तरह से समझाया, पर कुणाल नही माने, बोले, "मेरे तो दोनो हाथो मे लड्डू है। यदि काम करता रहता हू तो काम बनता है और यदि मारा जाता हू तो काम के लिए उपयुक्त वातावरण बनता है, शेषोक्त अवस्था कुछ कम लोभनीय नही है।"

अमिताभ ने जब और जोर डाला तो कुणाल ने कहा, "उदाहरण उपदेश से अच्छा होता है। आप भागकर दृष्टान्त दिखाइए, आपके लिए भी तो फदा तैयार है। आप तो 'ससुराल' से भागे हुए भी हैं।"

नतीजा यह हुआ कि दोनो मे से कोई भी बाहर नही गया और जो जहां था वही पहले की तरह काम करने लगा।

रुक्मिणी की खोज जारी रही। उधर आन्दोलन की तैयारी भी होने लगी।

लाहौर काग्रेस के फलस्वरूप वे ही बाते हुई, जिनकी आशा थी। जवाहर लाल नेहरू के काग्रेस के साथ बल्कि गाधी जी के साथ हो जाने के कारण गरमदल के काग्रेसियो का पल्ला कमजोर पड गया। सुभाषचन्द्र बोस ने श्रीनिवास आयगर के साथ 'काग्रेस डेमोक्रेटिक पार्टी' या 'काग्रेस लोकतान्त्रिक दल' के नाम से एक दल बनाने की चेष्टा की, पर यह प्रारम्भ से ही स्पष्ट था कि यह दल चल नही सकेगा। इसका कारण केवल यह नही था कि जवाहर लाल गाधी जी के साथ हो गए थे, बल्कि इसका कारण यह था कि काग्रेस इस समय सचमुच किसी न किसी रूप मे देशव्यापी सग्राम करने जा रही थी।

जब इस दल के बनने की बात अमिताभ और कुणाल के पास पहुची तो, कुणाल ने विशेष उत्साह नही दिखलाया। बोले, "आज मुझे इस दल की कोई सार्थकता नही मालूम होती। यदि चौरीचौरा के बाद यानी सग्राम समाप्त करने के बाद यह दल बना होता तो इसका कुछ लाभ होता।"

अमिताभ ने कहा, "ठीक है, पर इस प्रकार के दल का एक नतीजा यह तो होगा ही कि वह काग्रेस मे अन्तर्निहित समझौतावादी ढलान के विरुद्ध एक कमजोर ही सही, ब्रेक के रूप मे काम करेगा।"

कुणाल ने कहा, "यह बात तो है ही, पर क्या अबकी बार जो आन्दोलन चलेगा, उसमे देश स्वतन्त्र हो जाएगा? मै तो स्पष्ट देख रहा हू कि ऐसा नही होगा, फिर भी देश कुछ आगे तो बढेगा ही। मुझे जो बात सबसे महत्वपूर्ण मालूम हो रही है, वह यह है कि आगामी आन्दोलन मे हजारो लोग जेल जाएगे, उनमे से क्रान्तिकारी दल को बहुत-से रंगरूट मिलेंगे, पर साथ ही क्रान्तिकारी दल का कुछ रूप भी बदल जाएगा।"

इस तरह कुणाल और अमिताभ देश की स्थिति पर दर तक बाते करते रहे। कुणाल ने कहा, "जब मै उन दिनो के साथ आज की अवस्था की तुलना करता हू तो ऐसा मालूम होता है कि हम बहुत आगे बढ गए हैं, जैसे हम किसी बन्द कमरे के अन्दर से खुली हवा मे आ गए हो। आज लोग स्वतन्त्रतापूर्वक सोचने मे घबड़ाते नही है यानी कम घबडाते है। नेताओ के न चाहने पर भी

परिस्थितिया हमे आगे ले जा रही है। इसमे कोई सन्देह नही कि हम स्वतन्त्रता के नजदीक है।"

अमिताभ ने कहा, "पर पुलिस उसी तरह हम लोगो का पीछा कर रही है। आप कई बार बाल-बाल बचे, मै भी बचा, प्रश्न यह है कि यदि अन्त तक आन्दोलन चला तो हम फरार लोग उस समय क्या करे ?"

"हमे अपना सगठन मजबूत बनाना पडेगा। चाहे कितना भी आन्दोलन हो, इस प्रकार के आन्दोलन से स्वतन्त्रता तभी आ सकती है जब कि ब्रिटिश साम्राज्यवाद किसी भयकर युद्ध मे बुरी तरह फस जाए। इसके अलावा जन आन्दोलन को जेल जाने वाला रूप छोडकर क्रान्तिकारी जन आन्दोलन, समान्तराल सरकार स्थापित करने का जन आन्दोलन बनना पडेगा।"

बात-बात मे रात अधिक हो गई और दोनो अपने गन्तव्य स्थल मे चले गए। जाने के पहले कुणाल ने कहा, "मुझे कुछ ऐसा लग रहा है कि हिमालय मुझे बुला रहा है, इसलिए मैं थोडे दिनो के लिए उधर जाऊगा, पर साथ ही काशी भी मुझे बुला रही है। हिमालय से मुझे शान्ति मिलती है, उसकी गोद ऐसी है जैसे छोटे बच्चे के लिए पिता की गोद। उसमे बैठकर सब भय और कुण्ठा दूर हो जाती है, सुरक्षा की भावना उत्पन्न होती है, फेफडे ताजी हवा से भर जाते है, पर काशी मेरे लिए मा की गोद की तरह है, जिसमे शायद सुरक्षा का उपादान उतना नही है, पर उसमे स्नेह की जो धारा प्रवाहित होती है, उससे आत्मविस्मृति आती है और सारी चिन्ताए जाने किस प्रक्रिया से दूर हो जाती हैं।"

अमिताभ ने कहा, "अच्छी बात है, पर उनका मन शंका से भर गया था क्योंकि काशी मे पुलिस का बहुत जोर था और यद्यपि तेजराम मर गया था, पर कई तेजराम और थे। फिर भी अमिताभ ने कुछ नही कहा। तूफान को धूल-धक्कड़ का भय दिखाकर बाधने की चेष्टा व्यर्थ थी।

१९३० की दूसरी जनवरी को काग्रेस की नई कार्य समिति की बैठक हुई और उसमे यह तय हुआ कि जिन लोगो ने अभी तक कौसिल और केन्द्रीय असेम्बली मे इस्तीफा नही दिया है, वे इस्तीफा दे दें। यह भी तय हुआ कि १९३० की २६ जनवरी पूर्ण स्वराज्य दिवस के रूप मे मनाई जाए और उस अवसर पर सब जगह सभाए हो और उन सभाओ मे एक विशेष प्रस्ताव पास किया जाए। इस प्रस्ताव का एक मसविदा देश के सामने रख दिया गया। इस

प्रस्ताव का साराश यह था कि भारत को स्वतन्त्रता प्राप्त करने के साथ ही अपने परिश्रम के फल प्राप्त करने का अधिकार है। इस प्रस्ताव मे उन आर्थिक, सास्कृतिक, आध्यात्मिक अत्याचारो का भी वर्णन था, जिनके लिए ब्रिटिश-साम्राज्यवाद जिम्मेदार था।

यह सब हो रहा था, पर साथ ही साथ काग्रेस के समझौतावादी हिस्से के मन मे यह आशा बनी हुई थी कि शायद अन्त तक सग्राम न हो और सरकार कुछ करे। महात्मा गाधी ने तो लार्ड इरविन के सामने एक ग्यारह सूत्री प्रस्ताव रखा और यह कहा कि यदि सरकार अभी इसे कार्यान्वित करे तो उसकी ईमानदारी मान ली जाएगी। इन ग्यारह सूत्रो मे मद्य-निषेध, रुपए का मूल्य एक शिलिंग चार पेंस बना दिया जाना, मालगुजारी आधी कर दिया जाना और उसका नियन्त्रण व्यवस्थापिका सभा के अन्तर्गत कर देना इत्यादि बाते थी। इसमे राजनीतिक कैदियो की रिहाई की बात भी थी, पर जो लोग हिंसात्मक कार्यों मे गिरफ्तार थे, उन्हे रिहाई के इस कार्यक्रम के अन्तर्भुक्त करने के लिए जोर नही डाला गया था। थोडे मे इन ग्यारह सूत्रो मे से एक भी ऐसा नही था जो डोमीनियन स्टेट्स मे न आता हो। इसके बावजूद सरकार ने किसी प्रकार का अनुकूल रुख दिखाने से इन्कार किया।

सारी परिस्थितियो पर विचार करने के लिए साबरमती मे १४,१५ और १६ फरवरी को काग्रेस कार्य समिति की बैठक हुई और उसमे गाधी जी को सविनय अवज्ञा या सत्याग्रह शुरू करने का पूर्ण अधिकार दिया गया। सच तो यह है कि देश भर मे इसके पहले ही तरह-तरह के कानून तोडे जा रहे थे और गिरफ्तारिया हो रही थी। आनन्दकुमार भी प्रतिदिन एक न एक सभा मे भाषण देते थे और यह समझा जाता था कि वे किसी भी दिन गिरफ्तार किए जा सकते हैं। श्यामा तो आसपास के जिलो मे भी जाती थी और वह काग्रेस आन्दोलन के सिलसिले मे दौरा करती हुई भी बराबर अपने व्याख्यानो मे क्रान्तिकारियो का गुणगान करती थी। और समय होता तो नरमपथी काग्रेसी नेता इस बात को नापसन्द करते, पर इस समय वे यह समझकर श्यामा की बातो को सहन कर जाते थे कि इससे आन्दोलन को बल मिलेगा।

रुक्मिणी घर से कुछ सोच-समझकर नही निकली थी, पर कोई अदृश्य शक्ति उसे जैसे रास्ता दिखाकर ले जा रही थी। वह स्टेशन पर जाकर पूरब की ओर जाने वाली एक ट्रेन मे बैठ गई। मुगलसराय पहुचकर उसे ऐसी घुटन-सी मालूम होने लगी कि वह उतर पडी। यद्यपि उसे कुछ याद नही था कि कब टिकट लिया और कब गाड़ी पर जा बैठी, पर जब वह फाटक से होकर स्टेशन के बाहर जाने लगी और टिकट बाबू ने टिकट मागा तो उसने टिकट निकालकर दिखा गया। टिकट बाबू ने टिकट हाथ मे लेकर एक बार उसकी तरफ घूरा फिर टिकट लौटाकर अपने काम मे लग गया।

रुक्मिणी जाकर एक पेड के नीचे बैठ गई। अरे यह तो पाकड का पेड था। उसने उसे ध्यान से देखा और उसे अपने घर की याद आने लगी क्योकि वहा भी एक पाकड का पेड़ था। मालूम होता था किसी पूर्वजन्म की बात है। मैट्रिक के बाद उसे स्कूल जाने का मौका नही लगा था, ब्याह हो चुका था, पर उसने घर पर पढना जारी रखा था। पहले तो सोचती रही परीक्षा देगी, इतने मे जाने क्या बात हुई उसे एकाएक यह बोध हुआ कि वह किसकी पत्नी है और उसका पति कौन है। आगे भी वह पढती रही, पर अब परीक्षा पास करने का लक्ष्य सामने नही था।

बैठे-बैठे उसने देखा कि एक व्यक्ति उसे घूर रहा है। सच तो है, इस समय स्टेशन के बाहर अकेली औरत के इस पेड़ के नीचे बैठने का क्या काम था? वह उठी और उस आदमी के पास से होती हुई मुसाफिरखाने मे पहुच गई। अभी रात इतनी अधिक नही हुई थी कि वह आनन्दकुमार के यहा लौट न सके, फिर भी वहां लौट जाने की इच्छा नही हुई। आनन्दकुमार इतने अच्छे हैं, श्यामा इतनी अच्छी है, बेचारी तो बहुत ही अच्छी है, कबीर बहुत प्यारा है; फिर भी इन लोगो ने कभी उसे समझा ही नही। सब उससे अच्छा व्यवहार करते हैं, पर कोई उसकी बात नही समझता। जब कुणाल ही उसे नही समझ पाए तो दूसरे क्या समझेगे। लौटने की बात उठती ही नहीं। तो फिर वह कहा जाए?

जो शक्ति उसका हाथ पकडकर उसे यहां ले आई थी वह मालूम होता था

बीच रास्ते मे ही उसे छोड़ गई थी। फिर भी वह इतना तो कर ही गई थी कि पीछे का रास्ता कट गया था। अब तो आगे बढना था, या'''।

या क्या ?

वह कुछ सोच नही पाई और चादर से मुंह ढककर पड रही। जब वह जागी तो पूरब जानेवाली गाडिया सब निकल चुकी थी। फिर उधर जाने की इच्छा भी नही हो रही थी। उसने उठकर मु ह-हाथ धोया, फिर सोचने लगी कि अब क्या करे। काशी लौट जाना तो उचित नही मालूम होता था, इसलिए वह मुगलसराय मे ही एक मन्दिर के पास टिक गई। चारो तरफ का वातावरण एक अकेली युवती के रहने के लिए उपयुक्त नही था। इसका कारण एक तो मुगलसराय मे स्त्रियो की बहुत कमी थी और दूसरे काशी के पडे जब तीर्थ-यात्रियो की तलाश मे गाडी देखने आते थे, तो फुर्सत के समय इधर-उधर मटर-गश्ती करते हुए फिरते थे। पर सौभाग्य से उसे एक बाबाजी का सरक्षण मिल गया। पता नही वह बाबाजी जवानी में कहा तक सज्जन थे, पर अब उनकी उम्र सत्तर साल के लगभग हो चुकी थी और वे भजन-पूजन मे समय बिताते थे। उन बाबाजी की एक बात से ही रुक्मिणी ने उनके पास रहने का निश्चय कर लिया। बाबाजी ने कहा, "बेटी, यह तीर्थस्थान तो नही है, पर काशी के उस भम्भड़ से हमे यह स्थान ज्यादा रमणीक भी मालूम होता है, फिर काशी मे एक साधू हैं तो दस स्वादू है।

रुक्मिणी ने कहा, "मैं भी इसी कारण काशी से भाग आई हूं।"

थोडे ही दिनो मे दोनों मे बाप-बेटी का-सा सम्बन्ध हो गया। अवश्य इस सम्बन्ध मे वह निश्छलता नही आई, जो आनन्दकुमार के साथ आई थी क्योकि न तो वह इन्हे कुणाल की बाते बता सकती थी और न राजनीतिक बातो पर चर्चा कर सकती थी, फिर भी उसे बाबाजी अच्छे-खासे सुलझे हुए आदमी मालूम हुए, पर बीच का पर्दा ज्यो का त्यो बना रहा।

रुक्मिणी जब-तब मुगलसराय स्टेशन हो आती थी, मानो आकर स्टेशन से पूछती हो कि मैं कहा चलू ? स्टेशन जाने मे उसका एक आकर्षण यह भी था कि चलते-फिरते अखबारों की सुर्खिया देख आती थी और कभी-कभी छिपाकर एकाध अखबार भी खरीद लाती थी। शायद कुणाल या आनन्दकुमार या और किसीकी कोई खबर मिल जाए।

एक दिन बाबाजी ने उसे अखबार पढ़ते हुए देख लिया। रुक्मिणी समझी कि बाबाजी नाराज होंगे, पर बाबाजी बोले, "रोज अखबार ले आकर मुझे सुनाया करो। दिनभर भजन-पूजन मे मन नही लगता। फिर यह भी तो मूर्खता है कि हर समय किसीको पुकारा जाए। तुम कल से अखबार जरूर लाया करो।"

रुक्मिणी ने उस दिन अखबार पढकर सुनाया तो मालूम हुआ कि बाबाजी के विचार बड़े सुलझे हुए है और यद्यपि वे भजन-पूजन मे लगे रहते हैं फिर भी देश मे जो हलचल जारी है उससे अपरिचित नही है।

रुक्मिणी का मन फिर यहा बैठ गया। भक्त लोग कुछ न कुछ पहुचा जाते थे और कोई अभाव नही था। रुक्मिणी के आने से बाबाजी के भक्तो की श्रद्धा और बढी थी। पर बाबाजी को इस बात से कोई खुशी नही हुई थी, वह जिस प्रकार पहले निस्पृह थे अब भी उसी प्रकार निस्पृह बने हुए थे, हा, अब रुक्मिणी से बहुत बातचीत करते थे।

बाबाजी सारे भारत मे घूमे हुए थे, इसकी छाप उनकी भाषा पर पड़ी थी, इसलिए उनकी भाषा कुछ अजीब ही थी। रुक्मिणी की भाषा, विशेषकर हिन्दी, तो अजीब थी ही शायद इस कारण दोनों एक दूसरे को अधिक गहराई के साथ समझते थे। भक्तो ने पहले तो रुक्मिणी के आगमन को कुछ अधिक पसन्द नही किया था, पर रुक्मिणी ने थोडे ही दिनो मे अच्छे भक्तो को अपने वश मे कर लिया। यहां सुल्फा आदि चलता नही था, इसलिए उस प्रकार के भक्त तो थे ही नही, पर कुछ लोग केवल समय बिताने या सगीत के लोभ से आते थे, वे रह गए।

रुक्मिणी स्वय भजन गाने मे भाग लेने लगी और थोड़े ही दिनो मे उसके गीतो की ख्याति दूर-दूर तक फैल गई। लोग उसे बाबाजी की बेटी करके जानने लगे। यद्यपि न बाबाजी को इसका पता लगा और न रुक्मिणी को। दोनो की भाषा एक-सी देखकर और दोनो हिन्दी बोलने मे लिंग सम्बन्धी गलतिया करते हैं, यह देखकर लोगो ने यह उपसहार अपने आप निकाल लिया था।

जब रुक्मिणी ने देखा कि बाबाजी देश की समस्याओ को काफी हद तक समझने है, तो वह एक दिन पूछ बैठी, "बाबाजी, यह देश स्वतन्त्र कैसे होगा, होगा या नही ?"

बाबाजी कुछ कहना चाहते थे, पर अपने को रोकते हुए बोले, "हम साधुओ को इन बातो से कोई मतलब नही ।"

तब रुक्मिणी ने पूछा, "त्याग और तपस्या की जय तो होगी ?"

बाबाजी फिर भी प्रश्न को बचा जाना चाहते थे, पर कुछ सोचकर बोले, "वह तो होगी ही ।"

रुक्मिणी ने इससे आगे पूछना उचित नही समझा । पर बाबाजी के भी कुछ प्रश्न थे । एक दिन वे पूछ बैठे, "बेटी, तू तो पूरब की मालूम होती है ।"

रुक्मिणी ने कहा, "हा···"

बाबाजी ने इस सम्बन्ध मे और कुछ नही पूछा । फिर एक दिन पूछ बैठे, "तेरे मन मे कोई गहरा दुख है, जब तू गाती है तो मुझे मालूम होता है जैसे तू मीरा का ही अवतार है ।"

रुक्मिणी ने इसके उत्तर मे कुछ नही कहा ।

बाबाजी ने कहा, "बीस साल से मीरा के इस भजन को सुन रहा हू 'मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई', पर तू इस गीत को जिस प्रकार तन्मय और तल्लीन होकर गाती है, वैसा किसीको गाते नही देखा । मीरा का एक-एक शब्द वरन् उसका एक-एक अक्षर तेरे मन की ज्योति से हीरे की तरह जगमगाने लगता है । तेरी साधना धन्य है । मुझे तो तेरी भक्ति देखकर ऐसा लगता है कि तू जो मुझे बाबाजी, बाबाजी कहती है, उसकी बजाए मै तुझे माताजी कहूं और तुझसे भक्ति सीखू यह ज्यादा उचित है । बीस साल से मै जप-तप कर रहा हू, चाहता हू कि इस ससार की सारी बाते भूल जाए, पर अभी तक मैं सही मानो मे निस्पृह नही हो पाया । जैसे कैदी जितने साल कैद मे रहता है, उसकी तृष्णा उतनी ही बढ जाती है, वैसे ही मेरा हाल है । सब कुछ छोड आया, पर एक बात जानने की, घर की खबर पाने की इच्छा अभी नही मिटी···"

रुक्मिणी ने कहा, "बाबा, आप यह क्या कह रहे है ? मैंने भी कुछ सन्त देखे, पर आपमे निस्पृहता की जो मात्रा देखी वह भक्तो मे तो कही नही देखी । हा, कुछ दूसरे लोगो मे जरूर देखी है ।"

बाबाजी ने पूछा, "वे कौन लोग है ?"

रुक्मिणी ने सहसा महसूस किया कि वह बात करते-करते अधिक बहक

गई है, फिर भी जब उसने बाबाजी का सरल, शान्त और निरीह चेहरा देखा तो सत्य उसकी जीभ पर आ ही गया। बोली, "मैंने आपकी-सी निस्पृहता कुछ देशसेवको मे विशेषकर क्रान्तिकारियो मे पाई है।"

यह सुनते ही बाबाजी को जाने क्या हुआ, वे एकदम से आग-बबूला हो गए, बोले, "तू यहा बैठकर ऐसी भ्रष्ट बात कहती है। यह ईश्वर का स्थान है, यहा यह सब सासारिक बाते न कहा कर।"

कहकर बाबाजी थर-थर कापते हुए कोठरी के अन्दर चले गए और बड़ी देर तक नही निकले। रुक्मिणी उनके इस प्रकार बिना कारण क्रुद्ध होने से बहुत घबडा गई थी और यह नही समझ पा रही थी कि वह क्या करे? वह तो समझ रही थी कि यह बाबा पोगा पन्थी नही है। इसके विचार विस्तृत क्षेत्र मे फिरने के कारण उदार है, पर यह तो निरा अध्यात्मवादी निकला। वह गम्भीरता के साथ सोचने लगी कि अब यहा रहना उचित होगा या नही क्योकि लगभग दो महीने हो चुके थे।

इतने मे बाबाजी से उसकी भेट हुई, बाबाजी ने कहा, "बेटी, तू बुरा मान गई होगी और यह समझ रही होगी कि मैंने स्वार्थवश सन्तो की ऊचाई मे और किसीको शामिल नही करना चाहा, पर यह बात नही है। मैं जानता हू कि आज के निन्यानवे प्रतिशत साधु साधारण गृहस्थ से भी गिरे हुए हैं और एक प्रतिशत जो अच्छे है वे भी तरह-तरह के कारणो से साधु बने हैं। मैं बता चुका कि तुझे मैं मीरा का अवतार मानता हूं, इसलिए तू मेरे क्रोध पर बुरा न मान। मेरे क्रोध का कारण था। जो तुझे कभी उसका पता लगा तो तू मुझपर दया करेगी न कि क्रोध।"

बाबाजी ने अपने क्रोध की व्याख्या तो कर दी, पर उस समय से रुक्मिणी का मन उचट गया। इतने दिनो तक वह बाबाजी की सज्जनता से अपने लक्ष्य को जैसे भूली हुई थी, पर अब एकाएक उसे सूझा कि अरे मैं कहा आकर फंस गई। बाबाजी अच्छे ही सही, पर आनन्दकुमार या श्यामा कौन बुरे थे। बाबाजी इतने सौम्य और शान्त थे कि उनपर क्रोध करना असम्भव था।

दो दिन बाद रुक्मिणी ने बाबाजी से कहा, "बाबा, मेरा मन उचट गया है किसी तरह जी नही लगता, अब मैं यहा से चल देना चाहती हू।"

बाबाजी पहले तो सोचते रहे फिर बोले, "पाच साल से मैं इसी स्थान

पर जमकर बैठा हू, अब मेरा भी जी यहा नही लगता। इतने दिनो तक साधना की, पर गिरधर ने मुझपर कृपा नही की, सन्देह के जाल और बढते ही जाते हैं, अब मैंने तेरा पल्ला पकडा है, शायद इसी मिस से जो मैं चाहता हू, वह मुझे मिल जाए, इसलिए चल मैं भी तेरे साथ चलूगा।"

रुक्मिणी ने कहा, "बाबाजी, आपने मेरा शारीरिक रूप और मोहक कण्ठ स्वर सुनकर यह भ्रममूलक धारणा बना ली कि मैं कोई भक्त हू, पर यह बात नही। मुझे तो ईश्वर मे पूरी-पूरी आस्था भी नही है।"

बाबाजी बोले, "यदि तुझमे आस्था नही है, तो किसीमे नही है। अब मैं तेरे साथ जरूर चलूंगा, तुझे एक रक्षक की जरूरत भी तो है। मैं जानता हू कि अत तक मैं तेरा साथ नही दे सकता, तुझमे जो आग है मुझमे वह नही है, पर मुझमे भस्म है, उससे मैं तुझे ढककर तेरी रक्षा कर सकता हू। जहा तक मैं तेरे साथ चल सकता हू, वहा तक चलूंगा, जब नही चल पाऊगा, तो तेरा साथ छोड दूंगा। हर हालत मे मेरे लिए यह आश्रम तो है ही, जहा मैं लौट सकता हू।"

रुक्मिणी ने समझाया, "बाबा, तुम मेरे साथ कहा चलोगे ? मेरी यात्रा की अकथ कहानी है। जिस यात्रा का कोई लक्ष्य नही, उसका रूप और हो ही क्या सकता है ? मैं तो पता नही कहा-कहा फिरूगी, बाबा, तुम मेरे साथ कैसे चलोगे ?"

पर बाबाजी नही माने और दोनों एक दिन एक-एक पोटली उठाकर गाते हुए चल दिए।

जब दोनो लोकालय से कुछ दूर निकल गए तब बाबा ने कहा, 'बेटी, वह गाना तो गा 'मेरे तो गिरधर गोपाल'·· "

रुक्मिणी ने कुछ देर तक जैसे सुर की पेग भरी फिर गा उठी :

मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई।
जाके सिर मोर मुकुट, मेरो पति सोई।
छाँड़ि दई कुल की कानि कहा करिहै कोई।
संतन ढिग, बैठि-बैठि लोक-लाज खोई।
अँसुवन जल सींचि-सींचि प्रेम-बेलि बोई।
अब तो बेलि फैलि गई, आणँद फल होई।

भगति देखि राजी हुई, जगति देखि रोई।
दासी मीराँ लाल गिरधर, तारो अब मोही।

वृद्ध बाबा झूम-झूमकर ताल देने लगे और उनकी शुभ्र दाढियो को भिगोती हुई अश्रुधारा बहने लगी।

५१

आनन्दकुमार और श्यामा बड़े जोरो से सत्याग्रह की तैयारिया कर रहे थे। अबकी बार सत्याग्रह नमक सत्याग्रह का रूप लेने वाला था। यानी लोग नमक बनाकर कानून भग करने वाले थे। इसपर कुछ लोगों ने बडा शोर मचा रखा था। वे कहते थे कि नमक बनाना तो बहुत महगा पडेगा। मजे की बात है कि कुछ सरकारी अफसरो ने यह हिसाब लगाकर दिखाया था कि समुद्र के पानी से नमक बनाने के लिए जो ईंधन और श्रम मे खर्च बैठेगा, वह शुल्क देने के बाद नमक का जो दाम बैठता है, उसका तिगुणा बैठेगा।

श्यामा ने भी पहले आनन्दकुमार से नमक सत्याग्रह के औचित्य पर बहस की थी, पर आनन्दकुमार ने उसे समझा लिया था। अब भी लोग जगह-जगह पर नेताओ से इस सम्बन्ध मे बहस कर रहे थे। राजेन्द्र को भी यह संग्राम कुछ जंच नही रहा था। भला केवल नमक बनाने से कही राज्य हाथ मे आता है? एक दिन उसने खुलकर आनन्दकुमार से कहा, "आप सबको तो समझाते है, पर बिल्कुल निजी तौर पर बताइए कि आपको इसमे कुछ विश्वास है?"

आनन्दकुमार ने कहा, "तुमने मुझे गलत समझा। मैं स्वयं नमक सत्याग्रह की सारी सम्भावनाओ को नही समझता। पर इतना जानता हू कि यह एक ऐसा सग्राम है, जिसमे हर कोई भाग ले सकता है। समुद्र के किनारे जो लोग रहते हैं वे नमक कानून को तो आसानी से तोड ही सकते हैं। इसके अलावा देहातो मे भी बहुत-से कुए और तालाब आदि ऐसे है, जहां के पानी को उबालकर नमक बन सकता है। मै तो यहा तक कहता हूं कि यदि खारे पानी मे बना-बनाया नमक मिलाकर फिर उसे उबालकर नमक बनाया जाए तो

वह भी ठीक है क्योकि उससे कानून तो टूटता ही है ।"

राजेन्द्र ने कहा, "इससे तो आर्थिक नुकसान ही है ।"

"यह भी उचित ही है । यदि इस कार्य मे आर्थिक लाभ होता तो बनिए-बक्काल सब इसे आर्थिक लाभ के लिए करने लगते और जब पकडे जाते तो कह देते कि हम सत्याग्रही है, पर इस आन्दोलन में इस तरह मुनाफे के पीछे दौडने वालो के लिए कोई गु जाइश नही है । अब इसमे केवल वे ही लोग भाग ले सकते है, जो वास्तविक सत्याग्रही है ।"

राजेन्द्र इस व्याख्या से सन्तुष्ट नही हुआ, बोला, "आप तो गाधी जी की हर बात की अच्छी से अच्छी व्याख्या करने पर तुले रहते है । यदि वे नमक सत्याग्रह न बताकर कुछ और बताते तो आप उसकी भी इसी तरह पैरवी करते ।"

आनन्दकुमार ने कहा, "अवश्य करता, पर एक बात समझ लो कि मै अधा नही हू । नमक सत्याग्रह के बारे मे जिन बातो को मैं कह रहा हू वे सत्याग्रह शुरू होने पर या तो समर्थित होगी और या तो गलत पड जाएंगी । जब कोई वैज्ञानिक कोई सिद्धान्त पेश करता है, तो हमे उसका विरोध करने की जरूरत नही है । प्रयोग से वह स्वय ही गलत या सही सिद्ध हो जाएगा । हमारी गाधी-भक्ति का यही आधार है । मै बहुत-सी बाते न तो जानता हू न देख पा रहा हू, पर इससे उन बातो का अस्तित्व खतम नही हो जाता ।"

कहकर वे रुक गए, फिर कुछ सोचकर बोले, "गाधी जी क्रान्तिकारी हैं, पर साथ ही उनके हाथो मे समझौते का सफेद झडा हर समय रहता है । इस झडे के बावजूद हम आगे बढे है और बढते चले जा रहे है । स्वाभाविक रूप से गाधी जी जिस प्रकार का सग्राम चलाते है, उसमे रक्त के अन्तिम विन्दु तक लडने की बात या तत्व नही आता । हम केवल शत्रु को अपनी शक्ति का पता दे देना चाहते है कि वह हम पर शासन नही कर सकता, हम अपनी शक्ति से उसे चूर्ण-विचूर्ण कर उसकी लाश की छाती पर ताण्डव नृत्य नही करना चाहते ।"

आनन्दकुमार ने और भी बहुत-सी बाते कही, जिनसे राजेन्द्र का अविश्वास विश्वास मे परिणत तो नही हुआ, पर कुछ ऐसा हुआ, जिससे कि उसका अविश्वास सो गया । वह सन्तुष्ट नही हुआ, पर कुछ बोल भी नही सका । उसने जाते समय कहा, "आपके पास आने से बड़ी शान्ति मिलती है । मेरी निजी राय तो यही थी कि कौसिलो के कार्यक्रम को ही और आगे बढाया जाए ।"

आनन्दकुमार अबकी बार हस पडे। बोले, "अरे भाई, इससे वह भी तो होने जा रहा है। जब काग्रेस जनता की सग्रामशील सस्था बनेगी और उसकी आवाज घर-घर पहुचेगी, तभी न लोग काग्रेस को अपनी सस्था करके जानेंगे। इसके अलावा एक बात और समझ लो राजेन्द्र! वह यह कि हमारा देश एक धार्मिक देश रहा है, यहा क्रियाकाण्ड का बहुत महत्व रहा है। तुम न मानो, पर उच्च मनोविज्ञान मानता है कि क्रियाकाण्ड और अनुष्ठानो का बडा महत्व होता है और हमारे नमक सत्याग्रह मे इसकी अच्छी व्यवस्था है। पहले चूल्हा बनाओ, फिर उसपर कढाई रखो, उसमे पानी डालो, फिर चूल्हा सुलगाओ ।"

राजेन्द्र ने बीच ही मे बात काटकर जाते हुए कहा, "अब मैं नही ठहरूंगा, मैं यहा खड़ा रहूगा तो आप दो-चार तर्क और बना लेगे। इसलिए मैं चला"—कहकर वह हसा और चल पड़ा।

आनन्दकुमार फिर अपने कार्य मे व्यस्त हो गए। पर अभी आधा घटा भी नही बीता था कि राजेन्द्र बडी तेजी से आया और बोला, "सुना आपने! अभी-अभी बेनिया पार्क मे पुलिस और क्रान्तिकारियो मे एक गोलीकाण्ड हुआ है और उसमे कोई क्रान्तिकारी मारा गया है।"

राजेन्द्र तो केवल खबर देने आया था, पर आनन्दकुमार हडबडाकर उठ पडे, जल्दी से श्यामा को बुलाया, लेकिन उसका पता नही लगा। तब वे अकेले ही राजेन्द्र के साथ घटनास्थल पर पहुचे। वहा पहले ही बहुत बडी भीड जमा हो चुकी थी और लोग उत्तेजित होकर 'इनक्लाब जिन्दाबाद' आदि क्रान्तिकारी नारे लगा रहे थे। भीड को ऐन घटनास्थल से सौ गज दूरी पर रखा गया था। एक के बाद एक पुलिस की लारिया आ रही थी क्योकि पुलिस को यह डर हो गया था कि शायद जनता लाश को न ले जाने दे। आनन्दकुमार और राजेन्द्र एक क्षण तक भीड की अगली कतार मे खडे होकर स्थिति को देखते रहे, फिर वे आगे बढ गए। उनके साथ-साथ भीड़ भी आगे बढ गई पर उसे आगे बढने से रोक दिया गया। भीड इस निषेध को न मानती पर राजेन्द्र ने हाथ जोडकर सबसे इशारा कर दिया, इसलिए भीड नारे लगाकर अपनी भडास निकालने लगी और सब जयकारो के साथ महात्मा गाधी की जय भी बोली जा रही थी। महात्मा गाधी की जय जनता का सग्राम सम्बन्धी नारा हो चुका था।

आनन्दकुमार ने वहा उपस्थित मिस्टर टेगर्ट से पूछा तो मालूम हुआ कि

दो क्रान्तिकारी यहां बैठकर कुछ परामर्श कर रहे थे, इतने मे पुलिस वालो ने देख लिया और दोनो तरफ से गोलिया चली। कुणाल ने एक पेड की आड लेकर गोलिया चलाईं, और इसी बीच मे उसका साथी गायब हो गया। पहले तो कुणाल को कोई गोली न मारी जा सकी, पर पुलिस वालो ने उसके पीछे से जाकर उसकी टाग मे गोली मारी, वह गिर पडा फिर भी वह गोलिया चलाता रहा। फिर शायद उसे एक गोली दाहिने हाथ मे लगी, तब वह बाएं हाथ से गोलिया चलाता रहा, इसके बाद क्या हुआ, पता नही। सिपाहियों का कहना है कि उनकी एक गोली उसकी छाती मे लगी, पर मिस्टर कार्नवाल का कहना है कि उसने स्वयं अपने को गोली मार ली।

आनन्दकुमार को रुक्मिणी की याद आई। बोले, "तो आपको पूरा निश्चय है कि ये कुणाल ही है।"

टेगर्ट ने हसकर कहा, "आप बताइए। आप तो इस क्रान्तिकारी नेता से कई बार मिल चुके होगे।"

आनन्दकुमार ने कहा, "नही, मुझे यह सौभाग्य प्राप्त नही हुआ, पर अब मैं मिलता हू।"—कहकर उन्होने झुककर अपना सिर कुणाल के रक्त से सने पावो पर रख दिया। राजेन्द्र एक क्षण तक सोचता रहा कि क्या करना चाहिए, फिर उसने झुककर कुणाल के पैर छुए। भीड ने जब यह बात देखी तो वह फिर आगे बढने को हुई, पर इस समय तक पुलिस वालो ने पूरा घेरा बना लिया था, वह आगे नही बढ सकी। भीड से आवाज आने लगी, "शहीद की लाश हमे मिलनी चाहिए!"

आनन्दकुमार ने टेगर्ट से यह बात कही तो टेगर्ट कुछ स्पष्ट उत्तर नही देकर बोला, "कायदे के अनुसार भी लाश केवल रिश्तेदारो को ही मिल सकती है..."

आनन्दकुमार इसपर कुछ नही बोल पाए। इतने मे उधर से श्यामा की आवाज आई। वह आनन्दकुमार से चिल्लाकर कह रही थी, "रुक्मिणी दीदी आ गई है, हम लोगो को घेरे के भीतर आने दीजिए।"

मिस्टर टेगर्ट और आनन्दकुमार मे कुछ बातचीत हुई। फलस्वरूप कुछ हुक्म दिए गए और श्यामा तथा रुक्मिणी वहां पहुची, जहा कुणाल का अवशेष पडा था। रुक्मिणी ने दौडकर कुणाल की लाश को अपनी गोद मे ले लिया और उससे पागलो की तरह चिपट गई। कभी उसका सिर चूमती

कभी माथा तो कभी गले से लगाती। उसका व्यवहार बिल्कुल ऐसा था जैसे वह प्रेम निवेदन कर रही हो। उसमे वही आग और वही ज्वाला थी। आनन्दकुमार तथा श्यामा की आखो मे आसू जारी थे, पर रुक्मिणी बिल्कुल रो नही रही थी। हाँ, उसका वह उच्छ्वास बराबर बढकर उन्माद की मात्रा तक पहुच चुका था।

आनन्दकुमार ने श्यामा को इशारा किया तो श्यामा ने रुक्मिणी को उठाना चाहा, पर रुक्मिणी उठी नही, अजीब ढग से हसकर बोली, "अब इतनी मुश्किलो से मिल पाई हू, अब मैं छोड़ूगी थोडे ही।"—कहकर उसने कुणाल को और भी झटके के साथ चिपटा लिया। पता नही कहा कुछ रक्त जमा था, वह एकाएक निकलकर श्यामा पर गिरा। इस समय तक रुक्मिणी का चेहरा रक्त से सनकर अद्भुत बन चुका था। वह करुणा की प्रतिमूर्ति मालूम होती थी। साथ ही कुछ वीभत्सता भी थी।

स्ट्रेचर आ गया था। उसपर कुणाल को लेटाने के लिए कहा गया, पर रुक्मिणी ने कुणाल का शरीर देने से इन्कार किया। तब आनन्दकुमार और टेगर्ट मे कुछ बातचीत हुई, फिर आनन्दकुमार ने कहा, "बहन, अब तो कुछ रहा नही। शरीर नश्वर है। उसे तो ठिकाने लगाना ही है। तुम साथ मे चलो, हम लोग भी साथ चलेगे।"

साथ ही श्यामा ने रुक्मिणी को खीचना चाहा, पर रुक्मिणी ने कहा, "नही, मै इन लोगो को इनका शरीर छूने न दूंगी। इन्हे इनके प्राण की जरूरत थी, उसे यह ले चुके हैं, अब यह जो मिट्टी रह गई है, यह मेरी है, इसपर और किसीका अधिकार नही है।"

आनन्दकुमार ने कहा, "बहन, इन लोगो को सचमुच कुछ नही लेना है। पर यहा इस अवशेष को इस हालत मे तो नही रखना है।" कहकर उन्होने आगे बढकर कुणाल का कन्धा पकडा और राजेन्द्र तथा श्यामा को इशारा किया। तदनुसार उन लोगो ने लाश को पकडकर स्ट्रेचर पर रखना चाहा। रुक्मिणी ने एक क्षण जैसे इसका विरोध किया, फिर वह भी उस काम मे हाथ बंटाने लगी। पर अभी लाश शून्य मे ही थी, स्ट्रेचर मे रखी नही गई थी कि उधर से बाबाजी पुलिस का घेरा तोडकर चिमटा लिए हुए दौड़े और कुणाल को उस हालत मे देखकर मेरे बेटे ! मेरे बेटे ! कहकर चिल्लाने लगे।

इस समय तक स्ट्रेचर मे लाश रखी जा चुकी थी और सब लोग बाबाजी को ध्यान से देखने लगे। एक सिपाही ने आकर कहा, "चलो-चलो, यहा बाबाओ का कोई काम नही है।"

पर बाबाजी ने कहा, "काम कैसे नही है ? यह मेरा बेटा है।"

लोग एक दूसरे का मुंह ताकने लगे। टेगर्ट ने सिपाही से कुछ इशारा किया, वह पीछे चला गया। आनन्दकुमार ने कहा, "बाबाजी, आप कौन हैं?"

बाबाजी ने कहा, "मैं कतई बाबाजी नही हू, मैं घोर गृहस्थ हू। यह जो लेटा हुआ है, यह मेरा बेटा है" कहकर वे रुक्मिणी की तरह ही कुणाल से लिपटने लगे। लिपटते-लिपटते आधा रोते-सिसकते हुए उन्होने जो कुछ कहा उसका साराश यो था—इसकी मां बचपन मे ही मर गई। केवल मैं था और यह। इसकी शादी कराई, तो यह घर से निकल गया। मैं जानता था कि यह क्रान्तिकारी बन चुका है और किसी न किसी दिन फासी के तख्ते पर या पुलिस की गोलियो से इसका अन्त होगा। तब से मैं बिल्कुल विरक्त हो गया कि कोई बात हो तो मुझे पता न लगे।

फिर उनका ध्यान रुक्मिणी की तरफ गया, जो उनको देखकर जोर-जोर से सिसकिया भरने लगी थी। बोले, "फिर यह लडकी मिली, इसने कहा चलो देश-भ्रमण को चले। जिस बात से बचने के लिए इतने सालो तक वैराग्य रखा और भजन-पूजन की आड लेकर बैठा रहा, वही सामने आकर रही।"

आनन्दकुमार ने कहा, "बाबा, आप इसको पहचान नही रहे है, यह कुणाल की स्त्री रुक्मिणी है।"

रुक्मिणी ने कहा, "मेरा नाम सर्वजया है।"

टेगर्ट खडे-खडे यह दृश्य देख रहा था और समझ नही पा रहा था कि उसे क्या करना चाहिए। यही हालत वहा उपस्थित दूसरे अफसरो की भी थी। पर इन लोगो की तरफ किसीका ध्यान नही था। नदी अपने वेग-बल से बहती जाती है, वह किनारो के झाड-झखाडो की ओर दृष्टि नही डालती।

थोडी देर तक यह अद्भुत पारिवारिक पुनर्मिलन चलता रहा। बाबाजी बोले, "मेरे साथ यह इतने महीने रही, पर मैने इसे पहचाना नही—फिर निराशा के साथ बोले, "यदि पहचानता भी तो क्या कर लेता, क्या मैं इसका सुहाग लुटने से इसे बचा सकता था ?"